॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

कविवर केशवदास प्रणीत

सटीका

रामचन्द्रिका ।

जिसमें

श्रीरामचन्द्रादि चारों भ्राताओंकी कथा बाललीलासे
जानकीविवाह, रावणवध तथा अश्वमेध
पर्यंत अति मनोहर काव्यरचना
छन्दबद्ध भाषामें वर्णित है ॥

वही

पं० रामभद्र अवस्थी तथा पं० कृष्ण विहारी शुक्ल-
द्वारा परिशोधित,

श्रीकृष्णदासात्मज गंगाविष्णुने

बंबई और कल्याण

निज "श्रीलक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" यंत्रालयमें मुद्रित किया

कार्तिक संवत् १९४९

॥ भूमिका ॥

जैसे कि, हिन्दी रसिक हरिभक्तिपरायण सुजन जन रामायणादि रामचरित्र पढकर अपार आनंद भोगते हैं वैसेही यह रामचन्द्रिकाभी हरिचरित्रका अपार समुद्र लहरहारहा है इसकी एक आधलहर लेनेसे आनंदही नहीं बरन् भुक्ति और मुक्तिभी मिलती है. रामचरणमें अनुराग बढकर पुरुष अतुल कीर्तिका भागी होता है यद्यपि केशवकी कविता बहुत कठिन और ललित है (जैसेकि--देनो न चाहै विदाई नरेश तो पूछतकेशवकी कविताई) तथापि इसका टीका ऐसा मनोविलास बुद्धिप्रकाश लोकरंजनार्थ परम उत्कृष्ट हुआहै कि बारहखडी जाननेवालाभी उत्तम रीतिसे पठनका फल प्राप्त कर सकताहै इसमें रामचन्द्रजीका अपूर्व चरित्र सर्वत्र यथाक्रम वर्णितहै. इसके सिवाय काव्यनिरूपणभी ऐसा उत्तमहै कि, लोक देखनेसेही सन्तुष्ट होंगे अधिक प्रशंसा व्यर्थ है. मुझे आशा है कि, सूर्यकी किरणों सदृश इसकी प्रतियेंभी सारे संसारमें गुणग्राहकोंके पास शीघ्र फैल जायेंगी और वे अपने विशालनेत्रोंसे इसका अवलोकन पठस्वाद सदासर्वदा हृदयकमलमें धारण करैंगे.

आपका--

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास

श्रीलक्ष्मीवेङ्कटेश्वर यंत्रालय

बंबई और कल्याण

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ रामचन्द्रिका

सटीका ॥

कवित्त ॥ कुंड़लित शुंडगण्ड गुंजत मलिंद झुंड वंदनं विराजैसुंड अद्भुत गतिको । बालशशि भाल तीनि लोचन बिशाल राजै फणिगणमाल शुभ सदंन सुमतिको ॥ ध्यावत बिनाहीं श्रम लावत न बारनर पावत अपार मोदभार धनपतिको । पाप गण मंदनको बिघन निकंदनको आठो यामं वंदन करत गणपतिको ॥ १ ॥ जिनको अवलोकतहीं मन रंजन कंजनकी रुचि दूरी बहैये । मधुपालिन मालिनकी द्युतिशालिन आलिन दासनके मन ठैये। निधिसिद्धि अशेषके धाम सदा सुख पूरन पूरन पुण्यन पैये । पगबंदनके गिरिजापतिके रघुनन्दन रामकि कीरति गैये ॥ २ ॥ तीन्यौरूप तेरेई प्रभावनि त्रिदेव उतपति प्रतिपाल प्रलय निजमति कीजिये । नारद गणेश व्यास बाल्मीकि शेषआदि तव कृत पूरो लोक लोक यश लीजिये । सागर अपार हौं चहत पैरि पारजायो जग उपहासके प्रकाश भयभीजिये । शारदा भवानि कहौं जोरि युगपानि जन जानकी प्रसाद पै कृपाकि कोर दीजिये ३ ॥ दोहा ॥ उत बर्णन रघुबर सुयश, इतममप्रण प्रतिपाल ॥ ताते पवनकुमारको, करौं भरोस बिशाल ४ बारबार बंदन करौं, गुरुचरणन सुखपाइ ॥ निजशिक्षा अंजनहृदय, दियो अदृष्ट दिखाइ ५ ॥ कवित्त ॥ दामिनीसी दमकति पीतपट भाँति हीराहार बक पाँतिको प्रकाश धरियतुहै । जुगुनूसे भूषणजवाहिर जगत सुनि शबदमयूर साधुमोद भरियतु है । जानकी प्रसाद जग हरित करन मीठे बैनरस बैरीज्यों जवासे जरियतु है । राजसभा बिपद बिराजैं छबिधाम नित रामघनश्यामको प्रणामकरियतु है ६ ॥ षट्पद ॥ परम प्रीति सिय जासुसंगदामिनि समसोहै । शीश मुकुट बहुरंग अंगसुरधनुछबि रोहै । क्रोधनिहँसनिसुबैन बारि जगहित बरसावहिं । निरखि संतजन मोर जोर जय शोर मचा-

---

१ सिन्दूर २ घर ३ महर ४ कमल ५ ब्रह्म

वाहिं । मनचतुरकिसान विचारिकरि नहिं उपाय देख्योबियो ॥ घनश्याम राम उरआनिकरि स्वमतिशालि सिंचन कियो ७ ॥ दोहा ॥ तापरिपाकअघायमन, चंचलता निबिहाइ ॥ रामचंद्रिकाको तिलक, लाग्यो करनबनाइ ८ कठिनाई तम ग्रंथगृह, थलथल विविध विहारु ॥ तिलक दीप बिनु अबुधक्यों, लखैं पदारथ चारु ९ ॥ तासों सुमति विचारि चित, कीन्हे तिलक अपार ॥ देखि रीति तिनकी कन्यों, हौं निजमति अनुसार १०॥ घनाक्षरी कबित्त ॥ मेदिनी अमर अभिधान चिंतामणि गनि हारावली आदिको समत उर धारिकै । वाल्मीकि आदि कविताकी मतिभीनो दीनो ज्योतिष प्रमाणकहुं जुगुति निहारिकै ॥ ग्रंथगुरुताके भय सकल न लीन्हो कीन्हों अरथ उकुति पद कठिण ठिहारिकै । रामचंद्रजूके चरणनि चित राखि रामचंद्र चंद्रिकाको कीन्हो तिलक बिचारिकै ११ ॥ चंचलाछंद ॥ नयनसूरजबाजिसिद्धिनिशीश सम्मतचारु । शुक्रसंजुतशुक्लपक्ष सुरेशपूजितबारु ॥ चारुदिक् तिथि हस्त तार बरिष्टयोग नवीन । राम भक्ति प्रकाशिका अवतार तादिनकीन १२ ॥ सोरठा ॥ रावणादि मतिहीन, राम सीय प्रति कटुवचन ॥ तहाँ अर्थ मृदु कीन, जानि प्रभावसरस्वती १३ ॥ दोहा ॥ शब्दलग्योसंबंधमें, रह्यो छंदमेंशेष ॥ ताहि मिलायो आनिकै,यों कहुंकथा बिशेष १४ कहु पूरब परकथनको. लख्यो विरोधबिचारि ॥ तहां निवारणकोकियो, निजमतिकी अनुहारि १५ जहाँ केरपर्जाय पद, अर्थ बोधनाहिं होहि ॥ तहां तासु इति अंतदै, लिख्यो दूसरो जोहि १६ जहांविरोधाभासहै अर्थ विरोध प्रकाश ॥ लिख्यो अर्थ अविरोधहीं, तासों सहित हुलास १७ कठिन शब्द को अर्थ जहँ, एक ठौर नहिंदेखि ॥ तहाँ दूसरे ठौर में जानव लिख्यो विशेषि १८ ॥

मू०—बालक मृणालनि ज्यों तोरि डारै सब काल कठिन कराल त्यों अकाल दीह दुखको । विपति हरत हठि पद्मिनी के पातसम पंक ज्यों पताल पेलि पठवै कलुषको ॥ दूरिकै कलंक अंकभवशीश शशिसम राखतहैं केशवदास दासके बपुषको । साँकरे की साँकरन सनमुख होतही तो दशमुख मुख जोवै गजमुख मुखको ॥ १ ॥

टी०-बालक पांच वर्षको हाथीको जैसे मृणाल पौनारोंको सब कालमें तोरि डारत है तैसे गणेश कठिन औ कराल भयानक औ अकाल कहे असमयको जोदीह कहे बडो पुत्र मरणादि दासनको दुःख है ताको तोरत हैं औ जैसे बालक पद्मिनी कमलिनीके पातको हरत तोरत है तैसे ये बिपत्ति दरिद्रादिको हरत हैं औ बालक जैसे पग सों दाबि पङ्क कहे कीचको पेलिके पातालको पठावत है तैसे ये कलुष जे पाप हैं तिनको पठावत हैं इहां गजराजको त्यागकरि बालक सम यासों कह्योकि पद्मिनी पत्रादि तोरनमें बालकको उत्साह रहत है तैसे गणेशजूको बिपत्त्यादि बिदारणमें बड़ो उत्साह रहत है कौतुकही विदारतहैं औ गणेशजू दासनके कलङ्को अङ्ककहे चिह्नको दूरि करिकै जैसे भव महादेवको शीशको शशि है कलङ्क रहित ताही बिधि दासनके बपुष शरीरको राखत हैं औ जनके सन्मुख होतही साँकर राजभयादि ताकी साँकर बंधन जंजीरन कहीं नहीं रहति ऐसे जे गजमुख गणेश हैं तिनके मुखको दशमुख जे ब्रह्मा विष्णु महेश हैं तिनके मुख जोवे कहे निरखत हैं स्तुति करत हैं अथवा दशमुख जे दशौ दिशा हैं तिनके जे मुख हैं अर्थ यह दशौ दिशनके प्राणी स्तुति करतहैं ॥ पञ्चवर्षोगजोबाल इत्यभिधानचिंतामणिः तौ इहां स्तुतिसों अभिकांक्षितबस्तुको मांगिवो सूचित भयो तासों आशीर्बादात्मक मंगल है दूसरो अर्थ जो ग्रंथ कविलोग करत हैं ताकी कथा प्रथम संक्षेपसों कहतहैं सो युक्तिसों याहीमंगलाचरणमें कह्यो है बालक या पदते श्रीरामचंद्रको जन्मसूचित भयो औ सबको कालरूप जो सुबाहु ताड़कादि हैं तिन्हैं मृणालन पौनारिनके समान सहजही तोरि डारत भये मारत भये औ कठिण औ कराल कहे भयानक ऐसा जो धनुष है औ अकाल कहे कुसमयको जो दीह बड़ो दुःख है ब्याह कृत उत्सवमें परशुरामकृत दुःख गर्बगति समेत तिनहुंनको त्यों कहे ताही प्रकार ते मृणालन बहुबचन है तासों ताड़कादि बध धनुभंग परशुरामगतिभंग सर्बत्र समता कियो इति बालकाण्ड कथा ॥ औ राज्यत्यागरूप जो बिपत्तिहै ताको हठिकै हरत कहे ग्रहण करत भये भरतादिको कह्यो न मान्यो आप पद्मिनी कमलिनीके पात कहे पुष्प पत्र सम सुकुमार हैं इतिअयोध्याकाण्ड कथा ॥ औ पङ्क ज्यों कहे पङ्कके सदृश नीच ऐसा जो बिराध है ताको पेलिकै पतालको पठावत भये

बाल्मीकीय रामायणमें लिख्यो है कि काहू अस्त्र शस्त्रसों न मरै तब रामचं-द्रजीवतही गाड़ि लियो ताही प्रकार कलुष पापरूप जे खर दूषणादिहैं तिन-हुंनकोमाऱ्यो इति अरण्यकाण्ड कथा ॥ औ कलङ्कको है अङ्क चिह्नजाके ऐसा जो बंधुपत्नी भोगी बालि है ताको दूरि करत मारत भये औ दास जो सुग्रीव है ताको भव महादेवके शीशके शशिके सम राखत भये जैसे भवशीश शशि-को राहुको भय नहीं रहत तैसे शत्रुभय रहित सुग्रीवको कियो अथवा महादे-वके माथेमें द्वितीयाको चन्द्रमा है यासों या जनायोकि भवसंसारको राज्य पाइ सुग्रीव की और बढ़ती ह्वैहै इति किष्किन्धाकाण्ड कथा ॥ तथा याही पदमें सुन्दरौकाण्ड है ॥ केशव जे रामचंद्र हैं तिनके दासजे सुग्रीवहैं तिनके दासजे हनुमान हैं ताके बपुष शरीरको भवशीश शशिसम राखत भये कि लङ्कामें प्रकाशित करते भये कलङ्करूप जे सिंहिका अच्छकुमारादि हैं तिनको दूरि करिकै कहे मारिकै इतिसुन्दरकाण्डकथा ॥ औ रामचन्द्रके सन्मुख होत ही बिभीषणके साँकर कष्ट की जो साँकर जंजीर रही सो न कहे न रहत भई रामचंद्र के दर्शनही सों बिभीषणको दुःख दूरि भयो तब दशमुख जो ब्रह्मा बिष्णु महेश हैं ते बिभीषणको मुख जोवत भये कि धन्य है बिभीषण जाको रामचन्द्र अंगीकार कऱ्यो औ गजमुख जे गणेश हैं तिन मुख कहे आदि दै और देवता हैं ते को कहे कहां हैं अर्थ यह गणे-शादि देवता तौ जोवतही भये औ साँकर जे यमादिक हैं तिनको साँकर कहे कष्ट दैवैया ऐसा जो रावण है सो रामचन्द्रके सन्मुख होतही न रहत भयो गजमुख जे गणेश हैं तिनके मुख कहे श्रेष्ठ ऐसे जे रामचंद्र हैं तिनके मुखको जोवत भयो अर्थ यह उनके लोक को प्राप्त भयो अथवा मुख जोवै कहे मुखमें लीन होत भयो तुलसीकृत रामायणमें लिख्यो है कि ॥ तासुते-जप्रभुबदनसमाना । सुरनरसबनअचम्भौमाना ॥ इतियुद्धकाण्डकथा ॥ ॥ औ साँकर जो रावण है ताके साँकर जो रामचंद्र हैं तिन्हें अयोध्याके सन्मुख होतही दशमुख जे ब्रह्मा बिष्णु महेश हैं ते मुख कहे मुख्य औ गजमुख जे गणेश हैं ते रामचन्द्रको मुख जोवै कहे स्तुति करतहैं अथवा दशमुख कहे दशौदिशाके मुख औ गजमुख मुख कहे हाथिनमें मुख्य ते मुख जोवै कहे रामचन्द्रको मुख निहारत हैं इति उत्तरकाण्ड कथा ॥ कोऊ कहै कि एक

पदमें कैयो फेरि अर्थ कियो सो संक्षेपकथा है तासों दूषण नहीं है याही बिधि रामायणादिक तिलककारने अर्थ कियो है याहूपर कोऊ हठकरै तालिये द्वितीय प्रकारसों अर्थ बालक जो है शिशु सो जैसे बालखेलमें मृणालनको बिनहीं श्रम तोरिडारै कहे तोरिडारतहै इहां बालक पदमें जातिमें एक बचन है त्योंकहे ताहीविधि कठिन अतिकठोर औ भयानक ऐसा जो शंभु धनुष है ताको बाल अवस्थामें बालखेल सम रामचन्द्र तोऱ्यो त्यहीमुख कहे आदिदै ताड़कावधादि सीय बिवाहादिजे बालकांडकी संपूर्ण कथा हैं तिनको इहां मुखपद क्रमकी आदि मो नहींहै श्रेष्ठतामो है औ अकाल कहे कुसमयको जो दीह दुःखहै अर्थ रामराज्याभिषेकमें कैकेयीको बर मांगिबो राम बनगमन दशरथ मरण भरतको व्रतकरि नंदिग्राममें बसन याप्रकारको जो अकाल दुःख है त्यहि मुख जे चित्रकूट गमनादि अयोध्याकांड कथा हैं तिनको औ विराध खर दूषणादि राक्षसनको मारिकै ऋषि लोगनकी विपत्तिको सहजही पद्मिनीके पातसम हरत कहे दूरिकरत पंकरत पंकजे पापहैं तिनको जैसे पेलिकै पतालको पठवै कहे पठै देत हैं अर्थ अपने दासनके जैसे पातक नाश करतहैं ताहीविधि कलुषकहे पापरूप बंधुपत्नी भोगी जो वालिहै ताको पठायो अर्थ माऱ्यो तिनमुख जे आरण्यकांड औ किष्किन्धाकांडकी कथाहैं तिनको ऋषिनकी विपत्ति हरणादि आरण्यकांड कथा जानो आदिपदते सीयहरणादि जानौ औ बालिवधादि किष्किन्धाकाण्ड कथा जानौ आदि पदते सप्तताल वेधन सुग्रीव राज्याभिषेकादि जानौ औक जोहै अग्नि तासों लंकके जे अंक कहे ध्वजादि चिह्नहैं तिन्हैं दूरिकै कहे विध्वंस करिकै जारिकै इतिअर्थ हनुमानके करसों लंकाजारिकै दास जो बिभीषण है ताके वपुष को आजु पर्यंत राखत हैं रक्षा करत हैं अर्थ रावणादिको मारि जो बिभीषण को लंकाको राज्यदियो तामें आजुलों रक्षा करत हैं तिनमुखकथनको हनुमानके करसों लंकादाहादि सुंदरकांडकी कथा जानौ औ रावणादिको बधकरि बिभीषण को राज्यदानादि लंकाकाण्ड कथा जानौ औ भरतको जो साँकर कहे नंदिग्राममें यतीवेष बसिबे को कष्टहै ताहीकी जो साँकर कहे बंधन जंजीर है ताको जो नशन कहे नाश करिबोहै अर्थ रामचंद्र आइकै भरत यतीवेष को क्लेश दूरिकऱ्यो है तेहिमुखकस है आदिदै औज

कहे यज्ञ मुख कहे आदिदै अर्थ अश्वमेधादि जे मुख कहे मुख्य कथा हैं तिनको योग कहे गीत है अर्थ कथन है ताको जे जोवै कहे देखत हैं अर्थ इन कथनसों युक्त रामचंद्रिकाको जे पढ़त हैं तेही कहे निश्चय करिकै दशमुख मुख होतहैं अर्थ वक्तृत्व करिकै दशमुखके सदृश जिनको एकमुख होतहै अर्थ बड़ेवक्ता होतहैं ॥ मयूरेग्नौचपुंसिस्यात्सुखशीर्षजलेषुकम् ॥ इति मेदिनी ॥ गंगीतंगातुगीताचगौश्चधेनुःसरस्वतीत्येकाक्षरी यजनेयः समाख्यातः इत्येकाक्षरी ॥ १ ॥

मू०-बानी जगरानी की उदारता बखानी जाइ ऐसीमति कहौधौं उदार कौनकी भई । देवता प्रसिद्ध सिद्ध ऋषि राज तपवृद्ध कहिकहि हारसब कहिन कहूंलई ॥ भावी भूत बर्त्तमान जगत बखानतहै केशवदास केहूंन बखानी काहूपै गई ॥ वर्णै पति चारिमुख पूतबर्णै पाँच मुख नाती बर्णै षटमुख तदपि नईनई ॥ २ ॥

टी०-जगरानी कहे जगमें श्रेष्ठ ऐसी जे वाणीसरस्वती हैं तिनकी उदारता बडाई जासों बखानी जाइ कहौ ऐसी मति बुद्धि उदार बडी कौने प्राणी की भई है अर्थ काहू की नहीं भई देवता बृहस्पति आदि औ प्रसिद्ध जे सिद्ध देवयोनि विशेष हैं अथवा भृगु आदि ऋषिराज बाल्मीकादि अथवा सिद्ध जे ऋषिराज हैं तप वृद्ध लोमस मार्कंडेय आदि जाकी उदारताको कहिकहि कहे वर्णि वर्णिकै सब हारेहैं कहिकै सब उदारता काहू न लई कहे न पाई अर्थ उदारताको अन्त न पायो हारे यासों कह्यो कि अब नहीं बखानत औ भावी कहे जे ह्वैहैं औ भूत जे ह्वैगये वर्तमान जेहैं जगत् कहे जगत्के प्राणी ते बखानत हैं सो केशवदास कहते हैं कि केहू कहे काहू प्रकार सों काहू प्राणीसों उदारता न बखानीगई औ पति जे ब्रह्माहैं ते चारि मुखसों औ पूत महादेव पांचमुखसों नाती स्वामिकार्त्तिक षडमुख सों वर्णत हैं ताहू पर नई नई कहे नवीन नवीन रहति है अर्थ यहकि यहि प्रकार मुखवृद्धि सों वर्णत हैं परंतु इनको वर्णन जाकी उदारता को छुइ नहीं सकत अथवा ज्यहिवाणीके पतिके चारिमुख औ पूत के पांच मुख नातीको षड्मुख सब वर्णन करत हैं

यासों या जनायोकि चारिमुख सों संपूर्ण जगत् उत्पत्तिके कर्ता पंचमुखसों नाशकर्त्ता षड्मुखसों देवतनके रक्षक ऐसे पति पुत्र नाती हैं जाके यासों बड़ी बडाई जनायो औ ताहूपर नवीन नवीन होति जातिहै २ और अर्थ जामतिसों वाणी जो सरस्वती है तासों जगरानी सीता जू की उदारता बखानी जाइ ऐसी मति वाणीकी कौनकी कीन्ही भई है अर्थ कौने ऐसी मति वाणीको दीन्ही औ जावाणी के पति पुत्रादि चतुरादि मुखसों वर्णत हैं और अर्थ एकही है अथवा सरस्वती की उक्ति है कि वाणी जोमैंहों तासों जगरानी सीता जूकी उदारता बखानी जाइ कहे जाति है काहसों अर्थ यह कि मोसों नहीं बखानी जाति काहे ते कि ऐसी कौनकी उदारमति भई है कि जो बखानै काहेते कि देवतादि औ मेरे पति पुत्रादि सब बखानत हैं ताहू पर नई नई रहति है ऐसी सरस्वती को अथवा सीताजूको नमस्कार करत हौं इतिशेषः यामें नमस्कारात्मक मंगल है ॥ २ ॥

मू०-अन्यच्च ॥ पूरण पुराण अरु पुरुष पुराण परिपूरण बतावैं न बतावैं और उक्तिको ॥ दरशन देतजिन्हें दरशन समुझै न नेति नेति कहैं वेद छाड़ि भेद युक्तिको ॥ योनि यह केशवदास अनुदिन राम राम रटत रहत न डरत पुनरुक्ति को । रूप देहि अणिमाहि गुणदेहि गरिमाहि भक्तिदेहि महिमाहि नामदेहिमुक्तिको ॥ ३ ॥

टी०-जिन रामचंद्र को पूर्णकहे संपूर्ण अठारहौ पुराण,अथवा पूरण कहे जे कछु वस्तु चाहत नहीं शुकादि पुराण स्कंदादि औ पुरुष पुराण लोमस मार्कंडेय आदि ते परिपूर्ण कहे सर्वत्र व्याप्त बतावत हैं और उक्ति कहे कथाको नहीं बतावत अर्थ कि और तर्क नहीं करत श्रीरामचंद्रजी जाकोदर्शन देतहैं ताको फेरि दर्शनकी समुझ ज्ञान नहीं रहति अर्थ जाको रामचन्द्र को दर्शन होतहै सो तिनमें लीन ह्वै जातहै सायुज्य मुक्तिको प्राप्त होतहै अथवा और दर्शन स्त्री पुत्रादिकी समुझ नहीं रहति अर्थ संसार को बंधन मोह छुटिजात है रामरूपही ध्यान में निरखत हैं औ वेद जिनको अनेक भेदसों

गान करि नेति नेतिकहे नाइति नाइतिकहे याही प्रकारकोहै सो न कहे नहीं हम जानत या प्रकार सबभेदकी युक्तिको छोड़ि कहत हैं अर्थ यह कि जिनको प्रमाण वेदऊ नहीं जानत रूपजो रामचंद्र को है सो अणिमा सिद्धिको देतहै औ गुण जेहैं ते गरिमा सिद्धि देतहैं औ भक्ति महिमा सिद्धिको देतिहै औ नाम मुक्तिको देतहै यहजानिकै काव्यरीति में एकई बस्तु को द्वै बारकहौं तौ पुनरुक्ति दूषण होतहै ताको भय छोडिकै मुक्ति की इच्छा करि अनुदिन रोज रोज राम नामको रटतहौं ॥ अर्थीदोषंनपश्यतीतिप्रमाणात् ॥ और अर्थ जा रामनामको पुराणादि परिपूर्ण कहे भुक्ति मुक्त्यादि सब बस्तुसों पूरित अथवा सर्बत्र व्याप्त बखानत हैं सर्बत्ररहतहैं जहां चाहिये तहां लीजिये सबस्थानमें मिलत हैं औ जिननको दर्शन कहे षटशास्त्र तिनकी समुझ नहीं है तिनको रामचंद्र दर्शन देतहैं अति मूर्ख बाल्मीकादि नामहीं के जपसों रामचन्द्र को दर्शन पायो अथवा दर्शन ज्ञान देत हैं नेति नेति कहे नाइति नाइति की संपूर्णार्थ इनहीं से कहे की बाल्मी की से हीन गणिति का यमनादि अनेकन पतितनको राम नामै सिद्धताको प्राप्त कीनहै जाति कुल विद्याके भेदकी युक्तिको छाड़िकै कछू जाति कुल विद्या परनहीं है जोई नामोच्चारण करै सोई सिद्धहोइ या प्रकार वेदकहतहैं अथवा प्रथमहीं को अर्थ जानो जानामकै माहात्म्यको वेद नहीं जानत फेरिनाम कैसोहै रूपसौंदर्य औ अणिमा सिद्धि औ अनेक गुण औ गरिमा सिद्धि औ महिमा सिद्धि औ नाम कहे यश औ मुक्ति को देतहै तौ सौन्दर्य्यादि जे दृष्टफलहैं ते जहाँ देखिये तहाँ राम नामहींके प्रभाव सों जानियो औ मुक्ति अदृष्ट फल हैं ताके अर्थ अंत्य अवस्था में सब राम नाम कहावतहै यहसनातन रीतिचली आवतिहै तासों जानियतहै की मुक्तिको दाताराम नाम छोड़ि दूसरो नहीं है अथवा रूपजो है वेष तामें अणिमादि सिद्धि देतहैं जैसा सूक्ष्म रूप चाहैं तैसो धरैं औ गुणन में गरिमा सिद्धि देतहैं राम नामके जप प्रभावते सबगुण विद्यादि गरू होतहैं औ भक्तिमें महिमा सिद्धि बड़ाई देतहै जोरामनाम जपतहै सो बड़ो भक्त कहावतहै औ नाममें मुक्तिको देत है अर्थ राम भक्तन प्राणिन की मुक्ति जीवन में सब नाम गनतहैं अथवा नाम यश औ मुक्तिको देतहै सो यह कहे ऐसो प्रभाव जानिकै केशवदास जो है सो पुनरुक्ति भय छाड़िकै

अनुदिन रामनामको रटत है या ग्रंथमें रामनाम वस्तु है ताको निर्देश कथनमात्र है तासों वस्तु निर्देशात्मक मंगलहै ३ ॥

मू०—सुगीतछंद ॥ सनाढ्य जाति गुनाढ्य हैं जग सिद्ध शुद्धस्वभाव । कृष्णदत्त प्रसिद्धहैं महिमिश्र पंडितराव ॥ गणेशसो सुत पाइयो बुधकाशिनाथअगाध । अशेषशास्त्र बिचारिकै जिनजानियो मतसाध ॥४॥ दोहा ॥ उपज्यो त्यहि कुल मंदमति, शठकबि केशवदास ॥ रामचन्द्रकी चन्द्रिका भाषाकरी प्रकाश ॥५॥ सोरहसे अट्ठावन कार्त्तिकशुदि बुधवार ॥ रामचंद्रकी चंद्रिका तब लीन्हो अवतार ॥ ६ ॥ बाल्मीकि मुनि स्वप्नमें दीन्हो दरशन चारु ॥ केशवतिनसों यों कह्यो क्यों पाऊं सुखसारु ॥७॥ मुनिश्रीछंद सिद्धिरिद्धि ॥८॥ सारछंद ॥ रामनाम सत्यधाम ॥ ९ ॥ और नामको नकाम ॥ १० ॥

टीका—गुणाढ्यगुणन सों पूरित औ साधु मत उत्तम मत छंद उपजाति है जा छंदमें और और द्वैआदि छंदके चरण होंइ सो छंद उपजाति कहावति है ॥४।५॥ जो मैं तिथि नहीं कह्यों सो बार पदते सात बारहैं तासों सप्तमी तिथि सब कहतें हैं परंतु ज्योतिष के ग्रंथ ग्रहलाघवादि के मतसों कल्पांत अहर्गण किये बुधवार पंचमी और द्वादशी को आवत है सो द्वादशी भद्रा तिथी है और बुधे भद्रा सिद्धियोग होतहै और कार्तिक शुदी एकादशीको विष्णु जागतहैं बिष्णुके जागे के उपरांत ग्रंथारम्भ कऱ्यो तौ चैत्रादि मास गणनासों कार्तिक पर्यंत आठ औ रविवारादि वार गणना सों बुध पर्यंत चारिजोरि द्वादशी तिथि जानो ॥६॥ सुखसार मुक्ति चौवीसयें प्रकाश में रामचंद्र कह्योहै कि जगछूटे सुखयोग तासों जानो ॥ ७ ॥ तीनि छंदकी अन्वय एकहै सिद्धि जो आठ अणिमादिक हैं और सिद्धि संपति औ सत्यको धाम ऐसो जो रामनाम है तासों सुखसार पैहौ सुखसार देवे को और नामको काम नहींहै तौ सिद्धिको धामकहि ऐहिक सुखप्रद जनायो औ सत्तको धामकहि सत्यहि ब्रह्महै तासों ब्रह्मरूप प्रद जनायो अर्थ जीवत में या लोक में सुखद है औ अंतमें ब्रह्मपदप्रदहै ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

मू०केशव– रमणछंद ॥ दुखक्योंटरिहैं ॥ मुनि हरिजुहरिहैं ११ मुनि– तरनिजाछंद ॥ बरणिबेवरणसो ॥ जगत को शरणसो ॥१२॥ प्रियाछंद ॥ सुखकंद है रघुनंदजू ॥ जग योकहै जगबंदजू ॥ १३ ॥ सोमराजीछंद ॥ गुनो एकरूपी सुनो वेदगावैं ॥ महादेव जाको सदाचित्तलावैं॥१४॥कुमारललिताछंद ॥ विरंचि गुणदेखै । गिरा गुणनिलेखै ॥ अनंतमुखगावै । विशेहीनपावै१५

टी०–केशव पूंछ्यो कि लोभ मोहादि कृत जो दुःख है सो कैसे टरिहै तब मुनि कह्यो कि जब तू रामनाम ग्रहण करिहै तब रामचन्द्र हरिहैं छोड़ाइहैं इहां हरिशब्द यासों कह्योकि हरतिदुःखमिति हरिः अर्थ दुःख हरिबो उनके नामहींको अर्थ है॥११॥दुःख छोड़ाई रामचंद्र मुक्ति देहैं यानिश्चय के अर्थ रामचंद्रको ईश्वरत्व केशवको मुनि चारिछंदमें देखावत हैं जो जगत्को शरण रक्षक है सो बरण रूप राम रूप अथवा रामनामांक तुम करिकै बर्णिवे हैं अर्थ रामचंद्र को रूप अथवा राम नाम वर्णन करौ ॥ १२ ॥ सब जग कहत है की रघुनन्दन जे रामचन्द्र हैं ते सुखके कंद कहे मूलहैं इनहीं के आश्रित सबसुख हैं औ जग वंद्यहैं सब जग जिनको बंदना करत हैं सुखकंद कहि याजनायो की सुखसार रामचंद्रही सों पाइ है और देव देवेको समर्थ नहींहैं ॥१३॥ जिन रामचन्द्रको वेद जोहैं सो एकरूपी कहे जो सदा एकरूप रहतहैं ब्रह्मज्योति जासों गुन्योकहे ठहरायोहै सो गान करत हैं सो हम वेद वाक्य सों सुन्यो है अथवा एककहे जिन सम दूसरो नहींहै औ रूपीकहे अनेक रूपसों सर्वत्र व्याप्त हैं फिरि कैसे हैं जिनको महादेव सदा ध्यावते हैं ॥ १४ ॥ यामें रामचंद्र के गुणनको माहात्म्य है अनंत शेष विशेष निर्णय ॥ १५ ॥

मू०नगस्वरूपिणीछंद ॥ भलोबुरोनतूगुनै । वृथाकथाकहैसुनै ॥ नरामदेवगाइहै । न देवलोक पाइहै ॥१६॥ षट्पद ॥ बोलिनबोल्यो बोल दयोफिरि ताहि न दीन्हो । मारिनमारयोशत्रुक्रोधमनवृथानकीन्हो ॥ जुरिन मुरे संग्राम लोककीलीक नलोपी । दान सत्य सन्मान सुयश दिशिविदिशा ओपी ॥ मन

लोभ मोहमदकामवशभये न केशवदास भणि । सोइ परब्रह्म श्रीरामहैं अवतारी अवतार मणि ॥ १७ ॥ दोहा ॥ मुनिपति यहउपदेशदै, जबहीं भयो अदृष्ट ॥ केशवदास तहीं करयो, रामचन्द्रजू इष्ट ॥ १८ ॥

टी०—तू अनेक कथा वृथा कह्यो सुनो करत है आपनो भलो बुरो नहीं गुनतो बिचारतो जबलौं जैसो पूर्व कहि आये ऐसे रामदेव को न गाइ है तबलौं अनेक कथन सों देवलोकनपैहै इहाँ देवलोक वैकुंठ जानो वैकुंठ देवे की शक्ति रामचन्द्रही में है और देव नहीं देसकत कहूं न रामलोक पाइ है पाठ है तौ रामलोक वैकुंठ ॥१६॥ प्रथम ईशत्व वर्णन कर्‍यो अब यामें रामचंद्र को स्वभाव गुण बरण्यो है रामचन्द्रजू जो बोले सो फेरि नहीं बोले अर्थ जो एकबात कह्यो सोई करयो है फेरि बदलि कै और बातनहीं कह्यो बन गमनादि वचन ते जानो औ जाको दान दियो ताको फेरि वही दीन्हो अर्थ एकही बार ऐसो दियो जामें वाके फेरि माँगिवेकी इच्छा नहीं रही विभीषणादि को लंकदानादि ते जानो औ शत्रुको एकही बार ऐसा मारिकै नाश कियो जामें फेरि नहीं मारिवे पर्‍यो खरदूषण रावणादि वधते जानो औ संग्राम में जरिकै नहीं मुरे खरदूषण रावणादि के युद्धते जानो औ लोक की लीक मर्यादा को लोप नहीं कियो रावण के वधसों ब्रह्मदोष मानि अश्वमेध करणादि सों जानो औ दान औ सत्य औ सन्मान के सुयश करिकै दिशा औ विदिशा ओपी हैं अर्थ जिनको सुयश दिशि विदिशन में छाइ रह्यो है औ जिनको मन लोभ औ मोह औ मद औ काम के वश नहीं भयो राज्य त्यागादि सों लाभ विवशजानी माता पिताको दुःखितहुये देखि बन गमन करनादि सों मोह विवश जानो औ अगस्त्यादि ऋषिनके यथोचित सत्कार सों मद विवश जानी एक पत्नी व्रतसों काम विवश जानो जाके ऐसे स्वभाव गुणहैं सोई श्रीराम वाराहादि अवतारन में मुनिश्रेष्ठ अवतारी कहे अवतार को धरे साक्षात्परब्रह्म हैं अथवा श्रीराम अवतारी कहे अनेक अवतारन को धरत हैं औ परब्रह्म हैं ॥ १७॥ अदृष्ट अंतर्द्धान इष्टपूज्य देवता ॥ १८ ॥

मू०गाहाछंद ॥ रामचंद्र पदपद्मं वृन्दारक वृंदाभिवंदनीयं ॥ केशवमतिभूतनया लोचनंचंचरीकायते ॥१९॥ चतुष्पदीछंद ॥ जिनको यशहंसा जगत प्रशंसा मुनिजन मानसरंता । लोचन अनुरूपनी श्याम स्वरूपनि अंजन अंजित संता ॥ कालत्रय-दर्शी निर्गुणपर्शी होत विलंब न लागै । तिनके गुण कहिहौं सब सुखलहिहौं पाप पुरातन भागै ॥ २० ॥

टी०—वृंदारक जे देवताहैं तिनके वृंदसमूह तिन करिकै अभिवंदनीय अर्थ जिनको अनेक देवता वन्दना करतहैं ऐसे जे रामचंद्र के पदपद्म पदकमल हैं तिन प्रति केशवदास की मतिरूपी जो भूतनया सीता हैं ताके लोचन चंचरीकाय ते कहे चंचरीक भ्रमर के ऐसे आचरण करत हैं अर्थ जब मुनि की आज्ञा सों रामचंद्र को इष्टदेवता कऱ्यो तब सीता सम सदा रामनिकट वर्तिनी हमारी मति के लोचन कमलमें भ्रमर सदृश रामचन्द्र चरण में अनेक कौतुक करने लगे ॥१९॥ मानस मानसर औ मन आय आपने लोचननके अनुरूप कहे योग्य और के लोचनके योग्य कज्जलादि अंजन हैं संतन के लोचनन के योग्य रामरूपही है ऐसे जे जिन रामचंद्र के अनेक प्रतिबिंब श्यामस्वरूप रूपी अंजन हैं तिनकरि जे संत अंजित हैं अर्थ रामचन्द्र के प्रतिबिंब रूपनको जे संत जन ध्यान में आनत हैं अथवा श्याम स्वरूपनि कहे श्यामरूपता रूपी जो अंजन है ता करिकै जे संत अंजित हैं तिन संतनको त्रिकालदर्शी औ निर्गुण पर्शी नेत्रन करि ज्योति स्पर्श करै या अर्थ ब्रह्मज्योति के द्रष्टा होत वेर नहीं लागति जे रामचंद्रको ध्यान करत हैं ते त्रिकालदर्शी होत हैं औ ब्रह्मज्योति को देखत हैं इति भावार्थः ॥ अथवा निर्गुणपर्शी होत कहे निर्गुणज्योति में मिलिजात वेर नहीं लागति अथवा निर्गुणते पर अन्य विष्णुकी श्रीशोभा होत वेर नहीं लागति पुरातन पूर्व कृत ॥ २० ॥

मू०—दोहा ॥ जागति जाकी ज्योति जग,एकरूपस्वच्छंद ॥ रामचंद्रकी चन्द्रिका, बरणतहौं बहुछंद ॥२१॥ रोलाछंद ॥ शुभ सूरजकुल कलशनृपति दशरथ भये भूपति ॥ तिनके सुतभये

चारि चतुर चितचारुचारुमति ॥ रामचंद्र भुवचंद्र भरत भारत भुवभूषण । लक्ष्मण अरु शत्रुघ्न दीहदानव दलदूषण ॥ २२ ॥ घत्ताछंद ॥ सरयूसरिता तट नगर बसै अवध नाम यश धामध-र ॥ अघओघ विनाशी सब पुरबासी अमरलोक मानहुं नगर२३

टी०—ज्योति ब्रह्मज्योति अथवा अंगछबि औ बहु छंद कहे अनेक रंगतौ जा रामरूपी चन्द्रकी ज्योति तौ एक रूप है ताकी चन्द्रिका अनेक रंगहै वो आ-श्चर्य है यह युक्ति है औ अर्थ यह की बहुत छंद जे दोहादि हैं तिनसों युक्त ॥२१॥ सूर्य कुलके कलश जे नृपति अजादि हैं तिनमें दशरथ भूपति राजा भये भारत भरतखंड ॥२२॥ यश को धाम कहे घर हैं धरा पृथ्वी जाकी औ जा पुरी के वासी देवतन सरिस अघपापन के ओघ समूहन के विनाशी हैं तासों देवलोक सम है ॥२३॥

मू०—छप्पै ॥ गाधिराज को पुत्र साधिसब मित्र शत्रुबल । दान कृपान विधान वश्य कीन्हो भुवमंडल ॥ कैमन अपने हाथ जीति जग इंद्रिय गन अति । तपबल याही देह भये क्षत्रिय ते ऋषिपति ॥ तेहि पुर प्रसिद्ध केशव सुमति काल अतिता गतनिगुनि । तहँ अद्भुत गति पगु धारियो विश्वामित्र पवित्र पुनि ॥२४॥ प्रज्झटिछंद ॥ पुनि आये सरयू सरित तीर । तहँ देखे उज्ज्वल अमलनीर । नव निरखि निरखि द्युति गति गँभीर । कछु बरणन लागे सुमति धीर ॥२५॥ अति निपट कुटिल गति यदपि आय । वह देत शुद्ध गति छुवत आय ॥ कछु आपुन अध अध गति चलंति । झलपति तन को ऊरध फलंति ॥२६॥ मदमत्त यदपि मातंग संग । अति तदपि पतित पावन तरंग ॥ बहु न्हाइन्हाइ जेहि जल सनेह । सब जात स्वर्ग सूकर सुदेह ॥२७॥

टी०—त्रिकाल दरशीत्व ते जेतो कालबीते रामचन्द्रको अवतार होनो रहै सो काल अतीतकहे बीतो गुनिकै औ जाकालमें रामचन्द्रजू यज्ञरक्षा करन ला-

यक भये सो काल आगत आयो गुनिकै ॥२४॥२५॥ दुवौछंदन में बिरोधा-भास है आप कहे अपना औ आप कहे जल के छुवतही शुद्धगति मुक्ति देत है अथवा जाके जलको कहूँ अनतहूँ छुवौ तौ शुद्धगति देतहै ऊरधपद ते स्वर्ग जानो ॥२६॥ मद मदिरा सों मत्त यद्यपि मातंग चाण्डालनको संग है विरुद्धार्थः ॥ मातंगःश्वपचीहस्तीत्यभिधानचिंतामणिः ॥ औ मत्तगज जा-में स्नान करते हैं इत्यविरोधः पतितपावन कहे पतितन को पवित्र कर्ता स्नेह सों ताके जलमें न्हाइन्हाइकै शूकरपर्यंत बहु प्राणी सुंदर देह को धरि सब स्वर्ग जातहैं अथवा सनेह कहे अप्सरादिकनके इति शेषः ॥ स्नेहसहितअर्थ अप्सरादि स्नेह सहित ताको स्वर्ग लैजाती हैं अथवा तेहिके जलके स्नेहहू सों कहूं होइ सरयू जलमैं स्नेह करै स्वर्गजाइ कहूं सदेहपात है देह सहित स्वर्ग जाइ अर्थ याही देहमें देव रूप ताको प्राप्त ह्वै जातहैं जिनको देहत्यागहू को कष्ट नहीं होत इति भावार्थः अथवा शूकर देह सहित जे जीव हैं ते स्वर्ग जातहैं और देहधारी तौ जातहीहैं ॥ २७ ॥

मू०—नवपदीछंद ॥ जहँतहँलसत महामदमत्त। वर वारन वारन दलदत्त। अंग अंग चरचे अति चंदन। मुंडन भुरके देखिय बंदन ॥२८॥ दोहा ॥ दीह दीह दिग्गजन के, केशव मनहुँ कुमार ॥ दीन्हे राजा दशरथहि, दिगपालन उपहार ॥२९॥ अरिल्लछंद ॥ देखि बाग अनुराग उपज्जिय। बोलत कलध्वनि कोकिल सज्जिय ॥ राजति रति की सखी सुवेषनि । मनहुं बहति मनमथ संदेशनि ३० ॥

टी०—ग्रामबाहर जहाँतहाँ महावत हाथिनको फेरतहैं तिनका बर्णन है सुमावोक्ति है अथवा स्थान पर बँधे हैं वारन हाथी तिनके दल चमू को अकेलेई दलि डारत हैं यासों अतिबली जानो अथवा बार कहे बेर नहीं लागति शत्रुदलको दलि डारत हैं भुरके लगाये चन्दन रोरी ॥२८॥ दिग्पालइन्द्रादि उपहार भेंट ॥२९॥ कल अव्यक्त मधुर ॥ ३० ॥

मू०फूलि फूलि तरु फूल बढ़ावत। मोदत महा मोद उपजावत। उड़तपरागन चित्तउठावत। भ्रमरभ्रमतनहिं जीवभ्रमा-

वत ॥३१॥ पादाकुलकछंद ॥ शुभ सर शोभै मुनिमन लोभै । सरसिज फूले अलि रस भूले ॥ जलचर डोलैं बहुखग बोलैं । बरणिन जाहीं उर अरुझाहीं ॥३२॥ चतुष्पदीछंद ॥ देखीबनवारी चंचलभारी तदपि तपोधन मानी । अति तपमय लेषी गृहथितपेषी जगत दिगंबर जानी ॥ जग यदपि दिगंबर पुष्पवती नर निरखि निरखि मन मोहै । पुनि पुष्पवतीतन अति अति पावन गर्भ सहित सभ सोहै ॥ ३३ ॥

टी०—मोदतकहे सुगंधको पसारत॥३१॥३२॥ द्वैछंदको अन्वय एक है बनवारी कहे उपवन औ श्लेषते बनकी वारी कुमारी कुमारी पक्ष बिरोध है वाटिका पक्ष शुद्धार्थ है बिरोधाभास अलंकार है चंचल स्वभाव चंचल औ वायु योग सों चंचलहैं पत्तजाभारी कहे गरुहै देह जाकी औ दीर्घवृक्ष युक्त तपोधन तपस्विनी औ तपस्वी सम शीतघाम तोय दुख सहतिहै गृहघर औ परिखाछार दिवालीति दिगंबर वस्त्र रहित दुवौ पक्ष में पुष्पवती रजो धर्मिणी औ प्रफुल्लित तन अति कहे स्थूलकाय औ बहुत भूमि में बिस्तार है जाको अति पावन पवित्र अति दुवौ पक्ष मैं गर्व सहित गुर्बिनी औ फलगर्भ सहित यासों सदा फलोत्पत्ति जनायो रति रस सुरत औ प्रीति जग जन लीना अनेक पुरुष भोगिनी परकीयाइति । औ जगके जनन करिकै युक्त अर्थ अति सुख पाइ जग जन बैठत हैं जामें प्रवीना दोष रहित औ सर्वोत्तमा नवीनापाठ होइ तौ नवोढा औ नूतनयनि आपनो पुरुष औ राजा सौंपीपति की और स्त्री औ राजपत्नी ॥ ३३

मू०—पुनिगर्भ संयोगी रतिरस भोगीजग जनलीनकहावै । गुणि जग जललीना नगरप्रवीना अतिपतिके चितभावै । अति पतिहि रमावै चित्त भ्रमावै सौतिन प्रेम बढ़ावै । अबयोंदिनरातिन अद्भुतभांतिनकविकुल कीरतिगावै ॥३४॥ हाकलिकाछंद ॥ संग लिये ऋषि शिष्यन घने । पावक सेतपतेजनिसने ॥ देखत सरिता उपबनभले । देखन अवधिपुरी कहँ चले

॥३५॥ मधुभारछंद ॥ ऊँचे अवास । बहु ध्वज प्रकाश ॥ शोभा बिलास । शोभै प्रकाश ॥३६॥ आभीरछंद ॥ अति सुंदर अति साधु । थिर न रहत पल आधु ॥ परम तपोमय मानी । दंड धारिनी जानि ॥३७॥ हरिगीत छंद ॥ शुभद्रोण गिरिगण शिषर ऊपर उदित औषधिसी गनौ । बहु वायु बश वारिद बहोरहि अरुझि दामिनि द्युतिमनौ ॥ अति किधौं रुचिर प्रताप पावक प्रगट सुरपुर की चली । यहकिधौं सरित सुदेस मेरी करोदिवि खेलति भली ॥ ३८ ॥

टी०—उपवन वाटिका ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ अवास पर ॥३६॥ दंडधारिणी हैं दंडिन के ब्रत को धरे हैं दंडी दंड धरे रहते हैं ये दंड कहे ध्वजदंड धरे हैं कैसो है ध्वजा औ दंडी अति सुंदर हैं सुवस्त्र रचित औ तपतेज करिभव्यरूपहैं साधुराग द्वेषरहित दुवौहैं थिरनरहत वायुजोगसों चंचलरहती हैं औ अनेक तीर्थनमें फिऱ्यो करतहैं औ परमतपोमय हैं सदा शीत घाम तोयसहती हैं औ प्राणायामादि अनेकतप करत हैं औ अर्थ बिरोधाभास है बिरोधार्थ अतिसाधु हैं औ पल आधु थिर नहीं रहती तौ साधुबिषे चंचलता बिरोध है औ परम तपोमय कहे बड़े तपको करती हैं औ दंडधारिणी हैं दंडकहे राजदंड डांड़ इति धारण करता है लेता है तौ तपस्वीको दंडलेबो बिरोधहै अविरुद्धार्थ प्रथमको ते जानो ॥३७॥ द्रोणगिरि सदृश मंदिर है शिखर अग्रभाग औषधि सरिस कऱ्यो तासों अरुण पताका बर्णन जानो औ की दामिनी बिजुलीकी द्युतिहैं अरुझि रही हैं तिनको बारिदके बश्यहै अर्थ बारिद की आज्ञासों बायुबह कहे अनेक प्रकारसों बहोरत है मेघनके पास लैजायो चहतहै यासों मंदिरनकी अति उच्चता जनायो प्रताप पावक रघुबंशिन को इतिशेषः याप्रकार अरुणयता का पंक्ति को बर्णन करि यह पदसों दूसरी श्वेतपताका पंक्तिको अवलोकि बर्णन लगे सो जानो मेरीकरी कहे बनाई बिश्वामित्र सृष्टिकरन लागे हैं तब नदी बनायोहै सो आकाशमें है पुराणोक्त है कवि प्रियाहूमें कह्योहै की । ऊँचे ऊँचे अटनि पताका अति ऊंची जनु कौशिक की कीन्ही गंगा खलैये तरल तर । अथवा मेरीकहेह-

मारी भगिनीभगिनीतिशेषः । दिवि कहे दिव्य रूप कहे खेलतिहै आकाश-
में कौशिकी नदीहै सो विश्वामित्रकी भगिनीहै ॥ ३८ ॥

मू०--दोहा ॥ जातिजीतिकीरतिलई, शत्रुनकी बहुभांति ॥
पुर पर बाँधी शोभिजै, मानों तिनकी पांति ॥ ३९ ॥ त्रिभं-
गी छंद ॥ सम सब घर सोभैं मुनि मन लोभैं रिपुगण छो-
भैं देखि सबै । बहु दुंदुभि बाजैं जनु घन गाजैं दिग्गज
लाजैं सुनत जबै ॥ जहँतहँ श्रुति पढ़हीं विघन न बढ़हीं जै
जस मढहीं सकल दिशा । सबई सब बिधि छम बसत यथा
क्रमदेव पुरी सम दिवस निशा ॥ ४० ॥

टी०--ताहीश्वेतपताका पंक्तिमें फेरि तर्केहै ॥ ३९ ॥ द्वै छंदको अन्वय एकहै
क्षोभैहैं डरतहैं हम समर्थ राति उदिन देवपुरी सम है यामें श्लेषार्थ हूहै कैसी देव-
पुरी औ अयोध्या है सम बराबरिहै दिनराति जामें घटत बढ़त नहीं छा महीना
उत्तरायण दिन रहत है दक्षिणायन राति रहति है औ समहै तुल्य आनंद
दायक है रातिउ दिनजामें रात्रिहूको चौरादिको भय नाहीं होत और अर्थ
दु वोपक्षएकही है ॥ ४० ॥

मू०-- कविकुल विद्याधर सकल कलाधर राजराजवरबेष
बने । गणपति सुखदायक पशुपति लायक शूर सहायक कौन
गने ॥ सेनापति बुधजन मंगल गुरु गन धर्मराज मन बुद्धि घनी ।
बहु शुभ मनसाकर करुणामय अरु सुरतरंगिनी सोभसनी ४१ ॥

टी०-- फेरि कैसी है देवपुरी कवि शुक्र औ कुल कहे समूह विद्याधर-
नके विद्याधर देवयोनि विशेष हैं औ सकल कलाधर चंद्रमा औ राजराज
कुबेर ये सब पवरद कहे सुंदरवेष कहे रूपसों बनेहैं औ सुखदायक जो ग-
णपति गणेश हैं औ लायक कहे श्रेष्ठ पशुपति महादेव हैं औ सूर कहे सूर्य
और जे इन्द्र सहायक कामादि हैं तिन्हैं को गनै अर्थ की अनेक हैं सेना-
पति स्वामिकार्त्तिक औ बुधजन चन्द्र पुत्रजन पद इहाँ स्वरूपको बाची है
औ मंगल भौम औ गुरु बृहस्पति औ गणकहे गणदेवता ॥ आदित्य वि-

श्ववसवस्तुषिता भास्वरानिलाः महाराजिक साध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः इत्यमरः ॥ औ मनमें बुद्धि है घनी जिनके ऐसे धर्मराज कहे यमराज हैं बहु शुभयुक्त हैं मनसाकर कहे कल्पवृक्ष औ करुणामय कहे विष्णु औ सुरतरंगिनी आकाशगंगा इन सबकी शोभा सों सनीहै अर्थ ये सब बसत हैं यामें अयोध्या कैसी है कवि काव्यकर्त्ता वाल्मीकि सदृश औ विद्या चतुर्दश ॥ अंगानि वेदाश्चत्वारो मीमांसान्यायविस्तरः ॥ पुराणं धर्मशास्त्रंच विद्याश्चैताश्चतुर्दशाः ॥ इतिमनुः ॥ अथवा धनुर्विद्यादि तिनके धर्त्ता औ सकल कहे चौंसठिहू कलानके धर्त्ता औ राजराज कहे बड़े राजा ते वरवेषसों बनेहैं अनेक राजा राजादशरथकी सेवामें हाजिरपुरीमें वसे रहतहैं औ सुखदायक गणपति कहे यूथप औ लायक श्रेष्ठ पशुपति गोपालादि अथवा गजादि औ सहायक कहे जे सबकी सहाय करत हैं ऐसे जे शूरयोधा हैं तिन्हैंको गनै बहुत हैं औ सेनापति चमूनाथ बुधजन पंडित औ मंगल कहे मंगल पाठी औ गुरुगण वशिष्ठादि अथवा मंगल कर्ता जे गुरुगण वशिष्ठादि हैं औ मनमें बुद्धि है घनी जाके ऐसो धर्मराज कहे न्यायदर्शी है कोतवालेति औ बहुत प्राणी शुभ जो मनसा मनोभिलाष है ताके करनहार हैं अर्थ मनोरथके दाता हैं औ बहुत करुणामय कहे दयाशील हैं औ सुरतरंगिनी सरयू इनकी शोभा सों सनी है अर्थ इन सबसों युक्त है ॥ ४१ ॥

मू०– हीरकछंद ॥ पंडितगण मंडितगुण दंडित मति देखिये । क्षत्रिय बर धर्म प्रवर क्रुद्ध समर लेखिये ॥ वैश्य सहित सत्य रहित पाप प्रगट मानिये । शूद्र सकति विप्र भगति जीव जगत जानिये ॥ ४२ ॥

टी०– पंडित पदते ब्राह्मण जानौ ते अनेक गुण जे शास्त्रादि हैं तिनसों पंडित युक्त हैं औ दंडित है सक्षित है मति जिनकी अर्थ सत मति सों युक्त हैं औ क्षत्रिय क्षत्र धर्म करिकै प्रवर बली हैं औ समरहीमें क्रोधकरत हैं औ वैश्य बनिआं सत्य सों युक्त हैं औ पापसों रहित हैं औ शूद्रन के जीव में ब्राह्मण की भक्तिज्ञ गति है ताही में तिनकी शक्तिबल जानियतहै अर्थ शूद्रभक्ति युक्त ब्राह्मणनकी सेवा करत है अथवा शूद्रनके

जीवमें शक्ति कहे देवी औ विप्रकी भक्ति जगतिहै शूद्रनकोदेवी औ ब्रा-ह्मणनकी उपासवासना उचित है या प्रकार आपने आपने धर्म सों युक्त चारौ वर्ण बसत हैं यामे ॥ ४२ ॥

मू०– सिंहविलोकित छंद ॥ अति मुनितन मन तहँ मो-हि रहयो । कछु बुधिबल बचन न जाइ कहयो ॥ पशुपक्षि नारिं नर निरखि तबै । दिन रामचन्द्र गुण गनत सबै ॥ ॥ ४३ ॥ मरहट्टाछन्द ॥ अतिउच्च अगारनि बनी पगारनि जनु चिंतामणि नारि । बहुशत मख धूपनि धूपित अंगनि हरिकीसी अनुहारि । चित्रीबहु चित्रनि परम विचित्रनि के-शवदास निहारि । जनु विश्वरूप को अमल आरसी रची विरंचि बिचारि ॥ ४४ ॥ सोरठा ॥ जगयशवन्तविशाल, रा-जा दशरथकी पुरी ॥ चंद्रसहित सबकाल, भालथली जनु ईशकी ॥ ४५ ॥

टी०– दिनकहे दिनप्रति ॥ ४३ ॥ बहुत जे अतिउच्च अपार घरहैं बहु पदको संबंध सर्वत्र है तिनकी जे बनी पगार परिखा हैं छार देवालीति कहूं शिरबंदी कहतहैं तिनमें लगी अनेक पुर कौतुक देखिवेको चिंतामणि सदृश नारी स्त्री ठाढ़ी हैं चिंतामणि सदृश जिनको देखि मनोभिलाष पूरे होत हैं या प्रकारके स्त्रीभवन हैं औ बहुत वरसत कहे उत्तम जे मख यज्ञहैं तिनके धूपन कहे धूमन करिकै धूपित अंगनिसों युक्त हैं ते हरिवि-ष्णुके अनुहारि हैं अर्थ श्यामरूप हैं ऐसे यज्ञशाला हैं औ बहुत घर पर-म विचित्र कहे अद्भुत चित्रनिसों चित्रित हैं तिन्हैं मानों विरञ्चि ब्रह्मा बि-चारि एकाग्र चित्त करिकै विश्वरूप जो संसार है अथवा विराटरूप ताकी आरसी ऐनाबनायो है जैसे ऐनामें बिम्ब सदृश प्रतिबिम्ब देखि परतहै तै-से संसारमें जो वस्तु है सो सब मंदिरनमें चित्रित है ऐसे चित्रशाला हैं पुरीमें पैठितिन्हैं विश्वामित्र निहारि कहे देखत भये ॥ ४४ ॥ जगमें वि-शाल सुंदर औ यशवंत कहे यशयुक्त जो राजा दशरथकी पुरी है सो सब-

काल चन्द्रमा सहित मानौ ईश महादेवकी भालथली है चन्द्र सरिस यश है विशाल दुवौ हैं यासों सदा निष्कलंक यशयुक्त पुरीको जनायो ॥ ४५ ॥

मू०– कुंडलिया ॥ पंडितअति सिगरीपुरी, मनहुं गिरागति गूढ़ । सिंहनि युत जनु चंडिका, मोहति मूढ अमूढ ॥ मोहति मूढ अमूढ, देव सँग दितिसो सोहै । सब सिंगार संदेह, मनोरति मन्मथ मोहै ॥ सब सिंगार सदेह, सकल सुख सुखमा मंडित । मनोशची विधिरची, विविधि विधि बरणत पंडित ॥ ४६ ॥

टी०– सिगरी पुरी अति पंडित है अर्थ पुरीके निवासी जनसब पंडित हैं यासों मानोगति कहे दशाहै गूढ़ जाकी अर्थरूप पुरी है आपनी दशाको छपाये मानोगिरा सरस्वतीहैं गिराहूके आसतजन अतिपंडित होतहैं अथवा मनहूंको औ गिराकहे वचननहूंकी गति है गूढ़जाकी अर्थ जाकीदशाको अंतमन वचन नहीं पावत चंडिकाको सिंहवाहन है औ विकराल रूपदेखि मूढ़ औ अमूढ़के भयसे मोह होत है पुरी पुरुष सिंहन सों युक्त है औ अति विचित्र शोभा निरखि मूढ़ अमूढ़ के आनंदसे मोह होत है अदितिके देवता पुत्र हैं तासों संगमें देव रहत हैं इहाँ अदिति पदकी अकार को लोपहै भाषाके कविन को नियम है कहूं अकारादि पदकी अकारको लोपकरि डारतहैं यथा बिहारी कृत सप्तसतिकायां । अधिकअंधेरो जगकरैं, मिलिमावस रविचंद । अथवा दिति दैत्यमाता सम है जैसे दितिसों बड़ेबीर दैत्यभये हैं तैसे अयोध्याहूमें अनेक वीर उत्पन्न होतहैं रतिमन्मथ कामकी स्त्रीहै तासों मनको मोहति है पुरी शोभा सों कामहूको मन मोहति है तासों अति शोभा युक्त जानौ शची इन्द्राणिहूं राज्यादि सबसुख औ सब सुखमा शोभासों मंडित है औ अनेक विधिसों पंडित बरणन करत हैं ऐसी पुरीहू है अथवा सुखमासों मंडित युक्त सकल जे सुख हैं तिनसों सची कहे संचित पूँजी भूत मानौ विधातैं रच्यौ है अर्थ पूर्ण सुख औ पूर्ण शोभा एकत्र करिताही को पुरी बनायो है ४६ ॥

मू०— काव्यछंद ॥ मूलनहींकोजहांअधोगतिकेशवगाइय । होमहुताशनधूमनगरएकैमलिनाइय ॥ दुर्गतिदुर्गनहीं जोकुटिलगतिसरितनहीमें । श्रीफलकोअभिलाषप्रगटकविकुलके जीमें ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ अतिचंचलजहँचलदलै,विधवाबनीन नारि ॥ मनमोहयोऋषिराजको,अद्भुतनगरनिहारि ॥ ४८ ॥ सोरठा ॥ नागरनगरअपार, महामोहतमभित्रसे । तृष्णालता कुठार,लोभसमुद्रअगस्त्यसे ॥ ४९ ॥ दोहा ॥ विश्वामित्रपवित्रमुनि,केशवबुद्धिउदार॥ देखतशोभानगरकी,गयेराजदरबार ॥ ॥ ५० ॥ इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांविश्वामित्रस्याऽयोध्यागमनंनामप्रथमःप्रकाशः ॥ १ ॥

टी०— मूलजर अधोगति नर्क औ नीचेको गति गमन हुताशन अग्नि दुर्गति नर्क औ दुष्करि कहेगति जिनमें कुटिलता इति श्री फलद्रव्य औ बिल्वफल कुचनकी उपमा देवेको परि संख्यालंकार है ॥ ४७ ॥ चलदल पीपर वृक्षवनी बाटिका सोई विधवा है याहूमें परि संख्या हैं ॥ ॥ ४८ ॥ नागर प्रवीण मित्र सूर्य जो सदा सब वस्तु पाइवेकी इच्छाहै सो तृष्णा जानौ औ जो कछूवस्तु देखि सुनिकै इच्छा चलै सो लोभ जानौ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ इति श्रीमज्जगज्जननिजनकजानकी जानकीजानिप्रसादायजन जानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां प्रथमःप्रकाशः ॥ १ ॥

मू०— दोहा ॥ या दूसरे प्रकाशमें, मुनि आगमन प्रकाश ॥ राजासों रचना बचन, राघव चलन बिलाश ॥ १ ॥ हंसछंद ॥ आवत जात राजके लोग । मूरति धारी मानहुं भोग ॥ २ ॥ मालतीछंद ॥ तहँदरबारी । सबसुखकारी ॥ कृतयुग कैसे । जनुजन वैसे ॥ ३ ॥ दोहा ॥ महिष मेष मृग वृषभ कहुं, भिरत मल्ल गजराज ॥ लरत कहूं पायक नटत, बहु नर्तक नट-

राज ॥ ४ ॥ समानिका छंद ॥ देखि देखिकै सभा । विप्र मोहियो प्रभा ॥ राज मंडली लसै । देवलोकको हँसै ॥ ५ ॥ मल्लिकाछंद ॥ देशदेशके नरेश । शोभिजैसबैसुवेश ॥ जानियेनआदिअंत । कौनदासकौनसंत ॥ ६ ॥ दोहा ॥ शोभितबैठे तेहिसभा, सातदीपकेभूप ॥ तहँराजादशरथलसै, देवदेव अनुरूप ॥ ७ ॥ देखितिन्हैतबदूरिते, गुदरानोप्रतिहार ॥ आयेविश्वामित्रजू, जनु दूजोकरतार ॥ ८ ॥ उठिदौरेनृपसुनतहीं, जाइगहेतबपाइ ॥ लैआयेभीतरभवन, ज्योंसुरगुरुसुरराइ ॥ ॥ ९ ॥ सोरठा ॥ सभामध्यबैताल, ताहिसमयसोपढिउक्यो ॥ केशवबुद्धिबिशाल, सुंदरसूरोभूपसो ॥ १० ॥

टी०– ॥ १ ॥ २ ॥ कृतयुग सत्ययुग ॥ ३ ॥ मल्ल बाहु युद्धकर पायक पटेवाज नटतकहे नाचत हैं नर्तक नृत्यकारी ॥ ४ ॥ ५ ॥ जहाँ सिंहासनमें राजा दशरथ बैठे हैं सो आदिहै तहाँते जहाँ पर्यंत दरबारी बैठेहैं सो अंत है सो आदिते अंततक दरबारिनमें कौनदासकहे सेवकहै औ कौनसंतकहे स्वामी है यहनहीं जानियतअर्थसब दरबारी राजसाज सँवारे हैं । सद्विद्यमाने सत्येच प्रशस्तार्चित साधुषुइतिअभिधानचिंतामणिः । इहाँ अर्चितपदको पर्य्याय स्वामीजानौं ॥ ६ ॥ देवदेव इंद्र ॥ ७ ॥ गुदरानो जाहिर कियो करतार ब्रह्मा ॥ ८ ॥ ९ ॥ बेताल भाट ॥ १० ॥

मू०– बैतालाघनाक्षरी ॥ बिधिकेसमानहैंबिमानीकृतराज हंस बिबिधिबिबुधयुतमेरुसोअचलहै । दीपतिदीपातिअतिसातोंदीपदीपियतु दूसरोदिलीपसोसुदक्षिणाकोबलहै । सागरउजागरकीबहुबाहिनीकोपति छनदानप्रियकिधौंसूरजअमलहै । सबविधिसमरथराजैराजादशरथ भगीरथपथगामीगंगाकेसोजलहै ॥ ११ ॥ दोहा ॥ यद्यपिईंधनजरिगये,अरिगणकेशवदास ॥ तदपिप्रतापानलनके पलपल बढतप्रकाश ॥ १२ ॥ तोमरछंद ॥

बहुभांतिपूजिसुराई । करजोरिकैपरेपाई ॥ हँसिकैकरयोऋषिमित्र । अबबैठराजपवित्र ॥ १३ ॥ मुनिसुनिदानमानसहंस । रघुबंसकेअवतंस ॥ मनमाँहजोअतिनेहु । यकबातमांगेदेहु ॥ १४ ॥

टि०—बिमानी कृत कहे बाहनी कृत हैं राजहंस जिन करिकै ब्रह्माको हंसवाहन है और राजा विमानीकृत कहे मानरहित किये हैं राजनकेहंस जीवजिन करिकै अथवा विमानीकृत वाहनी कृत हैं राजनके हंसजीव जिन करिकै अर्थशत्रु भय सों मित्र प्रेम सों मन में चढाये रहत हैं विबुध देवता औ पंडित दिलीप की स्त्रीको सुदक्षिणा नाम रह्यो ताके पातिब्रत को बलरहो औ सुष्टजो दक्षिणा दानद्रव्य है बाहिनी नदी औ चमूछणदारा त्रिनहौ हेप्रिय जाकी सूरजके अमलमें अर्थ सूर्यके प्रकाश में रात्रीको नाश होत है अथवा छनदान कहे जलांजलिदान औ क्षणक्षण प्रतिहै दानहीं प्रिय जिनको क्षण क्षण में दान दीवो करत हैं गंगाजल सगर के सुतन के तारिवेको भगीरथके पीछे पीछे आयौ है औ राजा कुल पंथ गामी हैं श्लेष धर्मोपमा है कोऊ परंपरितरुपक कहत हैं ॥ ११ ॥ १२ ॥ ऋषिनमें मित्र सूर्य सम हैं ॥ १३ ॥ दानरूपी जो मानस मानसर है ताके तुम हंस हौ अर्थ दानहीं में है बिहार जिनको बडेदाता हौ अवतंस कर्णभूषण ॥ १४ ॥

मू०— राजा—अमृतगतिछंद ॥ सुमतिमहामुनिसुनिये । तनमनधनसबगुनिये ॥ मनमहँहोइसोकहिये । धनिसोजोआपुनलहिये ॥ १५ ॥ ऋषिदोधकछंद ॥ रामभयेजबनैबनमाहीं । राकसबैरकरैंबहुधाहीं ॥ रामकुमारहमैंनृपदीजै । तौपरिपूरणयज्ञकरीजै ॥ १६ ॥ तोटकछंद ॥ यहबातसुनीनृपनाथजबै । शरसेलगेआखरचित्तसबै ॥ मुखतेकछुबातनजाइकही । अपराधबिनाऋषिदेहदही ॥ १७ ॥ राजा—अतिकोमलकेसबबालकता ॥ बहुदुष्कररराक्षसघालकता ॥ हमहींचलिहैंऋषि

संगअवै । साजिसैनचलैचतुरंगसबै ॥ १८ ॥ विश्वामित्र-षट्पद ॥ जिनहाथनहठिहरषि हनतहरिणीरिपुनन्दनि । तिननकरतसंहारकहाँमदमत्तगयन्दनि ॥ जिनबेधतसुशलक्षलक्ष नृपकुँवरकुँवरमनि । तिनबाणनिबाराहबाघमारतनाहिंसिंहनि । नृपनाथनाथदशरथसुनियअकथकथायहमानिये । मृगराजराज कुलकलशअबबालकवृद्धनजानिये ॥ १६ ॥

टी०- जो वस्तु आप लहिये लीजीये सो धन्य है ॥१५॥ रामपरशुराम ॥ १६ ॥ १७ ॥ हाथी घोडा रथ पिआदा चारौ सैनाके अंग हैं ॥ १८ ॥ हरिणीके साहचर्यतें रिपुपद ते हरिणीरिपु कहे सिंह जानौ जिन हाथन सिंह हरिणी मारत हैं तिन सों कहा गजनको नहीं मारत अर्थ गजहू मारत हैं औ कुँवरन में मणिश्रेष्ठ ऐसे नृपकुँवर जिन बाणनि सुख कहे सहजेही लक्ष कहे लाषन लक्ष निशाना बेधत हैं तिनसों बाराह बाघसिंहनहूंको नहीं मारत अर्थ मारत हैं हे नृपनाथ यह कथा अकथ कहे अतर्क मानौ निश्चय इति अथवा अकथकहे अद्भुत जो यह कथाहै ताकी मानिवेकहे निश्चय मानौ आशय यह रामचन्द्र राक्षसनको बध करिहैं यामें संदेह ना करौ ॥ १९ ॥

मू०- सुंदरीछंद ॥ राजनमैंतुमराजबडेअति । मैंमुखमाँगों सोदेहुमहामति ॥ देवसहायकहौनृपनायक । हैयहकारजरामहिंलायक ॥२०॥ राजा-मैंजोकह्योऋषिदेनसोलीजिय । काज करोहठभूलिनकीजिय ॥ प्राणदियेधनजाहिंदियेसब । केशव रामनजाहिंदियेअब ॥२१॥ ऋषिराजतज्योधनधामतज्योसब । नारितजीसुतशोचतज्योतब ॥ आपनपौजोतज्यौजगवंदहैं । सत्यनएकतज्योहरिचंदहैं ॥ २२ ॥

टी०- ॥ २० ॥ २१ ॥ एकसमय इन्द्र नारदसों हरिश्चन्द्रके सत्यप्रतापादिको माहात्म्य सुनि इंद्रासन लेवेको भयमानि दुखितभयेहैं तब ब्रह्मादि देवन इंद्रको धीरजदैके हरिश्चंद्रके सत्यभंगकरिवेकेलिये नारदको विश्वामित्रकेपासपठयो विश्वामित्र नारदमुखसों देवनकी आज्ञा सुनि काहूकामरूपी राक्षसको

बोलाइ कह्योकी तू शूकर रूपह्वै अयोध्या में जाइ राजा हरिश्चंद्र को मृग-या मिस हमारे आश्रम में ल्याउ राक्षस गोकियो विश्वामित्रके आ-श्रम में राजाको ल्याई लुप्त भयो आश्चर्य युक्त ह्वै राजा आश्रम नदी में न्हाइ कपट द्विजरूपधरि बिश्वामित्र को सब पृथ्वी औ सर्वस्व दान कन्यो है फेरि बिश्वामित्र कह्योहै कि शतभार सुवर्ण दक्षिणा देउ तौ सर्वस्वलेउ नाहीं तौ सत्यको छोडो तब काशीमें जाइकै मदना नामस्त्री औ रोहितास्व नामा पुत्र को देवशर्मा ब्राह्मण के हाथ साठिभार सुवर्ण को बेंच्यौ है औ चालिस भार सुवर्ण को कालसेन चांडाल के हाथ अपना बिकाई सौभार सुवर्ण बिश्वामित्र को दियोफेरि चांडाल की आज्ञाते स्मशान घाटपर उचि-त द्रव्यलेवेको बैठेहैं कछू दिनमें पुष्प तोरत मैं रोहितास्व को सर्प काट्यो मरयौ ताकोलै मदना बहाइबे को गई तहां चांडाल को उचित पंचमुद्रा लैही कै बहावन दियोहै या प्रकार सुत को शोच छोंड्यौ सत्य पाल्यौ य-ह संक्षेप कथा लिख्यौ है विशेष सों हरिश्चंद्रो पाख्यान पुराणन में प्र-सिद्ध है ॥ २२ ॥

मू०— राजवहैवहसाजवहैपुर । नामवहैवहधामवहैगुर ॥ झूंठेसोंझूंठईबांधतहोमन । छोंड़तहौनृपसत्यसनातन ॥ २३ ॥ ॥ दोहा ॥ जान्योविश्वामित्रके,कोपबढ्योउरआइ । राजादशरथसोंकह्यो,बचनबशिष्ठबनाइ ॥ २४ ॥ षट्पद ॥ इनहींकेतपतेजयज्ञकिरक्षा करिहैं । इनहींके तपतेजसकलराक्षसबलहरिहैं ॥ इनहींकेतपतेजतेजबाढिहैतनतूरण । इनहींकेतपतेज होहिंगेमंगलपूरण ॥ कहिकेशबजेयुतआईहैइनहीकेतपतेज घर । नृपबेगिराम लक्ष्मण दुवौसोंपोबिश्वामित्रकर ॥ २५ ॥

टी०— साजछत्र चामर चमू आदि नाम यश गुरु बशिष्ठ झूठे जे पुत्रादि हैं तिनसों झूठईकहे वृथाहीमनकोबांधतहौ लगावतहौ अथवा झूंठेसों कहे झूठे न सहितह्वै अर्थ पुत्रादि झूठे माया के प्रपंच हैं तिनसों मिलिकै झूंठई जो झुठाई है तासों मनको बांधत हो अर्थ कि नाबांधौ अथवा झूठेकी सों-कहे झूंठे की तरह जैसे झूठाप्राणी झुठाईमें मनलगावतहै तैसे तुमहूं लगा-

वतहौ औ सनातन कहे परंपराको सत्य छांड़त हौ देनकहिअबनहीं देत सो ना चाहिये ॥ २३ ॥ २४ ॥ तेजप्रताप तूरन जलदी मंगल विवाहादि ॥ २५ ॥

मू०– ॥ सोरठा ॥ राजाऔरनमित्र, जानहु बिश्वामित्रसे ॥ जिनकोअमितचरित्र, रामचन्द्रमय मानिये ॥ २६ ॥ दोहा ॥ नृपपैबचनबशिष्ठको, कैसेमेट्योजाई ॥ सौंप्योबिश्वामित्रकर, रामचन्द्रअकुलाई ॥ २७ ॥ पंकजवाटिकाछंद ॥ रामचलत नृपके युगलोचन । वारिभरितभये वारिदरोचन ॥ पायनपरिऋषिकेसजिमौनहिँ । केशवउठिगयेभीतरभौनहिँ ॥ २८ ॥ चामरछंद ॥ वेदमंत्रतंत्रसोधिअस्त्रशस्त्रदैभले । रामचन्द्रलक्ष्मणैंसोबिप्रक्षिप्रलैचले ॥ लोभछोभमोहगर्वकामकामनाहई । नींदभूखप्यासत्रासबासनासबैगई ॥ २९ ॥

टी०–राक्षसवधमें अमित कहे संपूरण जो चरित्र हैं सो रामचन्द्रमय कहे रामचन्द्रचरित्र मय रामचंद्र चरित स्वरूपतिजिनको बिश्वामित्रहीको चरित्रमानौ अर्थ जो राक्षसवधमें वा वेधनादिकृत रामचन्द्र करिहैं सो कृत रामचंन्द्र द्वार ह्वै विश्वामित्रही करि हैं आशय यह की यामें कछू श्रम रामचंद्र को नहीं है ये केवल तुह्मारे पुत्रको यश दियो चाहत हैं याते इन सम मित्र दूसरो न जानौ अथवा रामचन्द्रमय कहे रामचन्द्र प्रति समर्पित मानिये अर्थ जो करत हैं सो रामचन्द्र को समर्पण करतहैं ॥ २६ ॥ २७ ॥ वारिजलसों भरित रोचन को वारिद मेघ भये अरुण रंग ह्वै आंशुनकी वर्षा करन लागे ॥ २८ ॥ वेदके मंत्र औ तंत्र शास्त्र के मंत्र शोधि शोधि के दियो अथवा वेदके मंत्र दिये बलातिबला विद्या दियो है सो बाल्मीकीय रामायणमें लिख्यो है औ तंत्रशास्त्रके मंत्रनसों शोधि शोधिकै मंत्रित करिकै अस्त्रशस्त्र दिये क्षिप्र कहे जल्दी तिन विद्यन के प्रभाव सों लोभादि की वासना दूरि भई यथा । रघुवंशे । "तौबलातिबलयोः प्रभावतो विद्ययोः पथिमुनि प्रदिष्टयोः । मम्लतुर्न मणिकुट्टिमोचितौ मातृपार्श्व परिवर्ति नाविव" ॥ २९ ॥

मू०— निशिपालिकाछंद ॥ कामवनरामसबबासतरुदेखि यो । नैनसुखदैनमनमैनमयलेखियो । ईशजहँकामतनुकेअतनु डारियो । छोडिवहयज्ञथलकेशवनिहारियो ॥ ३० ॥ दोहा ॥ रामचंद्रलक्ष्मणसहित, तनमनअतिसुखपाइ ॥ देख्यो विश्वा मित्रको,परमतपोबनजाई ॥ ३१ ॥ इति श्रीमत्सकललोकलो चनचकोरचिन्तामणि श्रीरामचन्द्रचंद्रिकायामिंद्राजिद्विरचिता यां रामचन्द्रलक्ष्मणयोर्विश्वामित्रतपोवनगमनंनामद्वितीयप्र काशः ॥ २ ॥

टी०— जावन में महादेव कामको जान्यो है ताको कामबन नाम है अ-थवा कामबन कहे अभिलाषको दाता वन ता बनमें रामचन्द्र सब बास कहे ऋषिन के बास कुटीति औ तरुवृक्ष देख्यो अथवा बासतरु सुगंधयुक्त तरुमैनमय कहे काम स्वरूपता बनमेंईश महादेव जहां जास्थान में काम को जारयो है तास्थानकोदेखि छोंड़िकै विश्वामित्र को यज्ञ थलजाइकै दे-ख्यौ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ इति श्रीमजगज्जननीजनकजानकीजानकीजा-निप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां द्वितियःप्र-काशः ॥ २ ॥

मू०— ॥ दोहा ॥ कथातृतीयप्रकाशमें, बनवरणनशुभजा नि ॥ रक्षणयज्ञमुनीशको, श्रवणस्वयंबरमानि ॥ १ ॥ षट्पद ॥ तरुतालीसतमालतालहिंतालमनोहर । मंजुलबंजुलतिलकल कुचकुलनारिकेरवर ॥ एलाललितलवंगसंगपुंगीफलसोहै । सारिशुककुलकलितचित्तकोकिलअलिमोहै ॥ शुभराजहंसक लहंसकुलनाचतमत्तमयूरगन । अतिप्रफुलितफलितसदारहैके शवदासविचित्रवन ॥ २ ॥ सुप्रियाछंद ॥ कहुंद्विजगणमिलि सुखश्रुतिपढहीं । कहुंहरिहरिहरहररटरटहीं ॥ कहुंमृगपतिमृग शिशुपयपियहीं । कहुंमुनिगणचितवतहरिहियहीं ॥ ३ ॥ न

राचछंद ॥ बिचारमानब्रह्मदेवअर्चमानमानिये । अदीयमान दुःखसुःखदीयमानजानिये ॥ अदंडमानदीनगर्वदंडमानभेदवै । अपट्ठमानपापग्रन्थपट्ठमानवेदवै ॥ ४ ॥

टी०– तालीश वृक्ष विशेषहिं ताल खजुरिवंजुल अशोक लकुच बड़हर ॥ २ ॥ मृगपति पदते सिंहकी स्त्री पुरुष जातिमात्र जानौ अर्थ सिंहिनीन को पय दूध मृग बालक पियत हैं यासों या जनायो कि जहां सहजहूं बैरनहीं है कृत्तिम की कहावात है औ कहूंतेई मृग शिशु मुनिन के हियको हरिकै मुनिन की ओर चितवत हैं यासों मृग बालकन की अति सुन्दरता जानो ॥ ३ ॥ जहां सदा ब्रह्म जो वेद हैं सोई विचार्य्यमान है विचार्‍यो जात है अथवा परब्रह्म देव पदते यहां विष्णु जानौ अथवा सदेवयासों या जनायो की सुदेव सेवामें सब रहत हैं कोऊ कुदेव यक्षिणी आदि की सेवा नहीं करत औ दुःख अदीयमान है कोऊ काहू को दुख नहींदेत सुख दीयमान है औ दीन अदंडमान हैं दीन को कोऊ दंड ताड़न नहीं करत औ वै कहे निश्चय करि गर्व औ भेददंडमान है पाप ग्रंथ मारन मोहनादि के ग्रंथ अपठमान हैं कोऊ नहीं पठत ॥ ४ ॥

मू०– विशेषकछंद ॥ साधुकथाकथियेतहँकेशवदासजहां । बिग्रहकेवलहैमनकोदिनमानतहां ॥ पावनबाससदाऋषिको सुखकोबरषै । कोबरनैकबिताहिबिलोकतजीहरषै ॥ ५ ॥ चंचला ॥ रक्षिवेकोयज्ञकूलबैठेवीरसावधान । होनलागेहोमके जहांतहांसबैविधान ॥ भीमभांतिताडुकासोभंगलागिकनैआइ । वाननानिरामपैननारिजानिछांडिजाइ ॥ ६ ॥ ऋषि-सोरठा ॥ कर्मकरतियहघोर,बिप्रनकोदशह्रदिशा । मत्तसहस्रगजजोर,नारीजानिनछांडिये ॥ ७ ॥ राम–शशिबदना ॥ सुनुमुनिराई । जगसुखदाई । कहिअबसोई । जेहियसहोई ॥ ८ ॥ ऋषि-कुंडलिया ॥ सुताविरोचनकीदुतीदीरघजिव्हानाम । सुरनायक वहसंहरीपरमपापिनीवाम ॥ परमपापिनीबामबहुरिउपजीक

बिमाता । नारायणसोहतीचक्रचिंतामणिदाता ॥ नारायण सोहतीसकलद्विजदूषणसंयुत । त्योंअबत्रिभुवननाथताडुकाता रहुसहसुत ॥ ९ ॥

टी०— साधु कथा उत्तम कथा विष्णुविषयकिनी आदि अथवा साधु जे संतजन हैं नारदादि तिनकी कथा तहां तेहि आश्रम में मुनि जनन करि कै कथिये कथन करियतहैं औ जहां केवल मनही को निग्रहहै मनइंद्रिन को राजा है मनके निग्रहसों सब इन्द्रिनको निग्रह जानौं औ तहांमानदिनहीं-के है और काहूके नाहीं है दिनपक्ष में मानप्रमाण दिन मान केतौ है यह पूछिवे की रीति लोकमें प्रसिद्ध हैं अन्यत्र मानगर्वपरि संख्यालंकार है अ-थवा दिनही को मान आदरहै यज्ञादिसत्कर्म दिनही में होत हैं तासों ॥ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ विरोचन बलिके पिताकी सुता दीरघजिह्वानामा पापिनी रही ताको सुरनायक इंद्र मारचो है औ फेरि अति पापिनी कविजे शुक्र हैं तिनकी माता भई ताको नारायण मारचो है एक समय देवनके युद्ध में हारिकै दैत्य ब्राह्मणके शरणमें बचिवो जानिकै शुक्र माताके शरण जाइ लुकाने तहां शत्रुको रक्षक जानि इंद्रकी आज्ञा सों विष्णु शुक्र माता को शिर चक्रसे खंडन करि दैत्यनको मान्यो है ताही कोप सों भृगुमुनि जाइ विष्णुके उरमें लात मारचो है औ आपने पुत्र शुक्र को दैत्यगुरु कियो है यह कथा पुराणन में प्रसिद्ध है कैसे हैं नारायण चिन्तामणि के दाता हैं अथवा चिंतामणि सरिस दाता हैं सकल द्विज दूषन संयुतताडुका को वि-शेषण है औ सहसुत कहे मारीच सहित यासों याजनायो इन्द्र विष्णुहूं दुष्टस्त्री वध कियो है ॥ ९ ॥

मू०— ॥ दोहा ॥ द्विजदोखीनाबिचारिये,कहापुरुषकहना रि ॥ रामबिरामनकीजिये,बामताडुकातारि ॥ १० ॥ मरहट्टा छंद ॥ यहसुनिगुरुबानीधनुगुनतानीजामीद्विजदुखदानि । ता डुकासँहारीदारुणभारीनारीअतिबलजानि ॥ मारीचबिडा रयोजलधिउतारयो मारयोसबलसुबाहु ॥ देवनिगुनपर्ष्योंपुष्प निबर्ष्यौंहर्ष्योंअतिसुरनाहु ॥ ११ ॥ दोहा ॥ पूरणयज्ञभ

योजहीं,जान्योविश्वामित्र ॥ धनुषयज्ञकीशुभकथा, लागेसुनन विचित्र ॥ १२ ॥

टी०— बिराम कहे बेर ॥ १० ॥ ताड़ुकादि बध सों गुणनकी परीक्षा कियो की ये गुण विष्णुही में हैं तासों विष्णु को अवतार भयो अब रावण बध ह्वै है यह जानि इंद्र हर्षितभये ॥ ११ ॥ १२ ॥

मू०— ॥ चंचरीछंद ॥ आइयोतेहिकालब्राह्मणयज्ञकोथल देखिकै । ताहिपूंछतबोलिकैऋषिभांतिभांतिबिशेषिकै ॥ संग सुंदररामलक्ष्मणदेखिदेखिसोहर्षई। बैठिकैसोइराजमंडलबर्णईसुखवर्षई ॥ १३ ॥ ब्राह्मण ॥ शार्दूलविक्रीडितछंद ॥ सीताशोभनव्याहउत्सवसभासंभारसंभावना तत्तत्कार्यसमग्रव्यग्रमिथिलावासीजनाशोभना ॥राजाराजपुरोहितादिसुहृदोमंत्रीमहामंत्रदा नानादेशसमागतान्नृपगणाःपूजापराःसर्वदा ॥ १४ ॥

टी०— जनकपुरको ब्राह्मण सीयस्वयंवर के अर्थ काहू राजाको निमंत्रण लिये जात रह्यो सो यज्ञ को स्थान देखिवे को सुभावही आयो अथवा ऋषिही को निमंत्रण ल्यायो है अथवा कोऊ साधारण पथिक ब्राह्मण है ताको निकट बोलिकहे बोलाइकै बिश्वामित्र भांति भांति विशेषसों जनकपुरकी कथा पूंछत हैं सो ब्राह्मण ऋषिकेसंग रामलक्ष्मणको देखि ऋषिकी स्त्रीके बचन सत्य जानि अब सीताको ब्याह ह्वै है यह निश्चय करि हर्षित आनंदित होतहै काहेते पंचम प्रकाशमें तृतीयछंदमें ब्राह्मणकहि है की काहू ऋषिकी स्त्री चित्रमें सीताका ऐसोकोऊ बरुलिखिल्याई जैसो रामचंद्रको देखियत है ॥ १३ ॥ सीताको जो शोभन कहे सुंदर ब्याह है ताको जो उत्सव सभा कहे कौतुक सभा है स्वयंवर सभा इति ताके जे अनेक संभार सामग्री हैं अनेक राज सत्कारादि वस्तु तिनकी जो संभावना विचार है तासों राजा जनक औ राजपुरोहित सतानंद तिन्हैं आदि दै और जे सुहृद मित्र हैं औ महामंत्रके देनहार जे मंत्री हैं औ समग्र कहे सम्पूर्ण मिथिलावासी जे शोभन कहे सुबुद्धि जनहैं ते सब तत्तत्कार्य कहे आपने आपने उचित कार्य में व्यग्रकहे आसक्त हैं संलग्न इति अथवा आकुल हैं व्यग्रोव्यासक्त

आकुलेइतिमेदिनी । औ सर्वदापूज्य औ पर कहे उत्कृष्ट ऐसेनाना देश अनेकदेशके नृपगण समागत कहे आये हैं ॥ १४ ॥

मू०– ॥ दोहा ॥ खंडपरसकोशोभिजै, सभामध्यकोदंड । मानहुँशेषअशेषधर धरनहारबरिबंड ॥ १५ ॥ सवैया ॥ शोभतिमंचनकीअवलीगजदंतमईछबिउज्ज्वलछाई । ईशमनौवसुधामेंसुधारिसुधाधरमंडलमंडिजोन्हाई । तामहँकेशवदासबिराजतराजकुमारसबैसुखदाई । देवनसोंजनुदेवसभाशुभसीयस्वयम्बरदेखनआई ॥ १६ ॥ दोहा ॥ नवतिमंचपंचालिका, कर संकलितअपार ॥ नाचतिहैजनुनृपतिकी, चित्तवृत्तिसुकुमार ॥ ॥ १७ ॥ सोरठा ॥ सभामध्यगुणग्राम, बंदीसुतद्वैशोभहीं ॥ सुमतिविमतियहनाम, राजनकोवर्णनकरैं ॥ १८ ॥ सुमति–दोहा ॥ कोयहनिरखतआपनी, पुलकितबाहुविशाल ॥ सुरभिस्वयम्बरजनुकरी, मुकुलितशाखरसाल ॥ १९ ॥

टी०–जामें देशांतरनके राजा लोग आय आय बैठत हैं ऐसे स्वयम्बर सभामें चारों औरमंच कहे मचाननकी अवली पंक्तिबनतिहै ॥ १५ ॥ सोमंचावली सीयस्वयम्बर में गजदंत हाथी दाँतन की बनी है तामें ब्राह्मण उत्प्रेक्षा करत है कि ईश जे विधाता हैं ते मानों जुन्हाई सों मंडिकै युक्त करिकै वसुधा पृथ्वी में सुधाधर चंद्रमा को मंडल कहे परिवेष सुधारि कहे सुधार्यो बनायो है ज्योत्स्ना युक्त चंद्रपरिवेष सम कहे मंचावली की अति श्वेतता जनायो ईश बनायो सम कहे अति रुचिर रचना जनायो औ देव सरिस राजकुमार हैं देवसभासरिसमंचावलीजानों ॥ १६ ॥ पंचलिका नृत्यकी जातिविशेष है अपार कर कहे हस्तक भेदसों संकलित युक्त ॥ १७ ॥ १८ ॥ सुरभि कहे बसंतरूपी जो स्वयम्बर है त्यहि मानों रसाल आंब की शाखा को मुकुलित बौरयुक्त कर्यो है जैसे बसंतमें आँबकी शाख बौरति है तैसे धनुष उठाइबे को मोद करि बाहु रोमाञ्चित भयो अथवा सुरभिरूपी जो है स्वयं कहे अपना त्वहि वर कहे सुंदर रसाल शाख को मुकुलित कियो है ॥ १९ ॥

१ महादेव.

मू–० बिमतिसोरठा । ज्यहियशपरिगलमत्त, चंचरीकचारणफिरत ॥ दिशिबिदिशनअनुरक्त सोतौमल्लिकापीडनृप ॥ सुमतिदोहा ॥ जाकेसुखमुखबासते वासितहोतादिगंत ॥ सो पुनिकहयहकौननृप, शोभितशोभअनंत ॥ २१ ॥ विमति–सोरठा ॥ राजराजदिगबाम, भालललालोभीसदा ॥ अतिप्रसिद्ध जगनाम, काश्मीरकोतिलकयह ॥ २२ ॥

टी०–पांचछंदनमें विमतिके पांचप्रश्नोंको श्लेषसों उत्तरदियो है मल्लिक नामा जो पर्बत है ताको आपीड कहे शिषा भूषण है अर्थ मल्लिक पर्वतको राजाहै। यथाचपद्मपुराणे।"मल्लिकाख्योमहाशैलो मोक्षदःपश्यतांनृणां। यत्रांगेषुव्रणांतोयं श्यामंवानिर्मलंभवेत् । पातकस्यापहारीदं मयादृष्टंतुतीर्थकम्"॥ ४ ॥ औ मल्लिका जो चँबेलीहै ताको आपीड शिखा भूषण बेनी मालादि शिखास्वापीडशेखरौइत्यमरः कैसो है राजा औ मालती माला ज्यहि के यश रूपी जो परिमल सुगंध है तासों मत्त चंचरीक भ्रमर सदृश जे चारण भाट हैं ते दिशि बिदिशन में अनुत संलग्न फिरत हैं अर्थ जाको यशदिशि बिदिशन में भाट गावत फिरत हैं औ यश अर्थ सदृश जो परिमल सुगंध है तामें मत्त चारण सदृश जे चंचरीक भ्रमर हैं ते दिशि बिदिशन में अनुरक्त फिरत हैं ॥ अर्थ जाके सुगंध में मत्त ह्वै भ्रमर दिशि बिदिशन में उडत फिरत है ॥ २० ॥ सुख कहे सहज सुख के वास सुगंध ते ॥२१॥ काश्मीर को तिलक कहे काश्मीर देश को राजा औ काश्मीर कहे केशरि को तिलक कैसो है राजा औ तिलक राजराजजे कुबेर हैं तिनकी दिशा उत्तरदिशारूपी जो बाम स्त्री है ताके भालको लाल रक्त जो सुमेरु है सो है लोभी सदा ज्यहि राजाको अर्थ सुमेरु के यह इच्छा रहति है कि इन्द्रको राज छोंड़ि या राजाको राजहम पर होय यासों या जनायो कि राजा रूपगुण करि इन्द्र हू सों अधिक है अथवा यह राज सुमेरु को सदा लोभीहै इन्द्र को जीति सुमेरु पर राज्य करिबे की इच्छा राखत है औ राजराज दिग सदृश जेबाम स्त्री हैं राजराज दिक सदृश कहे या जनायो जैसे द्रब्यरूप लक्ष्मीसों युक्त उत्तर दिशा है तैसे शोभारूप लक्ष्मी सों युक्त स्त्री है तिनके भाल को जो लाल

त्र है शोभा है सदा जा तिलक को अर्थ जो तिलक लाल हू की शोभा
ढावत है तासों तिलकके निकट रहिबे की भाल लाल के इच्छा रहति है
ाशय यह की अति भूषणन सों भूषित औ अति सुंदरीहू स्त्रिन के शोभा
ढावत है साधारण नहीं है और अर्थ राजराज कहे राजन को राजा है
ौर दिशारूपी जो बाम स्त्री है ताके भाल को लाल है औ लोभी है स-
ा कहे याचकनकी याचकता को याचकन को याचिबो सर्वदा जाको भाव-
ा है अर्थ बडो दाता है सदा पर सोमैं याचकताकी कहत हैं और अर्थ राज-
देग जो उत्तर दिशा है ताके बाम भाग जो पूरब दिशा है ताके भाल को
लाल सूर्य ताको सदा लोभी ऐसा जो काश्मीर देश है ताको राजा है अति
जाडे सों जा देश वासिन के सदा सूर्योदय की इच्छा रहति है ॥ २२ ॥

मू०— ॥ सुमति-दोहा ॥ निजप्रतापदिनचरकरत, लोचन कमलप्रकाश ॥ पानखातमुसुकातमृदु, कोयहकेशवदास ॥२३॥

टी०— अर्थ यह जाके अंगन में प्रताप कांति की झलक सब लोचन पसा-
रिकै निहारत हैं ॥ २३ ॥

मू०— बिमति-सोरठा ॥ नृपमाणिक्यसुदेश, दक्षिणतियजिय भावती । कटितटसुपटसुवेश, कलकाचीशुभमण्डई ॥ २४ ॥ ॥ सुमति-दोहा ॥ कुण्डलपरसतमिसकहत, कहौकौनयहराज॥ शंभुशरासनगुनकरो, करनालम्बितआज ॥ २५ ॥ बिमति-सोरठा ॥ जानहिंबुद्धिनिधान, मत्स्यराजयहिराजको ॥ समरस मुद्रसमान जानतसबअवगाहिकै ॥ २६ ॥ सुमति-दोहा ॥ अंगरागरंजितरुचिर, भूषणभूषितदेह ॥ कहतबिदूषकसोकछु, सोपुनिकोछनृपयेह ॥ २७ ॥

टी०— नृपमाणिक्य नृपश्रेष्ठ औ उत्तम माणिक्य राजा कै सोहै की
सुंदर है देश द्रविडादि जामें ऐसी जो दक्षिणदिशा रूपी तिय है ताको अति
भावत है जा दक्षिणदिशा के कटितट में कहे मध्यभाग में सुंदर है पट-
पद्धति जाको औ कल कहे दुःख रहित ऐसी जो कांची नामा पुरी है ताको

मंडत है भूषित करत है अर्थ की याके देश में मध्यभाग में विष्णुकांची शिवकांची पुरी है तामें जाको बास है माणिक्य कैसो है की सुदेश कहे सुंदरी दक्षिण कहे प्रवीण जे तिय स्त्री हैं तिन को अति भावती है फेरि कैसो है की सुष्ट पट वस्त्र युक्त जो कटि तट है तामें कलकहे अव्यक्त मधुर स्वर युक्त जो कांची क्षुद्र घण्टिका है ताको मण्डई कहे भूषित शोभित कर है ॥ २४ ॥ कर्णालंबित करौं कर्ण पर्यंत खैंचौ ॥ २५ ॥ मत्स्य नामा जो देश विशेष है मछरी बन्दर करि प्रसिद्ध है ताको यह राजा है औ मत्स्यराज राघव मत्स्य सो जैसे समुद्र को अवगाहि मँझाई कै सब जानत है ऐसे राजा समर रूपी समुद्र को मँझाइ कै सब समर भेदको जानत है अर्थ कि बडो शूर है 'मत्स्योमीनेपुमान् भूम्निदेशे' इति मेदिनी ॥२६॥ विदूषक मसखरा हास्यकारी विदूषक इत्यमरः ॥ २७ ॥

मू० बिमाति– सोरठा ॥ चन्दनचित्रतरंग, सिंधुराजयहजानिये ॥ बहुतबाहिनीसंग,मुक्तामालविशालउर ॥ २८ ॥ दोहा॥ सिगरेराजसमाजके,कहेगोतगुणग्राम ॥ देशसुभावप्रभावअरु, कुलबलविक्रमनाम ॥ २९ ॥ घनाक्षरी ॥ पावकपवनमणिपन्नगपतंगपितृजेतज्योतिवंतजगज्योतिषिनगायेहैं । असुरप्रसिद्धसिद्धितीरथसहित सिंधुकेशवचराचरजेवेदनबतायेहैं । अजरअमरअजअंगीऔअनंगसिबबरणिसुनावै ऐसेकौनगुणपायेहैं । सीताकेस्वयम्बरकोरूपअवलोकिबेको भूपनकोरूपधरिबिश्वरूपआयेहैं ॥ ३० ॥ सोरठा ॥ कह्योविमातियहटेरि,सकलसभाहिसुनाइकै ॥ चहूंओरकरफेरि,सबहीकोसमुझाइकै ॥ ३१ ॥ गीतिकाछंद ॥ कोइआजुराजसमाजमेंबलशंभुकोधनुकर्षिहै । पुनिश्रवणकेपरिमाणतानिसोचित्तमेंअतिहर्षि है ॥ वहराजहोइकिरंककेशवदाससोसुखपाइहै । नृपकन्यकायहतासुकेउरपुष्पमालहिनाइहै ॥ ३२ ॥

टी०— सिन्धुराजसिन्धुदेश लहावरकोराजा औ समुद्रचन्दन के चित्रकीतरं गहै अंगनमेंजाके अर्थ चित्रविचित्रचन्दनअंगन में लाये हैं औ चन्दन वृक्ष नसों चित्र बिचित्र है तरंगजाकी अनेक चन्दन वृक्ष जाकी तरंगन में बहत हैं ॥ वाहिनी चमू औ नदी मुक्तन की माला पहिरे है औ मुक्तन की माल पंगति समूहेति सो है उरमें वदनमें जाके ॥ सिंधुर्वा मधुदेशाब्धिनदे ना सरितिस्त्रियां ॥ इति मेदिनी ॥२८॥ बलअंग बल विक्रम बुद्धिबल ॥ २९ ॥ पन्नग सर्प शेषादि पतंग पक्षी गरुडादि असुर दैत्य राक्षस बाणासुर रावणादि सिद्धदेवजाति विशेष । अथवा तपस्वी अजर कहे जराबुढाई सो रहित देवता अमर हनुमानादि अजब्रह्मादिअंगी अंगधारीअनंगी कामादि विश्वरूप संसार भरके रूपप्राणी ॥ ३० ॥ ३१ ॥ कर्षि है उठाई है ॥ ३२ ॥

दोहा ॥ नेकशरासनआसनै, तजैनकेशवदास ॥ उद्यमकै थाक्योसबै,राजसमाजप्रकास ॥ ३३ ॥ बिमति–सुन्दरीछन्द ॥ शक्तिकरीनहिंभक्तिकरीअब । सोननयोपलशीशनयेसब ॥ देख्यों मैंराजकुमारनकेवर । चापचढ्योनहिंआपचढेखर ॥ ३४ ॥ विजय ॥ दिग्पालनकीभुवपालनकीलोकपालनकीचैनमातुगईकिवै । भांड़भयेउठिआसनतेकहिकेसबशम्भुशरासनकोछवै । काहूचढ़ायोनकाहूनवायोनकाहूउठायोनआंगुरहूद्वै । स्वारथ भोनभयोपरमारथआयेहैवीरचलेबनिताह्वै ॥ ३५ ॥ इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांस्वयम्वरसभावर्णनंनामतृतीयप्रकाशः ॥ ३ ॥

टी०— जो या धनुषको उठाइ है ताको नृपकन्या ब्याहार्थ पुष्पमाला पहिराई है ऐसे विमतिके बचन सुनि सब राजसमाज समूह धनुष उठाईवेमें उद्यमकहे उपायकरत भये परन्तु शरासन नेकु आसनकोहुन छोडत भयो अर्थ रंचकहूंना उख्यो ॥ ३३ ॥ जब धनुष काहूसों न उख्यो तब क्रोधयुक्त ह्वै विमति कह्यो धनुष उठाईबे में राजकुमार न शक्तिबल नहीं कियो धनुष की भक्तिकियो है काहेकी धनुष बनायो औ पलमात्र सब के शीशनवत भये तो

जाकी जो भक्ति करत है ताको शीश नवावत प्रणाम करत हैं तासों आप खर गर्दभ में चढे अर्थ गर्दभ में चढेप्राणी सब निन्दितभये ॥ ३४ ॥ किन च्वै गई कहेगर्भ पतन काहे ना भयो ॥ ३५ ॥ इति श्रीमज्जगज्जननि जनक जानकी जानकीजानिप्रसादायजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायांतृतीयःप्रकाशः ॥ ३ ॥

दोहा ॥ कथाचतुर्थप्रकाशमें, बाणासुरसम्बाद ॥ रावणसों अरुधनुषसो,दशमुखबाणविषाद ॥ १ ॥ सबहीकोसमुझेटसबन, बलबिक्रमपरिमाण ॥ सभामध्यताहीसमय,आयेरावणबाण ॥२॥ डिल्लाछंद ॥ नरनारिसबै । भयभीततबै ॥ अचरिज्जुयहै॥ सबदेखिकहै॥३॥दोहा ॥ हैराकसदशशीशको,दैयतबाहुहजार॥ कियोसबनिकेचित्तरस,अद्भुतभयसंसार ॥ ४ ॥ रावण–बिजोहाछंद ॥ शंभुकोदंडदै राजपुत्रीकितै टूकद्वैतीनिकै ॥ जाहुलंकाहिलै ॥ ५ ॥ बिमति–शशिबदनाछंद ॥ दशशिरआवो । धनुषउटावो ॥ कछुवलकीजै । जगयशलीजै ॥ ६ ॥ बाण–गीतिकाछंद ॥ दशकंठरेशठछांड़िदेहठ बारबारनबोलिये । अब आजुराजसमाजमेंबलसाजुचित्तनडोलिये ॥ गिरिराजतेगुरुजानियेसुरराजकोधनुहाथलै । सुखपायताहिचढ़ायकैघरजाहिरेयशसाथलै ॥ ७ ॥

टी०–रावण सों बाणासुर को संबाद है ना उक्यो तासों दशमुख औ बाण को धनुष सों विषाददुख है ॥ १ ॥ २ ॥ बाण रावण को देखि सब प्राणी आश्चर्य यहै शब्द कहत भये ॥ ३ ॥ दशशीशको राक्षस औ हजारबाहुको दैत्य सबनके चित्तमें अद्भुत औ भयरसको संसार रच्यो अर्थ अतिआश्चर्य औ भयसों युक्त कियो दशशिरहजारबाहुदेखि अद्भुतरस भयोभयानकरूपदेखि भय रसभयो ॥ ४ ॥ रावण बिमतिसोंकह्योकी शंभु को दंड हमको दै कहे दीजिये औ राजपुत्री कहां है ताको बतावो धनुष तोरि राजपुत्री लै लंकहि जाऊं ॥ ५ ॥ ६ ॥ विमति सों कहत ऐसे सबन के गर्व वचन सुनि रो

षकरि बान बोलत भये राज सभामें बलको साज पराक्रम करु चित्त करि-कै नाडोलु अर्थ मनोरथ ना करु अथवा बलकी साज सों अथवा बल औ साज सैन्यादि सों चित्त ना डोलावो मनोरथ ना करौ अर्थ इहां तुह्मारो बल ना चलि है सुरराज महादेव के गिरिराज ते कैलास ते सुरराज को धनुष गुरूगरु जानौ सुरराजपदको संबंध गिरिराजहू में है ॥ ७ ॥

मू०-मंथनाछंद ॥ बाणीकहीवान । कीन्हीनसोकान ॥ अद्यापि आनीन । रेवंदिकानीन ॥ ८ ॥ वान-मालतीछंद ॥ जोपैजिय जोर । तजौसबशोर ॥ शरासनतोरि । लहौसुखकोरि ॥ ९ ॥ रावण-दंडक ॥ बज्रकोअखर्बगर्बगंज्योज्यहिपर्बतारिजीत्योहैसु पर्बसर्बभाजेलैलैअंगना । खंडितअखंडआसुकीन्होहैजलेशयासु चन्दनसीचन्द्रिकासोंकीन्हींचंदबंदना ॥ दंडकमेंकीन्होकालका लहूको मानखंडमानौकोहूकालहीकीकालखंडखंडना । केशवको दंडविशदंडऐसेखंडेअबमेरेभुजदंडनाकीबड़ीहैबिडंबना ॥ १० ॥

टी०-अति गर्वसों बाणकी बाणी कानमें ना करयो अर्थ ना सुन्यो फेरि विमति सों कह्यो की रे कानीन छुद्रवंदि अद्यापि राजपुत्री को नाल्यायो ॥ ॥ ८ ॥ अर्थ राजपुत्री प्राप्तिरूपी सुख शरासन तोरे बिना न पैहै ॥ ९ ॥ जिन भुजदंडन बज्रको जो अखर्ब बडोगर्व है ताको गंज्यौ बिदारयो अर्थ इंद्रकी रक्षा औ शत्रुबध करिबे में बज्रके अमोघता को गर्बरह्यो सो इनमें निःफल भयो पर्बतारि इन्द्रको इन जीत्यौ तब सर्ब सुपर्ब देवता आपनी आपनी स्त्रीलैलै भागत भये फेरि अखंड काहूके खंडिबे योग नहीं ऐसो जो जलेश वरुण को पास फांसहै ताको आसु जल्दी जिनखंड काहू के खंडिबे योग नहीं ऐसो जो जलेश वरुण को पास फांस है ताको आशु जल्दी जि न खँडन कियो तोरयो औ जिनकी वंदना पूजा चन्दनसी चन्द्रिका सों चन्द्र करयो अर्थ अति भय मानी चन्द्रमा जिनको सुखद चांदनी सां सुखदियो युद्ध ना कियो औ कालदण्ड यमराजकी आयुधताके यमराज रक्षा शत्रुबध करिबेको मानगर्ब रह्यो ताको खंडनकियो औ काल जे यमराज हैं

तिनहीं की खंड खंडना इनऐसी कियो मानों काल कहे यमके काल ईश्वर कीन्हो अर्थ जैसे यमको काल निर्भय ह्वै यमको खंडन करत है तैसे करयो यासों या जनायो की मैं इन भुज दंडन सों इनको सबको जीत्यों है केशवकवि को दंड धनुष विशयो नारी विडंबना निंदा ॥१०॥

मृ०– बान– तुरंगमछंद ॥ बहुतबदनजाको ॥ विविधिबचनताके ॥ रावण ॥ बहुभुजयुतजोई । सबलकहियसोई ॥ ॥ ११ ॥ रावण-दोहा ॥ अतिअसारभुजभारहीं, बलीहोहुगेबान ॥ ममबाहुनकोजगतमें, सुनिदशकंठबिधान ॥१२॥ सवैया ॥ हौंजबहीं जबपूजनजातपितापदपावनपापप्रनासी । देखिफिरौंतबहींतबरावणसातौरसातलकेजेबिलासी । लैअपनेभुजदंडअखंडकरौंछितिमंडलछत्रप्रभासी । जानैकोकेशवकेतिकबारमैंशेषकेशीशनदीनउसासी ॥१३॥ रावण–कमलछंद ॥ तुमप्रबलजोहुते । भुजबलनिसंयुते । पितहिभुवल्यावते । जगतयशपावते ॥ १४ ॥ बान–तोमरछंद ॥ पितुआनिएकेहिओक । दियदक्षिणासबलोक ॥ यहजानिएबनदीन । पितुब्रह्मकेरसलीन ॥ १५ ॥

टी०–रावण के बचन में काकूक्ति है॥ ११॥ असार बल रहित ॥ १२॥ अखंड संपूर्ण ॥ १३॥ १४॥ हे रावण दीन हमारो पिता ब्रह्म परब्रह्म के रस स्वाद में लीन है तू यह जानि कहे जानु ॥ १५ ॥

सवैया ॥ कैटभसोंनरकासुरसोंपलमेंमधुसोंमुरसोंज्यहिमारयो । लोकचतुर्दशरक्षककेशवपूरणवेदपुराणबिचारयो । श्रीकमलाकुचकुंकुममंडितपंडितदेवअदेवनिहारयो । सोकरमाँगनकोबलिपैकरतारहुनेकरतारपसारयो ॥ १६ ॥ रावण–दोहा ॥ हमैंतुम्हैंनहिंबूझिये,बिक्रमबादअखंड । अबजोयहकहिदेहिगो, मदनकदनकोदंड ॥ १७ ॥ संयुतछंद ॥ ब्रतबाणरावणकीसु

न्यो । शिरराजमंडलमेंधुन्यो ॥ विमति ॥ जगदीशअबरक्षाक रौ । विपरीतबातसबैहरौ ॥ १८ ॥ दोहा ॥ रावणबाणमहा बली, जानतसबसंसार । जोदोऊधनुकर्षिहै, ताकोकहाबिचार॥ ॥ १९ ॥ बाण--सवैया ॥ केशवऔरतेऔरभईगतिजानिनजा इकछूकरतारी । शूरनकोमिलिबेकहँआयमिल्योदशकंठसदाअ बिचारी । बाढ़िगयोबकुवादुवृथायहभूलिनभाटसुनावहिंगारी । चापचढायेकिकीरतिकोयहराजकरैतेरीराजकुमारी ॥ २० ॥

टी०— जाकर ने कैटभादि बली दैत्यनको मारचौ फेरि चौदहौ लोककी रक्षा करतहैं यों कहि कर की बड़ी शक्ति जनायो फेरि श्री कमलालक्ष्मी के कुचन में कुंकुम केशरि के मंडित में भूषित करै मो अर्थ मकरिका पत्र ब-नावै मे पण्डित है यासों या जनायों कि जिन विष्णुके लक्ष्मी स्त्री हैं ता-सों सबसब पदार्थ सों पूरण जानौ जामेंती शक्ति है शारद कर हाथ करता-र जे ब्रह्मा हैं तिनहुन के करतार जे विष्णु हैं तिन बलिपै मांगिबे को प-सारचौ ऐसे बली विष्णु बलिपैं भिक्षाही मांगि पायो जीतिकै न पाई तासों विष्णु हूं सों अधिक बलि औ दाताजानौ इतिभावार्थः ॥ १६ ॥ १७ ॥ ब्रत धनुष उठाईबेकी प्रतिज्ञा ॥ १८ ॥ १९ ॥ विमति के ऐसे विकल वचन सुनि बाण कह्यो कि हे भाट सीताके ब्याहिबे को बाणधनुष उठावत है ऐसी जो गारी है ताको भूलिहू ना सुनाउ सीता हमारी माता हैं उनतिसयें दोहा में क ह्या है कि सीता मेरी माई है ॥ २० ॥

मू०-- रावण-मधुछंद ॥ मोकहँरोंकिसकैकहिकोरे । युद्धजु रेयमहूंकरजोरे ॥ राजसभातिनुकाकरिलेखों । देखिकैराजसुता धनुदेखों ॥ २१ ॥ सवैया ॥ वानकह्योतबरावणसोंअबवेगि चढाउशरासनको । बातैबनाइबनाइकहाकहैछोड़िदेआसनबा सनको । जानतहौकिधौंजानतनाहिंनतुअपनेमदनाशनको । ऐसे हिकैसेमनोरथपूजतपूजेबिनानृपशासनको ॥ २२ ॥ रावण-- वंधुछंद ॥ बाननबाततुह्मैकहिआवै ॥ बान ॥ सोईकहौंजि

यतोहिंजोभावै ॥ रावण ॥ काकरिहौहमयोंहींबरैंगे ॥ वान ॥ हैहयराजकरीसोकरैंगे ॥ २३ ॥ रावण-दंडक ॥ भौंर ज्योंभवतभूतवासुकीगणेशयुतमानोंमकरन्द वुन्दमालगंगाजल की । उड़तपरागपटनालसीविशालबाहुकहाकहौंकेशवदासशो भापलपलकी । आयुधसघनसर्वमंगलासमेतिसर्बपर्वतउठाइग तिकीन्हीहैकमलकी । जानतसकललोकलोकपालदिगपालजा नतनवानबातमेरेवाहुवलकी ॥ २४ ॥

टी०- ॥ २१ ॥ आसन बिछावने औ बासन वस्त्रनको छोडिदे अर्थ मल्लरूप काछिधनुष उठावोआई अथवा सीताके लेबेकी जे आशा हैं तिनकी वासना स्मरण छोड़िदे अपने मदनाशन को मोको तू जानत है कि नहीं जानत जो ऐसी बात कहत है कि सीताको बिना धनुष तोरेही वरिहौं अथवा अपने मदनाशन को धनुष को अर्थ यह धनुष तुह्मारे मदको नाश करिहै नृपशासन धनुष उठाइबो ॥ २२ ॥ हैहय राजा सहस्रार्जुन ॥ २३ ॥ वासुकी सर्प औ गणेश सहित भूतगण जा पर्वत में कमलाके भौंरसम भँवत भये औ महादेव के शीषको जो गंगाजल गिरयो ताकी माल मकरंद पुष्परस भयो औ उड़त ये पार्बती आदि के पटवस्त्र हैं तेई पराग पुष्प धूलि औ मेरोबाहु जो है सो नाल कमलदंड भयो एते में या जनायो कि जबमैं कैलास उठायो तब अति भय सों गणेशादि भ्रमतभये औ अतिशीघ्र उठायो तासों शंभुशीश को गंगाजल गिरयो औ वस्त्र उड़त भये औ आयुध सवन कहि या जनायो कि तुम एक शंभु धनुष उठाइवो कठिन मानत हौ वा पर्वत में ऐसे अनेक आयुध रहे सर्ब मंगला पार्वती ॥ २४ ॥

मू०मधुभारछंद ॥ तजिकैसुरारि । रिसचित्तमारि ॥ दशकंठ आनि । धनुछयोपानि ॥ २५ ॥ विमति ॥ तुमबलनिधान । धनुअतिपुरान ॥ पीसजहुअंग । नहिंहोहिभंग ॥ २६ ॥ सवैया ॥ खंडितमानुभयोसबकोनृपमंडलहारिरह्योजगतीको । व्याकुलवाहुनिराकुलबुद्धिथक्योबलविक्रमलंकपतीको । कोटि

उपायकियेकहिकेशवकेहूनछाड़तभूमिरतीको । भूरिविभूतिप्रभा वसुभावहिज्योंनचलैचितयोगयतीको ॥ २७ ॥ पद्धटिका ॥ धनुअतिपुरानलंकेशजानि । यहबातबानसोंकहीआनि ॥ हौं पलकमाहँलैहौंचढाइ । कछुतुमहूतोदेखोउठाइ ॥ २८ ॥

टी०-सुकहे सोरारि वाग्विवाद अथवा सुरारि । बाणासुर ॥२५॥२६॥ निरा कुल शिथिल बलदेह बल विक्रम उपाय विभूति ऐश्वर्य सुवर्ण रत्न गजादि योग यती योगी ॥ २७ ॥ धनुष मोसों उठन लायक नहीं है यह जानिके लंकेशरावण अपनो भ्रमर राखि धनुष छोडि आई वाण सों यह बात कह्यौ कि धनुष अति पुरान है ॥ २८ ॥

मू० वाण०-- दोहा ॥ मेरेगुरुकोधनुषयह, सीतामेरीमाइ ॥ दुहूभांतिअसमंजसै, वाणचलेसुखपाइ ॥ २९ ॥ रावण-तोट कछंद ॥ अबसीयलियेबिनहौंनटरौं । कहुं जाहुंनतौलगिनेमध रौं ॥ जबलौंनसुनौंअपनेजनको । अतिआरतशब्दहतेतनको ॥ ३० ॥ ब्राह्मण--मोदकछंद ॥ काहूकहूशरआसरमारिय । आ रतशब्दअकाशपुकारिय ॥ रावणकेवहकानपर्योजब । छोडि स्वयंवरजातभयोतब ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ जबजान्योसबकोभ यो,सबहीविधिव्रतभंग ॥ धनुषधर्योलैभवनमें,राजाजनकअनं ग ॥ ३२ ॥ इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्री रामचन्द्रचन्द्रिकायांइंद्रजिद्विरचितायांवाणरावणयोर्वाग्विवा दवर्णनंनामचतुर्थः प्रकाशः ॥ ४ ॥

टी०-॥२९॥ हतेकहेबाणादि सों बेधे अर्थ मेरेदासइहांउहां यज्ञादि विघ्नक- रत फिरत हैं तिनको जो कोऊ सताइहैतो तिनकी रक्षाको जे हौं ॥ ३० ॥ जब मारीचादिको रामचन्द्र मार्‍यो है तब तिनको आरत पीडित दुःखितेति शब्द- सुनि रावण स्वयंबर सभाते गयो सो भेद कछू ब्राह्मण तौ जानत नहीं ता- सों संदेह विशिष्टह्वै कहतहै की काहूँबली कहूं कौन्यौ स्थानमें शर बाणसों आसर कहे काहूँ राक्षसको मार्‍यो क्रव्यादोऽस्रप आशरः इत्यमरः । सुद-

आसुर मारिय कहू यह पाठ है तौ सुदनामा राक्षस तेआकहे उत्पन्न जो असुर राक्षस है मारीच ताको सुदनाम राक्षसकी स्त्री ताड़का है ताको पुत्र मारीच है औ कहूं शरमारिच मारिय पाठ है तौ शरसों मारीच नामा राक्षसको मार्‍यो ॥ ३१ ॥ अनंग विदेहे ॥ ३२ ॥ इति श्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायाचतुर्थःप्रकाशः ॥ ४ ॥

मू० दोहा ॥ यहप्रकाशपंचमकथा, रामगवनमिथिलाहि ॥ उद्धारणगौतमघरनि, स्तुतिअरुणोदयआहि ॥१॥ मिथिलापतिकेवचनअरु, धनुभंजनउरधार॥ जैमालादुंदुभिअमरवर्षनफूलअपार ॥ २ ॥ ब्राह्मण--तारकछंद ॥ जबआनिभईसबकोदुचिताई । कहिकेशवकाहूपैमेटिनजाई । सियसंगलियेऋषिकीतियआई । इकराजकुमारमहासुखदाई ॥ ३ ॥ मोहनछंद ॥ सुंदरबपुअतिश्यामलसोहै । देखतसुरनरकोमनमोहै ॥ आनियलिखीसियकोबरुऐसो । रामकुमारहिदेखियजैसो ॥ ४ ॥ तोटकछन्द ॥ ऋषिराजसुनीयहबातजहीं । सुखपायचलेमिथिलाहितहीं ॥ बनरामशिलादरशीजबहीं । तियसुन्दररूपभईतबहीं ॥ ॥ ५ ॥ विश्वामित्र--सोरठा ॥ गौतमकीयहनारि, इन्द्रदोषदुर्गतिगई ॥ देखितुह्मैंनरकारि, परमपतितपावनभई ॥ ६ ॥ कुसुमति -चित्राछन्द ॥ तेहिअतिरूरेरघुपतिदेख्यो । सबगुणपूरेतनमनलेख्यो ॥ यहबरमाँग्योदियोनकाहू । तुममममनतेकहूंनजाहू ॥ ७ ॥ कलहंसछन्द ॥ तहँताहिदैबरुकोचलेरघुनाथजू । अतिशूरसुन्दरयोंलसैंऋषिसाथजू ॥ जनुसिंहकेसुतदोउसिद्धिश्रीरये । बनजीवदेखतयोंसबैमिथिलागये ॥ ८॥

टी०-- ॥ १ ॥ २ ॥ जबधनुषकाहूसों नाउठ्यो तब सबके जनकादिके मनमें दुचिताई भई की सीताको ब्याह अब ना ह्वै है ता दुचिताई मेटिबेके लिये त्रिकालदर्शिनी काहू ऋषिकी स्त्री एक राजकुमार सीताके संग

चित्रमें लिखिके ल्याईं की सीताको या प्रकारको बरु मिलि है आशय की जब या प्रकारको राजकुमार आवै तब शम्भु धनुष चढ़ाइकै सीताको ब्याहे ॥ ३ ॥ सोहे ऋषि जैसो इन रामकुमारको देखियतहै तैसोई बरु ऋषिकी स्त्री सीताको लिखिल्याई ॥ ४ ॥ ५ ॥ दुर्गति दुर्दशाको गई कहे प्राप्त भई ॥ ६ ॥ रूरेसुंदर ॥ ७ ॥ अति शूर औ सुंदर दुवौ राम लक्ष्मण ऋषिके साथमें ऐसे शोभित भये मानों सिद्धि जो तप सिद्धि है ताकी श्री शोभा में रमे कहे अनुरागे सिंहके सुत पुत्र हैं सिंहादि बन जीव तपस्विन के बश्य होत हैं यह प्रसिद्ध है औ सिद्ध है श्रीरये पाठ होइ तौ सिद्ध स्वाभाविक श्रीशोभा सों रये युक्त ॥ ८ ॥

मू०—दोहा॥ काहूकोनभयोकहूं, ऐसोसगुननहोत। पुरपैठतश्री रामके भयोमित्रउद्दोत ॥ ९ ॥ राम—चौपाई ॥ कछुराजतसूर यअरुनषरे। जनुलक्ष्मणकेअनुरागभरे ॥ चितवतचित्तकुमुदि नीत्रसै। चोरचकोरचितासोलसै ॥ १० ॥ लक्ष्मण—षट्पद ॥ अरुणगातअतिप्रातपद्मिनीप्राणनाथभय । मानहुंकेशवदास कोकनदकोकप्रेममय ॥ परिपूरणसिंदूरपूरकैधौमंगलघट । किधौं शक्रकोछत्रमढ्योमानिकमयूषपट ॥ कैश्रोणितकलितकपाल यहकिलकपालिकाकालको । यहललितलाल कैधौंलसतदि ग्भामिनिकेभालको ॥ ११ ॥

टी०— ॥ ९ ॥ अति अनुराग करि पुर में पैठतही लक्ष्मणके सगुनार्थ उदित भये ताही अनुराग प्रेमसों मानो भरेकहे पूरित हैं अथवा लक्ष्मणको ब्याज करि सगुन समय उदयसों आपने ऊपर सूर्य्यको प्रेम जनायो यह कहनूति लोकरीति है ॥ १० ॥ पद्मिनी प्राणनाथ सूर्य अरुण तामें तर्क है कोकनद कमलनको फुलावत हैं कोक चक्रवानको संयोगी करत हैं तासों मानो तिनके प्रेममयी है अर्थ तिन प्रति जो प्रेम है सो ऊपर छाइ रह्यो है सिंदूरकी पूर प्रवाह जलेति अर्थ सिंदूर मिश्रित जलसों भरयो अथवा परि पूर्ण सिंदूरसों पूर कहे पूरित अर्थ सिंदूरहीसों भरयो अथवा सिंदूर सों रँग्य के मंगल विवाहादिको घट पूजन कलशहैं मानिक रत्नकी मयूष किरा

तिनको बीन्यो पटवस्त्रऔ कोकिलकहे निश्चयकरि यह कपालिकाकालीपै श्रोणितरुधिर कलितकालको कपालशीश हैं अथवा कपालिकाको व कालको श्रोणित कलितकपालहै कालीको रुधिर मांसभक्षकतासों कालको सर्वभक्षकतासों कालोजगद्भक्षक इति प्रमाणात् ॥ ११ ॥

मू०—तोटकछन्द ॥ पसरेकरकुमुदिनिकाजमनो।किधौंपद्मिनिकोसुखदेनघनो ॥ जनुऋक्षसबैयहित्रासभगे । जियजानिचकोरफंदानठगे ॥ १२ ॥ रामचन्द्र-चंचरीछन्द ॥ व्योममेंमुनिदेखियेअतिलालश्रीसुखसाजहीं । सिंधुमेंबड़वाग्निकीजनुज्वालमालबिराजहीं ॥ पद्मरागनिकोकिधौंदिविधूरिपूरितसोभई । सूरवाजिनकीखुरीअतितिक्षतातिनकीहई ॥ १३ ॥ विश्वामित्र-सोरठा ॥ चढ्योगगनतरुधाइ,दिनकरबानरअरुणमुख ॥ कीन्होझुकिझहराइ, सकलतारकाकुसुमबिन ॥ १४ ॥

टी०— कुमुदिनि कोई के काजकहे गहिवेको कुमुदिनी भयसों संकोचको प्राप्ति होती है तासों ऋक्ष नक्षत्र यहित्रास कहे फंदाभ्रमके त्रास ॥ १२ ॥ यामें आकाशमें सूर्य कीलाली छाइ रही है ताको वर्णन है मुनि विश्वा मित्र को संबोधन है ॥ १३ ॥ सूर्योदय सों नक्षत्रास्त भये तामें विश्वामित्रने तर्ककरचो दिनकर सूर्यरूपी जो अरुणमुख बानरहैं सो गगन आकाशरूपी तरु वृक्षमें धाइके चढचो है सो झुकि कहे रिसायके झहराइकहे हलाइके सकल तारका नक्षत्ररूपी जे कुसुम फूलेहैं तिन बिन कीन्ही सकलनक्षत्रास्तभयोतासों झुकि पद करचो ॥ १४ ॥

मू०—लक्ष्मण—दोहा ॥ जहींबारुणीकीकरी, रंचकरुचिद्विजराज ॥ तहींकियोभगवन्तबिन,संपतिशोभासाज ॥ १५ ॥ तोमरछन्द ॥ चहुंभागबागतड़ाग । अबदेखियेबड़भाग ॥ फलफूलसोंसंयुक्त । अलियोंरमैंजनमुक्त ॥ १६ ॥ राम—दोहा ॥ तिननगरीतिननागरी, प्रतिपदहंसकहीन ॥ जलजहारशोभितन जहँ, प्रगटपयोधरपीन ॥ १७ ॥

टी०-- वारुणी पश्चिमदिशा औ मदिरा द्विजराज चंद्रमा औ ब्राह्मण भ
गवंत सूर्य औ ईश्वर संपति चांदनी औ द्रव्यशोभाअंग छबि दुवौमें जान
सूर्योदयसों पश्चिम दिशामें शोभारहित चंद्रबिंब देखि श्लेषोक्तिसों वर्ण
कस्यो जो ब्राह्मण मदिराकी रुचिइच्छा करतहै ताको ईश्वर संपत्यादि सों ही
न करत हैं ॥ १५॥ चहुं भागचारौवीरमुक्त साधुजन ॥ १६ ॥ जा जनक
शगेते नगरी पुरी औ तेनागरी स्त्री नहीं हैं जे प्रतिपदस्थान स्थान प्रति अं
चरण चरण प्रति हंसपक्षी औक कहे जल औ हंसक बिछूवन सों हीन
औ जहां कहे जिनमें पीन बडे पयोधर वापी तडागादि औ कुचनमें जल
कमल औ मोतिनके हार समूह औ माला नहीं शोभित अर्थ सब नगरिनमें ज
लाशय जल युक्त हैं तिनमें कमल फूलेहैं औ हंस बसतहैं औ स्त्री मोतिन
के माला औ बिछुवा पहिरेहैं यासों या जनायो की बिधवांनहीं हैं और अ
जो देश तिन नगरिन औ तिन नागरिन सों युक्त है युक्तेतिशेषः । जिन
प्रतिपद कहे मग राजमार्गेति औ पग चिन्ह जे धूरिमें अंकित होतहैं ते
हंसपक्षी औकजल औ बिछुवन करि हीन हैं अर्थ नगरीनमें राजमार्ग छों
डि अन्यत्र हंस युक्त जल शोभित है औ स्त्रिनके पग चिन्हही में बिछुव
नहीं हैं औ पगनमें सब बिछुवा पहिरे हैं ओप जहँ कहे जिन नगरिन
औ स्त्रिनमें शोभितन जलज हारन कमल समूहन औ मोतीमालनसों यु
क्त पीन बड़ेपयोधर तड़ागादि औ कुच हैं ॥ १७ ॥

मू०— सवैया ॥ सातहुदीपनकेअवनीपतिहारिरहेजियमेंज
जाने । बीसबिसेब्रतभंगभयोसोकहोअबकेशवकोधनुताने
शोककिआगिलगीपरिपूरणआइगयेघनश्यामबिहाने । जानबि
केजनकादिककेसबफूलिउठेतरुपुण्यपुराने ॥ १८ ॥ दोधकछंद
॥ आइगयेऋषिराजहिलीने । मुख्यसतानँदविप्रप्रवीने । देखि
दुवौभयेपांयनिलीने । आशिषशीरषवासुलैदीने ॥ १९ ॥ वि
श्वामित्र–सवैया ॥ केशवयेमिथिलाधिपहेंजगमेंजिनकीरतिबेलि
वईहै । दानकृपानविधातनसोंसिगरीबसुधाजिनहाथलईहै । अ
गछसातकआठकसोंभवतीनिहुंलोकमेंसिद्धिभईहै । बेदत्रयीअ

रुराजसिरी परिपूरणताशुभयोगमईहै ॥ २० ॥

टी०– घनश्याम रामचन्द्र औ सजल मेघ जैसे सजल मेघनके आगमनसों वृक्षनकी दावाग्नि बुझातिहै औ हरितह्वै जात हैं तैसे धनुष काहूसों ना उव्यो अब सीताको ब्याहनाह्वै है ऐसे गाढ़ समय मों हम कछू सहाय ना कियो यह जासों कहैं ताको आगि जनकादिके पुण्य वृक्षनमों लगीरहै सो रामागमन सों धनुष उठिबो निश्चय करि बुझानी औ फूलि उठे प्रफुल्लित ह्वै उठे हरित ह्वै उठे इति ॥ १८ ॥ मुख्य जे शतानन्द प्रवीने विप्र ऋषि हैं ते राजा जनकको लीन्हे विश्वामित्रको आगे ह्वै लेवेको आइ गये विश्वामित्रको देखि दुवौ शतानन्द औ जनक पांयनमें लीनभये विश्वामित्र शीश सूंघि आशिष दयो ॥ १९ ॥ विश्वामित्र रामादिसों जनककी बड़ाई करत हैं वेदत्रयी कहे तीनोवेद ऋग्वेद सामवेद यजुर्वेद तिनके अंगसों औ राजश्रीके सात अंग सों औ योगके आठ अंग सों भव जो संसार है तामें तीनिहुं लोकमें जनककी सिद्धि काज सिद्धि भई है यासों या जनायो षडंग युक्त वेद सप्तांग युक्तराज्य अष्टांग युक्त योग साधन करत हैं वेदांगानि यथाशिक्षा १ कल्प २ व्याकर्ण ३ निरुक्ति ४ ज्योतिष ५ छंद ६ यथोक्तंषट्पंचासिकायां भट्टोत्पलटीकायां शिक्षा कल्पोव्याकर्ण निरुक्तंछंदोज्योतिषमिति । राज्यांगा नियथाराज १ मंत्री २ मित्र ३ खजाना ४ देश ५ कोट ६ सैन्या ७ स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशं राष्ट्रदुर्गबलानिच । राजांगानीत्यमरः योगंगा नियथा । यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ ध्यान ६ धारण ७ समाधि ८ यथोक्तं प्रबोधचंद्रोदये । यमनियमासन प्राणायामप्रत्याहार ध्यानधारणा समाधयश्च ॥ २० ॥

मू०– जनक– सोरठा ॥ जिनअपनोतनस्वर्ण, मेलितपोमय अग्निमें ॥ कीन्होंउत्तमवर्ण, तेईविश्वामित्रये ॥ २१ ॥ लक्ष्मणमोहनछंद ॥ जनराजवंत । जगयोगवंत । तिनकोउदोत । केहि भांतिहोत ॥ २२ ॥ श्रीराम–बिजय ॥ सबक्षत्रिनआदिदैकाहू छुईनछुयेबिजनादिकबातडगै । नघटैनबढैनिशिबासरकेशवलोकनकोतमतेजभगै । भवभूषणभूषितहोतनहींमदमत्तगजादिम

षीनलगै । जलहूंथलहूंपरिपूरणश्रीनिमिकेकुलअद्भुतज्योति जगै ॥ २३ ॥

टी०— जब विश्वामित्र जनककी स्तुति करचुके तब जनक अपने मंत्री आदिसों विश्वामित्रकी बढाई करत हैं उत्तम वर्ण ब्राह्मण औ अरुणरंग अर्थ तपस्या करिक्षत्रिय सों ब्राह्मण भये ॥ २१ ॥ जब विश्वामित्र जनकके राज्य औ योगकी स्तुति कियो तब संदेह युक्त है लक्ष्मण पूंछ्यो की जे जन जगत्‌में राज्य औ योग दुवौं साधत हैं ते कैसे उदयको प्राप्त होत हैं काहेते राज्य यौ योग परस्पर कर्म विरुद्ध हैं ॥ २२ ॥ लक्ष्मण पूंछ्यो की जेजन राजवंत योगवंत हैं तिनको उदोत कैसे होत है सो सुनिकै कहिबेकी अद्भुत युक्ति मनमें प्राप्त भई तासों विश्वामित्र सों प्रथमहीं रामचंद्रही उदोतके हेतु कहन लगे उदोत ज्योतिको होत है तालिये ज्योतिरूप करि कहत हैं की निमि जे जनक के पुरिखा हैं तिनके कुलकी जो ज्योति प्रकाशकी शिषा है सो अद्भुत जगै कहे जगति है दीपित है इति अर्थ और दीप ज्योतिके सम नहीं है सो अद्भुतता कहत हैं की दीप ज्योति को और दीप ज्योति छ्वै सकति है अर्थ समता करि सकति है अर्थ जैसे एक दीपकी ज्योति होति है तैसी सजातीय औरहू दीपकी होति है औ या निमिकुलकी ज्योतिको आदि दै कहे आदिही सों जब सौं प्रगट भई है अर्थ जबसों निमिबंश भयो तब सों काहू क्षत्रिन नहीं छुयो अर्थ समता कर्यो फेरि कैसी है की और ज्योति व्यजनादि बातसों डगमगाति है यह ज्योति व्यजनादि बातसों नहीं उगति आदि पदते चामरादि जानौ अर्थ व्यजनादि बात भोगादिको सुखजामें लिप्त नहीं ह्वैसकत फेरि कैसी है की और दीप ज्योति दिनमें घटतिहै औ यह निशिवासर कहे रात्योदि नघटति बढ़ति नहीं है अर्थ सबप्राणी जा बंशमें बराबर होत जात हैं तासों घटति नहीं औ पूरणताको प्राप्त है तासों बढ़ति नहीं औ और दीप ज्योतिसों थल मात्रहीको तम अंधकार दूरि होत है यासों कनकोत्तम तेज कहे अज्ञानको तेज दूरि होत है अर्थ जिनके उपदेश सों अथवा गानकरे सों अथवा कथा सुनिकै लोकन के प्राणिन को अज्ञान दूरि होत है

ज्ञानी होत हैं फेरि कैसी है की दीप ज्योति भवभूषण जो भस्म है तासों अर्थ गुलसों भूषित होति है औ यह भव जो संसार है ताके जे भुवन कुंडलादि हैं तिनसों नहीं भूषित होति अर्थ कुंडलादि धारण सुखमें नहीं लिप्त होति औ दीप ज्योतिमें मषी जो मसि है कज्जलरति सों लागति है अरु यामें गजादिरूपी जो मषी है सो नहीं लागति अर्थ गजादि आरोहन सुखभोगमें लिप्त नहीं होति आदि पदते रथास्वादि जानो औ दीप ज्योति थलहींमें पूरण रहति है औ यह जलहू थलमें परिपूरण है अर्थ जल थलमें प्रसिद्ध हैं योगसो जीवन्मुक्त है तासों राज्यसुखमें लिप्त नहीं होत इतिभावार्थः ॥ २३ ॥

मू०— जनक–तारक ॥ यहकीरतिऔरनदेशनसोहै । सुनि देवअदेवनकोमनमोहै ॥ हमकोबपुरासुनियेऋषिराई । सबगां उछसातककीठकुराई ॥ २४ ॥ विश्वामित्र--विजय ॥ आपने आपनेगैरनितौभुवपालसबैभुवपालैंसदाई । केवल नामाहिंकेभुव पालकहावतहैंभुवपालिनजाई । भूपनिकीतुमहीं धरिदेहबिदेह नमेंकलकीरतिगाई । केशवभूषणकीभवभूषणभूतनतैंतनयाउ पजाई ॥ २५ ॥

टी०— जा प्रकार तुम बरण्यो यह कीरति और बड़े राजनमें सोहति है या लायक हम नहीं हैं ॥ २४ ॥ पतिको धर्म है स्त्रीसों पुत्र कन्या उपजाइवो सो भूमिरूपी स्त्री है तासों और काहू भूपति नहीं उपजायो तासों केवल नामहींके भूपाल हैं भूपतिकी देह कोऊ नहीं धरे औ तुम भव संसार में भूषण नहूं को भूषण अर्थ जाते भूषण शोभा पावत हैं अति सुन्दरीति ऐसी तनयापुत्री भूतन पृथ्वीके तन देह ते उपजायो तासों भूपन की देह केवल तुमहीं धरे हो औ ताहूपर तुह्मारी कल कहे निर्दोष कीरति विदेहन में गाई है कहावत विदेह हौ यासों या जनायो की भोग राज्यको करत हौ यश जीवनयुक्त तपस्विनमें गायो है याते तुमसम कोऊ राजा नहीं है ॥ २५ ॥

मू०- जनक- दोहा ॥ इहिविधिकीचितचातुरी, तितकोकहाअकत्थ ॥ लोकनकीरचनारुचिर, रचिवेकोसमरत्थ ॥ २६ ॥ सवैया ॥ लोकनकीरचनारचिबेकोजहींपरिपूरणबुद्धिविचारी । व्हैगइकेशवदासतहींसबभूमिअकाशप्रकाशितभारी । शुद्धसलाकसमानलसी अतिरोषमईदृगदीठितिहारी । होतभयेतबसूरसुधाधर पावकशुभ्रसुधारँगधारी ॥ २७ ॥ दोहा ॥ केशवविश्वामित्रके,रोषमईदृगजानि ॥ संध्यासीतिहुंलोकमें,किहिनिउपासीआनि ॥ २८ ॥ जनक-दोधकछंद ॥ एसुतकौनकेशोभहिँसाजे । सुंदरश्यामलगौरविराजे ॥ जानतहौंजियसोदरदोऊ । कैकमलाविमलापतिकोऊ ॥ २९ ॥

टी०- जिनके लोक रचना रचिवेकी सामर्थ्य है तिनको वचन रचना करिवो कहा है ॥ २६ ॥ परिपूरण बुद्धि कहे निश्चयबुद्धि सों बुद्धि भूमि औ आकाशमें प्रकाशित भई अर्थ फैलत भई अथवा भूमिअकाश सहित प्रकाशित भयो प्रगट भई अर्थ सब विषय हस्तामलकवत देखि परचो तासमय शुद्ध कहे तीक्ष्ण शलाक बाण समान तिहारी रोष मयी दृष्टिलसी तासों सूर सूर्य सुधाकर चंद्रमा सरिस भयो औ अग्नि अमृतके रंगभये अर्थ अति भयसों तेजहीन श्वेतभये "शलाका शल्य मदन शारिका शल्यकी पुच ॥ छत्रादि काष्ठे शरयोरिति मेदिनी" ॥ २७ ॥ संध्यासम अरुणनेत्र भये तब जैसे तीनो लोकमें सबदोष निवारणार्थ संध्याकी उपासना करत हैं तैसे रोष निवारणार्थ ब्रह्मादि सब उपासना करतभये अर्थ सब आधीनह्वै स्तुति करतभये ॥ २८ ॥ दुहुनको सम सौंदर्यादि देखि यह मैं जीमें जानत हौं की ए दूनों सहोदर सगे भाई हैं औ कै कोऊ कहे कौनो रूपधारी कमलापति विष्णु विमलापति ब्रह्मा हैं आशय यह की इनमें विष्णु ब्रह्मासम सौंदर्य्यादि गुण हैं ॥ २९ ॥

मू०- विश्वामित्र ॥ चौ०सुंदरश्यामलरामसुजानौ । गौरसुलक्ष्मणनामबखानौ ॥ आशिषदेहुइन्हैसबकोऊ । सूरयकेकुलमंडन

दोऊ ॥ ३० ॥ दोहा ॥ नृपमणिदशरथनृपतिके, प्रगटेचारिकुमार ॥ रामभरतलक्ष्मणललित, अरुशत्रुघ्नउदार ॥ ३१ ॥ घनाक्षरी ॥ दानिनकेशीलपरदानकेप्रहारी दीनदानवारिज्योंनिदानदेखियेसुभायके ॥ दीपदीपहूकेअवनीपनकेअवनीपपृथुसम केशवदासदासद्विजगायके । आनँदकेकंदसुरपालकसेबालकये परदारप्रियसाधुमनवचकायके । देहधर्मधारीपैविदेहराजजुसेराजराजतकुमारऐसेदशरथरायके ॥ ३२ ॥

टी०— ॥ ३० ॥ ३१ ॥ यामें विरोधा भास है दानी जे हरिश्चंद्रादि राजा हैं तिनके ऐसे शील सुभाव हैं जिनके अपर जे शत्रु हैं तिनसों दान दंडके प्रहारो लेवैया हैं औ दिन प्रतिदान वारि विष्णुके जैसे सुभाय हैं ऐसे सुभायनके निदान कहे आदिकारण हैं अर्थ विष्णुके ऐसे सौर्यादि सुभायन को प्रगट करत हैं औ दीपक हैं प्रकाश कहँ दीपकहू के अर्थ अति कांति युक्त हैं औ अवनीपन के अवनीप राजा हैं अथवा दीप दीपके अवनीपन के अवनीप राजा हैं अर्थ सातौ दीपनके राजनके राजा हैं औ राजा पृथुके समान हैं औ गो ब्राह्मणके दास हैं तौ एते बड़े राजाको अतिदीन गो ब्राह्मणकी सेवा विरोध है अविरोध यह गो ब्राह्मणकी सेवा क्षत्रीको उचित है परदार लक्ष्मी अथवा पृथ्वी विदेह राजकाम अथवा जन वा राजाजनक के संबोधन है दानवारि सम सुभाव कहि औ लक्ष्मी प्रियकहि जनकको जनायो कीए विष्णु अवतार हैं अथवा ऐसे जे दशरथ राय हैं तिनके ए कुमार राजत हैं सुरपाल कैसे हैं बालकही तेये दशरथ राय जिनको वर्णन करियत हैं ॥ ३२ ॥

मू०— सोरठा ॥ जबतेबैठेराज, राजादशरथभूमिमें । सुखसोयोसुरराज, तादिनतेसुरलोकमें ॥ ३३ ॥ स्वागताछंद ॥ राजराजदशरत्थतनैजु । रामचन्द्रभुवचन्द्रबनैजु ॥ त्योंबिदेहतुमहूंअरुसीता ॥ ज्योंचकोरतनयाशुभगीता ॥ ३४ ॥ तारकछंद ॥ रघुनाथशरासनचाहतदेख्यो । अतिदुष्करराजसमाजनि

लेख्यो ॥ जनक ॥ ऋषिहैवहमन्दिरमाँझमगाऊं । गहिल्याव हिंहौंजनयूथबुलाऊं ॥ ३५ ॥ पधटिकाछंद ॥ अबलोगकहाक रिबेअपार । ऋषिराजकहीयहबारबार ॥ इनराजकुमारहिदेहु जान । सबजानतहैंबलकेनिधान ॥ ३६ ॥ जनक--दंडक ॥ बज्रतेकठोरहैकैलासतेबिशालकालदंडतेकरालसबकालकाल गावई । केशवत्रिलोककेबिलोकिहारे देवसबछोड़िचंद्रचूड़एक औरकोचढ़ावई । पन्नगप्रचंडपतिप्रभुकीपनचपीनपर्वतारिपर्व तप्रमानमानपावई । बिनायकएकहूपैआवैनापिनाकताहिकोम लकमलपाणिरामकेसेल्याावई ॥ ३७ ॥

टी०– यासों या जनायो की इंद्रकी सहाय करत हैं ॥ ३३ ॥ राजनके राजा दशरथके तनय पुत्र श्रीरामचन्द्र जैसे भूतलके चन्द्रमा बने हैं अर्थ राजनका राजा ऐसो तौ जाको पिता है आपु चन्द्रमा सरिस सबको सुखद है औ चांदनी सम यशप्रकाशक है याते बड़े भाग्यवान हैं इति भावार्थः ॥ तैसे हे विदेह तुमहूं औ सीता हौ अर्थ तुम राजनके राजा हौ औ सीता चकोर तनया सरिस शुभ गीता हैं तौ जाको तुमसोंपिता है आपु ऐसे यशको प्राप्त हैं तैसे सीता हू बड़ी भाग्यवती हैं इति भावार्थः॥ औ चकोरी को औ चंद्रहीको प्रेम उचित है तैसे सीताको औ श्रीरामचन्द्र को ह्वै है इति व्यंग्यार्थः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ इनको बलके निधान अर्थ बड़े बलवान सब जानत हैं औ विधान पाठ होइ तौ विधान कहे विधि जहां जा प्रकार चाहिये तहां ता प्रकार बलकरवो ॥ ३६ ॥ या प्रकार जा को सब प्राणी काल कालमें कहे समय समय मों गावत है अथवा काल जे यम हैं तिनहूं को काल नाश कर्त्ता चन्द्रचूड महादेव प्रचण्ड जे पन्नग सर्पनके पति हैं बड़े सर्प तिनहुंन के जे प्रभु वासुकी हैं तिनहींकी पीन कहे मोठी पनच रोदा है अथवा पन्नग प्रचंड पति जे वासुकी हैं तेई प्रभुकी महादेवकी प- नच हैं आशय यह और रोदा जाको बल नहीं सहि सकत औ पर्वतारि इंद्र और जे पर्वतन के प्रभा सदृश हैं दैत्यादि ते जाके गरुबाई के मान

प्रमानको नहीं पावत औ एक कहे अकेले जो विनायक गणेश हू ल्यायो चहै तौ नाहीं आइ सकत ॥ ३७ ॥

मू०— मुनि–दोहा ॥ रामहत्योमारीचज्यहि, अरुताडुकासुबाहु ॥ लक्ष्मणकोयहधनुषदै, तुमपिनाककोजाहु ॥ ३८ ॥ जनक–त्रिभंगीछंद ॥ सिगरेनरनायकअसुरविनायकरक्षसपतिहियेहारिगये । काहूनउठायोथलनछड़ायोटरयोनटारयोभीतभये ॥ इनराजकुमारनिअतिसुकमारनिलैआयोहोपैजकरे ॥ व्रतभंगहमारोंभयोतुह्मारोऋषितपतेजनजानिपरे ॥ ३९ ॥ विश्वामित्र–तोमर ॥ सुनिरामचन्द्रकुमार । धनुआनियेयहिबार ॥ पुनिवेगिताहिचढ़ाव । यशलोकलोकबढ़ाव ॥ ४० ॥

टी०— जनक कोमलपाणि कहेउ ताल ए मारीचादि को बध सुनाइ कठोर पाणि जनायो ॥ ३८ ॥ असुर बाणासुरादि विनायक गणेश अथवा असुरनमें विनायक श्रेष्ठ बाणासुर औ राक्षस पति रावण पैज कहे धनुष उठाइवेमें पराक्रम करिवेको लै आये हैं अथवा पैजकहे श्रमको करि कै तुम इन्हैं ल्याये हौ अथवा पैजप्रतिज्ञा ॥ ३९ ॥ ४० ॥

मू०— दोहा ॥ ऋषिहिदेखिहरषैहियो, रामदेखिकुह्मिलाइ ॥ धनुषदेखिडरपैमहा, चिन्ताचित्तडोलाइ ॥ ४१ ॥ स्वागताछंद ॥ रामचन्द्रकटिसोंपटुबांध्यो । लीलयैवहरकोधनुसाध्यो ॥ नेकुताहिकरपल्लवसोंछवै ॥ फूलमूलजिमिटूककरयोद्वै ॥ ॥ ४२ ॥ सवैया ॥ उत्तमगाथसनातजबै धनुश्रीरघुनाथजुहाथकैलीनो । निर्गुणतेगुणवंतकियो सुखकेशवसंतअनंतनदीनो । ऐंचोजहींतबहींकियोसंयुत तिच्छकटाक्ष नराच नवीनो । राजकुमारनिहारिसनेहसोशंभुकोसांचोशरासनकीन्हो ॥ ४३ ॥ प्रथमटंकोर झुकिझारिसंसारमदचंडकोदंडरह्योमंडिनवखंडको । चालिअचलाअचलघालिदिगपालबलपालिऋषिराजकेवचनप

रचंडको । सोधुदैईशकोबोधुजगदीशकोक्रोधउपजाइभृगुनंदब रिबंडको । बाँधिवरस्वर्गकोसाधिअपवर्गधनुभंगकोशब्दगयो भेदिब्रह्मंडको ॥ ४४ ॥

टी०- ॥ ४१ ॥ कटिसों कहे कटिमेंफूल मूलपोनारी लीलहि सों हरको धनु साध्यो यही पाठ है ॥ ४२ ॥ उत्तम गाथकहे गान जिनको औ सनाथ विश्वामित्र सहित गुणवन्त रोदायुक्त औ धनुष खैंचत में तिरछी दृष्टि परति हैं सोई नराचबाण हैं तासों संयुत कियो राजकुमार जे रामचन्द्र हैं ते स्नेह सहित निहारिकै शंभु कोशरासन सांचो कीन्हो शरान् अस्यति क्षिपतीति शरासन अर्थ धन्वी शरन्का चलावत है जासों तासों शरासन कहावत है सो कटाक्ष रूपी शरयुक्त करिसत्य कियो ॥ ४३ ॥ धनु भंग को जो शब्द है सो चण्ड कहे प्रचण्ड जो कोदण्ड धनुष है ताको जो प्रथम टङ्कोर खैंचिवेको शब्दहै ताके साथ ही इति शेषः ॥ यासों प्रथम टंकोरहीके संग धनुषटूटिबो जनायो झुंकि कहेक्रुद्धह्वै अर्थ क्रूरताको प्राप्तह्वै कै संसारकोमदझारिकै अर्थ संसारकेसब प्राणिनको कादर करिकै नौहूखंडमें मंडिकहे छाइरह्यो औ फेरि अचला जो पृथ्वी है औ अचल पर्वतनको चालि कहे चलाइकै औ दिगपाल इंद्रादिकनके बलको घालिकै अर्थ विह्वल करिकै औ रामचंद्र धनुष उठाइ हैं यह वचन विश्वामित्रको जनक प्रति रह्यो ताको पालिकै औ ईश महादेवको सोधु कहे खोज संदेश इतिदैकै औ क्षीरसागरमें सोवत जे जगदीश विष्णु हैं तिन्हैं बोधि कहैं जगाइ कै औ भृगुनंदन परशुराम के क्रोध उपजाय कै औ स्वर्गको बांधि कै कहैं स्वर्ग भरेमो व्याप्त ह्वैकै औ बाधि पाठ होइ तौ स्वर्ग को बाधा करिकै अर्थ को बेधि कै अथवा स्वर्ग के प्राणिन को विह्वल करिकै याप्रकार ब्रह्मांड को बेधिकै मुक्ति कोसाधि साधन करिकै गयो अर्थ ब्रह्मांड फोरि विष्णु लोक को प्राप्त भयो ऐसो उच्च शब्दभयो इति भावार्थः औ रामचन्द्र के करस्पर्श सों याही विधि सबको मुक्ति मिलति है इति व्यंग्यार्थः ॥ ४४ ॥

मू० जनक--दोहा ॥ सतानंदआनंदमति,तुमजोहुतेउनसाथ ॥ बरज्योकाह्नधनुषजब,तोरयोश्रीरघुनाथ ॥ ४५ ॥ सतानं

दतोमर ॥ सुनुराजराजविदेह । जबहौंगयोबहिगेह ॥ कछुमैं नजानीबात । कबतोरियोधनुतात ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ सीता जूरघुनाथको, अमलकमलकीमाल ॥ पहिराईजनुसबनकी, हृदयावलिभूपाल ॥ ४७ ॥

टी०– ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ सीतामें सब भूपालनके हृदय लगे रहैं तिनको वेधिमाल बनाइ मानौं रामचन्द्र का पहिरायो हृदयको कमल सदृश वर्णन है तासों ॥ ४७ ॥

मू०– चित्रपदाछंद ॥ सीयजहींपहिराई । रामहिमालसुहाई ॥ दुंदुभिदेवबजाये । फूलतहींबरसाये ॥ ४८ ॥ इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणि श्रीरामचन्द्रचंद्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांधनुर्भंगवर्णनोनामपंचमःप्रकाशः ॥ ५ ॥

टी०– ॥४८॥ इति श्रीमज्जगज्जननिजनकजानकी जानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां पंचमःप्रकाशः ॥ ५ ॥

मू०– दोहा ॥ छठेंप्रकाशकथारुचिर,दशरथआगमजानि ॥ लगनोत्सवश्रीरामको,ब्याहबिधानबखानि ॥ १ ॥ सतानंद-तोटकछंद ॥ विनतीऋषिराजकिचित्तधरौ । चहुंभैयनकेअबब्याह करौ ॥ अबबोलहुबेगिबरातसबै । दुहितासमदौसुखपाइअबै ॥ २ ॥ दोहा ॥ पठईतबहींलगनालिखि,अवधपुरीसबबात ॥ राजादशरथसुनतहीं,चाह्योचलीबरात ॥ ३ ॥ मोटक--छंद ॥ आयेदशरत्थबरातसजे । दिगपालगयंदनिदेखिलजे ॥ चार्‌यो दलदूलहचारुबने । मोहेसुरऔरनिकौनगनै ॥ ४ ॥

टी०– ॥ १ ॥ दशरथ की प्रभुता सुनि औ रामचन्द्रको पराक्रमदेखि जनक चारौ सुतनकेब्याह करिवेको विश्वामित्रसों बिनती कीन्हो सो सतानंद विश्वामित्रको समुझावत हैं की हेऋषिराज जनककी बिनती चित्तमें धरौ समदौ । बिवाहौ ॥ २ ॥ राजा दशरथके लगनपत्री सुनतही चारौबरातैंचलीं अर्थ चारौ बरातैं साजिराजादशरथ ब्याहिवेकों चले ॥ ३ ॥ ४ ॥

मू०- तारकछंद ॥ बनिचारिबरातचहूंदिशिआई । नृपचारिचमूअगवानपठाई ॥ जनुसागरकोसरितापगुधारी । तिनकेमिलिबेकहँबाँहपसारी ॥ ५ ॥ दोहा ॥ बारोठेकोचारुकरि, कहि केसबअनुरूप । द्विजदूलहपहिराइयो, पहिरायेसबभूप ॥६॥ त्रिभंगीछंद ॥ दशरत्थसँघातीसकलबरातीबनिबनिमंडपमाँहगये। आकाशविलासीप्रभाप्रकाशी जलजगुच्छजनुनखतनये ॥ अतिसुंदरनारीसबसुखकारीमंगलगारीदेनलगीं । बाजेबहुबाजत जनुघनगाजतजहांतहांशुभशोभजगीं ॥ ७ ॥ दोहा ॥ रामचन्द्र सीतासहित,शोभतहैंत्यहिठौर । सुवरणमयमणिमयखचित,शुभ सुंदरशिरमौर ॥ ८ ॥

टी०- एकही दिशासों चारौं बरातैं आवतीं तौ एकएक बरातकी अगवानी में बेर होती व्याहकी लगन टरिजाती तासों एकहीबार अगवानी होवेके लिये चारौं बरातैं चारो दिशाव्है आईं सागर सरिस राजा जनक हैं सरिता सरिस चारो बरातैंहैं बाँह सरिस अगवानी की चारोचमू हैं ॥ ५ ॥ बारोठे को चारकहे द्वारपूजा अनुरूप यथोचित पहिराइयो पदते भूषण वस्त्र पहिराइयो जानो ॥ ६ ॥ बारोठेको चारुकरि जनवास मंदिरको गयेइति कथाशेषः जनवास मंदिर ते भांवरि करिवेकेलिये मंडपकहे माडवमे गये सो मंडप कैसोहै आकाश विलासी कहे आकाश को ऐसो है बिलास कौतुक जाको अर्थअति दीर्घ अति उच्च है औ आकाश में नक्षत्रहैं इहां झलरन में लगे प्रभा प्रकाशी कहे अति शोभायुक्त जे जलजमोतिनके गुच्छ हैं तेई नये नवीन नखतहैं ॥ ७॥ खचित कहे चित्रित ॥ ८ ॥

मू०-- षट्पद ॥ बैठमागधसूतबिविधिविद्याधरचारण । केशवदासप्रसिद्धसिद्धशुभअशुभनिवारण ॥ भरद्वाजजाबालिअत्रि गौतमकश्यपमुनि । विश्वामित्रपवित्रचित्रमतिबामदेवपुनि ॥ सबभांतिप्रतिष्ठितनिष्ठमतितहँवशिष्टपूजतकलस । शुभसतानंदमिलिउच्चरतशाखोच्चारसबैसरस ॥ ९ ॥ अनुकूलछंद ॥ पाव

कपूज्योसमिधसुधारी । आहुतिदीनीसबसुखकारी ॥ दैतबक न्याबहुधनदीन्हो । भाँवरिपारिजगतयशलीन्हो ॥ १० ॥ स्वागताछंद ॥ राजपुत्रकनिसोंछबिछाये । राजराजसबडेरहिआये॥ हीरचीरगजबाजिलुटाये । सुंदरीनबहुमंगलगाये ॥ ११ ॥ सोरठा ॥ वासरचौथेयाम, सतानंदआगूदिये ॥ दशरथनृपकेधाम, आयेसकलबिदेहबनि ॥ १२ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ कहूंशोभनादुंदुभीदीहबाजैं। कहूंभीमभंकारकर्नालसाजैं ॥ कहूंसुंदरीबेनुबीनाबजावैं । कहूंकिन्नरीकिन्नरीलैसुगावैं ॥ १३ ॥ कहूंनृत्यकारींनचैंशोभसाजैं । कहूंभांड़बोलैंकहूंमल्लगाजैं ॥ कहूंभाटभाव्योकरैंमानपावैं । कहूंलोलिनीबेड़िनीगीतगावैं ॥ १४ ॥ कहूं बैलभैंसाभिरैंभीमभारे । कहूंएणएणानिकेहेतकारे ॥ कहूंबोकबाँकेकहूंमेषशूरे । कहूंमत्तदंतीलरैंलोहपूरे ॥ १५ ॥

टी०— मागध वंशावली वर्णन करैया सूत स्तुति करैया चारण प्रेष्यए भाटकी जाति हैं शुभ अशुभ निवारण कहे शुभमें अशुभ के निवारण मेटनहार निष्ठमति कहे उत्तम मति ॥ ९ ॥ समिध होमकी लकरी ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ वासर के चौथे याम कहे तीनि पहर दिनबीतेके उपरांत दशरथ के धामकहे जनवास मंदिरमें बिदेह कहे जनकके गोत्री ॥ १२ ॥ तीनिछंदको अन्वय एकहे राजा दशरथके फौजमें ऐसोकौतु कदेखत भये किन्नरी सारंगी ऐनी हरिणीनसोंहेतकरियतहरिण परस्पर भिरतहैं भिरत पदको अनुषं एतहू में है मेषभेड़ा लोह पूरे जंजीरहू को पहिरे अथवा वीरतासों युक्त ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

मू०— दोहा ॥ आगेहवैदशरथलियो, भूपतिआवतदेखि ॥ राजराजमिलिबैठियो, ब्रह्मब्रह्मऋषिलेखि ॥ १६ ॥ सतानंदशोभनाछंद ॥ मुनिभरद्वाजवशिष्ठअरुजाबालिविश्वामित्र । सबैहौतुम ब्रह्मऋषिसंसारशुद्धचरित्र ॥ कीन्होंजोतुमयाबंशपैकहिएकअंश नजाई । स्वादकहिवेकोसमर्थनगूंगज्योंगुरखाइ ॥ १७ ॥ अन्य

त्र-सुखदाछंद ॥ ज्योंअतिप्यासोपावैमगमेंगंगाजलु । प्यासन एकबुझाइबुझैत्रैतापबलु ॥ त्योंतुमतेहमकोनभयोअबएकसुख । पूजेमनकेकामजोदेख्योराममुख ॥ १८ ॥

टी०- राजर्षि दशरथादि राजर्षि जनकादिकन सों मिलिकै बैठे ब्रह्मर्षि वशिष्ठादि ब्रह्मर्षि सतानन्दादिकन सों मिलिकै बैठे ऋषिपद की अनुषंगराजपद हम हैं १६ ॥ संसार में शुद्ध है चरित्र जिनको अथवा संसारको शुद्ध कर्ताहै चरित्र जिनको अर्थ जिनके चरित्र कहि सुनि संसारके प्राणी शुद्ध होतेहैं ॥ १७ ॥ जैसे मगमें अति प्यासो प्राणी जलमात्रको चाहतहै औ वह भाग्ययोग ते गंगाजलपावै तौ वाकी एक प्यासही नहीं बुझाति देहिक दैविक भवतिक जे तीनों तापहैं तिनको बल बुझात है अर्थ त्रयताप दूरिहोत हैं तैसे केवल धनुष चढ़ावै ताही को ब्याह करिये हमारी एतिही प्रतिज्ञा पूर्वक इच्छा रही सो तुमते हमको केवल व्याह इच्छा पूर्ण रूपही सुख नहीं भयो रामचंद्रको मुखदेखि रूप बल विद्या कुलादि के काम अभिलाष पूजे पूर्ण भये ॥ १८ ॥

मू०- जनक-सवैया ॥ सिद्धसमाजसजैंअजहूंनकहूंजगयोगिनदेखनपाई । रुद्रकेचित्तसमुद्रबसैनितब्रह्महुपैबरणीजोनजाई ॥ रूपनरंगनरेषविशेषनादिअनंतजोवेदनगाई । केशवगाधिकेनंदहमैंवहज्योतिसोमूरतिवंतदेखाई ॥ १९ ॥ अन्यच्च-तारकछंद ॥ जिनकेपुरिषाभुवगंगाहिल्याये । नगरीशुभस्वर्गसदेहसिधाये ॥ जिनकेसुतपाहनतेतियकीनी । हरकोधनुभंगभ्रमेंपुरतीनी ॥ २० ॥ जिनआपुअदेवअनेकसँहारे । सबकालपुरंदरकेरखवारे ॥ जिनकीमहिमाहिअनंतनपायो । हमकोबपुरायशवेदनिगायो ॥ २१ ॥ बिनतीकरियेजनजोजियलेखो । दुखदेख्योजोकाल्हित्योंआजहुदेखो । यहजानिहियेढिठईमुखभाषी । हमहैंचरणोदककेअभिलाषी ॥ २२ ॥

टी०- रुद्र महादेव के चित्त रूपी समुद्र में जो बसति है अर्थजाको म-

हादेव आराधन करत हैं ॥ १९ ॥ तीनि छंद को अन्वय एकहै भगीरथ सगरके सुतनके तारिवेको गंगाकोल्याये हैं औ हरिश्चन्द्र नगरी अयोध्या सहित स्वर्ग कोगये दुवौ कथा प्रसिद्ध हैं औ जिनके सुतरामचंद्र गौतमीको पाहन सों स्त्री कीन्हों औ हरका धनुष भंग कीन्हों जा धनुष में तीनिपुर कहे तीनिलोक भ्रमें अर्थ जा धनुषको तीनों लोक के प्राणिन उठायो ना उठ्यो तब भ्रमें कहे संदेहको प्राप्त भये अथवा ऐसी अवस्था में ऐसो धनुष तोऱ्यो यासों तीनहूं लोक भ्रमें औ आपु कैसेहैं की जिनअनेक अदेव दैत्यनको माऱ्यो है औ सदापुरंदर इन्द्रकी रक्षा करत हौ यासों या जनायो की ऐसे उद्धत कर्म करिवे को तुह्मारे घरकी परंपरा की रीति है अनंतशेषऔ जिनकी महिमा महि अंत न पायो पाठहोइ तौ महीभरे के प्राणिन जिनकी महिमा को अंत नहीं पायो यह बिनती करियत है की हमको अपने जन सेवक के समानजिय में लेषो कहे जानौं औ जैसे कालिह हमारे इहांबास करि दुःख देख्योहै तैसे आजहूं देखो अर्थ आजहू बास करौ हम चरणोंदक कहे चरण जल के अभिलाषी हैं तासों एती ढिठाई मुख सों भाख्यो है यह तुम जी में जानिकहेजानौं चरणोंदकके अभिलाषी कहि या जनायो की हमारे घर में चलि भोजन करौ जाते हम चरण धोइ चरणोंदक लेइं जाते हमारे गृहादि पवित्र होंइ याभांति निमंत्रण दियो ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥

मू०—तामरसछंद ॥ जबऋषिराजबिनयकरिलीनों । सुनि सबकेकरुणारसभीनों ॥ दशरथराययहैजियजानी । यहवहएक भईरजधानी ॥ २३ ॥ दशरथ—दोहा ॥ हमकोतुमसेनृपतिकी, दासीदुर्लभराज । पुनितुमदीनीकन्यका, त्रिभुवनकीशिरताज ॥ ॥ २४ ॥ भारद्वाज—तामरसछंद ॥ सुखदुखआदिसबैतुमजीते । सुरनरकीबपुराबलरीते ॥ कुलमँहाहोहिंबडोलघुकोई । प्रतिपुरुषनिबडोसोबडोई ॥ २५ ॥

टी०— ऋषि सतानंद राजा जनक ॥ २३ ॥ २४ ॥ अतिबलीजे दुःख सुखादि हैं आदि पदने काम क्रोधादिहू जानौं तिनहींको तुम जीते हौ अर्थ दुःख सुखादि के बश्य नहीं हौ तौ बल करिकै रीते कहे खाली बपुरा कहे

दीन जे सुर औ नर हैं ते तुम कौ जीतिवे को कहे कहाहै औ कुलमें चाहौ प्रतापादि करि बडो होइ चाहै छोटोई जो प्रति पुरुषन बड़ो होतहै सो बडोई रहत है यासों या जनायोकी जो प्रति पुरुष बडो है ताके कुल में लघुहू होइ तौबडो है औ तुम प्रति पुरुषानहूं बडे हौ औ तुह्मारे दुःख सुखादि जीतिवेकी सामर्थ्यहै तासों तुमसमानकोऊ नहीं है अथवा और कोई अपने कुल में बडो लघु होत हैं अर्थ कोऊ प्राणी बडोभयो कोऊ छोटो भयो औरई कहे जनक प्रति पुरिषान बडो सो बडोकहे बडेते बड़े हैं अर्थ इनके कुल में क्रम सों एक ते एक बडे होत आवत हैं ॥ २५ ॥

मू०-- वशिष्ठ-विजयछंद ॥ एकसुखीयहिलोकबिलोकियेंहैं वहिलोकनिरैपगुधारी । एकइहांदुखदेखतकेशवहोतवहांसुरलोकबिहारी ॥ एकइहांऊउहांअतिदीनसोंदेतदुहूंदिशिकेजनगारी । एकहिभांतिसदासबलोकनिहैप्रभुतामिथिलेशतिहारी ॥ २६ ॥ जाबालि-बिजयछंद ॥ ज्योंमणिमयअतिज्योतिहुतीरबितेकछुऔरमहाछबिछाई । चंद्रहिबंदतहैंसबकेसबईशतेवंदनताअतिपाई ॥ भागीरथीहुतिपै अतिपावनबावनतेअतिपावनताई । त्योंनिमिबंशबड़ोईहुतोभइसीयसँयोगबड़ीयबडाई ॥ २७ ॥ विश्वामित्र-मालिनीछंद ॥ गुणगणमणिमाला । चित्तचातुर्यशाला ॥ जनकसुखदगीता । पुत्रिकापाइसीता ॥ अखिलभुवनभर्त्ता । ब्रह्मरुद्रादिकर्त्ता ॥ थिरचरअभिरामी । कीयजामातुनामी ॥ २८ ॥ दोहा ॥ पूजिराजऋषिब्रह्मऋषि, दुंदुभिदीन्हिबजाइ । जनककनकमंदिरगये, गुरुसमेतसुखपाइ ॥ २९ ॥

टी०-- ॥ २६ ॥ ईश महादेव ॥ २७ ॥ जनक संबोधनहै गुण गणरूपी जेमणिमुक्तादिहैं तिनकी माला है अर्थ अनेक गुणनसों युक्त है औ चित्तको जो चातुर्य्य चातुरी है ताकी शालावर है अथवा चित्तहै चातुर्य्य को शाला जाको अथवा चित्त की चातुर्य्यसे शाला कहे गुर द्यो है औ सुखद है गीतागानजाको अर्थ जाको गानकरे सुने सबके सुख होत है ऐसी सी-

ता नामा पुत्रिका को पाइकै अथवा ये तीनों लक्ष्मीके विशेषण हैं विशेषण नहीं सो लक्ष्मी जनायो की ऐसी जो लक्ष्मी हैं ताको सीता नामा पुत्रिका पाइकै अखिल संपूर्ण भुवन कहे चौदहों भुवनके भर्त्ता पोषक औ ब्रह्म रुद्रादि के कर्ता औ थिर वृक्षादिचर मनुष्यादि सबमें अभिरामी कहे बासकर्त्ता अथवा शोभा कर्त्ता औ नामी कहे यशी ऐसो जामातु तुमकीय कहे कर्‌यो जैसे तीनों विशेषणन सों लक्ष्मी जनायो तैसेचार्‌यो विशेषणन सों विष्णु जानों तौ लक्ष्मी जाकी पुत्रिका भई औ विष्णु यामातु भये तासों अति भाग्यवान् हौ इतिभावार्थः अथवा विश्वामित्र कहत हैं की जनक सुखद जे ईश्वर हैं जिन करिकै गीता कहे गाई अर्थ जाको विष्णुहू गान करतहैं यासों लक्ष्मी जनायो और अर्थ एकईहै ऐसी जो सीतानामा तुम्हारी पुत्रिका हैं ताको हमपायो औ सो यामातु तुमकीय कहे कर्‌यो यासों या जनायो की दूनों तरफ बडा लाभ भयो २८ । २९ ॥

मू०— चामरछंद ॥ आसमुद्रकेक्षितीशऔरजातिकोगने । राजभौनभोजकोसबैजनेगयेबने ॥ भाँतिभाँतिअन्नपान व्यंजनादिजेंवहीं । देतनारिगारिपूरिभूरिभूरिभेवहीं ॥ ३० ॥ हरिगीतछंद ॥ अबगारितुमकहँदेहिंहमकाहिकहाद्दूलहरामजू । कछुबापप्रियपरदारसुनियतकरीकहतकुवामजू । कोगनैकेतनेपुरुषकीन्हेंकहतसबसंसारजू । सुनिकुंवरचितदैवरणिताकोकहियसबव्योहारजू ॥ ३१ ॥

टी०— औ समुद्र के कहेसमुद्र पर्यन्तके अर्थ पृथ्वीभरेके भूरिभूरि भेवहीकहे अनेक भेदसों ॥ ३० ॥ सात हरिगीतछंदको अन्वय एक है यामें श्लेष सों आशीर्वादात्मक व्याजस्तुति है परदार कहे परस्त्री उत्कृष्टदार कुबाम कुत्सित वाम औकुक हे पृथ्वीरूपबाम व्योहारकहे संबन्ध मित्रता इति कुवाम पक्ष रत्नाकर कहे अनेक रत्नयुक्त पृथ्वी यछा समुद्र शीश पश्चिम करिकै औ पांय पूरुब करिकै प्रलयकाल के उपरांत जबशेष के फणिकहे फणनि की मणिमाला मणि समूह की पलिका अथवा शेषजे फणिकहे सर्पहैं तिनकी मणिमाला की पलिका में परति पौढति है तव अनेक पुरुषन

को युद्धादि कराइ ग्रहन त्यागरूप प्रबंध कियो करतिहै गातहैं सहजेही सु-
गंध युक्त जाके गंधवती पृथ्वीतिन्यायशास्त्रोक्तत्वात् जाप्रबंधसों हिरण्याक्षा-
दिजो पुरुषकन्यो सो क्रमही गनायो सरबस कहेसबसार कहे रस स्वादेति
औ द्रव्यभ्रमि कहे भूलिहूके ज्यौं कहेजा ते और पतिको मुखन निरखै त्यों
कहे ता प्रकारसों तुम ताको राखियो जा स्त्रीको दशरथ राख्यो ताको तुम
राखियो यह परिहास है औ ताही पृथ्वीकी रक्षा तुम करियो यह आ-
शीर्बाद है ॥ ३१ ॥

मू०-- बहुरूपसोंनवयोबनाबहुरत्नमयबपुमानिये । पुनिबस
रत्नाकरबन्योअतिचित्तचंचलजानिये ॥ शुभशेषफणिमणिमाल
पलिकापरतिकरतिप्रबंधजू । करिशीशपश्चिमपाँयपूरबगातस
हजसुगंधजू ॥ ३२ ॥ वहहरीहठिहरिनाक्षदैयतदेखिसुंदरदेहसों ।
बरबीरयज्ञबराहबरहीलईछीनिसनेहसों ॥ हवैगईबिहवलअंग
पृथुफिरिसजेसकलशिंगारजू । पुनिकछुकदिनबशभईताकेलि
योसरबससारजू ॥ ३३ ॥ वहगयोप्रभुपरलोककीन्होंहिरणक
श्यपनाथजू । तेहिभाँतिभाँतिनभोगयोभ्रमिपलनछांडयोसाथ
जू ॥ वहअसुरश्रीनरसिंहमारयोलईप्रबलछडाइकै । लैदईहरि
हरिचंदराजहिंबहुतजोसुखपाइकै ॥ ३४ ॥ हरिचन्द्रबिश्वामित्र
कोदइदुष्टताजियजानिकै । तेहिबरोबलिबरिबंडबरहींबिप्रतप
सींजानिकै । बलिबांधिछलबललईबावनदईइंद्रहिआनिकै । ते
हिइन्द्रतजिपतिकरयोअर्जुनसहसभुजकोजानिकै ॥ ३५ ॥ तब
तासुमदछबिछक्यो अर्जुनहत्योऋषिजमदग्निजु । परशुरामसोस
कुलजाऱ्योप्रबलबलकीअग्निजु । तेहिबरतबहींसकलक्षत्रिनमा
रिमारिबनाइकै । येकईशबेरादईबिप्रनरुधिरजलअन्हवाइकै ॥
॥ ३६ ॥ वहरावरेपितुकरीपत्नीतजीबिप्रनथूंकिकै । अरुकहत
हैंसबरावणादिकरहेताकहँढूंढ़िकै ॥ यहिलाजमारियततहितुम

सोंभयोनातोनाथजू । अबऔरमुखनिरखैंनज्योंत्योंराखियोरघु नाथजू ॥ ३७ ॥ सोरठा ॥ प्रातभयेसबभूपबनिबानिमंडपमेंगये ॥ जहांरूपअनुरूपठौरठौरसबशोभिजें ॥ ३८ ॥ नाराचछन्द ॥ रचीविरंचिबाससी निथम्भराजिकाभली । जहाँतहाँबिछाव नेबनेघनेथलीथली ॥ वितानश्वेतश्यामपीतलालनीलकारँगे । मनोंदुहूंदिशानकेसमानबिम्बसेजगे ॥ ३९ ॥

टी०– ३२ । ३३ । ३४ । ३५ । ३६ । ३७ ॥ रूपजो सौंदर्य्य है ताके अनुरूप सदृश अर्थ अति सुंदर ॥ ३८ ॥ जा मंडपमें बिरञ्चिजेब्रह्मा हैं तिन- के बासगृहकी ऐसीनिथंभ कहे थंभनकी राजिका पंगतिरचीहै अर्थ ब्रह्माकेमंदिर सदृशमंडपबन्योहै बिचित्रबाससीनि पाठ होइतौ बिचित्र बाससीनि कहेबि- चित्र वस्त्रन करि के अर्थ परदान करिकै थंभराजिका रचीहै बनीहै अर्थ अने- क रंग के परदा लगे हैं वितान चँदोवा श्याम कहे बैंजनी नीलिका जो लीलहै तासों रंगे हरिण जानों मानों भू आकाश जे दूनों दिशा हैं तिनके परस्पर समान बिंब कहे प्रतिबिंब से जने हैं अर्थ भूमें जे बिछावने हैं ति- नके प्रतिबिंब आकाश में जगे हैं औ आकाश में बितानहैं तिनके प्रतिबि- म्ब भूमें जगेहैं यासों या जानों जहां जारंग को वितान तन्योहै तहां ताही रंगके बिछावने हैं बिंबन्तुप्रतिबिम्बेपीतिमेदिनी ॥ ३९ ॥

मू०– पद्धटिकाछन्द ॥ गजमोतिनकीअवलीअपार । तहँक लशनपरउरमतिसुढार । शुभपूरितरतिजनुरुचिरधार । जहँतहँअ काशगंगाउदार ॥ ४० ॥ गजदन्तनकीअवलीसुदेश । तहँकुसु मराजिराजतिसुवेश ॥ शुभनृपकुमारिकाकरतिगान । जनुदेवि नकेपुष्पकविमान ॥ ४१ ॥ तामरसछन्द ॥ इतउतशोभितसु न्दरिडोलैं । अर्थअनेकनिबोलनिबोलैं ॥ सुखमुखमंडलचित्तनि मोहें । मनहुंअनेककलानिधिसोहें ॥ ४२ ॥ भ्रुकुटिविलासप्र काशितदेखे । धनुषमनोजमनोमयलेखे ॥ चरचितहासचन्द्रिक निमानो । सुखमुखबासनिवासितजानो ॥ ४३ ॥

टी०- मण्डपकी रति कहे प्रीति सों पूरित मानों रुचिर धार कहे प्रवाहन करिकै मण्डप में जहां तहां उदार सुन्दर आकाशगंगा हैं अर्थ गज मोतिन की माला हैं ते मानों अनेक धारा ह्वै मण्डपमें आकाशगंगा राजती हैं ॥ ४० ॥ गजदन्त जे टोडा हैं तिनकी अवली सुदेश कहे सुन्दर रौसयुक्त बनीहैं पुष्पयुक्त आकाश में वर्त्तमान विमान सदृश गजदन्त के रौसहैं देवी सरिस नृपकुमारिका हैं ॥ नागदन्तोहस्तिदन्ते गेहान्निःसृतदारुणीत्यभिधानचिन्तामणिः ॥ ४१ ॥ कलानिधि चन्द्रमा ॥ ४२ ॥ मानों मनोजमय कहे मनोज प्रधान मनोज जो कन्दर्प है सोई है प्रधान देवता जिनके ऐसे धनुषहैं अर्थ मानों कामके धनुषहैं यह लेखे कहे ठहरायो है अथवा मनोमय कहे अनेक मनन करिकै युक्त अर्थ सुन्दरतासों जिनमें अनेकमनबसेहैं ऐसे मनोजके धनुषहैं चर्चितपूजितयुक्तेतिसुखकहे स्वाभाविक ॥ ४३ ॥

मू०- दोहा ॥ अमलकपोलैआरसी, बाहूचम्पकमार ॥ अवलोकनैविलोकिये,मृगमदमयघनसार ॥ ४४ ॥ गतिकोभारम हावरे अंगअंगकोभार ॥ केशवनखशिषशोभिजै शोभाई शृंगार ॥ ४५ ॥ सवैया ॥ बैठेजरायजरेपलिकापररामसियासबको मनमोहै । ज्योतिसमूहरहेमढिकैसुरभूलिरहेबपुरोनरकोहै । केशवतीनिहुंलोकनकीअवलोकिवृथाउपमाकविटोहै । शोभनसूरजमंडलमांझमनोंकमलाकमलापतिसोहै ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ गंगाजलकीपागशिर, सोहतिश्रीरघुनाथ ॥ शिवशिरगङ्गाजलकिधों, चन्द्रचन्द्रिकासाथ ॥ ४७॥ तोमरछन्द ॥ कछुभृकुटिकुटिलसुवेश । अतिअमलसुमिलसुदेश ॥ विधिलिख्योशोधिसुतंत्र। जनुजयाजयकेमंत्र ॥ ४८ ॥

टी०- ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ठोहैं कहे खोजत हैं ॥ ४६ ॥ गंगाजल कपरा पश्चिम में प्रसिद्ध है तो बडे लोग ब्याह समयही में पीतपाग बांधत हैं औ यह बिदा के रोज को बर्णन है तासों श्वेतपाग कह्यो अथवा चौदहें प्रकाशमें कह्योहैकि ॥ समुझै नसूरप्रकाश आकाशबलितबिलाश पुनिऋक्षलक्ष

निसंग जनुजलधिगंगतरंग ॥ औ पन्द्रहें प्रकाशमें कह्योहै कि बीचबीचहैं क-पीश बीचबीचऋक्षजाल लंक कन्यका गरे किपीतनीलकण्ठमाल ॥ तौपीत बानरनको गंग तरंगसम कह्यो तैसे ह्योऊं पीतपागको गंगाजल सम कह्यो ता-सों श्वेतपीतकी औ हरित श्यामकी कहूं समता करतहैं यह कवि नियम है ॥ ४७ ॥ सुमिल चिक्कण सुदेश सुन्दर सुतंत्र कहे स्वच्छंद जे बिधिहैं तिन लिख्यो है अथवा सुष्ट जो तंत्रशास्त्रहै तासों शोधिकै ढूंढिकै अथवा शु-द्ध करिकै मानों बिधातैं जाके पास होइ ताके जयको शत्रुके अजयको मंत्र लिख्यो है अथवा जयके अर्थ अजय कहे काहूके जीतिबे योग्य नाहीं ऐसे जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनको जय कहे जीतिको मंत्र बिधि लिखि दियो है जासों रामचन्द्र सबको जीतत हैं बश्य करत हैं अथवा जया जो पार्वती हैं तिनहूं के जयको जीतिबेको मंत्र लिख्यो है यासों या जनायो पतिव्रतन में अग्र-गणनीय जे पार्वती हैं तेऊ जिनको देखि वश्यहोयँ तो और स्त्री पुरुषकी कहा बातहै आशय की अति सुन्दर हैं जयाजयन्तीतिथिमित्यथोमातरसखी-षुच । इतिमेदिनी ॥ ४८ ॥

मू०— दोहा ॥ यदपिभ्रुकुटिरघुनाथकी, कुटिलदेखियतज्योति ॥ तदपिसुरासुरनरनकी, निरखिशुद्धगतिहोति ॥४९॥ श्रवणमकरकुण्डललसत, मुखसुषमाएकत्र ॥ शशिसमीपसोहतमनों, श्रवणमकरनक्षत्र ॥ ५० ॥ पद्धटिकाछन्द ॥ अतिबदनशोभसरसीसुरंग । तहँकमलनयननासातरंग ॥ जनुयुवतिचित्तविभ्रमविलास । त्यइभ्रमरभँवतरसरूपआस ॥ ५१ ॥

टी०— मानों शशिके समीप कहे दोनों ओर निकट उदित द्वै श्रवण न-क्षत्रमें द्वै मकरराशि शोभित हैं नक्षत्र पदको सम्बन्ध श्रवण मोहै अथवा श्रवणमो मकरराशि स्वरूपके नक्षत्र कहे तारा मकरराशि स्वरूपेति शोभि-तहैं युक्ति यह की उत्तराषाढ श्रवण धनिष्ठा तीनि नक्षत्रनमें मकरराशि को बासहै सो मानों श्रवणही में बर्त्तमान द्वै शशिके दुवौ ओर शोभित हैं श्र-वण नक्षत्रकी औ कर्णकी शब्द साम्यहै औ मकरराशिकी औ कुण्डलको रूप साम्यहै शशि सदृश मुखहै ॥ ४९ ॥ ५० ॥ सरसीतडाग सुरंगनिर्म-

लरामचन्द्रकेनेत्रशोभामें भ्रमणतेहैं विलास कौतुक जिनको ऐसे जे युवतिनके चित्तहैं तेई भ्रमर भँवतहैं रस मकरन्दरूपी जो रूपशोभा है ताकी आशा सों अर्थ जैसे मकरन्दकी आश करि तड़ागमें भँवर भँवत हैं तैसे रूपकी आश करि रामचन्द्रके मुखपर स्त्रिनके चित्त भ्रमतहैं ॥ ५१ ॥

मू०– निशिपालिका छन्द ॥ शोभिजातिदन्तरुचिशुभ्रउर आनिये । सत्यजनुरूपअनुरूपकबखानिये ॥ ओंठरुचिरेखसविशेषशुभश्रीरये । शोधिजनुईशशुभलक्षणसबैदये ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ ग्रीवाश्रीरघुनाथकी,लसतिकम्बुबरवेष ॥ साधुमनोंबचकायकी,मानोंलिखीत्रिरेष ॥ ५३ ॥ सुन्दरीछन्द ॥ शोभनदीरघुबाहुविराजत । देवसिहातअदेवतेलाजत ॥ बैरिनकोअहिराजबखानहु । हैहितकारिनकोध्वजमानहु ॥ ५४ ॥ यौंउरमेंभृगुलातबखानहु । श्रीकरकोसरसीरुहमानहु ॥ सोहतिहैउरमें मणियोंजनु । जानकीकोअनुरागिरह्योमनु ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ सोहतजनरतरामउर,देखताजिनकोभाग ॥ आइगयोऊपरमनों, अन्तरकोअनुराग ॥ ५६ ॥

टी०– शुभ्रश्वेतसत्यकहेनिश्चयजानों रूपसुन्दरताकेअनुरूपककहेप्रतिमा बखानियतहै अथवाजानोंसत्य जो पदार्थहै ताके रूपकेअनुरूपकप्रतिमाहै सत्यकोरूपश्वेतहै ॥ ५२ ॥ कंबुशंखमनसाबाचा कर्मणा करिकै जोरामचन्द्र साधुहैं तिन तीन्योकीमानों बिधातै तीनि रेखालिखिदियोहै निश्चयबातको रेखा खांचि कहिबेकी रीति लोकमें प्रसिद्ध है ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ रामचन्द्रके उरमें लक्ष्मी बास कियेहैं ताके करकोमानों कमल है मणि कौस्तुभ मणि अनुरागी मन सदृशकह्यो तासों अरुण जानो ॥ ५५ ॥ वाही मणिकी फेरि उत्प्रेक्षा करत हैं जन जे दासहैं तिनमें रतकहे संलग्न जो अनुराग रामचन्द्रके उरमें शोभित है सो बाटिकै उर अन्तर ते मानों ऊपर आइगयो है ताको जे देखत हैं तिनको बड़ो भागहै ॥ ५६ ॥

मू०– पद्धटिकाछन्द ॥ शुभमोतिनकीदुलरीसुदेश । जनुवे

दनके अक्षासुवेश ॥ गजमोतिनकीमालाविशाल । मनमानहुंस न्तनकेमराल ॥ ५७ ॥ विशेषकछन्द ॥ श्यामदुवौपगलालल सैद्युतियोंतलकी । मानहुंसेवतिज्योतिगिरायमुनाजलकी ॥ पाटजटीअतिश्वेतसोहीरनकीअवली । देवनदीकनमानहुं सेव तभांतिभली ॥ ५८ ॥ दोहा ॥ कोबरणैरघुनाथछबि,केशवबु द्धिउदार ॥ जाकीकृपाशोभिजति, शोभासबसंसार ॥ ५९ ॥ दण्डक ॥ कोहैदमयन्तीइन्दुमतीरतिरातिदिन होहिनछवी लीछविइनजोसिँगारिये । केशवलजातजलजातवेद ओपजात रूपबापुरेविरूपसोनिहारिये । मदननिरूपमनिरूपननिरूपभ यो चन्दबहुरूपअनुरूपकैबिचारिये । सीताजूकेरूपपरदेवता कुरूपकोहैं रूपहीकेरूपकतौवारिवारिडारिये ॥ ६० ॥

टी०- मरालहंस ॥ ५७ ॥ या प्रकार मानों त्रिवेणी रामचन्द्रके चरण सेवतिहै पाठ पदश्लेष है रेशम औ दुवौ कूलको अंतर ॥ ५८ ॥ बुद्धितुसार पाठ होइतौ बुद्धिहै तुसार हेवार सम क्षणभंगुरजाकी ॥ ५९ ॥ दमयंती नलकी स्त्री इन्दुमती अज की स्त्री रति काम की स्त्री इनको राति दिन शृंगारियें तौ सीताकी छबि समान इनकी छवि ना होइ जातवेद अग्नि जातरूप सुवर्ण निरूपम कहे जाके उपमा कोऊ नहीं अर्थ अति सुन्दर जो मदन है सो सीता जू के रूप समता के निरूपण में निर्णयमें लाजसों निरूप कहे निःस्वरूप निर्देहेति भयो औ घटि बढिके अनेक रूपको धर्ता जो चंद्रहै ताको अनुरूपकै कहे असदृशै बिचारियत है रूप जो सौंदर्य्य है ताहीके रूपक कहे साम्यको बारिबारि डारियत है ॥ ६० ॥

मू०- गीतिका छन्द ॥ सीशोभिजैसखिसुन्दरीजनुदामि नीबपुमंडिकै । घनश्यामकोजनुसेवहीं जड़मेघओघनछंडिकै ॥ यकअंगचर्चितचारुचन्दनचन्द्रिकातजिचन्दको । जनुराहुकेभ यसेवहीं रघुनाथआनँदकन्दको ॥ ६१ ॥ मुखएकहैनतलोक लोचन लोललोचनकीहरे । जनुजानकीसँगशोभिजे शुभलाज

देहनकोधरे ॥ तहँएकफूलनकेविभूषणएक मोतिनकेकिये । जनुक्षीरसागरदेवतातन क्षीरछीटनिकोछिये ॥ ६२ ॥ सोरठा ॥ पहिरेवसनसुरंग,पावकयुतस्वाहामनों ॥ सहजसुगन्धितअंग, मानोंदेवीमलयकी ॥ ६३ ॥ चामरछन्द ॥ मत्तदन्तिराजराजि बाजिराजराजिकै । हेमहीरमुक्तचीर चारुसाजसाजिकै ॥ वेष वेषबाहिनी अशेषवस्तुसोधियो । दाइजोविदेहराज भांतिभांतिकोदियो ॥ ६४ ॥ वस्त्र भौनस्योवितान आसनैबिछावने । अस्त्रशस्त्रअंग त्रान भाजनादिकोगने ॥ दासिदासबासिबास रोमपाटकेकियो । दाइजोविदेहराज भांतिभांतिकोदियो॥६५॥

टी०— वपुमण्डिकै यह चंद्रिकाहू में जानौ ॥ ६१ ॥ एकन के मुख नत कहे लाजसों नीचेको नये हैं ते लोल लोचन करिकै लोकलोचनन को हरती हैं ॥ ६२ ॥ स्वाहा अग्नि की स्त्री पावक सम बस्त्रहै स्वाहा सम स्त्री है ॥ ६३ ॥ मत्त जे दंतिराज गजराज हैं तिनकी राजि कहे समूह औवाजिराज घोड़ेन की राजि का कहे समूह और जे दीबे के उचित बस्तु हैं तिन्हैं शोधियो कहे दीवे के लिये ढूंढ़ि ढूंढ़ि मंगाइयो ॥ ६४ ॥ बितान कहे चँदोवा सामियानेति आसन भूपासन गद्दीति बिछावने फरसस्यो कहे सहित बस्त्र भौन कहे पाल डेराइति दियो अंगत्राण बख्तर भाजन सुवर्णादिके पात्रबासि सुगंधसों युक्तकरिकै रोमवास उत्तम कंबलादि पाठ बास पीताम्बरादि दियो ॥ ६५ ॥

मू०— दोहा ॥ जनकराजपहिराइयो,राजादशरथसाथ ॥ छत्र चमरगजबाजिदै,आसमुद्रक्षितिनाथ ॥ ६६ ॥ निशिपालिकाछन्द ॥ दानदियराजदशरत्थसुखपाइकै । शोधिऋषिब्रह्मऋषिराजनिबोलाइकै ॥ तोषियाचकसकल दादुरमयूरसे । मेघजिमि वर्षिगजबाजियमयूरसे ॥ ६७ ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणि श्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिन्द्राजिद्विरचितायां सीतारामव्याहवर्णनंनामषष्ठः प्रकाशः ॥ ६ ॥

टी०– राजा दशरथ के साथ जे आसमुद्र के क्षितिनाथ रहे तिन्हैं राजा दशरथके साथ जनकराज बरतौनीपहिरायो बिदा समयकी पहिरावनि बरतौनी नामकरि पश्चिममों प्रसिद्धहै ॥ ६६ ॥ बरतौनीकी पहिरावनिके बादि जनकपुरबासिनकोराजा दशरथयथोचितदानदियो ऋषिराजतपस्वी ब्रह्म ऋषिराज ब्राह्मणराजपदको अनुषंगऋषिहूमोंहै ॥ ६७ ॥ इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां सीतारामव्याहबर्णनंनामषष्ठःप्रकाशः ॥ ६ ॥

मू०– दोहा ॥ याप्रकाशसप्तमकथा,परशुरामसम्बाद ॥ रघुवरसौंअरुरोषत्यहि,भंजनमानविषाद ॥ १ ॥ विश्वामित्रबिदाभये, जनकफिरेपहुंचाइ ॥ मिलेआगिलीफौजको,परशुराम अकुलाइ ॥ २ ॥ चंचरीछन्द ॥ मत्तदन्तिअमत्तहोगये देखि देखिनगज्जहीं । ठौर ठौरसुदेशकेशव दुन्दुभीनहिंबज्जहीं ॥ डारिडारिहथ्यारशूरजजीवलैलैभज्जहीं । काटिकैतनत्राणएकेनारिवेषतलज्जहीं ॥ ३ ॥ दोहा ॥ बामदेवऋषिसोंकह्यो, परशुरामरणधीर । महादेवकोधनुषयह, कोतोरेउबलबीर ॥ ४ ॥ वामदेव ॥ महादेवकोधनुषयह,परशुरामऋषिराज । तोरेउरायहकहतहीं,समुझेउरावणराज ॥ ५ ॥ परशुराम ॥ अतिकोमलनृपसुतनकी, ग्रीवादलीअपार ॥ अबकठोरदशकंठकेकाटहुंकंठकुठार ॥ ६ ॥ परशुराम–विजयछन्द ॥ बाँधिकेबाँध्योजोबालिबली पलनापरलैसुतकोहितठाढ़े ।हयहैराजलियागहिके,शवआयोहोछुद्रजोछिद्रनिडाढ़े । बाहेरकाढ़िदियोबलिदासिन जाइपरेउजोपतालकेबाढ़े । ताकोकुठारबड़ाईकहा कहितादशकंठकेकंठनकाढ़े ॥ ७ ॥

टी०– या प्रकाशमें परशुराम सों औ रघुबर सों सम्बाद है औ ताही रघुबरके रोष करिकै परशुरामके मानको औ आपने सैन्यके बिषाद के दुखको भंजन है १ । २ यामें परशुरामके तेजको बर्णन है को जिन परशु-

राम को देखि भयसों दशरथ चमूमें या दशा भई सूरय कहे शूरनके पुत्र अर्थ परम्पराके शूर अथवा सूरय सूर्यवंशी ३ । ४ । ५ । ६ बाध्यो कहे मारयो सुत जो अंगद है ताको पलना परसों अंकमें लैकै ताको हित कौतुक रावणमें ठाव्यो अर्थ रावण को बालखेल बनायो सो कथा प्रसिद्ध है बालको अंक में लैकै कौतुक देखाइबो लोकरीति हैक्षिद्रनिको डाढेकहे देखे अर्थ समय बिचारिकै हैहयराज सहस्रार्जुनपै युद्ध करिवेको आयोहो आयोरहै अथवा जाको हैहयराजा गहिलियो सो क्षुद्र क्षिद्रनिको डाढ़े अर्थ या समय जनक पुरमें परशुराम नहींहै ऐसे अवसरको बिचारि कै आयो रहै ताके कण्ठ जो तू न काटै तौ तो को कहा बडाई है अथवा ताके कण्ठनको जो तू काटै तौ तोको कहा बडाई है जाकी बालि आदि ऐसी दुर्दशा करी ताको कण्ठ काटिबो सहजहै इतिभावार्थः ॥ ७ ॥

मू०-- सोरठा ॥ यद्यपिहैअतिदीन,मोहितऊखलमारने ॥ गुरु अपराधहिलीन, केशवक्योंकरिछाँड़िये ॥ ८ ॥ चन्द्रकलाछन्द ॥ वरवाणशिखीनअशेषसमुद्रहि सोखिसखासुखहीतरिहौं । पुनि लंकहिऔटिकलंकितकै फिरिपंककतंकहिकीभरिहौं । भलभूजिकैनेकसखाकसकै दुखदीरघदेबनकोहरिहौं । शितकंठकेकंठन कोकठुला दशकंठकेकंठनकाकरिहौं ॥ ९ ॥ परशुराम--संयुता छन्द ॥ यहकौनकोदललखिये ।वामदेव ॥ यहरामकोप्रभुलेखिये ॥ परशुराम ॥ कहिकोरामनजानियो ॥ वामदेव ॥ शरताड़काजि नमारियो ॥ १० ॥ परशुराम--विनयछन्द ॥ ताड़कासंहारीति यनविचारीकौनबड़ाईताहिहने ॥ वामदेव ॥ मारीचहुतेसंगप्रब लसकलखलअरुसुबाहुकाहूनगने ॥ करिक्रतुरखवारीगुरुसुख कारी गौतमकीतियशुद्धकरी । जिनरघुकुलमंडयोहरधनुखंडयो सीयस्वयम्बरमांझबरी ॥ ११ ॥

टी०- जो ऐसो दीनहै ताकोमारिवो अनुचित है ता लिये कहतहैं ॥ ८ ॥ शिखीन कहेअग्नि सो सखा कुठारकोसम्बो धनहै सुखही कहे सहजहीं

९ ॥ १० ॥ गुरुजे विश्वामित्रहैं तिनको सुखकारी क्रतु जो यज्ञहै ताको रखवारी करिकै ॥ ११ ॥

मू०-- दोहा ॥ हरहूहोतोदंडद्वै, धनुषचढ़ावतकष्ट ॥ देखोमहिमाकालकी, कियोसोनरशिशुनष्ट ॥ १२ ॥ बिजय ॥ बोरोंसबैरघुबंशकुठारकीधारमेंवारनबाजिसरत्थहि । बाणकीवायुउड़ाइकैलक्षनलक्षिकरौंअरिहासमरत्थहि । रामहिंवामसमेतपठैबनकोपकेभारमेंभूजोंभरत्थहि । जोधनुहातलियोरघुनाथतौआजुअनाथकरौंदशरत्थहि ॥ १३ ॥

टी०-- सरस्वती उक्तार्थः सकहे सहित बे कहे निश्चय अर्थ निश्चयकरि रघुबंशकेजे कुठारशत्रुहैं तिन्हैं वारन बाजिरथ सहितकीकहे समुद्रादि जलाशयकीधारप्रवाहमें बोरों कंजलमस्मिन्नस्तीति की अर्थ जामें जल रहै सो की कहावै वंशपद श्लेषहै बांसहू को नामहै ताकुठारपदकह्यो बारनबाजि सरथ कहि या जनायो की जामें उनको चिन्हऊ न रहै औ लक्षन कहे लाखन जे रघुबंश के शत्रुहैं तिन्हैं बाण की वायुसों उडाइकै हा कहे हाइहाइ जो शब्द है ताहीमें समरत्थलक्ष कहे निशाना करों अर्थ ऐसी बाणवृष्टि करों जामें केवल हाइहाइकरै और पराक्रम करिवे लायक ना रहै औ जयरामहि कहे केवल रामचन्द्रही सों बामकहे कुटिलता समेति हैं अर्थ जे रामहींके शत्रुहैं तिन्हैंबनको पठै देउं औ जे भरत्थहि बाम समेतिहैं अर्थ भरतके शत्रु हैं तिन्हें शोकके भारमें भूजौं औ जो धनुष को रघुनाथ हाथमें लियो कहे उठायो तौ आजु दशरथ को अनाथ कहे जाकोनाथ कोऊ नहींअर्थ सबको नाथकरौं कहेकरिमानौं तो सबके नाथ जे विष्णु हैं तिनहीं के शंभु धनुषतोरिवे की सामर्थ्यहै तातें तेईविष्णु रामरूपह्वै दशरथके पुत्र भये यह निश्चय करि दशरथको सर्वोपरि मानों इतिभावार्थः ॥ १२ ॥ १३ ॥

मू०-- सोरठा ॥ रामदेखिरघुनाथ,रथतेउतरेवेगिदै ॥ गहेभरतकोहात,आवतरामविलोकियो ॥ १४ ॥ परशुराम--दंडक ॥ अमलसजलघनश्यामवपुकेशवदास चंद्रहूतेचारुमुखसुषमाको ग्रामहै । कोमलकमलदलदीरघविलोचननि सोदरसमानरूप

न्यारोन्यारोनामहै । बालकविलोकियतपूरणपुरुषगुण मेरोमत मोहियतऐसोएकयामहै । बैरमानिवामदेवकोधनुषतोराइन जानतहौंबीसविशेरामवेषकामहै ॥ १५ ॥ भरत--गीतिकाछन्द ॥ कुशमुद्रिकासमिधैंश्रुवाकुशऔकमंडलकोलिये । करमूलशरघन तर्कसी भृगुलातसीदरशैहिये ॥ धनुबाणतिक्षकुठारकेशव मेखलामृगचर्मसों । रघुवीरकोयहदेखियेरसवीरसात्विकधर्मसों ॥ ॥ १६ ॥ राम-- नाराचछन्द ॥ प्रचंडहैहयाधिराजदंडमानजानिये । अखंडकीर्त्तिलेयभूमि देयमानमानिये ॥ अदेवदेवजेअभीतरक्षमानलेखिये। अमेयतेजभर्गभक्तन भार्गवेशदेखिये ॥१७॥

टी०-- राम परशुराम ॥ १४ ॥ पूरण पुरुष विष्णुयाम पहर वामदेव महादेव ॥ १५ ॥ कुश मुद्रिका कहे पैतीसमिधैं होम की लकरी करमूल कहे कांधा में हैं शरघन घने बान सों पूरित तरकस जाके मेखला कटि-भूषण धनुर्बाण धारणादि बीररसको धर्म है औ कुश मुद्रिका धारणादि सात्विक प्राणीको धर्म है ॥ १६ ॥ प्रचंड जे हैहयादि सहस्रार्जुनादि राजा हैं तिनके दंडकर्त्ता हैं अर्थ सहस्रार्जुनादिकनको नाश इनहिंन कियो है औ अखण्ड कहे पूर्ण कीर्तिके लेयमान लैवैयाहैं औ अखंड भूमिके देयमान कहे देवैया हैं अखण्ड पदको संबंध भूमिहूंमेंहै अदेव दैत्य औ देवनके जेयमान जीतनहार हैं मानपदको संबंध लेय जेयहू में है औ भीत जे भय युक्तहैं तिनके रक्षमान रक्षक हैं अमेय कहे अपरिमान बडो इति है तेज जिनको औ भर्ग महादेवके भक्तहैं औ भार्गवजे भृगुबंशीहैं तिनके ईशहैं अर्थ भृगुवंशमें ये बड़े ऐश्वर्य युक्त हैं ॥ १७ ॥

मू०--तोमरछन्द ॥ सहभरतलक्ष्मणराम । चहुंकियेआनिप्रणाम॥ भृगुनन्दआशिषदीन । रणहोहुअजयप्रवीन ॥१८॥ परशुराम ॥ सुनिरामचन्द्रकुमार । मनवचनकीर्त्तिउदार ॥ राम ॥ भृगुबंशकेअवतंश । मनवृत्तिहैक्यहिअंश ॥ १९ ॥ परशुराम ॥ मदिराछन्द ॥ तोरिशरासनशंकरकोशुभ सीयस्वयंबरमांझबरी । ता

तेबढ्योअभिमानमहामन मेरीयोनेकनशंककरी ॥ राम ॥ सो अपराधपरोहमसों अबक्योंसुधरैतुमहूंधौंकहो ॥ बाहुदैदोऊकुठा रहिकेशव आपनेधामकोपंथगहो ॥ २० ॥

टी०– अजय कहे जाको कोऊ न जीति सकै ॥ १८ ॥ हमारे वचन सुनो औ उदार कीर्ति सुनो अथवा कीर्ति है उदार जिनकी ऐसे हमारे व-चन सुनो अथवा कीर्ति उदार रामचंद्रको संबोधन है तुह्मारो मन वृत्ति के केहि अंश कहे भाग मोहै अर्थ मनोभिलाव कहाहै जो होइ सोकहो ॥ १९ ॥ सरस्वतीउक्तार्थः अनेक राजा जामें हारि गये ताशरासनको तो-रयो स्वयम्बरके मध्यमें सीताको वरयो तासों तुह्मारे बड़ो अभिमान बा-ढ्यो है सो उचितही है जो एतो पराक्रम करै ताके अभिमान बढ्योईचाहै औ सकल क्षत्रिन को नाशकर्ता जोमैं हौं ताहू की शंका तुम ना करी ता-सों तुह्मारे बलको समुझि हमारे भय भयो है तासों सकल क्षत्रिनके नाश-को हमारो दोष क्षमा करि हमारे दोऊ बाहु औ हमारो कुठार आपनो करि हमको दैके आपने घरको जाउ इनहीं कारनसों याही कुठार सों क्षत्रिन को क्षयकरयो है तासों तुम करिकै बाहु कुठार खंडिबेकी शंका है सो तुम वचन करि हमको दैके निर्भय करौ इतिभावार्थः अथवा या कुठार को दोऊ बांह दैके आपने धामको जाउ बांह बीर देवेकी रीति लोकमें प्रसिद्ध है कुठार को बडो दोष है तासों दोऊ वांह देबे कह्यो ॥ २० ॥

मू०– राम–कुंडलिया ॥ टूटैटूटनहारतरुवायुहिदीजतदोष । त्यों अबहरकेधनुषकोहमपरकीजतरोष ॥ हमपरकीजतरोषकालग तिजानिनजाई । होनहारह्वैरहैमिटैमेटीनमिटाई ॥ होनहारह्वै रहैमोहमदसबकोछूटै ॥ होइतिनूकावज्रवज्रतिनुकाहोइटूटै ॥ ॥ २१ ॥ परशुराम– विजयछन्द ॥ केशवहैहयराजकोमासह लाहलकौरनखाइलियोरे । तालगिमेदमहीपनकोघृत घोरिदि योनसिरानोहियोरे । खौषड़ाननकोमदकेशवसोपलमेंकरिपान लियोरे । तौलौनहींसुखजौलहुंतूरघुबंशकोशोनसुधानपियोरे २२

टी०— हैहयराजको मासरूपी जो हलाहल विष है मेद चरबी खीर दूध षड़ाननस्वामिकार्त्तिक याग्युक्तिसों आपनो सकलबलकृत सुनाय भयदेखायोसरस्वती उक्तार्थः हेकुठार यद्यपि तू ऐसे क्रतु करचो है परंतु जबलग स्ववशजे रामचन्द्र हैं तिनको सो कहे तिनको ऐसो न कहे स्तुत्य मधुर इति सुधासरिस वचन नहींपियौ तौलौं तोकोसुख नहीं है इहां सुधा जो उपमान है ताके उच्चार सों मधुर वचन उपमेयको ग्रहण कियो तूसकल क्षत्रिनको क्षयकरचौ है औ ये अति बलवान क्षत्रवंशमें उत्पन्न भये सो बैर समुझि तेरो नाशकरिवेको समर्थहैं तातें ये जबलौं मधुर बचनसों तेरोदोषक्षमानहींकरत तौलौं तोको सुखनहींहै इतिभावार्थः । नःपुमान्सुगते बंधेह्विरण्डेप्रस्तुते पिचेतिमेदिनी ॥ २१ ॥ २२ ॥

मू०-भरततंत्रीछन्द ॥ बोलत कैसेभृगुपतिसुनियेसोकहियेतनमनबनिआवौ ॥ आदिबड़ेहौबड़पनराखौ जातेतुमसबजगयशपावौ ॥ चन्दनहूंमेंअतितनघरियेआगिउठैयहगुणसबलीजै । हैहयमारेनृपतिसँहारेसोयशलैकिनयुगयुगजीजै ॥२३॥ परशुराम–नाराचछन्द ॥ भलीकहीभरत्थतैंउठायआगिअंगतैं । चढाउचोपिचापआपबाणलैनिषंगतैं ॥ प्रभाऊआपनोदेखाउछोड़िबालभाइकै । रिझाउराजपुत्रमोहिंरामलैछड़ाइकै ॥ २४ ॥ सोरठा॥ लियोचापजबहाथ, तीनिहुभैयनरोषकरि॥बरज्योश्रीरघुनाथ,तुमबालकजानतकहा ॥ २५ ॥ रा०–दोहा ॥ भगवन्तनसोंजीतिये, कबहुंनकीनेशक्ति ॥ जीतियएकैबातमें, केवलकीनेभक्ति॥ ॥ २६ ॥ हरिगीतछन्द ॥ जबहन्योहैहयराजइनबिनक्षत्रक्षितिमंडलकरेउ । गिरिवेधषण्मुखजीतितारक नंदकोजबज्योंहरेउ ॥ सुतमैनजायोरामसों यहकह्योपर्वतनन्दिनी । वहरेणुकातियधन्यधरणीमेंभईजगबंदिनी ॥ २७ ॥

टी०— सोबात कहौ जो तन मनसों बनिआवै अर्थ करत बनि परै यासों या जनायो की जो कहत हौ सो तुमका मनहूं सों करिबे को दुर्लभ है

॥ २३ ॥ भरत कह्यो है की घसत घसत चंदनहूं में आगि उठतिहै तासों परशुरामकह्यो की अंग सों आगि उठावो सरस्वतीउक्तार्थः की हमारे संग परशुराम सों रामचंद्र लरिहैं यह जो रामचंद्र प्रति तुह्मारो लै कहे चोप है ताको छिड़ाइ कहे त्यागि कै तुम हमका आपनी कृत देखाय कैरिझाउ कहे प्रसन्न करो अर्थरामचंद्र को भरोसो छोडि हमसों तुम लरौ तौ हम लरैं रामचंद्र सों लरिबे लायक हम नहीं हैं ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ क्रौंचनामाजोगिरि हैं ताके बेधनहार जे षण्मुख कहे स्वामिकार्त्तिकहैं तिनको जीति कै तारकासुर को जो नंदनपुत्र है ताको ज्यों हत्यो मारचो ऐसे ऐसें इनके कृत देखि कै पार्वती कह्यो की ऐसो पुत्र हमारे न भयो तब रेणुका परशुराम की माता जग बंदिनी भई औ धन्य भई ऐसे पराक्रम परशुराम के देखिकै रेणुका को सब जग बंदना करिकै कह्यो धन्य है रेणुका जाके ऐसो पुत्र भयो या प्रकार रामचंद्र परशुराम की स्तुति कियो ॥ २७ ॥

मू०--परशुराम—तोमरछन्द ॥ सुनुरामशीलसमुद्र । तवबन्धु हैअतिक्षुद्र ॥ ममबाड़वानलकोप । अबकियोचाहतलोप ॥२८ शत्रुघ्न—दोधक ॥ हौभृगुनंदबलीजगमाहीं । रामबिदाकरियेघर जाहीं ॥ हौंतुमसोंफिरियुद्धहिमाड़ौं ॥ क्षत्रियबंशकोबैरलैछांड़ौं ॥ २९ ॥ तोटकछन्द ॥ यहबातसुनीभृगुनाथजबै । कहिरामहिंलैघरजाहुअबै ॥ इनपैजगजीवतजोबचिहौ । रणहौंतुमसों फिरिकैरचिहौ ॥ ३० ॥ दोहा ॥ निजअपराधीक्योंहतौं, गुरुअपराधीछांड़ि । तातेकठिनकुठारअब, रामींहसारणमांड़ि ॥३१॥

टी०— बड़वानलरूपीजोहमारो कोपहै सो इनको लोप भस्म कियोचाहतहै ॥ २८ ॥ २९ ॥ शत्रुघ्नकीयहबात सुनि भरतसों कह्यो की तुम रामचंद्र को लैकै घर जाहु इनपैशत्रुघ्नपैयुद्ध करि जो जीवत बचिहै तब तुमसों रण करिहौं ॥ ३० ॥ गुरु अपराधी रामचंद्रनिजअपराधी शत्रुघ्नसरस्वती उक्तार्थः निज ते अपनाते हमते इति है अपरा कहे अन्य अधिक इति है धी बुद्धि जिनकी इहां बुद्धि उपलक्षणमात्र है बुद्धि पद ते बुद्धिबल विद्यादि जानों ऐसे जे रामचंद्र हैं तिनको कैसे मारौं अर्थ इनके मारिबे को समर्थ

नहीं हौं फेरि कैसे हैं गुरु जे शिव हैं तिनहुंन ते अपराधी कहे बल विद्या-दि करि अधिक हैं जिनको शिवहू ध्यान करत हैं ताते मारिवे की आशा करि छांड़ि कै हे कठिन कुठार रामचंद्रहीको सो रनकहे स्तुतिसों रनसों मां-डिकहे युक्तकरौअर्थरामचंद्रकी स्तुति करो जो कहौ कुठार तौ बोलत नहीं कैसे स्तुति करि है तो सब में अभिमानी देवतारहतहै ताकरिकै स्तुति करिबे को समर्थ है जैसे समुद्र को अभिमानी देवता रामचंद्रकी स्तुति कन्यो है औ लंका हनूमान को रोंक्यो है ॥ ३१ ॥

मू०- परशुराम-विजयछन्द ॥ भूतलकेसबभूपनकोमदभो जनतौबहुभांतिकियोई । मोदसोंतारकनन्दकोमेदपछ्यावरिपा नसिरायोहियोई ॥ खीरषड़ाननकोमदकेशवसोपलमेंकरिपान लियोई । रामतिहारेइकंठकोश्रोणितपानकोचाहैकुठारकियोई ॥ ३२ ॥ लक्ष्मण-तोटक ॥ जिनकासुअनुग्रहवृद्धिकरै । तिन कोकिमिनिग्रहचित्तपरै ॥ जिनकोजगअच्छतशीशधरै । तिन कोतनसक्षतकौनकरै ॥ ३३ ॥ राम-मदिराछन्द ॥ कंठकुठार यशेअवहार किफूलअशोकसशोकसमूरो ॥ कैचित्रसारिचढ़ैकि चितातनचन्दनचित्रकिपावकपूरो ॥ लोकमलोकबड़ोअपलोक सुकेशवदासजोहोउसोहोऊ । विप्रनकेकुलकोभृगुनन्दनसूरजके कुलशूरनकोऊ ॥ ३४ ॥

टी०- पछिवरि शिखरनि को भेद है खीर दूध सरस्वती उक्तार्थः हे राम तिहारे कंठ को कहे शब्द को अर्थ मधुर बचन पानि कै सो कुठार नितहीं पियो पान कस्यो चाहतहै अर्थ सुन्यो चाहत है ॥ कंठोगलेसन्निधौनेध्वनो-मदन पादपे । इति मेदिनी ॥ ३२ ॥ जिन ब्राह्मणन को अनुग्रह कृपा सब को वृद्धि करत है तिन को निग्रह दंड हमारे चित्तमें कैसे परै कहे आवै औ जिन के शीश में जग अक्षत धरत है अर्थ पूजन करत है तिनको तन साक्षत कहे खंडित को करै या जनायो ब्राह्मण अवध्य हैं तासों तुम को नहीं

मारत ॥ ३३ ॥ चहै अशोक सुख चहै शोक दुख फूलो कहे होइ लोक यश अपलोक अयश ॥ ३४ ॥

मू०— परशुराम-विशेषकछन्द ॥ हाथधरेहथियारसबैतुम शोभतहौ । मारनहारहिदेखिकहामनक्षोभतहौ ॥ क्षत्रियकेकुलह्वैकिमिवैननदीनरचौ । कोरिकरोउपचारनकैसेहुमीचबचौ ॥ ३५ ॥ लक्ष्मण ॥ क्षत्रियह्वैगुरुलोगनकेप्रतिपालकरैभूलिहुतौतिनकेगुणऔगुणजीनधरै । तौहमकोगुरुदोषनहींअबएकरती । जोअपनीजननी तुमहींसुखपाइहती ॥ ३६ ॥

टी०— लक्ष्मण औ रामचंद्र के नम्र बचन सुनिकै भय युक्त जानि परशुराम कह्यो की मारन हार जो मैं हूं ताको देखि कै कहा क्षोभत डरात हौ सरस्वती उक्तार्थः सबै कहे चारो भाई तुम हाथन में हथियार धरे ऐसे शोभत हौ की मारनहार जे यमराज हैं तिनहुन को देखिकै कहा क्षोभत डेरात हौ अर्थ तुम यमराजहू कोनहीं डरात हौ औ क्षत्रिय के कुलमें ह्वैकै किमि कहे काहे दीन बैन हम सों नारचो ब्राह्मण सों क्षत्रिय को आधीन रहिबोई उचित धर्महै कछू भयसों तुम दीनबचन नहीं कहत काहेते की कोरि उपचार यत्न करौ कहे करै अर्थ ब्रह्मादिहू की शरण में जाइ औ तुम मीच को मारो चाहौ तो कैसेहू न बचो कहे बचें ॥ ३५ ॥ जो तुमहीं अपनी जननी माता को सुख पाइकै मारचो तुमको कछु गुरु दोष ना भयो तौ तुम्हारे मारे सों हमहूं कोरतिहू भरि गुरुदोषनहीं है जननीको बधजनाइ याजना योकि तुमऐसेईस्त्री बधादि पराक्रम करचोहै अथवा गुरुदोषी जनायो॥३६॥

मू०— परशुराम-विजयछन्द ॥ लक्ष्मण के पुरिषान कियो पुरुषारथसोनकह्योपरई । वेषबनाइकियोबनितानकोदेखतकेशवह्योहरई । क्रूरकुठारनिहारितजैफलताकीयहैजोहियाजरई । आजुतेकेवलतोकोमहाधिकक्षत्रिनपैजोदयाकरई ॥ ३७ ॥ गीतिकाछन्द ॥ तबएकविंशतिबरमैंबिनक्षत्रकीपृथिवीरची । बहुकुंडशोणितसोंभरेपितृतर्पणादिक्रियासची ॥ उबरेजेक्षत्रियक्षुद्र

भूतल शोधिशोधिसंहारिहौं । अबबालवृद्धनज्वानछांड़हु धर्म निर्दय पारिहौं ॥ ३८॥

टी०— सरस्वतीउक्तार्थः लक्ष्मण के पुरिषान बडेन जो पुरुषारथ कियो है सो कह्यो नहीं परत कहा पुरुषारथ कर्‍यो जिन बनितन को बेष बनायो अर्थ बनिता रच्यो गोतम की स्त्रीको पाथर सों स्त्री बनायो जाको देखत हियो हरि जात है अर्थ अति सुंदरी बनायो तौ याजनायो सृष्टि करिबे को समर्थ हैं याही विधि दशरथ भगीरथादि के कृत गंगा ल्याइबो आदि जानौ सोहेक्रूरकुठार तिनको निहारि कै तजै कहे छोंडै अर्थ इनके समी पतेअन्यत्र जाइ तौ ताको इनके बियोग को यहै फल है जो हृदयजरई कहे जरतहै अर्थ अति सुंदररूप जेयेहैं तिनके वियोग सों हृदयजरत है इनकेयोग को यहै फल है तासों जो तेरो इनको बियोग ह्वै है तौ तेसे हियोजरिहै सोआज केवल कहे एक तो को महा अधिक कहेमहा उत्तम है जो क्षत्रिन के ऊपर दया करु आजुतक क्षत्रिनको बध कर्‍यो ता क्षत्र बर्णन में ये ऐसे रूप गुण बलादि पूरित भये तासों अब क्षत्र बर्ण की रक्षा करिबो तोहिं उचितहै तिनके निकट रहि सहायता करि क्षत्री बर्णतोको रक्षणीय है ॥३७॥ सची कहे करी ॥ ३८ ॥

मू०— राम--दोहा ॥ भृगुकुलकमलदिनेशसुनि, ज्योतिसकल संसार ॥ क्योंचलिहैइनशिशुनपै, डारतहौयशभार ॥ ३९ ॥ परशुराम-- सोरठा ॥ रामसुबन्धुसँभारि, छोड़तहौंशरप्राणहर ॥ देहुहथ्यारनडारि, हाथसमेतिनवेगिदै ॥ ४० ॥ राम—प्रज्झटिका छंद ॥ सुनिसकललोकगुरुयामदग्नि । तपविशिषअशेषनकी जोअग्नि ॥ सबविशिषछांड़िसहिहौंअखंड । हरधनुषकर्‍योजिनखंडखंड ॥ ४१ ॥ परशुराम--सवैया ॥ बाणहमारनकेतनत्राणबिचारिबिचारिविरंचिकरेहैं । गोकुलब्राह्मणनारिनपुंसकजे जगदीनसुभावभरेहैं । रामकहाकरिहौतिनकोतुमबालकदेवअदेवडरेहैं । गाधिकेनंदतिहारेगुरूजिनतेऋषिवेषकियेउबरेहैं॥४२॥

टी०– सकलसंसारकोजीतिकै जोयशएकत्र कर्यो है सो इनसों लरिकै हारिकै ता यशको बोझ इनबालनपै डारत हौइनसों कैसेचलिहै इनसों लरिहौ तौ हारिजैहौइति भावार्थः ॥ ३९ ॥ रामचन्द्र के सतर्क बचन सुनि परशुराम कोप करि बोलेसो अर्थ खुलो है सरस्वती उक्तार्थः हे हर महादेव इनकेशर करिकै मैं प्राण छोंड़तहौं अर्थ ये बाण सों मेरे प्राण हर्यो चाहत हैं तासों बन्धुसहित जो कोपयुत रामचन्द्र हैं तिनको तुम सँभारि कहे संभारौ ये अब तुह्मारेई सँभारन लायकहैं जासों ये हाथन सों समेतन कहे सबन हथ्यारन को डारि देहिं जबतक ये हाथ में हथ्यारधरे रहिहैं तबतक हमारे भय बन्योहै तासों तुम इनको कोप शांत करि हथ्यार उतरावो आगे महादेव आयबेऊ भये हैं ॥ ४० ॥ तपके जे अशेष विशिष बाण हैं विशिष पदते शाप जानौ तिनकी अग्नि औ और सब बाणनको छांडौ ते अखंड कहे निर्विघ्न सहिहौं अर्थ हमारे ऊपर शाप औबाण दुवो चलाओ हम सहि हैं ॥ ४१ ॥ सरस्वती उक्तार्थः हेराम तिन बाणन को तुम कहा करिहौ अर्थ कहा कियो चाहत हौ अर्थ इनको प्रभाव लोप कियो चाहतहौ तुमकैसेहौ बालकताही में देव औ अदेव तुम को डरेहैं ॥ ४२ ॥

मू०– श्रीराम– षट्पद ॥ भगनभयोहरधनुषशालतुमकोअबशाले । वृथाहोइविधिसृष्टिईशआसनतेचाले ॥ सकललोकसंहरहुशेषशिरतेधरडारैं । सप्तसिंधुमिलिजाहिंहोहिसबहीतमभारैं ॥ अतिअमलज्योतिनारायणीकहिकेशवबुडिजाहिबरु । भृगुनंदसँभारुकुठारमैंकियोशरासनयुक्तशरु ॥ ४३ ॥ स्वागताछंद ॥ रामरामजबकोपकर्योजू । लोकलोकभयभूरिभर्योजू ॥ वामदेवतबआपुनआये । रामदेवदोऊसमुझाये ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ महादेवकोदेखिकै, दोऊरामबिशेष ॥ कीन्होपरमप्रणामउन, आशिषदियोअशेष ॥ ४५ ॥ महादेव– चतुष्पदी ॥ भृगुनंदनसुनियेमनमहँगुनियेरघुनंदननिर्दोषी । निजयेअविकारीसबसुखकारीसबहीविधिसंतोषी ॥ एकैतुमदोऊऔरनकोऊएकै

नामकहायो । आयुर्बलखूट्योधनुषजोटूट्योमैंतनमनसुखपायो ॥ ४६ ॥ महादेव-पद्धटिकाछंद ॥ तुमअमलअनंतअनादिदेव। नहिंवेदबखानतसकलभेव ॥ सबकोसमाननहिंबैरनेह । सब भक्तनकारनधरतदेह ॥ ४७ ॥

टी०- जब गुरुजे बिश्वामित्रहैं तिनकी निंदा करयो तब रामचन्द्र कोप करिकै बोले ईश महादेव आसन योगासनते चालै कहे चले सबही कहे सर्वत्र अर्थ चौदहो लोक में ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ निर्दोषीहैं अर्थ धनुष तूरनेमें इनकोकछू दोषनहींहै औ अविकारी कहे माया कृत विकार रहित हैं यासों या जनायोकछू द्रोहादिसों धनुष नहीं तोरयो औ संतोषी कहि या जनायो की इनके कछू इच्छानहीं है दुवो गुणन सों या जनायो ईश्वर हैं ॥ ४६ ॥ द्वै छंद कोअन्वय एक है महादेव परशुराम सों कहत हैं की तुम अमल कहे माया विकार रहित औ अनंत जाको अन्त नहीं है की ये तो है औ अनादिकहे जाकी आदि नहीं कोऊ जानत कि कब सों हैं ऐसे देव हौ अर्थ परब्रह्म हौ औ तुह्मारो सब भेदकहे भेदवेद नहीं बखानि सकत अर्थ वेदहू नहीं जाको प्रमाण यावत् सब प्राणिनको समानहौ काहू को स्वाभाविक बैर औ स्नेह तुह्मारे नहीं है केवल प्रल्हादादि जे भक्त हैं तिनके हेतु देह धरि दुःख दूरि करत हो यासों भक्तवत्सलता जनायो आपन पौ कोपहिंचानि कै की हम औ ये एकई हैं यह जानिकै इनके हाथ सों होनहार जो रावणादि वध आगिलो काज है ताको करौ तब महादेवके बचनसों जानिकहे ये नारायण हैं यह जानिकै नारायण को धनुष परशुराम पै रह्यो सो रामचन्द्र को दियो ॥ ४७ ॥

मू०- अबआपनपौपहिंचानिविप्र । सबकरहुआगिलोकाज क्षिप्र ॥ तबनारायणकोधनुषजानि । भृगुनाथदियोरघुनाथ पानि ॥ ४८ ॥ मोटनकछंद ॥ नारायणकोधनुबाणलियो । ऐंच्योहँसिदेवनमोदकियो ॥ रघुनाथकहेउअबकाहिहनो । त्रैलोक्यकँप्योभयमानिघनो ॥ ४९ ॥ दिग्देवदहेबहुबातबहे । भूकम्पभयेगिरिराजढहे ॥ आकाशविमानअमानछये । हाहा

सबहींयहशब्दरये ॥ ५०॥ परशुराम-शशिबदनाछन्द ॥ जगगुरु जान्यो । त्रिभुवनमान्यो ॥ ममगतिमारौ । हृदयबिचारौ ॥५१॥

टी०- ॥ ४८ ॥ द्वै छंद को अन्वय एक है ॥ ४९ ॥ ५० ॥ त्रिभुवन में मान्यो अर्थ जाको तीनों भुवनमानत हैं पूजतहैं औ जगतके गुरु जो ईश्वर हैं सो हम तुमको जान्यो अर्थ तुम ईश्वरहौ ताते और सबको निर्दोष हमको सदोष विचारि हमारी सुर पुरकी गति मारो ॥ ५१ ॥

मू०- दोहा ॥ विषयीकीज्यों पुष्पशर, गतिकोहनतअनंग । रामदेवत्योंहींकियो, परशुरामगतिभंग ॥ ५२ ॥ चतुष्पदीछंद ॥ सुरपुरगतिभानी शासनमानी भृगुपतिकोसुखभारो । आशिषरसभीने सबसुखदीने अबदशकंठहिमारो ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ सोवतसीतानाथके, भृगुमुनिदीन्हींलात । भृगुकुलपतिकीगति हरी, मनोसुमिरिवहबात ॥ ५४ ॥ मधुभारछंद ॥ दशरथजगाइ । संभ्रमभगाइ । चलिरामराइ । दुन्दुभिबजाइ ॥ सवैया ॥ ताड़कातारिसुबाहुसँहारिकै गौतमनारिकेपातकटारे।चापहत्यो हरकोहँसिकेसबदेवअदेवहुतेसबहारे ॥५५॥ सीतहिब्याहिअभीतचल्योगिरिगर्बचढेभृगुनंदउतारे । श्रीगरुड़ध्वजकोधनुलैरघुनन्दनअवधपुरीपगुधारे ॥ ५६ ॥ इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणि श्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायां इंद्रजिद्विरचितायां परशुरामसंवादवर्णनंनामसप्तमः प्रकाशः ॥ ७ ॥

टी०- ॥५२॥ सब जे देव ऋषि आदिहैं तिनको सुख दीन अबदश कंठ को मारो ऐसी जो परशुराम कृत आशिष है ताके रस में भीने ॥ ५३ ॥ ५४॥ परशुराम के भयसों मूर्च्छाको प्राप्त जे दशरथहैं तिनको जगाइकै औ परशुराम हारिकै गये यह कहि संभ्रम भगाइकै ॥ ५५ ॥ गर्ब के गिरिपरचढे रहे तासों उतारयो अथवा गर्ब का गिरि सोई परशुराम पर चढ़ो रहै सो उतारो ॥ ५६ ॥ इति श्रीमज्जगज्जननिजनक जानकी जानकी जानिप्रसादाय जनजानकी प्रसादनिर्मितायां रामभक्ति प्रकाशिकायां सप्तमःप्रकाशः ॥ ७ ॥

मू०- दोहा ॥ यहप्रकाशअष्टमकथा,अवधप्रवेशबखानि । सीताव रण्योदशरथहि,औरबंधुजनमानि॥१॥सुमुखीछंद॥ सबनगरीबहु शोभरये । जहँतहँमंगलचारठये ॥ बरणतहैंकविराजबने । त नमनबुद्धिविवेकसने ॥ २ ॥ मोटनकछंद ॥ ऊंचीबहुबर्णपता कलसैं । मानोपुरदीपतिसीदरसैं ॥ देवीगणव्योमविमानलसैं । शोभैंतिनकेमुखअंचलसैं ॥ ३ ॥ दोहा ॥ कलभनलीनेकोट पर,खेलताशिशुचहुंवोर । अमलकमलऊपरमनौ,चंचरीकचित चोर ॥ ४ ॥ कलहंसछंद ॥ पुरआठआठदरबारविराजैं । युतआ ठआठसैनापतिराजैं ॥ रहैंचारिचारिघटिकापरिमानै । घरजा हिँऔरजबआवतजानै ॥ ५ ॥

टी०- मंगलाचार बंदनवारादि ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ कलभ छोटेहाथी कमल सदृश कह्यो तासों पद्माख्य कोट जानो ताको भेद आगे कहिहैं ॥ ४ ॥ पुर कहे अग्रभाग जे पुरीके आठहैं ॥ तिनमें आठ दरवार कहे सभा बिराजत हैं अर्थ आठ प्रकारके कोट होतहैं यथा नरपतौ । अतिदुर्गं कालवर्मं चक्रावर्तं चंडिबुरं । तटावर्तंच पद्माख्यंयक्षभेदंचसार्वरं । कोटचक्रं प्रवक्ष्यामिविशेषा दृष्टधाचतत् ॥ सो जैसे एक ओर पद्माख्य कोटदेख्यो तैसे पुरीके आठहू ओर शहर पनाह में आठहू प्रकार के कोटबनेहैं तिनमेंराजाके आठ मंत्रीहैं यथा । वाल्मीकीये ॥ धृष्टिर्जयंती विजयः सिद्धार्थोत्यर्थ साधकः । अशोको मंत्रपालश्च सुमंतश्चाष्टमो महान् । ते मंत्रीतिन कोटनमें आठहू दिशनके प्रजान संग सभा करतहैं अर्थ तिनमें बैठि आठहू दिशन को मामलो करतहैं अथवा दरबार कहे मुख्यद्वार पुरद्वार इति अर्थ पुरीके शहरपनाह में आठहू दिशन में आठद्वार बनेहैं यथा कविप्रियायां । नीके कै केवार दैहौं द्वारद्वार दरबार केशवदास आस पास शूर जौन छावैगो॥५॥

मू०- दोहा ॥ आठौदिशिकेशीलगुण,भाषावपविचार ॥ वाहनबसनबिलोकिये,केशवएकहिबार ॥ ६ ॥ कुसुमविचित्राछंद ॥ अतिशुभबीथीरजपरिहरे । चंदनलीपीपुष्पनिधरे ॥ दुहुं

दिशिदीसतसुवरणमये । कलशविराजतमणिमयनये ॥ ७ ॥ तामरसछंद ॥ घरघरघंटनकेरवबाजैं । बिचबिचशंखजुझालरि साजैं ॥ पटहपखाउजआवझसोहैं । मिलिसहनाइनसोंमनमोहैं ॥ ८ ॥ हीरकछंद ॥ सुंदरिसबसुंदरप्रतिमंदिरपरयोंबनी । मोहनगिरिशृंगनपरमानहुंमहिमोहनी ॥ भूषनगनभूषिततनभूरिचितनचोरहीं । देखतिजनुरेखतितनुवाननयनकोरहीं ॥ ९ ॥ सुंदरीछंद ॥ शंकरशैलचढीमनमोहति । सिद्धनकीतनयाजनुसोहति ॥ पन्नगऊपरपद्मिनिमानहुं । रूपनऊपरदीपतिजानहुं ॥१०॥

टी०– ॥६॥ यामें चौकी दार सेनापतिनकी रीति कहतहैं कि आठौ दिशिके चौकीदारन के शील कहे स्वभाव गुण शूरता आदि औ भाषा कहे बोली चौकी समयकी चौकीदारन की बोली भिन्नहै औ वेष कहे देहकी उच्चता स्थूलता आदि औ विचार औ बाहन गज अश्वरथादि वसन श्याम श्वेत पीतादि एकहिबार कहे एकहि तरह विलोकियत है जा वेषसों जा पहरकी चौकी जैसे सेनापति कीहै तैसी आठहू ओर की है इतिभावार्थः अथवा जा पुरीमें आठौ दिशिके शील आदि एकहीबार एकही समय विलोकियतहै यासों या जनायो कि आठौ दिशिके राजा जा पुरमें हाजिर रहत हैं औ आठौ दिशिके प्राणी जापुर में बसत हैं वीथी गली ॥ ७ ॥ ८ ॥ प्रतिमंदिर कहे अपने अपने मंदिरन पर बरात को कौतुक देखिबेको सुंदरी कहे स्त्री चढ़ीहैं मोहनारि सदृश कहि अति सुंदर मंदिर जनायो जब देखती हैं तब बाणसम जे नयन कोर हैं तिनसों मानों तनको देखती हैं कहे वेधती हैं ॥९॥ सिद्धदेव योनि बिशेष हैं पद्मिनि कमलिनी रूपसौंदर्य्य कैलाश औ पन्न औ रूप सम गेह है सिद्धतनया कमलिनी दीपति सम स्त्री हैं ॥ १० ॥

मू०– कीरतिश्रीजयसंयुतसोहति । श्रीपतिमंदिरकोमनमोहति ॥ ऊपरमेरुमनोमनरोचन । स्वर्णलताजनुरोचतिलोचन ॥ ११ ॥ विशेषकछंद ॥ एकलियेकरदर्पणचंदनचित्र करे । मोहतिहैमनमानहुंचांदिनचंदधरे ॥ नैनविशालनिअंबरला

लनिज्योतिजगी ॥ मानहुंरागनिराजतिहैंअनुरागरंगी ॥ १२॥ नीलनिचोलनकोपहिरेयकचित्तहरे । मेघनकीद्युतिमानहुंदामिनि देहधरे ॥ एकनकेतनुसूक्षमसारिजरायजरी । सूरकरावलिसी जनुपद्मिनिदेहधरी ॥ १३ ॥ तोटकछंद ॥ बरषैंकुसुमावलिएक घनी । शुभशोभनकामलतासिबनी ॥ बरषैंफलफूलनलायक की । जनुहैंतरुणीरतिनायककी ॥ १४ ॥

टी०- की जय संयुत कीर्ति है जयसम गेहहै कीर्ति सम स्त्री है की पतिके विष्णु के मंदिर में श्रीलक्ष्मी है की मन रोचन कहे सुंदर अनेक मेरु सुमेरु पर स्वर्णलता हैं रोचति कहे नीकी लागति हैं लोचननि की ॥११॥ मानों चन्द्रमा के मन को चांदनी मोहती है चंद्र सरिस दर्पणहै चांदनी सरिस चंदन चर्चित स्त्रीहैं नयन हैं विशाल जिनके ऐसी जे स्त्री हैं तिनके अंबर बस्त्र लालनकी शोभा जगीहै रागिनी सम स्त्री हैं अनुराग प्रेम सम वस्त्र हैं प्रेमको रंग अरुण है ॥ १२ ॥ मेघ द्युति सम श्यामवस्त्र हैं दामिनी सम स्त्री हैं पद्मिनी कमलिनी समस्त्रीहैं सूरकरावलि सम जरायजरी सारीहैं ॥१३॥ फलपूगीफलादि ॥ १४ ॥

मू०-दोहा॥ भीरभयेगजपरचढ़े,श्रीरघुनाथविचारि॥ तिनहिंदेखिबरणतसबै,नगरनागरीनारि ॥ १५ ॥ तोटकछंद ॥ तमपुंज लियेगहिभानुमनो । गिरिअंजनऊपरशोभभनो ॥ मनमत्थ विराजतशोभतरे । जनुभासतलोभहिदानकरे ॥ १६ ॥ मरहट्टाछंद ॥ आनंदप्रकासीसबपुरबासीकरततेदौरादौरि । आरती उतारैंसरवसवारैंअपनीअपनीपौरि ॥ पढिमंत्रअशेषनिकरिअभिषेकनिआशिषदैंसविशेष । कुंकुमकर्पूरनिमृगमदचूरनिवर्षांति वर्षावेष ॥ १७ ॥ आभीरछंद । यहिविधिश्रीरघुनाथ । गहेभरतकोहाथ ॥ पूजतलोगअपार । गयेराजदरबार ॥ १८ ॥ गये एकहीबार । चारौराजकुमार ॥ सहितवधूनिसनेह ॥ कौशल्याकेगेह ॥ १९ ॥ त्रिभंगीछंद ॥ बाजेबहुबाजैंतारनिसाजैंसुनि

सुरलाजैंदुखभाजें । नाचैंनवनारीसुमनशृँगारीगतिमनुहारीसुखसाजें ॥ वीनानिबजावेंगीतनिगावेंमुनिनरिझावेंमनभावें । भूषणपटदीजैंसबरसभीजैंदेखतजीजैंछबिछावें ॥ २० ॥

टी०– ताही क्षण गजपर चढ़े राम ऐसे शोभित भये तमपुंज मानों भानु सूर्यको गहि लियो अथवा तम पुंजही को मानों भानु गहि लियो जानो लोभहि तेरकरे दान भासत है तेरे पदको संबंध याहूमें है औ कहूं यह पाठहै जनु राजत काम शृंगार तेरे तौ शृंगार है तेरजाके ऐसो मानों काम राजत है भानु औ चंद्रमा औ शोभा औ दान सम रामचन्द्र हैं तमपुंज औ अंजनगिरि औ मन्मथ औ लोभसम गजहै ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ तारकहे उच्च स्वरको साजतहैं ॥ तारो निर्मल मौक्ति के मुक्तासुद्धावुच्चनादे । इतिअभिधानचिंतामणिः ॥ रसकहे प्रेम में भींजे जे सब पुरबासी हैं तिन करिकै भूषण पट दीजे कहे दीजियत है अर्थ प्रेमसों युक्त सब भूषण पट दान करत हैं ॥ २० ॥

मू०– सोरठा ॥ रघुपतिपूरणचंद,देखिदेखिसबसुखमढ़ै ॥ दिन दूनेआनंद,तादनितेतेहिपुरबढ़ै ॥२१॥ इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोर चिंतामणि श्रीरामचंद्रचंद्रिकायांइन्द्रजिद्विरचितायां रामस्यायोध्यानगरप्रवेशोनामाष्टमःप्रकाशः ॥ ८ ॥

॥ २१ ॥ इति श्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायां अष्टमःप्रकाशः ॥ ८ ॥

मू०– दोहा ॥ यहप्रकाशनवमेंकथा, रामगमनबनजानि ॥ जनकनंदिनीकोसुकृत,वर्णनरूपबखानि ॥ १ ॥ रामचंद्रलक्ष्मण सहित, घरराखेदशरत्थ ॥ बिदाकियोननसारको, सँगशत्रुघ्नभरत्थ ॥ २ ॥ तोटकछंद ॥ दशरत्थमहामनमोदरये । तिनबोलि वशिष्ठहिंमंत्रलये ॥ दिनएककहोशुभशोभरयो । हमचाहतरामहिराजदयो ॥ ३ ॥ यहबातभरत्थकीमातसुनी । पठऊंबनरामहिंबुद्धिगुनी ॥ तेहिमंदिरमेंनृपसोंबिनयो । बरुदेहुहतोहमको

जोदियो ॥ ४ ॥ नृपबातकहीहँसिहेरिहियो । बरमांगिसुलोच निमैंजोदियो ॥ कैकेयी ॥ नृपतासुबिशेषिभरत्थलहैं । बरषैबन चौदहरामरहैं ॥ ५ ॥

टी०– ॥ १ ॥ २ ॥ शोभरयो राजाको बिशेषणहै ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥

मू०– पद्धटिकाछंद ॥ यहबातलगीउरबज्रतूल । हियफा ट्योज्योंजीरणदुकूल ॥ उठिचलेबिपिनकहँसुनतराम । तजिता तमाततियबंधुधाम ॥ ६ ॥ हरिलीलाछंद ॥ छूटेसबैसबनिकेसुख क्षुत्पियास । बिद्धद्बिनोदगुणगीतबिधानवास ॥ ब्रह्मादिअंत्य जनअंतअनंतलोग । भूलेअशेषसविशेषानिरागभोग ॥ ७ ॥ मौ- क्तिकदामछंद ॥ गयेतहँरामजहांनिजमात । कहीयहबातकि हौंबनजात । कछूजनिजीदुखपावहुमाइ । सोदेहुअशीषामिलौं फिरिआइ ॥ ८ ॥ कौशल्या ॥ रहौचुपह्वैसुतक्योंबनजाहु । नदेखिसकैंतिनकेउरदाहु ॥ लगीअबबापतुम्हारेहिवाइ । करैंउ लटीबिधिक्योंकहिजाइ ॥ ९ ॥ राम-ब्रह्मरूपकछंद ॥ अन्नदेइ सीखदेइराखिलेइप्राणजात । राजबापमोललैकरैजोदीहपोषिगा त ॥ दासहोइपुत्रहोइशिष्यहोइकोइमाइ । शासना न मानईतौको टिजन्मनर्कजाइ ॥ १० ॥

टी०– जीर्णकहे पुरानीतजिचले पदते इहां मानसिक त्यागजानो ॥ ६ ॥ क्षुत्कहे क्षुधा बिद्धद्बिनोद कहे शास्त्रार्थ गुणशास्त्र बिद्यादिगीतविधान गाइबो- बासघर अथवा बस्त्रब्रह्महिआदि दैकै अंत्यज जे चांडालहैं तिन पर्यन्त जे- अनंत लोगहैं तिन को अशेषराग प्रेम औ भोग सविशेषण भूले अर्थ अ- त्यन्त भूले यद्यपि रामबन गमन सों ब्रह्मादि देवन को रावण वधादि हित कार्य ह्वै है परंतु अनवसर बिलोकि तिनहूंको दुःख भयो ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ अन्नदाता औ शिषदाता औ कहूं प्राण जात होइ ता भय सों रक्षक औ राजा औ बाप औ जो मोल लैके पोषिकै गाकहे बड़ करै अर्थ जो मोललै पा-

लन करै ईजे छः हैं तिनके दास औ पुत्र औ शिष्य औ कोहूकहे औरहैं कोऊहोइ अर्थ अन्नग्राहक प्राण रक्षित औ प्रजा जे छःहैं ते आज्ञा को नामानैं तो कोटि जन्म तक नरक जाइं याजनायो कि एकतौ राजा हैं दूसरे पिताहैं तासों बिशेषि कै आज्ञामानि हमको बन जैबो उचित है ॥ १० ॥

मू०- कौशल्या-हरनीछंद ॥ मोहिंचलौबनसंगलियैं । पुत्र तुम्हेंहमदेखिजियैं ॥ अवधपुरीमहँगाजपरै । कैअबराजभरत्थ करै ॥ ११ ॥ राम-तोमरछंद ॥ तुमक्योंचलौबनआजु । जिन शीशराजतराजु ॥ जियजानियेपतिदेव । करिसबभांतिन सेव ॥ १२ ॥ पतिदेइजोअतिदुःख । मनमानिलीजैसुःख ॥ सबजक्तजानिअमित्र । पतिजानिकेवलमित्र ॥ १३ ॥ अमृत गतिछंद ॥ नितपतिपंथहिचलिये । दुखसुखकोदलुदलिये ॥ तनमनसेवहुपतिको । तबलहियेशुभगतिको ॥ १४ ॥ स्वागताछंद ॥ योगयागब्रतआदिजोकीजै । न्हानगानगनदानजोदीजै ॥ धर्मकर्मसबनिःफलदेवा । होहिंएकफलकैपतिसेवा ॥१५॥

टी०- तुम क्यों चलौ बन इत्यादि दश छंदन में पातिव्रत धर्म सुनाइ रामचंद्र माता को बोध करत हैं राजकहे राजा दशरथ अथवा राजस्त्रिन करिकै केवल पतिही को देवजानिये कहे जानो चाहिये ॥११॥ १२ ॥ १३ ॥ पतिही स्त्रिन करिकै नित्यप्रति पथ कहे सुराहशास्त्रोक्तपतिब्रतनकी रीति इति तामें चलिये याप्रकार सुख औ दुःख के दल कहे समूह को दलिये कहे बिताइये औ तन औ मन सों केवल पतिही को सेवहु कहे सेवन करिये तब शुभगति को पाइये कछू सुख दुःख परै तामें स्त्रीको पतिही की सेवा करिबो उचित है और उपाय करिबो उचित नहीं है इति भावार्थः ॥ १४ ॥ देव कहे देवता अर्थ देवपूजा ॥ १५ ॥

मू०-- तातमातुजनसोदरजानौं । देवरजेठसगेसोबखानौं ॥ पुत्रपुत्रसुतश्रीछबिछाई । हैबिहीनभरतादुखदाई ॥ १६ ॥ कुंडलिया ॥ नारीतजैनआपनो,सपनेहूंभरतार ॥ पंगुगुंगुबौराब

धिर,अंधअनाथअपार॥ अंधअनाथअपारवृद्धबावनअतिरोगी। बालकपंडुकुरूपसदाकुबचनजड़योगी।कलहीकोढ़ीभीरुचोरज्वारीब्यभिचारी। अधमअभागीकुटिलकुपतिपतितजैननारी॥१७ पंकजबाटिकाछंद॥ नारितजैनमेरभरतारहि। तासँगसहतिधनंजयझारहि॥ जीकेहूंकरतारजिआवत । तौताकोयहबातसुनावत॥ १८॥ निशिपालिकाछंद॥ गानबिनमानबिनहासबिनजीवहीं। तक्षनहिंखाइजलशीतलनपीवहीं । तेलतजिखेलतजिखाटतजिसोवहीं। शीतजलन्हाइनहिंउष्णजलजोवहीं॥१९॥

टी०– पुत्र सुत पौत्र ॥ १६ ॥ पंडु पिंडरोगी योगी विरक्त भीरु कादर कुपति निर्लज्ज अथवा नपुंसक ॥ १७ ॥ धनंजय कहे अग्नि की झार सहतिहै अर्थ सती होति है जो काहू प्रकार कर्तार जिआवै अर्थपतिके संग ना जरयो जाइ तौ तिन स्त्रिन के लिये यह बात है सो हम तुमको सुनावतहैं सोगान बिन इत्यादि द्वैछंदमों आगे कहत हैं ॥ १८ ॥ द्वैछंद को अन्वय एक है जल शीतल न पीवहीं अर्थ सीरो करिकै जल न पीवैं जैसो होइ तैसो पीवैं शीत जलमें न्हाइ या जनायो कि गरम जल करि स्नान ना करैं जा समय जैसो पावैं तैसे में स्नान करैं काय मन बाचा सबधर्म करिबो करैं अर्थ येजे सब धर्म हैं तिनको मनसा बाचा कर्मणासे करैं अथवा और जे सब धर्मदानादि हैं तिनहुंन को करैं कृच्छ्र उपवास कृच्छ्रचांद्रायणादिसों जबलौं तनको अतीतैकहेछोडै अर्थ मरै तबलौं पुत्र की शिष में लीन रहै पुत्र की आज्ञा मों रहै यामें त्रिकालदर्शी जे रामचंद्र हैं तिन अपने वियोग सों पिताको मरण निश्चय करि पतिब्रतन को धर्म सुनाय माताको बोध करि युक्ति सों विधवा स्त्री को उचित धर्म सिखायो ॥ १९ ॥

मू०– खायँमधुरान्ननहिंपायपनहींधरैं।कायमनवाचसबधर्मकरिबोकरैं॥कृच्छ्रउपवाससबइंद्रियनिजीतहीं ॥ पुत्रशिषलीनतनजौलगिअतीतहीं॥२०॥ दोहा॥ पतिहितपितुपरतनुतज्यौ,सतीसाखिदैदेव ॥लोकलोकपूजितभई,तुलसीपतिकीसेव॥२१॥ मन

साबाचाकर्मणा,हमसोंछाड़ोनेहुराजाकोविपदापरी,तुमातिनकी सुधिलेहु ॥ २२ ॥ पद्धटिकाछंद ॥ उठिरामचन्द्रलक्ष्मणसमेत। तबगयेजनकतनयानिकेत ॥ सुनुराजपुत्रिकेएकबात । हमबन पठयेहैंनृपतितात ॥ २३ ॥ तुमजननिसेवकहँरहहुबाम । कैजा हुआजुहींजनकधाम ॥ सुनिचन्द्रबदनिगजगमनिऐनि । मनरु चैसोकीजैजलजनैनि ॥ २४ ॥ सीताजू-नाराचछंद ॥ नहोंरहौंन जाहुंजूविदेहधामकोअबै । कहीजोबातमातुपैसोआजुमैंसुनी सबै ॥ लगैक्षुधाहिमाभलीविपत्तिमांझनारिये । पियासत्रासनी रबीरयुद्धमेंसम्हारिये ॥ २५ ॥

टी०- ॥ २० ॥ सती की औ तुलसी की कथा प्रसिद्ध है ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ २३ ॥ जननि कौशल्या ऐनि कहे हे सुंदरि ॥ २४ ॥ कि स्त्री- को पतिही की सेवा उचित है यह बात जो माता सों तुमकह्यो है सो हम सब सुन्यो है यासों या जनायो कि तुह्मारी सेवा छांड़ि हम कैसे घर में र- हैं क्षुधामें माता भली लगतिहै पोषण करिबो मुख्य धर्म माताकोहै तासों यथाकवि प्रियायां माता जिमि पोषति पिता जिमि प्रतिपाल करैं औ बि- पत्ति में नारियैकहे स्त्रीही भली लागति हैं जो अनेक प्रकारसों शुश्रूषा करि मन को बहरावतिहै औ पियास की त्रास समय नीर भलो लागतहै औ युद्ध में बीर जो योद्धा हैं तिन को सँभारिये यहै भलो लागत है अर्थ अ- नेक बीरन को सँभारिबो एकत्र करिबो अथवा सावधान करिबोई भलो ला- गत है यह कहि या जनायो कीं यह तुह्मारो बिपत्ति को समय है तासों तु- ह्मारे संग हमको चलिबो विशेषि है ॥ २५ ॥

मू०— लक्ष्मण--सुप्रियाछंद ॥ बनमहँविकटविविधिदुखसुनि ये । गिरिगहवरमगअगमकेगुनिये ॥ कहुंअहिहरिकहुंनिशिच रचरहीं । कहुंदवदहनदुसहदुखदहहीं ॥ २६ ॥ सीताजू-दंडक॥ केशवदासनींदभूखप्यासउपहासत्रासदुखकोनिवासविषमुखहूग ह्योपरै । वायुकोबहनदिनदावाकोदहनबडीबाड़वाअनलज्वाल

जालमेंरह्योपरै । जीरनजनमजातजोरज्वरघोरपरिपूरणप्रकटप रितापक्योंकह्योपरै । सहिहौंतपनतापपतिकेप्रतापरघुबीरको बिरहबीरमोसोंनसह्योपरै ॥ २७ ॥

दवदहन कहेदावाग्नि ॥ २६ ॥ दुःखको निवास जो बिष है सो मुखमें गह्यो परतहै अर्थ बिष खायो जात हैं जीर्ण कहे जर्जर अर्थ थोड़ी है मर्यादा जाकी ऐसो जो जन्म हे सो जातु कहे जाउ अर्थ कि मृत्यु होय औ घोर जो ज्वर है औ परिपूर्ण कहे दैहिक दैविक भौतिक तीनों प्रकार की जो परितापहै कैसी परिताप कि क्यों कह्यो परै अर्थ जो काहू बिधि सों नहीं कह्यो जात अति बडो इति येसब पतिके प्रताप सों सहिहौं जो परके प्रताप पाठ होय तौ पर जे शत्रुहैं तिनके प्रतापसहिहौं अर्थ शत्रुकृत दुःख सहिहौं ॥ २७ ॥

मू०– रामविशेषक–छंद ॥ धाम रहौतुमलक्ष्मण राजकिसेव करौ । मातनिके सुनि तातसो दीरघदुःखहरौ ॥ आइभरत्थ कहाधौंकरैंजियभायगुनौ । जोदुखदेइँतौलैउरगौयहबातसु नौ ॥ २८ ॥ लक्ष्मण–दोहा ॥ शासनमेटीजायक्यों,जीवनमेरे हाथ ॥ ऐसीकैसेबूझिये,घरसेवकबननाथ ॥ २९ ॥ द्रुतविलंबि तछंद ॥ बिपिनमारगरामविराजही । सुखदसुन्दरिसोदरभ्राज हीं ॥ बिबिधश्रीफलसिद्धिमनोफल्यो । सकलसाधनसिद्धि हिलैचल्यो ॥ ३० ॥ दोहा ॥ रामचलतसबपरचल्यो,जहँतहँस हितउछाह ॥ मनोभगीरथपथचल्यो,भागीरथीप्रबाह ॥ ३१ ॥ चंचलाछंद ॥ रामचंद्रधामतेचलेसुनेजबैनृपाल । बातकोकहै सुनैसोह्वैगयेमहाबिहाल ॥ ब्रह्मरंध्रफोरिजीवयोंमिल्योबिलोकि जाइ । गेहचूरिज्योंचकोरचंद्रमेंमिलैउड़ाइ ॥ ३२ ॥

टी०– उरगौ कहै बितावो अथवा हेभाई जोभरत तुमको दुःख दैहैं तौ लै कहे अंगीकारकरिकै उरमें गुनौ अर्थ समय पाय ताको फलदेबेके लिये समु- झिराखौगौ यहबातसुनौ अर्थ गौं कीजो यह बात है सो सुनो ॥ २८ ॥ यामें याजनायो कि जो मैं इहां रहिबोऊकरौं तौ जीव तुम्हारे संग जैहै ॥

॥ २९ ॥ बिपिन कहे बन भ्राजहीं कहे शोभहीं विविध कहे अनेक प्रकार की श्रीफल कहे शोभा फलकी जो सिद्धि कहे वृद्धि है सिद्धिस्त्रीयोगनिष्पत्तिपादुकाताद्धिं वृद्धिषु । इतिमेदिनी ॥ तासों फल्यो जो सिध्यहै सिन्द्दति शेषः सकल साधन कहे ध्यानादि औ सकल सिद्धिहि कहे अणिमादिकनको लैकै चल्यो हैं तौ जप योग ते बडी शोभा को प्राप्त सिद्धरूप रामचंद्र हैं सकल साधनरूप लक्ष्मण हैं अष्टसिद्धि रूप सीताहैं औ कहूं सिद्धि मनों फल्योपाठ है सो अर्थ खुल्यो है ॥ ३० ॥ उछाह जो आनंद है ते हिते सबपुर चल्यो कहे सब पुरबासी चले तौ या जानो पुरीमें उछाहहू रामहीं के साथ चलो गयो ॥ ३१ ॥ गेहु कहे पिंजरा ॥ ३२ ॥

मू०– चित्रपदाछंद ॥ रूपहिदेखतमोहैं । ईशकहौनरकोहैं ॥ संभ्रमचित्तअरूझै । रामहिंयेंसबबूझै ॥ ३३ ॥ चंचरीछंद ॥ कौनहौकिततेचलेकितजातहौकेहिकामजू । कौनकीदुहिताब हूकहिकौनकीयहवामजू ॥ एकगांउरहौकिसाजनमित्रबंधुबखानिये । देशकेपरदेशकेकिधौंपंथकीपहिंचानिये ॥ ३४ ॥ जगमोहनदंडक ॥ किधौंयहराजपुत्रीबरहींबयोहैकिधौंउपाधिवर्योहै यहिशोभाअभिरतहौ । किधौंरतिरतिनाथजससाथकेशवदासजाततपोवनशिवबैरसुमिरतहौ । किधौंमुनिशापहतकिधौंब्रह्मदोषरत किधौंसिद्धियुतसिद्धपरमविरतहौ । किधौंकोऊठगहौठगौरीलीन्हेकिधौंतुमहरिहरश्रीहौशिवाचाहतफिरतहौ ॥३५

टी०–सब मगके प्राणी तिन्हुनकी सुंदरता देखि कै मोहत हैं सो मनमें कहत हैं कि हे ईश हे भगवान् ये कोहैं या प्रकार संभ्रममें सबके चित्त अरुझत हैं तब रामहीं सों या प्रकार सब बूझै कहे पूंछत हैं सो आगे कहत हैं ॥ ३३ ॥ बहू पुत्रबधू साजन कहे स्वामी ॥ ३४ ॥ कि यह जो स्त्री है सो राजपुत्री है ताको बरहीं कहे जबरईसों बर्‌यो है कहे विवाह्यो है अथवा यह जो राजपुत्री है ताहीं माता पिताकी आज्ञा मेटिकै अपनी इच्छासों तुमको जबरईबर्‌यो है कि तुमयाको उपधि कहे छलसों बर्‌यो है ॥ कपटोस्त्री व्याजद

म्भोपधयाः छद्मकैतवे इत्यमरः ॥ ऐसी शोभासों अभिरत कहे युक्त हौ काहे ते कि जो तुमको तपस्वी जानि राजा अपनी इच्छासों विवाहदे तौ तौ तुम्हारे आश्रमपर्यन्त आपने लोग संग करिदेते सोनहीं है तासों यह जानि परत है कि ताही राजाके भयसों बनको भागे जात हौ इति भावार्थः जस संसार जीत्यो है ताको यश रूप लक्ष्मणहैं शिवजी नयनकी आगिसों जाऱ्यो ता बैरको सुमिरत शिवके तपोबनको शिव से लरिबेकोजात हौ अथवा शिवके बैर को सुमिरत हौ तासों तपोबन में तप करिबेको जात हौ जासों बडो तप करि तपोबलसों शिवको जीते की सिद्धि तप सिद्ध अथवा मुक्ति तासों युक्त तुम परम बिरत सिद्ध हौ परम बिरत कहि या जनायो कि संसारसों अति विरक्त ह्वै अति बडो तप कऱ्यो हैं यासों देह धरि सिद्धि तुम्हारे संगसंग फिरतिहै ॥ सिद्धिस्तुमोक्षेनिष्पत्तियोगयोरित्यभिधानचिन्तामणौ ॥ कि हरि औ हर औ श्रीलक्ष्मी हौ शिवा जो पार्वती हैं तिन्हैं चाहत कहे ढूंढत फिरत हौ ॥ ३५ ॥

मू०– मत्तमातंगलीलाकरनदंडक। मेघमंदाकिनीवारुसौदामिनीरूपरूरेलसैंदेहधारीमनो। भूरिभागीरथीभारतीहंसजाअंशकेहैंमनोंभागभारेमनो ॥ देवराजालियेदेवरातीमनोंपुत्रसंयुक्तभूलोकमेंसोहिये । पक्षदूसंधिसंध्यासधीहैमनोलक्षियेस्वच्छप्रत्यक्षहीमोहिये ॥ ३६ ॥

टी०– मेघ औ मंदाकिनीआकाशगंगा औ सौदामिनीकहेबिजुली ये तीनौं देहधारी मानों रूरेकहे सुंदर रूपकहे बेषसों लसत हैं अथवा रूरेकहे बिमल जोरूपसौंदर्यहै तेहिकरिकै देहधारी लसै कहे शोभितहैं यासों याजनायो कि मेघादिक तीनों जब सुंदरतासों मिलिकै रूप धरैं तब रामादिकनके रूपसमहोइं किमानों भागीरथी गंगा औ भारती सरस्वती औ हंसजा यमुना तिनके जे हैं भूरि कहे संपूर्ण अंश कहे भाग तिनहिंनके भारे भाग कहे भाग्य भनौ कहे कहियत है अर्थ भागिरथी भारती हंसजाके अंशनके बडे भाग हैं जिन ऐसे सुंदर रूप पाये हैं भागीरथीके पूर्णांशावतार रूप लक्ष्मण हैं भारतीके पूर्णांशावतार रूप सीता हैं यमुना के पू-

र्णांशावतार रूप रामचन्द्र हैं देवराजको पुत्र जयंत औ कीदू कहे दूनौ कृ-
ष्णपक्ष तिनकी संधिमें स्वच्छ संध्या सधी है स्थित है जाको प्रत्यक्षही ल-
क्षिये कहे देखियत है औ शोभा सों मोहियत है कृष्णपक्षरूप राम हैं शु-
क्लपक्ष रूप लक्ष्मणहैं संध्यारूप सीताहैं अथवा दूनों जे पक्ष हैं तिनमें सं-
धि कहे मध्य है तौ शुक्लादि गणना सों दुवौ पक्षनको मध्य पूर्णिमा है तौ-
संधिपदते पूर्णिमा जानौ याहूमें पूर्णिमारूप सीता हैं दुवौ पक्षरूप राम
लक्ष्मण हैं औ तीनों संध्या परस्परसधी हैं अर्थ कि एकत्र हैं प्रातःसंध्या
रक्त है मध्याह्न संध्या शुक्ल है सायंसंध्याश्याम है यथा सामसंध्यायां ॥ पूर्व सं-
ध्यातुगायत्री रक्तांगीरक्तबाससा १ मध्याह्नेतुयासंध्या श्वेतांगीश्वेतवाससा
२ अपराह्नेतुया संध्या कृष्णांगीकृष्णबाससा ॥ कतहूं संध संध्या संधी या
पाठ है तौ दुवौ पक्षनके संघ कहे साथ संध्या सधी है सो जानो ॥ ३६ ॥

**मू०— अनंगशेखरदंडक ॥ तड़ागनीरहीनतेसनीरहोतकेशव-
दासपुंडरीकझुंडभौंरमंडलीनमंडहीं । तमालवल्लरीसमेतिसू-
खिसूखिकैरहेतबागफूलिफूलिकैसमूलशूलखंडहीं ॥ चितैचको-
रनीचकोरमोरमोरनीसमेत हंसहंसिनीसमेतशारिकासबैपढ़ैं ।
जहींजहींविरामलेतरामजूतहींतहींअनेकभांतिकेअनेकभोग-
भागसोबढ़ैं ॥ ३७ ॥**

टी०— पुंडरीक कमल भाग सों कहे भाग्य सों अथवा द्विगुण चतुर्गु-
णादि भाग कहे हींसा सों ॥ ३७ ॥

**मू०— सुंदरीछंद ॥ घामकोरामसमीपमहाबल ॥ शीतहिला-
गतहैंअतिशीतल ॥ ज्योंघनसंयुतदामिनिकेतन । होतहैंपूषन
केकरभूषन ॥ ३८ ॥ मारगकीरजतापितहैअति । केशवसीतहि
शीतललागति ॥ ज्योंपदपङ्कजऊपरपायनि । दैजोचलैतेहिते
सुखदायनि ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ प्रतिपुरऔप्रतिग्रामकी,प्रतिनग-
रनकीनारि ॥ सीताजूकोदेखिकै,वर्णनहैंसुखकारि ॥ ४० ॥ ज-
गमोहनदंडक ॥वासोंमृगअंककहैंतोसोंमृगनयनीसबवहसुधाधर**

तुहूंसुधाधरमानिये । वहद्विजराजतेरेद्विजराजिराजैंवहकलानि-
धितुहूंकलाकलितबखानिये । रत्नाकरकेहैंदोऊकेशवप्रकाशकर
अंबरबिलाशकुबलयहितमानिये । वाकेअतिशीतकरतुहूंसीता
शीतकरचंद्रमासीचंद्रमुखीसबजगजानिये ॥ ४१ ॥

टी०— घामको जो महाबल कहे अति तेजहै सो रामके समीप में सी-
ताको अति शीतल लागतहै जैसे घन जे मेघहैं तिनते युक्त जो दामिनी
बिजुली है ताके तनुमें पूषण जे सूर्य हैं तिनके कर करणि भूषण होतहैं
सूर्यकी किरणें मेघनमें परती हैं तब इंद्रधनुष होत है सोई दामिनीको भूषण
सम है ॥ ३८ ॥ हेतुयह कि पृथ्वी कि सीता पुत्रीहैं रामचन्द्रजामातुहैं ता-
सों पृथ्वीकी रज तिनको सुख दियोई चहै तामें युक्ति यहकि पंकजपर
पांउ धारिकै चलै तौ शीतलई लागत है ॥ ३९ । ४० ॥ या प्रकार कोऊ
स्त्री सीतासों कहतिहै कि वहजो चंद्रमा है जाको मृगअंक सब कहत हैं मृ-
गा जो शशा है सोहै अंकमें गोदमें मध्य इति जाके अथवा मृगको अंक क-
हे चिह्नहै जाके औ तोहूंको मृगनयनी कहत हैं औ वह सुधाधर है सुधा
अमृतको धरे है औ तुहूं सुधाधर है सुधासम हैं अधर ओष्ठजाके औ वह
द्विजराज कहावत है तेरेहू द्विज जे दंत हैं तिनकी राजिकहे पंगति राजतिहै
औ वह षोडशकलनको निधिहै औ तुहूं अनेक जे नेत्र विक्षेपादि कला हैं
अथवा चौंसठि कला तिनसों कलित है औ वह रत्नाकर जो समुद्र है ता-
को प्रकाशकर कहे बढ़ावन हार है पूर्णमासी के चन्द्रमाके उदयसों समुद्र
बाढ़त है प्रसिद्ध है औ तू भूषणनके रत्नको जो आकर समूह है
ताको प्रकाश शोभा करता है अर्थ तेरी छबिसों भूषणनके रत्न
शोभा पावत हैं औ चन्द्रको अंबर आकाशमें बिलास है सीताको अंबर
वस्त्रमें औ चंद्रमा कुवलयको हित है औ सीता कुवलय कहे पृथ्वी मंडल-
को हितकरे अतिप्रिय लागतिहै अर्थ सौंदर्यादिक गुण सीतामें ऐसे हैं जासों
सबको प्रिय है औ वाके चन्द्रमाके अति शीत हैं कर कहे किरणि औ हे
सीता तुहूं शीतकर है जो तोको देखत हैं ताके लोचन शीतल होत हैं तौ
जौन जौन जिह्वगुण चंद्रमा मोहैं ते तोहूं में हैं याते हे चंद्रमुखी सब जग

करिकै तोको चन्द्रमा सम जानियत है अर्थ सब जग तोको चन्द्रमा-सम जानत है ॥ ४१ ॥

मू०—अन्यच्च ॥ कलितकलंककेतुकेतुअरिसेतुगातभोगयोग-कोअयोगरोगहीकोथलसों ॥ पून्योईकोपूरनपैप्रातिदिनदूनोदूनो क्षणक्षणक्षीणहोतछीलरकीजलसों । चंद्रसोंजोबरणतरामचंद्र-कीदोहाईसोइमतिमंदकविकेशवकुशलसों । सुंदरसुवासअरु कोमल अमलअतिसीताजूकोमुखसखिकेवलकमलसों ॥ ४२ ॥

टी०— दूसरीस्त्री ताकोमत खंडिकै आपनोमत कहतिहै कलंक किजो के-तुकहेपताका है अर्थ पताकासम जाको कलंक प्रसिद्ध है औ केतुको अरि शत्रु है राहु केतु एकइके खंड हैं तासों अक्षर मैत्रीके लिये केतु कह्यो औ स्त्री आदिके जे भोग हैं तिनको जो योग संयोगरेताको अयोग असमर्थ है गुरुशापसों क्षयरोग युक्त है क्षणक्षण क्षीण होतजो छीलरकहेदीना अथवा अंजलिकोजल है तासम प्रतिदिन दूनों क्षीणहोत हैं ॥ ४२ ॥

मू०— अन्यच्च ॥ एकेकहेंअमलकमलमुखसीताजूको एकक-हैंचन्द्रसमआनँदकोकंदरी । होइजोकमलतौरपनिमेंनसकुचैरी-चंदजोतौबासरनहोइद्युतिमंदरी । बासरहीकमलरजनीहीमेंचं-द्रमुखबासरहूरजनिबिराजैजगबंदरी । देखमुखभावैअनदेखेई-कमलचंद तातमुखमुखैसखीकमलैनचंदरी ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ सी-तानयनचकोरसखि,रविबंशीरघुनाथ ॥ रामचंद्रसियकमलमुख भलोबन्योहैसाथ ॥ ४४ ॥ बिजयछंद ॥ बहुबागतड़ागतरंगनि तीरतमालकीछांहबिलोकिभली । घटिकायकबैठतहैंसुखपाय बिछायतहांकुशकाशथली ॥ मगकोश्रमश्रीपतिदूरिकरैंसियकोशु-भवाकलअंचलसों । श्रमतेऊहरैंतिनकोकहिकेशवचंचलचारुहृ गंचलसों ॥ ४५ ॥ सोरठा ॥ श्रीरघुबरकेइष्ट,अश्रुबलितसी-तानयन ॥ सांचीकरीअहृष्टझूंठीउपमामीनकी ॥ ४६ ॥

टी०— तीसरी स्त्री दुवौ को मत खंडि आपनो कहति है कमलचंद्रके

देखेहू पर सुख भावत है औ कमलचन्द्र सुखके अनदेखे ही भावत है जब या सुखको देखो तब कमलचंद्रके देखिबेकी इच्छा नहीं होति जब उत्तमवस्तु देखो तब अनुत्तम बस्तु देखे अच्छी नहीं लागतिहै ॥ ४३ ॥ सूर्य को औ चकोर को और चन्द्रको औ कमलको स्वाभाविक बिरोध है सो इहा भलो कहे अद्भुत साथ बन्यो है ॥ ४४ ॥ दृगंचल दृगकोर ॥ ४५ ॥ श्री रघुबर के इष्ट कहे प्रिय अश्रु आनंदाश्रु करिकै वलित युक्त जे सीताके नयन हैं तिन मीनकी जो झूठी उपमा अदृष्ट रही है ताको सांची करी अर्थ मीन जल में रहते हैं नयन जलमें नहीं रहत समतामें यह भेद रह्यो है सो आनंदाश्रु जल में बूड़ि कै सीताके नयन सांची करी ॥ ४६ ॥

मू०— दोहा ॥ मारगयोंरघुनाथजू, दुखसुखसबहीदेत ॥ चित्रकूटपर्बतगये, सोदरसियासमेत ॥ ४७ ॥ इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांरामस्यचित्रकूटगमनंनामनवमःप्रकाशः ॥ ९ ॥

टी०— दर्शन सों सुख देत वियोग सों दुख देत ॥ ४७ ॥ इति श्रीमज्जगज्जननि जनकजानकी जानकी जानिप्रसादाय जनजानकीप्रसाद निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां नवमः प्रकाशः ॥ ९ ॥

मू०— दोहा ॥ यहप्रकाशदशमेंकथा, आवनभरतसुनाम ॥ राजमरणअरुतासुको,बासिबोनंदीग्राम ॥ १ ॥ दोधकछंद ॥ आनिभरतपुरीअवलोकी । स्थावरजंगमजीवसशोकी ॥ भाट नहींविरदावलिसाजें ॥ कुंजरगाजेंनदुंदुभिबाजें ॥ २ ॥ राजसभानबिलोकियकोऊ । शोकगहेतवसोदरदोऊ ॥ मंदिरमातुबिलोकिअकेली । ज्योंबिनवृक्षबिराजतिबेली ॥ ३ ॥ तोटकछंद ॥ तबदीरघदेखिप्रणामकियो ॥ उठिकैउनकंठलगाइलियो ॥ नपियोजलसंभ्रमभूलिरहे । तबमातसोंबातभरत्थकहे ॥ ४ ॥

टी०— नाम कहे प्रसिद्ध ॥ १ । २ ॥ राज सभामें कोऊ न देख्यो तब

शोकको गहे औ माता के मंदिरमें जाइ कै माताको अकेली देख्यो तब शोक गहे ॥ ३ । ४ ॥

मू०– विजयाछंद ॥ मातुकहांनृपतातगयेसुरलोकहिक्यों सुतशोकलये ॥ सुतकौनसुरामकहांहैंअबैबनलक्ष्मणसीयसमेत गये । बनकाजकहाकहिकेवलमोसुखतोकोकहासुखयामेंभये । तुमकोप्रभुताधिकतोंकोकहाअपराधबिनासिगरेईहये ॥ ५ ॥दोहा॥भर्त्तासुतविद्वेषिनी,सबहीकोदुखदाइ ॥ यहकहिदेखेभरतत-ब,कौशल्याकेपाइ ॥६॥ तोटकछंद ॥ तबपाँयनजाइभरत्थपरे । उनभेंटिउठाइकैअंकभरे ॥ शिरसूंघिबिलोकिबलाइलई । सुत तोबिनयाबिपरीतभई ॥ ७ ॥ भरत–तारकछंद ॥ सुनुमातभ-ईयहबातअनैसी । जुकरीसुतभर्तृविनाशिनिजैसी ॥ यहबात-भईअबजानतजाके । द्विजदोषपरैंसिगरेशिरताके ॥ ८ ॥ जि-नकेरघुनाथविरोधबसैजू । मठधारिनकेतिनपापग्रसैजू ॥ रसरा-मरस्योमननाहिंनजाको । रणमेंनितहोइपराजयताको ॥ ९ ॥ कौशल्या ॥ जनिसौंहकरौतुमपुत्रसयाने । अतिसाधुचरित्रतु-म्हैंहमजाने ॥ सबकोसबकालसदासुखदाई । जियजानतिहौंसु-तज्योंरघुराई ॥ १० ॥ चंचरीछंद ॥ हाइहाइजहांतहांसबह्वै-रहीसिगरीपुरी । धामधामनिसुंदरीप्रगटींसबैजेहुतींदुरी ॥ लैगयेनृपनाथकोसबलोगश्रीसरयूतटी । राजपत्निसमेतिपुत्र-निविप्रलायगढीरटी ॥ ११ ॥

टी०– ॥ ५ । ६ ॥ लघुको शिरसूंघिबो बड़ेनकी प्रीतिरीतिहै रोगबलाइ-लीवोस्त्रीनको प्रसिद्ध है ॥ ७ । ८ ॥ शिवआदि देवनके मठकी जे पूजालेतहैंते मठधारी कहावतहैं रसकहे प्रेमअंगरादौ विषवीर्येंद्रवेरागेगुणेरसः इत्यमरः र-स्यौ भीज्योयुक्त इति ॥ ९ । १० ॥ विप्रलाप जे हैं अनर्थ बचन अथवा कैकेयी प्रति विरोध बचन तिनकी गढ़ी कहे समूह रढी कहत भये कि कैकेयिही के करत ऐसो विघ्न भयो तासों याको मुखदेखिवो उचित नहीं है इत्यादि बचन

सब कहत हैं । बिप्रलापो विरोधोक्तावनर्थकबचस्यापिइति अभिधान चिन्तामणिः ॥ ११ ॥

मू०– सोमराजीछंद ॥ करीअग्निअर्चा । मिटीप्रेतचर्चा ॥ सबैराजधानी । भईदीनवानी ॥ १२ ॥ कुमारललिताछंद ॥ क्रियाभरतकीनी । वियोगरसभीनी ॥ सजीगातिनबीनी । मुकुंदपदलीनी ॥ १३ ॥ तोटकछंद ॥ पहिरेबकलासुजटाधरिकै । निजपायनिपंथचलेअरिकै ॥ तरिगंगगयेगुहसंगलिये । चित्रकूटबिलोकतछांड़िदिये ॥ १४ ॥

टी०– जब भरत अग्निसों अर्चा पूजा करी अर्थ चितामें अग्नि दियो तब प्रेतचर्चा मिटी अर्थ सब अयोध्याबासी परस्पर अनेक प्रेतबार्ता करतरहे ताको छोंड़िदीन बाणीभये अर्थ करुणा स्वर करिकै रोये मरण समयमों औ दाहभूमिमें लैजात मों औ दाह होतमों अधिक अधिक तर बियोग मानि रोइबेकी रीति प्रसिद्ध है अथवा अग्नि करीकहे चितामें अग्नि दियो तब ते अशुद्धिसों अर्चाकहे देवपूजा मिटी औ प्रेतचर्चाभई इतिशेषः ॥ १२ ॥ क्रिया षोड़शीआदि भरत नीकी करत भये ताके बादि मुकुंद रामचन्द्रके वियोगरसमें भीनी नवीनी गति कहे दशावल्कल वसनादि साजी औ मुकुंदपद लीनी कहे ज्ञान बुद्धि इति सजी अर्थ पिताकी क्रिया पूर्ण करि रामचन्द्रके चरणनमें मनुलगायो गति पद श्लेष है एक पक्ष दशा जानौ एक पक्ष बुद्धि जानौ गातिस्त्रीमार्गदशयोर्ज्ञाने यात्राभ्युपाययोरितिमेदिनी ॥ १३ ॥ अरिकै कहे हठ करिकै गंगा उतरिकै गुहको संग कहे ज्ञाति समूह सूधी मार्ग बताइबेके लिये गये जब चित्रकूट देख्यो तब तिन्हैं छोड़िदियो ॥ १४ ॥

मू०–मदनमोदकछंद ॥ सबसारसहंसभयेखगखेचरबारिदज्योंबहुबारनगाजे । बनकेनरवानर किन्नरबालकलैमृगज्यों मृगनायकभाजे ॥ तजिसिद्धसमाधिनके सबदीरघदौरिदरीनमें आसनसाजे । भूतलभूधरहालेअचानकआइभरत्तकेदुंदुभिबाजे

॥ १५ ॥ दोहा ॥ रामचन्द्रलक्ष्मणसहित,शोभितसीतासंग । केशवदाससहासउठि,चलेधरणिधरशृंग ॥ १६ ॥ लक्ष्मण—मोहनछंद ॥ देखहुभरतचमूसजिआये । जानिअबलहमकोउठिधाये ॥ हींसतहयबहुवारणगाजे । जहँतहँदीरघदुंदुभिबाजे ॥ ॥ १७ ॥ तारकछंद ॥ गजराजनिऊपरपाखरसोहैं । अतिसुंदरशीशशिरोमनमोहैं ॥ मनिघूंघुरघंटनकेरवबाजें । तड़ितायुतमानहुंबारिदगाजें ॥ १८ ॥ बिजयछंद ॥ युद्धकोआजुभरत्तचढ़े धुनिदुंदुभिकीदशहूंदिशिधाई । प्रातचलीचतुरंगचमूबरणीसोनकेशवकैसहुजाई ॥ योंसबकेतनत्रानानिमेंझलकीअरुणोदयकी अरुणाई । अंतरतेजनुरंजनकोरजपूतनकीरजऊपरआई ॥१९॥

टी०— सारस हंस औ और जे खग पक्षी हैं ते खेचरकहे आकाशगामी भये जैसे मृगनायक सिंह जौन ग्रीवादि अंग पकरिपायो सोई अंग गहि मृगको लै भाग्यो ताही प्रकार अति भयसों अपने अपने बालकनको लै किन्नरादि भागे ॥ १५ ॥ किन्नरादिकी या दशा देखि हास्यपूर्वक कारण देखिबेको धरणिधर शृंगमें चढ़े ॥ १६ ॥ हींसत बोलत ॥ १७ ॥ पाखर-झूल ॥ १८ ॥ रजनको क्षत्र धर्म में रंजित करिबेको मानौ रजपूतनकी रजरजोगुण रजपूतीइति ऊपर कहिआयेहैं ॥ १९ ॥

मू०— तोटकछंद ॥ उठिकैधरधूरिअकाशचली । बहुचंचलबाजिखुरीनदली ॥ भुवहालतिजानिअकाशहिये । जनुथंभितठौरनिठौरकिये ॥ २० ॥ तारकछंद ॥ रणराजकुमारअरूझहिंगेजू । अतिसन्मुखघायनिजूझहिंगेजू ॥ जनुठौरनिठौरनिभूमिनबीने । तिनकेचढ़िबेकहँमारगकीने ॥ २१ ॥ सीताजू— तोटकछंद ॥ रहिपूरिबिमाननिव्योमथली । तिनकोजनुटारनधूरिचली ॥ परिपूरिअकाशहिधूरिरही । सुगयोमिटिशूरप्रकाशसही ॥ २२ ॥ दोहा ॥ अपनेकुलकोकलहक्यों,देखहिंरविभगवंत । यहैजानिअंतरकियो,मानोमहीअनंत ॥ २३ ॥ तोटकछंद ॥

बहुतामहदीहपताकलसै । जनुधूममेंअग्निकीज्वालबसै ॥ रस
नाकिधौंकालकरालघनी । किधौंमीचुनचैचहुँओरबनी ॥२४॥
दोहा ॥ देखिभरतकीचलध्वजा,धूरिनमेंसुखदेत । युद्धजुरनको
मनहुंप्रति,योधनबोलेलेत ॥ २५ ॥ लक्ष्मण–दंडकछंद ॥ मा
रिडारौंअनुजसमेतियहिखेतआजु मेटिपरौंदीरघबचननिजमुर
को । सीतानाथसीतासाथबैठेदेखिछत्रतरयाहिसुखशोषौंशोकस
बहीकेउरको ॥ केशवदासविलासबीसाबिस्वेबासहोइकैकेयीके
अंगअंगशोकपुत्रज्वरको ॥ रघुराजजूको साजसकलछिड़ाइले
उंभरतहिआजुराजदेउंयमपुरको ॥ २६ ॥

टी०–सैन्यके भयसों अथवा बालसों हालत जानिकै थंभित कहे थांभखंभाइति ॥ २० ॥ सन्मुख घाव जूझिकै बीर स्वर्ग को जात हैं सो मानो राजकुमारनके स्वर्ग जाइबेको भूमि मार्ग कहे राह कीन्हें हैं ॥ २१ ॥ बिमान आकाशगामी रथ ब्योमयान बिमानोऽस्त्रीत्यमरः ॥ २२ ॥ मही जो पृथ्वीहै तेहि अनंत कहे अनेक अंतर कियो अनेक धूरिके तुंग उठत हैं तेई अंतर ब्यवधान हैं अथवा अनंत लक्ष्मणको संबोधन है ॥ २३ ॥ रसना जिह्वा ॥ २४ ॥ २५ ॥ पुत्रज्वर कहे पुत्रमरण चौबीसयें प्रकाशमें कह्यो है कि जरा जब आवै ज्वराकी सहेली तहां ज्वराशब्द मृत्युको बाची है रघुराजजूकी साज अर्थ गजरथादि राजसाजराज्य रामचन्द्रको है जाको लै ताके सब साज भरत सजे हैं तिन्हें छड़ाइ रामचन्द्रमें साजिकै राज्यमें बैठारिये इत्यर्थः ॥ २६ ॥

मू०–दोहा ॥ एकराजमेंप्रगटजहँ, द्वैप्रभुकेशवदास । तहांबसतहै
रैनादिन, मूरतिवंतविनास ॥ २७ ॥ कुसुमविचित्राछंद ॥ तबस
बसैनावहिथलराखी । मुनिजनलीन्हेसँगअभिलाषी ॥ रघुपति
केचरणनशिरनाये । उनहँसिकैगहिकंठलगाये ॥ २८ ॥ भरत
दोधकछंद ॥ मातुसबैमिलिबेकहँआई । ज्योंसुतकीसुरभीसुलवा
ई ॥ लक्ष्मणस्योउठिकैरघुराई । पायनजायपरेदोउभाई ॥२९॥

मातनिकंठउठायलगाये । प्राणमनोमृतदेहनिपाये ॥ आइमि लींतबसीयसभागी । देवरसासुनकेपगलागी ॥ ३० ॥

टी०–पिताने भरतको राजा कियो है तासों भरतको राज्यपदभ्रष्ट होइ तौ पिताको बचन निःफल होइ या हेतु भरतको यमपुरको राज्य देउँ जामें रामचन्द्र सुचित्त ह्वै अयोध्यामें राज्य करैं इति भावार्थः ॥ २७॥ अभिलाषी जे मुनिजन हैं अथवा मुनिजन संग लीन्हे औ और रामदर्शन-को अभिलाषी हैं तिन्हें लीन्हें रामचन्द्रके हँसिबेके हेतु लक्ष्मणके बचन हैं ॥ २८ ॥ थोरे दिनकी बियानी गाय लवाइ कहावति है ॥ २९ ॥ भर-तके बचन सुनिकै भरत शत्रुघ्नको सीताके पास राखि लक्ष्मण मातनके मिलिबेको आये ताके पाछे सीता जो सभागी हैं सोऊ देवर जे भरत श-त्रुघ्न हैं तिन सहित सासुनको आइमिलीं प्राप्त भई औ सासुनके पग लागी ॥ ३० ॥

मू०–तोमरछंद ॥ तबपूछियोरघुराइ । सुखहैंपितातनमा इ ॥ तवपुत्रकोमुखजोइ । क्रमतेउठींसबरोइ ॥ ३१ ॥ दोधक छंद ॥ आंशुनसोंसबपर्वतधोये । जंगमकोजड़जीवनरोये ॥ सिद्धबधूसिगरींसुनिआईं । राजबधूसबईसमुझाईं ॥ ३२ ॥ मो हनछंद ॥ धरीचित्तधीर । गयेगंगतीर ॥ शुचिह्वैशरीर । पितृ तर्पिनीर ॥ ३३ ॥ भरत–तारकछंद ॥ घरकोचलियेअबश्रीरघु राई । जनहौंतुमराजसदासुखदाई ॥ यहबातकहीजलसोंगल भीन्यो । उठिसोदरपाइँपरेतबतीन्यो ॥ ३४ ॥ श्रीराम–दोधक छंद ॥ राजदियोहमकोबनरूरो । राजदियोतुमकोअबपूरो ॥ सोहमहूंतुमहूंमिलिकीजै । बापकोबोलुननेकुछीजै ॥ ३५ ॥ ॥दोहा ॥ राजाकोअरुबापको, बचननमेटैकोइ । जौनमानिये भरततौ, मारेकोफलहोइ ॥ ३६ ॥ भरत–स्वागताछंद ॥ मद्य पानरतस्त्रीजितहोई । सन्निपातयुतबातुलजोई ॥ देखिदेखिति नकोसबभागैं । तासुबातहतिपापनलागै ॥ ३७ ॥

टी०– राम बनगमन दशरथमरण भरतागमनादि कथाक्रमसों कहतसबरो वतभई ॥ ३१ ॥ सिद्ध तपस्वी अथवा देवयोनिविशेष ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न तीनों पांयन परेकि घरको चलिबो उचित है ॥ ३४ ॥ रूरोसुंदर ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ स्त्री जित कहे जो स्त्री करिकै जीतो गयो है अर्थ स्त्रीके वश्य है औ बातुल जो बहुत बातैं कहै ॥ ३७ ॥

मू०– ईशईशजगदीशबखान्यो । वेदवाक्यबलतेपहिचान्यो ॥ ताहिमेटिहठिकैरहिहौंतौ । गंगतीरतनकोतजिहौंतौ ॥ ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ मौनगहीयहबातकहि, छोंड़ोसबैबिकल्प । भरतजाइभागीरथी, तीरकर्‌योसंकल्प ॥ ३९ ॥ इन्द्रवज्राछंद ॥ भागीरथीरूपअनूपकारी । चंद्राननीलोचनकंजधारी ॥ बाणी बखानीमुखतत्त्वसोध्यौ । रामानुजैआनिप्रबोधबोध्यौ ॥ ४० ॥ उपेंद्रवज्राछंद ॥ अनेकब्रह्मादिनअंतपायो । अनेकधावेदनगीतगायो ॥ तिन्हैंनरामानुजबंधुजानौं । सुनौंसुधीकेवलब्रह्ममानौं ॥ ४१ ॥ निजेक्षयाभूतलदेहधारी । अधर्मसंहारकधर्मचारी ॥ चलेदशग्रीवहिमारिबेको । तपीव्रतीकेवलपारिबेको ॥ ४२ ॥ उठोहठीहोहुनकाजकीजै । कहैंकछूरामसोमानिलीजै ॥ अदोषतेरीसुतमातुसोहै । सोकौनमायाइनकोनमोहै ॥ ४३ ॥

टी०– ईश जे बिष्णु हैं औ ईश जे महादेव हैं और जगदीश जे ब्रह्मा हैं तिन यह बात बखान्यो है कि स्त्रीजितादिकनके बचन मेटे सो पातक नहीं होत सो हम वेदवाक्य बलसों पहिचान्यो है अर्थ वेदमें तीन्यो देवके ऐसे बचन हैं ते हम सुन्यो है अथवा तीनों देवन बखान्यो है औ वेदवाक्य बल बलहू सों पहिंचान्यो अर्थ वेदहू यहै कहत हैं ॥ ३८ ॥ विकल्प बिचार भागीरथी मंदाकिनी ॥ ३९ ॥ तत्त्व कहे सार ॥ १० ॥ बढूंढ्यो ता सारांश युक्त मुखसों बाणी बखानी अथवा देख्यो । स्वाहा जामें तत्त्व जो रामकथा तत्त्व है ता करिकै अपने अभिबंदनजाइकी रच्यो औ रामानुज जे भरत हैं तिनको प्रबोध कहे ॥ ११ ॥ बैठारिआस

ल्याइकै बोध्यो बोध कर्‍यो बोध्यो पद कहि या जनायो कि रामचन्द्र प्रति बंधु बुद्धि रूपी निशामें सोवत रहैं तामें जगायो ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ सुत भरतको संबोधन है यासों या जनायो कि इनकी मायामें मैं मोहिकै तुम्हारी माते इनको बनगमन चाह्यौ ॥ ४३ ॥

मू०– दोहा ॥ यहकहिकैभागीरथी,केशवभईअदृष्ट ॥ भरत कह्योतबरामसों, देहुपादुकाइष्ट ॥ ४४ ॥ उपेंद्रवज्राछंद ॥ चले बलीपावनपादुकालै । प्रदक्षिणारामसियाहुकोदै ॥ गयेतेनंदी पुरबासकीनों । सबंधुश्रीरामहिचित्तदीनों ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ केशवभरतहिआदिदै,सकलनगरकेलोग ॥ बनसमानवरघरबसे सकलविगतसंभोग ॥ ४६ ॥ इति श्रीमत्सकललोकलोचनच कोरचिंतामणि श्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायांइंद्रजिद्विरचितायां भर तस्यचित्रकूटागमनंनामदशमः प्रकाशः ॥ १० ॥

टी०– पादुकारूपी इष्ट कहे स्वामी देहु आशययहकि राज्य पर स्वामी चाहिये ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ इति श्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानि- प्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायांदशमः प्रकाशः १०

मू०– दोहा ॥ एकादशैप्रकाशमें,पंचवटीकोवास ॥ शूर्पणखा केरूपको, रघुपतिकरिहैंनाश ॥ १ ॥ भरतोद्धताछंद ॥ चित्रकूट तबरामजूतज्यो । जाइयज्ञथलअत्रिकोभज्यो ॥ रामलक्ष्मणस मेतदेखियो । आपनोसफलजन्मलेखियो ॥ २ ॥

टी०– ॥ १ ॥ भज्यौ कहे प्राप्त भये ॥ २ ॥

महोचन्द्रवर्त्मछंद ॥ स्नानदानतपजापजोकरियो । शोधि दोहा ॥ राज्यधरियो ॥ योगयागहमजालगिगहियो । रामच भरततो, मारेकहियो ॥ ३ ॥ वंशस्थाछंद ॥ अनेकधापूजनअ जितहोइलहै श्रीरघुनाथजूधर्‍यो ॥ पतिव्रतादेविमह नकोसबभागै । ताजीतासुखदागईतहां ॥ ४ ॥ दोहा ॥ पति

ञतनकीदेवजा, अनुसूयाशुभगात ॥ सीताजूअवलोकियो । जरा सखीकेसाथ ॥ ५ ॥ चतुष्पदीछंद ॥ शिरश्वेतविराजैकीरतिराजै जनुकेशवतपबलकी । तनुवलितपलितजनुसकलबासनानिकरिगईथलथलकी ॥ कांपतिशुभग्रीवासबअँगसींवादेखतचित्त भुलाहीं । जनुअपनेमनप्रतियहउपदेशतियाजगमेंकछुनाहीं ॥ ॥ ६ ॥ प्रमिताक्षराछंद ॥ हर वाइजाइसियपाइपरी । ऋषिनारिसूंघिशिरगोदधरी ॥ बहुअंगरागअंगअंगरये । बहुभांतिताहिउपदेशदये ॥ ७ ॥ स्रग्विनीछंद ॥ रामआगेचलेमध्यसीता चली । बन्धुपाछेभयेसामसोमैभली ॥ देखिदेहीसबैकोटिधाकेभनो । जीवजीवेशकेबीचमायामनो ॥ ८ ॥

[illegible] गोधि शुद्ध करि करि गुनकी जो उर विषे धरयो है [illegible] थवा मनहीको शुद्ध करिकै जो उरमें धार-
ण [illegible] लता है ताहि छोड़ाइ अपनेबश्य करयो है सो
हे [illegible] ल जो तुम्हारो दर्शन है ताको पायो ॥ ३ ॥
॥ ४ [illegible] रूपी जो सखीहै ताके साथ देख्यो ॥ ५ ॥ तन ब-
लितक [illegible] लितकहे ढिलाईसों अर्थ वृद्धता सों त्वचामें सिकुरा परि-
गये हैं [illegible] थलथल की अंगअंगकी बासनाविषय वासना निकरिगई
है ताही [illegible] सिकुरिगयेहैं सींवा मर्यादा ॥ ६ ॥ हरवाइकहे हरबराइकै
॥ ७ ॥ मनोकहेकह्यो जीवेश ईश्वर ॥ ८ ॥

मू०--मालतीछंद ॥ बिपिनबिराधबलिष्ठदेखियो । नृपतनयाभयभीतलेखियो ॥ तबरघुनाथबाणकैहयो । निजनिर्बाणपंथकोठयो ॥ ९ ॥ दोहा ॥ रघुनायकशायकधरे, सकललोकशिरमौर ॥ गयेकृपाकरिभक्तिबश, ऋषिअगस्त्यकेठौर ॥ १० ॥ बसंततिलकाछंद ॥ श्रीरामलक्ष्मणअगस्त्यसनारिदेख्यो । स्वाहासमेतशुभपावकरूपलेख्यो ॥ साष्टांगक्षिप्रअभिबंदनजाइकीन्हो । सानंदआशिषअशेषऋषीशदीन्हो ॥ ११ ॥ बैठारिआस

नसबैअभिलाषपूजे । सीतासमेतरघुनाथसबन्धुपूजे ॥ जाकेनि मित्तहमयज्ञयज्यौसोपायो। ब्रह्मांडमंडनस्वरूपजोवेदगायो १२॥

टी०—निर्वाण जो मोक्ष है ताके पंथ कहे राह में ठयो कहे युक्त कस्यो अर्थ मुक्ति दियो ॥ ९ ॥ सकललोक शिरमौर जे रघुनाथ हैं ते शायक जे बाण हैं तिनको धरे अगस्त्यके ठौरमें गये अथवा रघुनायक भक्तिके बश कृपाकरिकै अगस्त्य के ठौर गये तहां सकललोक शिरमौर जे अपने शायक हैं तिन्हैं धरे धारण कस्यौ विष्णु के धनुर्वाण अगस्त्य के यहां धरे रहे हैं ते रामचंद्र को अगस्त्य दियो है यह कथा वाल्मीकीय रामायणमें है अथवा सकललोक शिरमौर जो विष्णु हैं तिनके शायकधरेधारणकस्यौ अथवा रघुनायकके सकल लोक शिरमौरशायक अगस्त्यके ठौर धरे हैं तालिये औ भक्ति वश कृपाकरि अगस्त्यके ठौर गये ॥ १० ॥ स्वाहा अग्नि की स्त्री ॥ ११ ॥ सबै आपने अभिलाष पूजे पूर्ण करे ब्रह्माण्ड को मंडन भूषण जो यह रावरो स्वरूप है ताहीके मिलिबे के लिये हम यज्ञ यज्यौ होम्योकस्यौ इति सो यह स्वरूप पायो ॥ १२ ॥

मू०—पद्धटिकाछंद ॥ ब्रह्मादिदेवजबबिनयकीन । तटक्षीर सिन्धुकेपरमदीन ॥ तुमकह्योदेवअवतरहुजाइ । सुतहोंदशरथ कोहोतुआइ ॥ १३ ॥ हमतबतेमनआनन्दमानि । मनचितव ततवआगमनजानि । ह्यांरहिजैकरिजैदेवकाजु । ममफूलिफल्यो तपवृक्षआजु ॥ १४ ॥ श्रीराम—पृथ्वीछंद ॥ अगस्त्यऋषिराज जूबचनएकमेरोसुनौ । प्रशस्तसबभांतिभूतलसुदेशजीमेंगुनौ ॥ सनीरतरुखंडमंडितसमृद्धशोभाधरे । तहांहमनिवासकीबिमल पर्णशालाकरैं ॥ १५ ॥ अगस्त्य—पद्मावतीछंद ॥ यद्यपिजग कर्त्तापालकहर्तापरिपूरनवेदनगाये । अतितदपिकृपाकरिमानुष वपुधरिथलपूछनहमसोंआये ॥ सुनिसुरवरनायकराक्षसघायकर क्षहुमुनिजनयशलीजै । शुभगोदावरितटविशदपंचवटपर्णकुटी तहँप्रभुकीजै ॥ १६ ॥ दोहा ॥ केशवकहेअगस्त्यके,पंचबटीके

तीर ॥ पर्णकुटीपावनकरी,रामचन्द्ररणधीर ॥ १७ ॥ त्रिभंगी छंद ॥ फलफूलनपूरेतरुवररूरेकोकिलकुलकलरवबोलैं । अति मत्तमयूरीपियरसपूरीबनबनप्रतिनाचतिडोलैं॥सारोशुकपण्डित गुणगणमण्डितभावनिमैंअरथबखानैं । देखहुरघुनायकसीयस हायकमदनरतिमधुजानैं ॥ १८ ॥

टी०-॥ १३ ॥ तब कहे तुम्हारो ॥ १४ ॥ प्रशस्त नीको सुदेश सम उच्च नीच रहितेति सनीर सजल औ तरु जे वृक्ष हैं तिनको जो खण्ड समूह है तासों मण्डित युक्त औ समृद्ध कहे वर्द्धमान अधिक इति शोभा को धेरै धारण करे होइं निवास को कहे बसिबे की ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ रामचन्द्र के आगमन सों दंडकारण्य में रूरे कहे सुंदर जे तरुवृक्ष हैं ते फल औ फूलनसों पूरे युक्त भये अथवा रूरेजे फल औ फूल हैं तिनसों तरुवर पूरे औ कोकिल के जे कुलजाति समूह हैं ते कलकहे अव्यक्त मधुररव शब्दको बोलतहैं ॥ काकलीतुकलेसूक्ष्मेध्वनौतुमधुरास्फुटे ॥ कलोमंद्रस्तुगंभीरतारोत्युच्चैस्त्रयस्त्रिषुइत्यमरः ॥ औ अतिमत्त जे मयूरी हैं ते पिय जे मयूर हैं तिनके रसमें प्रेम में पूरी बनबन प्रति नाचत डोलती हैं अर्थ जहां जहां मोर नाचत हैं तहां तहां संग मयूरी डोलती हैं औ सारो सारिका औ शुक जे गुणगण सों मंडित पंडित प्रवीण हैं अर्थ अनेक गुणन में पंडित हैं ते भावनियम कहे अनेक भाव अभिप्राय युक्त गान के अर्थ को बखानत हैं अथवा नृत्यके जे अनेक भाव चेष्टा हैं तिनमें अर्थ को बखानत हैं जब जैसी चेष्टा देखत हैं तब तैसे अर्थ के प्रयोजन को बखान करत हैं तामें तर्क करत हैं कि रघुनायक रामचन्द्र औ सीता औ सहायक जे लक्ष्मण हैं तिनको इन वृक्षादिकन देख्यो है सो मानों मदन काम और रति सहित मधु बसन्त जानत हैं तौ बसंतहूके आगमनमें ये कौतुक होत हैं तासों उत्प्रेक्षा कर्यौ औ युक्ति यह कि वसंत बनको प्रभु है सो प्रभु की अवाईमें अनेक वितान बिछावने नृत्यादि रचना सब करत हैं सो रति सहित मदन जो मित्र है तासों युक्त वसंत को आवत देखि बन कर्यौ प्रफुल्लित जे अनेक कुंज हैं तेई वस्त्र भवन औ वितान हैं औ गिरे जे पुष्पहैं तेई पुष्प बिछावने हैं को-

किल गावत हैं मोर नाचत हैं सारो शुक बखान करत हैं वेश्यादि नृत्य का
रिनहूंमें बखानकर्त्ता एकरहत हैं ॥ १८ ॥

मू०—लक्ष्मण—सवैया॥सबजातिफटीदुखकीदुपटीकपटीनरहै जहँएकघटी। निघटीरुचिमीचघटीहूँघटीजगजीवयतीनकीछूटी तटी। अघओघकीबेरीकटीबिकटीनिकटीप्रकटीगुरुज्ञानगटी। चहुंओरननाचतिमुक्तिनटीगुणधूरजटीबनपंचबटी ॥ १९ ॥

टी०—दुपटी द्रैपाट के ओढिवे को वस्त्र सो जहां जा पंचवटीके निकट सब फाटि जाति है नेकहू नहीं रहति अर्थ सब दुःख जहां नशि जात हैं औ कपटी जीव जहां एक घडी नहीं रहत यासों या जनायो कि जहां जातहीं कपटी को कपट दूरि होतहै औ जाकी शोभा निरखि जग के जे यती तपस्वी जीव हैं तिनकी चटी कहे ध्यानस्थिति सो छुटी औ मीचुकी रुचि घटीहू घटी कहे घरी घरी में निघटी घटत भई अर्थ यती जीवनको मरे ते मुक्ति होतिहै परन्तु जा स्थान की शोभा निरखि मुक्तिहू की इच्छा नहींकरत अघ पाप ओघ समूह बेरी बंधन जंजीर सो ऐसी जो पंचवटीहै सो धूर्ज्जटी जो महादेव हैं तिनके गुणनसों जटी कहे युक्तहै येई दुःख नाश-नादि गुण महादेवहू मों हैं अथवा ये जे दुःख नाशनादि गुणहैं तिनसों औ धूर्ज्जटी जे महादेव हैं तिनसों जटी कहे युक्त है पंचवटी ॥ १९ ॥

मू०— हाकलिकाछंद ॥ शोभतदण्डककीरुचिबनी।भांतिनभांतिनसुन्दरघनी ॥ सेवबड़ेनृपकीजनुलसै ॥ श्रीफलभूरिभावजहँबसै ॥ २० ॥ बेरभयानकसीअतिलगै । अर्कसमूहजहांजगमगै ॥ नैननकोबहुरूपनग्रसै । श्रीहरिकीजनुमूरतिलसै ॥२१॥

टी०—दण्डकनाम राजा रहेहैं तिनको राज्य शुक्रके शाप सों बन ह्वै गयो है तासों दंडकारण्य कहावत है रुचि शोभा श्रीफल बेल औ लक्ष्मीको फल बडे राजाकी सेवामें बहुत द्रव्य पाइयतहै २० भयानक बेर प्रलयकाल अर्क मदार औ सूर्य प्रलय कालहूमो बारहौ आदित्य उवत हैं नैनन को अनेक रूपकरि ग्रसत हैं यासों या जनायो कि क्षणमें अधिक अधिक नवीन शोभा धरतहैं ऐसी विष्णु की मूर्तिहू है तासों समता करयौ सुंदरताको

याही प्रकार वर्णन है यथामाघकाव्ये ॥ दृष्टोपिशैलःसमुहुर्मुरारेरपूर्ववद्विस्मयमाततान ॥ क्षणेक्षणेयन्नवतामुपैति तदेवरूपंरमणीयतायाः ॥ २१ ॥

मू०–राम–दोधकछंद ॥ पांडवकीप्रतिमासमलेखो । अर्जुनभीममहामतिदेखो ॥ हैसुभगासमदीपतिपूरी । सिंदुरकीतिलकावलिरूरी ॥ २२ ॥ राजतिहैयहज्योंकुलकन्या । धाइविराजतिहैसँगधन्या ॥ केलिथलीजनुश्रीगिरिजाकी । शोभधरेशितकंठप्रभाकी ॥ २३ ॥ मनहरनछंद ॥ अतिनिकटगोदावरीपापसंहारिणी । चलतरंगतुंगावलीचारुसंचारिणी । अलिकमलसौगंधलीलामनोहारिणी। बहुनयनदेवेशशोभामनोधारिणी२४

टी०– प्रतिमा चित्र अर्जुन ककुभवृक्ष औ पांडुपुत्र ॥ अर्जुनःककुभेपार्थे इति मेदिनी ॥ औ भीम अम्लवेतस वृक्ष औ भीमसेन ॥ भीमोवृकोदरेघोरे शंकरे प्यम्लवेतसे इति अभिधान चिंतामणिः ॥ जो कहौ रामावतार प्रथम भयो है अर्जुनादि कृष्णावतार समय मो रहे हैं पूर्वापर विरोधहै तौ सब कल्पनमें दशौ अवतार होतहैं सो अनेक रामावतार कृष्णावतार भये हैं तासों दोष नहीं है यथा तुलसीकृत रामायण में कहा है ॥ कल्पकल्पप्रति प्रभुअवतारा । सुभगा सौभाग्यवती स्त्री सधवा इति ताके समशोभा पूरीहै दंडककी रुचि सिंदुरक जो है वृक्ष विशेष औ तिलक वृक्ष करिकै रूरी सुन्दर है ॥ सिन्दूरस्तरुभेदेस्यादितिमेदिनी ॥ तिलकोद्रुमरोगाश्वभेदेचतिलकालके इतिमेदिनी ॥ औ सुभगा सिन्दूरक जो सेंदुर है ताके तिलक की अवली करिकै रूरी है अथवा सिन्दुरक करिकै और और जे सुवर्ण मणि आदि के तिलक हैं तिनकी अवली करिकै रूरी सुंदर है ॥२२॥ कुलकन्या पद सोबडे की कन्या जानौ धाइ वृक्षविशेष औ उपमातास्तना दूध पिआवति है गिरिजा पार्वती शितकण्ठ मयूर औ महादेव ॥ २३ ॥ जा पर्णकुटी के अति निकट पापसंहारिणी गोदावरी नाम नदी है फेरि कैसी है गोदावरी चल- चंचल जे तरंग हैं तिनके जे तुंग समूह हैं तिनकी जे अवली पांती हैं तिनकी चारु कहे अच्छी भांति संचारिणी चलावन हारी है अर्थ अनेक तरंगे उठायो करति है अथवा तरंग तुंगावलिन करिकै चारु संचारिणी चल-

नहारी है अलि भ्रमर युक्त जे कमलहैं तिनके सौगंध सुगंध करिकै लीला हैं मनोहारिणी जाकी औ अलियुक्त कमलन करिकै बहुनयन जे देवेश इंद्र हैं तिनकी शोभा की मानों धारिणी धारण कर्त्री है इंद्र के सहस्रनेत्र हैं इहां नेत्र सदृश अलियुक्त कमलहैं ॥ २४ ॥

मू०– दोधकछन्द ॥ रीतिमनोअविवेककीथापी ॥ साधुन की गति पावत पापी । कंजजकीमतिसीबड़भागी । श्रीहरिमंदिरसोंअनुरागी ॥ २५ ॥ अमृतगतिछंद ॥ निपटपतिव्रतधरणी । जगजनकेदुखहरणी ॥ निगमसदागति सुनिये । अगतिमहापतिगुनिये ॥ २६ ॥

टी०– कंजजब्रह्मा ब्रह्माकीमतिहूको अनुरागहरि मंदिर वैकुण्ठ में है औ गोदावरी हू को है काहेते जो कोऊ स्नान करत हैं ताको आपनो जानि वैकुण्ठ पठावति है॥२५॥ यामें विरोधाभास है सदा पति जो समुद्र है तामें लीन रहतिहै तासों निपट पतिव्रत धरणी कह्यो बिरोध पक्ष में दुःख काम पीडा अविरोध में पापजनित दुःख दरिद्रादि निगम जे वेद हैं तिनमें सदा गति कहे सदा है गति मुक्ति जासों ऐसी सुनियत है अर्थ जो कोऊ स्नान करत हैं ताकोमुक्तिदेतिहै औ पति जो समुद्रहै ताही को अगति सुनियत है अर्थ ताको गति मुक्ति नहीं देति यह विरोधार्थ है अविरोधहू की अगति गमन-रहित समुद्रको जल बहत नहीं ॥ २६ ॥

मू०– दोहा ॥ बिषमेंयहगोदावरी,अमृतनकोफलदेति ॥ केशवजीवनहारको,दुखअशेषहरिलेति ॥ २७ ॥ त्रिभंगीछंद ॥ जबजबधरिबीनाप्रगटप्रबीनाबहुगुणलीनासुखसीता । पियजियहिरिझावैदुखनिभजावै बिबिधबजावैगुणगीता ॥ तजिमतिसंसारीबिपिनविहारीदुखसुखकारीघिरिआवै । तबतबजगभूषणरिपुकुलदूषणसबकोभूषणपहिरावै ॥ २८ ॥ तोटकछंद ॥ कवरीकुसुमालिसिखीनदई । गजकुंभनिहारनिशोभमई ॥ मुकुताशुकसारिकनाकरचे । कटिकेहरिकिंकिणिशोभसचे ॥ २९ ॥ दुलरी

कलकोकिलकंठबनी । मृगखंजनअंजनभांतिठनी ॥ नृपहंसनि नूपुरशोभभिरी । कलहंसनिकंठनिकंठसिरी ॥ ३० ॥

टी०— याहूमें बिरोधाभास है विषमय कहे जलमय ॥ बिषं तु गरलेतोये इति मेदिनी ॥ औ जैसे अमृत अमर करत है तैसे याहू मुक्तकै अमर करति है बिरोध पक्षमें जीवन जीव अबिरोधमें जल दुःख प्यास दुःख अथवा बिषमैं कहे टेढ़ी हैं अमृत जे देवता हैं तिनके फलको देति है अर्थ शुद्धगतिको देति है औ जीवनहार जे यमराज हैं तिनको दुःख कहे तिन कृत दुःख यम यातना इति ताको अशेष कहे संपूर्ण हरिलेति है ॥ २७ ॥ सुख कहे सुखसों गुण गीता रामचंद्रकी गुणगीता दुःखकारी ब्याघ्रादि सुखकारी कोकिलादि जे बिपिनबिहारी कहे बनबिहारी हैं ते संसारी मति कहे भेद भय मतिको तजिकै मनुष्यके समीपमें बन जीवनको आपहीसों आइबो आश्चर्य है सो आवत हैं याही संसारी मतिकोत्याग जानों ॥ २८ ॥ तीनि छंदनमें एक वाक्यता है शिखी मोरकबरी कहे केशपाश ॥ २९ ॥ नृपहंस राजहंस ॥ ३० ॥

मू०— मुखबासनिवासितकीनतबै । तृणगुल्मलतातरुशैल सबै ॥ जलहूथलहूयहिरीतिरमैं । बनजीवजहांतहँसंगभ्रमैं ॥ ॥३१॥ दोहा ॥ सहजसुगंधशरीरकी, दिशिविदिशनअवगाहि॥ दूतीज्योंआईलिये, केशवशूर्पनखाहि ॥३२॥ मरहट्टाछंद ॥ यक दिनरघुनायकसीयसहायकरतिनायकअनुहारि । शुभगोदावरि तटविमलपंचबटबैठहुतेमुरारि ॥ छबिदेखतहींमनमदनमथ्योत नुशूर्पनखातेहिकाल । अतिसुंदरतनुकरिकछुधीरजधरिबोलीव चनरसाल ॥ ३३ ॥

टी०— मुखवासन कहे मुखके सुगंधनसों तृण कुशादि गुल्म गुलाब आदि लता लवंगादि तरु आम्रादि औ याही रीतिसों अर्थ जैसे सीताजूके गावतमें रमत हैं तैसेही सौंदर्यादिहूके बश ह्वै रामचन्द्रके समीपमें जल जीव हंसादि औ थलजीव मयूरादि जे बन जीव कहे दंडकारण्यके जीव हैं ते रमत

ह औ जहा तहां रामचंद्रके संग भ्रमत हैं अर्थ जहां रामचन्द्र जात हैं तहां संग संग भ्रमत फिरत हैं तीन हूं छंदनमें युक्ति यह कि जा जीवको जो अंगबर्ण्य है ताकेही अपन पहिरायो अथवा जाकेजाअंगमें रामचंद्रजो भूषणपहिरायो ताको तौन अंगसुंदरताको प्राप्त ह्वै बर्ण्य भयो औ काहू काहू जीवके अब पर्यंत ताको चिह्न बन्यो है ॥ ३१ ॥ जैसे दूती ढूंढ़िकै स्त्रीको पुरुषके पास लै जाति है तैसे रामचन्द्रके शरीरकी जो सहज स्वाभाविक सुगंध है सो दिशि बिदिशनमें अवगाहिकै ढूंढ़िकै शूर्पनखाको रामचंद्रके पास ल्याई रामचंद्रके अंगनको सहज सुगंध जो बनमें वायु योगसों फैलि रह्यो है ताकोआघ्रानकै ताके अनुसार शूर्पनखा रामचंद्रके पास आई इतिभावार्थः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

मू०– शूर्पनखा--सवैया ॥ किन्नरहोनररूपबिचक्षणयच्छकी स्वच्छशरीरनिसोहौ। चित्तचकोरकेचंदकिधौंमृगलोचनचारुबिमाननिरोहौ।अंगधरेकिअनंगहौकेशवअंगीअनेकनकेमनमोहौ। बीरजटानिधरेधनुबाणलियेबनिताबनमेंतुमकोहौ ॥३४॥ राम-मनोरमाछंद ॥ हमहैंदशरत्थमहीपतिकेसुत। शुभरामसुलक्ष्मणनामनसंयुत ॥ यहशासनदैपठयेनृपकानन। मुनिपालहुमारहुराक्षसकेगन ॥ ३५ ॥ शूर्पनखा ॥ नृपरावणकीभगिनीगनिमोकह। जिनकीठकुराइतितीनहुलोकह ॥ सुनिजैदुखमोचनपंकजलोचन। अबमोहिंकरौपतिनीमनरोचन ॥३६॥ तोमरछंद॥ तबयोंकह्योहँसिराम। अबमोहिंजानिसबाम ॥ तियजाइलक्ष्मणदेखि। समरूपयौबनलेखि ॥ ३७ ॥ शूर्पनखा--दोधकछंद ॥ रामसहोदरमोतनदेखो। रावणकीभगिनीजियलेखो ॥ राजकुमाररमोसँगमेरे। होहिंसबैसुखसंपतितेरे ॥ ३८ ॥ लक्ष्मण ॥ वैप्रभुहौंजनजानिसदाई। दासिभयेमहँकौनिबड़ाई ॥ जोभजियेप्रभुतौप्रभुताई। दासिभयेउपहाससदाई ॥ ३९ ॥

टी०– विचक्षण प्रवीण चित्तरूपी जो चकोर हैं ताके चंद्रमाही जैसे चन्द्रमाचकोरको सुख देत है तैसे तुम चित्तको सुख देत हौ चंद्रमा मृगनके

बिमान रथको रोहत है अर्थ चढ़त है तुम मृगरूपी जे लोचन हैं तिनहींके बिमाननको रोहतहौ अर्थ जो तुमको कोऊ देखत है ताके नयननमें ऐसे बसि जात हौ कि उतरत नहीं ॥ ३४ ॥ शासन आज्ञा ॥ ३५ ॥ हे मन रोचन अर्थ मेरे मनको तुम अति रुचत हौ ॥ ३६ ॥ आपने रूप औ यौवनके संग इन्हें लेखि कहे जानु अर्थ जैसो रूप यौवन तेरो है तैसो इनहूंको है ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ सदाई जन हौं कहि या जनायो कि कबहूं प्रभुता ह्वैबेकी आशा नहीं है ॥ ३९ ॥

मू०—मल्लिकाछंद ॥ हासकेविलासजानि । दीहमानखंडमानि ॥ भक्षिबेकोचित्तचाहि । सामुहेभईसियाहि ॥ ४० ॥ तोमरछंद ॥ तबरामचन्द्रप्रबीन । हँसिबंधुत्योंहगदीन ॥ गुनिदुष्टतासहलीन । श्रुतिनासिकाबिनुकीन ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ शोनछिछिछूटतबदन,भीमभईतेहिकाल ॥ मानोकृत्याकुटिलयुत,पावकज्वालकराल ॥ ४२ ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणि श्रीरामचन्द्रचंद्रिकायामिंद्राजिद्विरचितायां शूर्पनखाश्रवण नासिकाछेदनं नामैकादशःप्रकाशः ॥ ११ ॥

टी०—जबजान्यौ कि ये मोसों रमिहैं नहीं केवलमोसों हासके बिलास उपहास करत हैं तब दीह कहेबड़ो आपनो मानखंड कहे अपमान मानिकै ॥ ४० ॥ ४१ ॥ कराल पावक ज्वाल सों युक्त है वदनजाको ऐसी मानौं कृत्यानामा देवी है ॥ कृत्याक्रियादेवतयोरितिमेदिनी ॥ ४२ ॥ इतिश्रीमज्जगज्जननि जनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायां एकादशःप्रकाशः ॥ ११ ॥

मू०— दोहा ॥ या द्वादशे प्रकाशखर, दूषण त्रिशिरानाश ॥ सीताहरणविलाप सु,-ग्रीवमिलन हरि त्रास ॥ १ ॥

टी०— त्रासजो भय है ताको हरिकै सुग्रीवको मिलन है अर्थ बालिको बध निश्चय करि सुग्रीवको त्रास हरिरामचन्द्र मित्रता करि हैं ॥ १ ॥

मू० तोटकछंद ॥ गइशूर्पनखाखरदूषणपै । सजिल्याइति

न्हैंजगभूषणपै ॥ शरएकअनेकतेदूरिकिये । रविकेकरज्योंतमपुंजपिये ॥ २ ॥ मनोरमाछंद ॥ वृषकेखरदूषणज्योंखरदूषण । तब दूरिकियेरविकेकुलपूषण ॥ गदशत्रुत्रिदोषज्योंदूरिकरैवर । त्रिशिराशिरत्योंरघुनंदनकेशर ॥ ३ ॥ भजिशूर्पनखागइरावण पैतब । त्रिशिराखरदूषणनाशकहेसब ॥ तबशूर्पनखामुखबात सबैसुनि । उठिरावणगोमारीचजहाँमुनि ॥ ४ ॥ मनोरमाछंद ॥ रावणबातकहीसिगरीत्यों । शूर्पनखाहिंविरूपकरीज्यों ॥ एकहिरामअनेकसंहारे । दूषणस्योत्रिसिराखरमारे ॥ ५ ॥ तूअबहोहिसहायकमेरो । हौंबहुतैगुणमानिहौंतेरो ॥ जोहरिसीताहिल्यावनपैहै । वैभ्रमिशोकनहींमरिजैहै ॥ ६ ॥ मारीच ॥ रामहिंमानुषकैजनिजानो । पूरणचौदहलोकबखानो ॥ जाहुंजहांतियलैसुनदेखो । हौंहरिकोजलहूंथललेखो ॥ ७ ॥

टी०—रामचन्द्रकी आज्ञासों लक्ष्मण सीताको लैकै गुफामें राख्यो है यह कथा शेष जानो ॥ २ ॥ वृष राशिके रबि जे शेषर कहे तृणके दूषण होतहैं सुखाइ डारत हैं तैसे रविके कुलके पूषण जे रामचन्द्र हैं तिन खर औ दूषण नाम राक्षसको दूरि कियो कहे मारयौ औ गदै शत्रु जो वैद्य है सो जैसे त्रिदोष कहे कफ पित्त बात तीनोंको दोष एकही बार दूरि करत है तैसे रघुनंदनके शर त्रिशिराके शिरनको एकही बार दूरि कऱ्यौ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ स्यो कहे सहित ॥ ५ ॥ सीताको ढूंढ़त भूतलमें भ्रमि कहे घूमिकै अथवा संदेहको प्राप्त ह्वै कै ॥ ६ ॥ चौदहों लोकमें पूर्ण कहे व्याप्त ॥ ७ ॥

मू०—रावण—सुन्दरीछंद ॥ तूअबमोहिंसिखावतहैशठ । मैंवशजगतकियोहठहीहठ ॥ बेगिचलैअबदेहिनऊतरु । देवसबैजजएकनहींहरु ॥ ८ ॥ दोहा ॥ चाचिचल्योमारीचमन, मरण दुहूंविधिआसु ॥ रावणकेकरनरकहै, हरिकरहरिपुरबासु ॥ ९ ॥ राम

१ सूर्य्य. २ रोग.

—सुंदरीछंद ॥ राजसुताइकमंत्रसुनोअब । चाहतहौंभुवभारहरे उसब ॥ पावकमेंनिजदेहहिंराखहु । छायशरीरमृगहिअभिला षहु ॥ १० ॥ चामरछंद ॥ आइयोकुरंगएकचारुहेमहीरको । जानकीसमेतचित्तमोहि ॥ रामबीरको ॥ राजपुत्रिकासमीप साधुबंधुराखिकै । हाथचापबाणलैगयेगिरीशनांघिकै ॥ ११॥ ॥ दोहा ॥ रघुनायकजबहींहन्यो,शायकशठमारीच ॥ हालक्ष्म णयहकहिगिरेउ,श्रीपतिकेस्वरनीच ॥ १२ ॥ निशिपालिकाछं द ॥ राजतनयातबहिंबोलमुनियोंकहेउ । जाहुचलिदेवरनजात हमपैरहेउ । हेममृगहोहिनहिंरैनिचरजानिये । दीनस्वररामके हिभांतिमुखआनिये ॥ १३ ॥

टी०—एक हर महादेवको छोड़िकै और सब देवता मेरेजन कहे सेवक हैं ॥ ८ ॥ आशु कहे जल्दी ॥ ९ ॥ छाया शरीरसों मृगै कहे चलिबेको अभि-लाष करौ अर्थ छाया शरीर आलंब्य रहौ अथवा छाया शरीरसों या सुवर्ण-मृगको अभिलाषौ ॥ १० ॥ हेम सुवर्ण औ हीरनको कुरंग हरिण बनि मा-रीच आयो ॥ ११ ॥ जैसो रामचन्द्रको स्वरकहे शब्द है ताही स्वरसों हा लक्ष्मण यह कहिकै गिरयौ नीच मारीचको बिशेषण है ॥ १२ ॥ यह को-ऊ राक्षस है हरिणको रूप धरिकै आयो है ताने रामचन्द्रको मारयौ तासों हा लक्ष्मण ऐसो दीनस्वर रामचन्द्र कह्यौ इति भावार्थः ॥ १३ ॥

मू०— लक्ष्मण ॥ शोचअतिपोचउरमोचदुखदानिये । मातुय हबातअवदातममसानिये ॥ रैनिचरछद्मबहुभांतिअभिलाषहीं। दीनस्वररामकबहूंनमुखभाषहीं ॥ १४ ॥ चंचलाछंद ॥ पक्षिरा जयक्षराजप्रेतराजयातुधान । देवताअदेवतानृदेवताजितेजहा न ॥ पर्वतारिअर्बखर्बसर्बसर्बथाबखानि । कोटिकोटिसूरचन्द्र रामचन्द्रदासमानि ॥ १५ ॥ चामरछन्द ॥ राजपुत्रिकाकह्यो सोऔरकोकहैसुनै । कानमूंदिबारबारशीशबीसधाधुनै ॥ चाप

कीयरेखखाँचिदेवसाखिदैचले । नांघिहैंतेभस्महोहिंजीवजेबुरे भले ॥ १६ ॥

टी०—अति पोच कहे निषिद्ध जो दुःखदानि शोच है ताको उरसों मोचुकहे त्याग करौ छद्म कपट ॥ १४ ॥ पक्षिराज गरुड़ यक्षराज कुबेर प्रेतराज यमराज यातुधान राक्षस देवता औ अदेवता दैत्य नृपदेवता राजा औ पर्वतारि इंद्रते ये सब अर्वखर्व संख्या परिमित औ अर्वखर्व सर्वकहे महादेव अर्वखर्वको संबंध सर्वपदहूमों है तिन्हैं सर्वथा कहे सब प्रकार वखानि कहे कहौ औ कोटि सूर्य औ चन्द्रमा हैं तिन सबको रामचन्द्रके दास कहे सेवक मानौ रामचंद्रके मारिवे लायक ये कोऊ नहीं हैं इति भावार्थः ॥ १५ ॥ लक्ष्मणको राजपुत्रिकाने जे कटुवचन कहे तिन्हैं और कौन कहै औ कौन सुनै अर्थ अतिकटुवचन कहे जे काहूके कहिवे सुनिवे लायक नहीं हैं औ जो थोरो सुनिवोहू करे तौ जामें आगे और ना सुनिपरै तालिये कान मूंदिकै बिनसुने वचननके शोकसों वीसधा अर्थ अनेक प्रकारसों शीश धुनै अथवा सीताही कान मूंदिकै शीश धुनत भई कान मूंदिवेको हेतु यह जामें लक्ष्मणके ये बोध वचन न सुनिपरै तौ लक्ष्मण बातें ना कहैं रामचन्द्रके पास जांइ अथवा जामें कटु वचन ना सुनिपरैं तालिये लक्ष्मणहीं काननको मूंदिकै बारबार शीश धुनतभये ॥ १६ ॥

मू०— छिद्रताकिक्षुद्रराजलंकनाथआइयो । भिक्षुजानिजानकीसोभीषकोबोलाइयो । शोचपोचमोचिकैसकोचभीमवेषको । अंतरिक्षहींकरीज्योंराहुचंद्ररेषको ॥ १७ ॥ दण्डक ॥ धूमपुरकेनिकेतमानोधूमकेतुकी शिषाकीधूमयोनिमध्यरेखासुधाधामकी । चित्रकीसीपुत्रिकाकीरूरेबयरूरेमांहशम्बरछोडाइलईकामिनिकीकामकी । पाषंडकीश्रद्धाकीमठेशबशएकादशीलीन्हीकैश्वपचराजशाखाशुद्धसामकी । केशवअदृष्टसाथजीवजीतिजैसीतैसीलंकनाथहाथपरीछायाजायारामकी ॥ १८ ॥

टी०—क्षुद्रनको राज जो लंकनाथ है सो छिद्र कहे अवसर ताकि भिक्षुककहे दंडीरूप धरिकै सीतापै आयो शूर्पनखाकी नासिका काटेको जो पोच कहे

बुरो शोच है सीता हरण निश्चय करि ताको मोचिकै छोड़िकै अथवा पोच रावणको विशेषण हैं औ भीमवेषको जो संकोच सिकोरनो रह्यो ताकोमोचिकै अर्थ जो लघुशरीर करचोरहै ताको बढ़ाइकै अंतरिक्ष आकाश ॥ १७ ॥ धूमपुर के निकेत कहे घरमें अर्थ धूम समूह में धूमकेतु जो अग्नि है ताकी शिखाज्योति है कि धूमयोनि जे मेघहैं तिनके मध्यमें सुधाधाम जो चन्द्रमा है ताकी रेखा कहे कलाहै कि रूरेकहे बड़े बघरूरे कहे बौंडर वायु ग्रंथि करिकै प्रसिद्ध है तामें चित्रपुत्रिका है कि शंबरनामा जो दैत्य है सो कामको शत्रुहै तेहि काम की कामिनी रतिको छँडाइ लीन्ही है कि पाषंड के वशमो अद्धापरी है यह कथा विज्ञानगीतामें प्रसिद्ध है कि मठपतिके वश एकादशी परी कि सुपचराजु चांडालन को राजा शुद्धसामवेद की शाखा लीन्होहै अदृष्ट कर्मके साथ में जैसी जीव ज्योति परी है तैसी छाया कृत जोराम की जाया सीता है सो लंकनाथ के हाथ में परी ॥ १८ ॥

मू०— सीताजू—हरिलीलाछंद ॥ हारामहारमनहारघुनाथधीर । लंकाधिनाथबशजानहुंमोहिंबीर ॥ हापुत्रलक्ष्मणछोडावहुबेगिमोहिं । मार्तंडबंशयशकीसबलाजतोहिं॥१९॥पक्षीजटायुयहबातसुनंतधाइ । रोक्योतुरंतबलरावणदुष्टजाइ ॥ कीन्होप्रचंडरथछत्रध्वजाबिहीन । छोडयोविपक्षतबभोजबपक्षहीन ॥२०॥ संयुताछंद ॥ दशकंठसीतहिलैचल्यो । अतिवृद्धगीधहियोदल्यो ॥ चितजानकीअधकोंकियो । हरितीनिद्वैअवलोकियो २१ पदपद्मकीशुभघूंघरी । मणिनीलहाटकसोंजरी ॥ जनुउत्तरीयविचारिकै । शुभडारिदीयगठारिकै ॥ २२ ॥ दोहा ॥ सीताकेपदपद्मको,नूपुरपटजनिजानु॥मनहुँकऱ्योसुग्रीवघर,राजश्रीप्रस्थानु ॥ २३ ॥ यद्यपिश्रीरघुनाथजू,समसर्वंगसर्वज्ञ ॥ नरकैसीलीलाकरत,जेहिमोहतसबअज्ञ ॥ २४ ॥ राम—सवैया ॥ निजदेखौंनहींशुभगीतहिसीतहिकारणकौनकहौअबहीं । अतिमोहितकैबनमांझगईसुरमारगमैंमृगमाऱ्योजहीं । कटुबातकछूतुमसोंके

हिआईकिधौंतेहित्रासडेराइरहीं । अबहैयहपर्णकुटीकिधौंऔर किधौंवहलक्ष्मणहोइनहीं ॥ २५॥

टी०– ॥ १९ ॥ प्रचंडपदजटायुरावणरथतीन्योकोविशेषण ह्वै सकत है विपक्ष शत्रु रावण ॥ २० ॥ तीनि औ द्वै कहे पांच अथवा द्वै तीनि कहि- बेकी रीति शुभावोक्ति है हरि बानर ॥ २१ ॥ उत्तरीय ओढ़िवेकोवस्त्र ॥ २२ ॥ जबप्रस्थान भयो तब आप आयोई चाहै ॥ २३ ॥ सम कहे सदा एक रस रहत हैं औ सर्वग कहे सर्वत्र व्याप्तहैं औ सर्वज्ञ कहे सब जानत हैं ॥ २४ ॥ जो हमारे स्वरसों हा लक्ष्मण यह कहिकै मृग मरचौ है सो हमारो शब्दजानि ताहीस्वरके मार्ग ह्वै हमारे बडे हितसों बन के मध्य में गई है कि हे लक्ष्मण यह पर्णकुटी है कि कछू औरई वस्तुहै औ कि वह पर्णकुटी नहीं है औरई पर्णकुटी है ॥ २५ ॥

मू०– दोधकछंद ॥ धीरजसोंअपनोमनरोक्यो । गीधजटायु पऱ्योअवलोक्यो ॥ छत्रध्वजारथदेखिकैबूझेउ । गीधकहौरण कौनसोंजूझेउ ॥ २६ ॥ जटायु ॥ रावणलैगयोराघवसीता । हारघुनाथरटैशुभगीता ॥ मैंबिनछत्रध्वजारथकीन्हो । ह्वैगयो हौंबलपक्षविहीनो ॥ २७ ॥ मैंजगमेंसबतेबडभागी । देहदशा तवकारणलागी ॥ जोबहुभांतिनवेदनगायो । रूपसोमैंअवलो कनपायो ॥ २८ ॥ राम ॥ साधुजटायुसदाबडभागी । तोम नमोबपुसोंअनुरागी ॥ छूव्योशरीरसुनीयहबानी । रामहिंमेंतब ज्योतिसमानी ॥ २९ ॥ तोटकछंद ॥ दिशिदक्षिणकोकरिदा हचले । सरितागिरिदेखतवृक्षभले ॥ बनअंधकवंधबिलोकत हीं । दोउसोदरखैंचलियेतबहीं ॥ ३० ॥ जबखैंबेहिकोजियबुद्धि गुनी । दुहुंबाणनिलैदोउबाहिहनी ॥ वहछाडिकैदेहचल्योजब हीं । यहव्योममेंबातकह्योतबहीं ॥ ३१ ॥ मोटकछंद ॥ पीछे मघवामोहिंशापदई । गंधर्बतेराक्षसदेहभई ॥ फिरिकैमघवास हयुद्धभयो । उनक्रोधकैशीशमेंवज्रहयो ॥ ३२ ॥

टी०— ॥ २६ ॥ २७ ॥ दशा अवस्था अर्थ यह कि यहदेह गृद्धकी औ यह वृद्धावस्था तुह्मारे कछु उपकारके लायक नहीं रही तासों तुम्हारो उपकार भयो औ ऐसो जो तुम्हारो रूपहै ताको देख्यो तासों जगमें मैं सबसों बडभागीहौं ॥ २८ ॥ अर्थ सायुज्य मुक्ति पायो ॥ २९ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ बाहु दई पर्यन्त तीतिछंदके छेपकहैं पीक्षेकहे पूर्वहीं ॥ ३२ ॥

मू०— दोहा ॥ गयोशीशगड़िपेटमें,परयोधरणिपरआय ॥ कछुकरुणाजियमोभई,दीन्हीबाहुबढ़ाय ॥ ३३ ॥ बाहुदईद्वैको सकी,आवैतेहिगहिखाउँ । रामरूपसीताहरण,उधरहुगहनउपाउ ॥ ३४ ॥ सुरसरितेआगेचले,मिलिहैंकपिसुग्रीव । दैहैंसीताकी खबरि,बाढैसुखअतिजीव ॥ ३५ ॥ तोटकछंद ॥ सरिताएकके शवसोभरई । अवलोकितहांचकवाचकई ॥ उरमेंसियप्रीतिस माइरही । तिनसोंरघुनायकबातकही ॥ ३६ ॥ अवलोकतहौं जबहींजबहीं । दुखहोततुह्मेंतबहींतबहीं ॥ वहबैरनचित्तकछू धरिये । सियदेहुबताय कृपाकरिये ॥ ३७ ॥ शशिकेअवलोक नदूरिकिये । जिनकेमुखकीछबिदेखिजिये । कृताचित्तचकोरक छूकधरौ । सियदेहुबताय सहायकरौ ॥ ३८ ॥

टी०— ॥ ३३ ॥ करुणा करिकै द्वै कोश की बाहु दई औ यह बर दियो कि जो इन बाहुन के मध्य में आवै ताको खाहु जब सीताहरण ह्वै हैं तब रामचन्द्र या मग ह्वै ऐहैं तिनके गहन उपाय सों उद्धरहु कहे तुम्हारो उद्धार होई अर्थ जब रामचन्द्र को इन बाहुनसों गहिहै तबतेरो उद्धार ह्वै है ॥ ३४ ॥ सुरसरि गोदावरी ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ जब सीता को तुम अवलोकत रहे कहे देखत रहौ तब अपना सों अधिक सुन्दर सीता के कुच देखि तुम्हारे दुःख होत रहे अथवा हमको संयोगी देखतरहे तासोंतुम्हारे दुःख होतरह्यो ॥ ३७ ॥ शशि जो अति सुंदर जिन के मुखको देखि शशिकी ओर बिलोकिबो छोड़ि केवल जिनके मुखकी छबिको देखिकै जियत रहेहौ अथवा शशिके अवलोकन दर्शन दूरिकिये पर अर्थ जब कृष्णपक्षमें चन्द्र-

मा आपनो दर्शनदृष्टि सों दूरि कियो ना देखि पर्‍यो तब चंद्रसम केवल जिनके मुखकी छबि को देखि जियत रहे हो वह कृत कहे उपकार कछू चित्त में धरकै सीताको बताइ देउ ॥ ३८ ॥

मू०- सवैया ॥ कहिकेशवयाचकके अरिचंपकशोकअशोक लियेहरिकै । लषिकेतककेतकिजातिगुलाबतेतीक्षणजानितजे डरिकै । सुनिसाधुतुह्मेंहमबूझनआयेरहेमनमौनकहाधरिकै । सियकोकछुसोधुकहोकरुणामयसोकरुणाकरुणाकरिकै ॥ ३९ ॥ नराचछंद ॥ हिमांशुसूरसोलगैसोबातवज्रसोवहै । दिशालगैंकृशानुज्योंबिलेपअंगकोदहै ॥ विशेषिकालरातिसोकरालराति मानिये । बियोगसीयकोनकाललोकहारजानिये ॥ ४० ॥

टी०- रामचंद्र करुण वृक्षसों कहतहैं कि चंपक जेहैं ते याचक के अरि शत्रुहैं पुष्पनको याचक जो भ्रमर है ताको निकट नहीं आवनदेत चंपकमें भ्रमर नहीं बैठत यह प्रसिद्धहै ता भयसो चंपक सो सीताको सोधु नहीं जांचे अशोक जेवृक्ष हैं तिन शोकको हरि कै छोडिकै अशोक यह जो नाम है ताको लीन्हों है तासों जिनहूंकोतज्योहै कि जिनके शोक हैहीनहीं ते हमारोदुःख देखिदुःखीह्वै कृपा करि सीताको सोधु काहे को बताइहैं केतक केवरा औ केतकी औ गुलाब इनकी जातिजे और कंटक वृक्ष हैं कमलादि तिन्हैं तीक्ष्ण कहे कंटकित जानि कै डरिकै तज्यौ है सो हे करुणा कहे करुण वृक्ष करुणा कहे दीनता मय जे हम हैं तिनसों सीताको कछू सोधु कहो ॥३९॥ रामचन्द्र लक्ष्मण सों कहत हैं कि हिमांसुजो चंद्रमा है सो हमको सूर्य सम तप्त लागतहै औ वायु वज्र सम बहति है औ दशो दिशा अग्नि के समान तप्तलागती हैं औ तुम जो शीतलता के अर्थ हमारे अंगन में बिलेप करतहो सो अंगन को जारत है औ राति काल राति सम कराल लागति है औ सीता को बियोग लोक हारकाल कहे संहार काल सम लागत है ॥ ४० ॥

मू०- प्रज्झटिकाछंद ॥ यहिभांतिबिलोकेसकलठौर । गये

शवरीपैदोउदेवमोर ॥ लियोपादोदकत्यहिपदपखारि। पुनि अर्घ्यादिकदीन्हेंसुधारि ॥ ४१ ॥ हरदेतमंत्रजिनकोबिशाल। शुभकाशीमेंपुनिमरणकाल ॥ तेआयेमेरेधामआज । सबसफलकरनजपतपसमाज ॥ ४२ ॥ फलभोजनकोतेहिधरेआनि। भषेयज्ञपुरुषअतिप्रीतिमानि ॥ तिनरामचन्द्रलक्षणस्वरूप। तवधरेचित्तजगजोतिरूप ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ शवरीपावकपंथतब,हरषिगईहरिलोक ॥ बननबिलोकतहरिगये,पंपातीरसशोक ॥ ४४ ॥ तोटकछन्द ॥ अतिसुन्दरशीतलसोभबसै । जहँरूपअनेकनिलोभलसै ॥ बहुपंकजपक्षिबिराजतहैं । रघुनाथबिलोकतलाजतहैं ॥ ४५ ॥ सिगरीऋतुशोभितसुभ्रजही। लहै ग्रीषमपैनप्रवेशसही ॥ नवनीरजनीरतहाँसरसैं । सियकेशुभलोचनसेदरसैं ॥ ४६ ॥

टी०— ॥ ४१ ॥ मंत्र राम तारक तप औ जप समाज के सफल करन कहे सफल कर्त्ता अर्थ जो कोऊ जप तप करत है ताको फल रामचंद्रही देत हैं ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ जीवतही अग्निमों जरिकै ॥ ४४ ॥ कैसो है पंपासर अति सुंदर है औ अति शीतल है जहां शोभा जो है सो सदा आय बास करति है औ जहां कहे स्थान मे जातही प्राणिन के अनेक रूप सो लोभ बसतहै अर्थ जहां जातही प्राणिन के रहिबेको लोभबाढत है औ बहुत पंकज कमल औ हंसादि पक्षी बिरजातहैं ते रामचन्द्रको देखिकै लज्जित होत हैं जा अंगको जो उपमान है ता अंगको निरखि अपना सों अधिक जानि लजात हैं ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

मू०— बिजयछंद ॥ सुन्दरसेतसरोरुहमैं करहाटकहाटककी द्युतिकोहै । तापरभौंरभलेमनरोचनलोकबिलोचनकीरुचिरोहै । देखिदईउपमाजलदेविनदीरघदेवनकेमनमोहै । केशवकेशवरायमनोकमलाशनकेशिरऊपरसोहै ॥ ४७ ॥ लक्ष्मण—सवैया ॥ मिलिचक्रिनचंदनबातबहैअतिमोहतन्यायनहींमतिको।

मृगमित्रबिलोकतचित्तजरैलियेचन्दनिशाचरपद्धतिको । प्रतिकूलशुकादिकहोहिंसबैजियजानैनहींइनकीगतिको । दुखदेततड़ागतुम्हैंनबनैकमलाकरह्वैकमलापतिको ॥ ४८ ॥

टी०— सरोरुह कमलकरहाटक शिफाकंद हाटकसुवर्ण लोक के लोचनकी रुचिकहे इच्छाको रोहैकहे धारणकरतहै अर्थ जिनको देखि सबके लोचननमें सदादेखिबेकीइच्छा होति है अथवा लोकके लोचनन की रुचि शोभा रोहत है अर्थ लोचन सम शोभतहै केशवराय विष्णु कमलाशन ब्रह्माश्वेत कमल सोई ब्रह्माको आसन कमल समहै करहाटक ब्रह्मासम पीतबर्ण है भ्रमर विष्णुसम है ॥ ४७ ॥ पंपासर सों लक्ष्मण कहत हैं कि चन्दनबात जो इनकी मतिको मोहत हैं मूर्च्छित करत है सो न्यायही सों काहे ते चंदन वृक्षमें लपटेजे अनेक चक्रीसर्प हैं तिनसों मिलिकै स्पर्शकरिकै बहतहै सो सर्पनके संगको फल है सर्पहू जाको काटत हैं ताको मूर्च्छित करत हैं अति पतिसों मृगकी अंकमें धरे हैं तासों मृग मित्रपद कह्यो सो संग मित्र जो चंदहै ताको बिलोकिइनको चित्त जरत है सोऊ न्यायही है काहे ते निशाचरन की पद्धति परिपाटीको लियेहै निशाचर राक्षसहू हैं चंदहू है सो निशाचरन की राक्षसन की परिपाटीको लिये है राक्षसनहूंको देखतही चित्तजरतहै औमृगमित्रकहि या जनायो कि पशुनको मित्र है प्रतिकूला दुःखदजो शुकादिक होतहैं सोऊ न्यायही है काहेते वे पक्षी पशुहैं इनकी गतिको नहीं जानत कि ये ईश्वरहैं कमलाकरपद श्लेष है कमलनके आकर समूहसों युक्त औ कमला लक्ष्मीके उत्पन्नकर्त्ता युक्ति यह कि ये तुह्मारे जामातु हैं इनको दुःख देना तुह्मैं न चाहिये ॥ ४८ ॥

मू०— दोहा ॥ ऋष्यमूकपर्वतगये, केशवश्रीरघुनाथ ॥ देखे बानरपंचबिभु,मानोंदक्षिणहाथ ॥ ४९ ॥ कुसुमबिचित्राछंद ॥ तबकपिराजारघुपतिदेखे । मननरनारायणसमलेखे ॥ द्विजबपुधरितहँहनुमतआये । बहुबिधिआशिषदैमनभाये ॥ ५० ॥ हनूमान ॥ सबबिधिरूरेबनमहँकोहौ । तनमनसूरेमनमथमो

१ दमाद

हौ ॥ शिरसिजटाबकलाबपुधारी । हरिहरमानहुंबिपिनबिहारी ॥ ५१ ॥ परमबियोगीसमरसभीने । तनमनएकैयुगतनकीने ॥ तुमकोहौकालगिबनआये । क्यहिकुलहौकौनपुनिजाये ॥ ॥ ५२ ॥ राम—चंचरीछंद ॥ पुत्रश्रीदशरत्थकेबनराजशासनआइयो । सीयसुन्दरिसंगहीबिछुरीसोसोधनपाइयो ॥ रामलक्ष्मणनामसंयुतशूरवंशबखानिये । रावरेबनकौनहौक्यहिकाजक्यौंपहिंचानिये ॥ ५३ ॥

टी०— सुग्रीव हनूमान नल नील सुषेण ये पांच जे बानरहैं बिभुकहे प्रतापी तिन सहित ऋष्यमूक को देख्यो मानों सो पृथ्वीको दक्षिण हाथ है पृथ्वी इति शेषः अथवा मानों अपनो दक्षिण हाथही देख्यो है मित्रको औ भ्राता को दक्षिण बाहु सम कहिबेकी रीतिहै ॥ ४९ ॥ नरनारायणके हैरूप हैं ॥ ५० ॥ रूरे सुन्दर ॥ ५१ ॥ परम बियोगी हौ अर्थ तुम्हारी चेष्टाते जानि परत है कि काहू बडे हितको बियोग भयो है औ जटा बल्कलादि सों शान्तरसमें भीनेजानि परतहौ ॥ ५२ ॥ शासनआज्ञा ॥ ५३ ॥

मू०— हनुमान--दोहा ॥ यागिरिपरसुग्रीवनृप तासँगमंत्रीचारि ॥ बानरलईछंडाइतिय, दीन्होबालिनिकारि ॥ ५४ ॥ दोधकछंद ॥ ताकहँजोअपनोकरिजानो । मारहुबालिबिनैयहमानो ॥ राजदैदेहुजोवाकीतियाको । तोहमदेहिंबतायसियाको ॥ ५५ ॥ लक्ष्मण ॥ आरतकोप्रभुआरतिटारो । दीनअनाथनकोप्रतिपारो ॥ थावरजंगमजीवजोकोऊ । सन्मुखहोतकृतारथसोऊ ॥ ५६ ॥ बानरह्वैहनुमानसिधारेउ । सूरजकोसुतपांयनिपारेउ ॥ रामकह्योउठिबानरराई । राजसिरीसखिस्योतियपाई ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ उठेराजसुग्रीवतब, तनमनअतिसुखपाइ ॥ सीताजूकेपटसहित,नूपुरदीन्हेआइ ॥ ५८ ॥ तारकछंद ॥ रघुनाथजबैपटनूपुरदेखे । कहिकेशवप्राणसमानहिंलेखे

खे ॥ अवलोकतलक्ष्मणकेकरदीन्हे । उनआदरसोंशिरमानिकै लीन्हे ॥ ५९ ॥ रामदंडक ॥ पंजरकीखंजरीटनैननकोकिधौं मीनमानसको केशवदासजलुहैकिजालुहै । अंगकोकिअंगरा गगेडुआकीगलसुईकिधौंकटिजेवहीकोउरकोकिहारुहै ॥ बंध नह्मारोकामकेलिकोकिताडिबेकोताजनोंबिचारकोकोचमरबि चारुहै । मानकीजमनिकाकी कंजमुखमूंदिबेको सीताजूको उ त्तरीयसबसुखसारुहै ॥ ६० ॥

टी०— बानर बालिको बिशेषण है ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ कृतार्थ कहे कृतहै अर्थ प्रयोजन जाको ॥ ५६ ॥ अर्थ बालिको मारि कै राज्य श्री सहित तुम्हारी स्त्री हम तुमको देहैं ऐसो निश्चय बचन रामचंद्र सुग्रीवको दियो ॥ ५७ ॥ ॥५८॥ शिर मानिकै कहे शिरपर राखि कै ॥५९॥ रामचन्द्रकहत हैं कि हमारे खंजरीट कहे खंडरिचरूपीजेनयनहैं तिनको पंजर पिंजराहै जामें परि नयनकै कढन नहीं पावत औ कि मीनरूपी जो मानस मन है ताको जल है कि जालु है जैसे मीन जलसों नहीं कढति तैसेमन यासोंनहीं कढत औ जाल- को औ पंजरको हेतु एकई है अंगन को कि अंगराग कहे चंदनादि को ले- पहै कि गेरुआ तकिया है कि गलसुई छोटी तकिया है अर्थ स्पर्शते अंग- नको अंगरागादि सम सुखदहै औ कि कटिजेब कहे क्षुद्रघंटिका है औ कि- हीको जेव कहे धुकधुकी है जेवपदको संबंध याहूमें है औ कि उरको हार है औ कि कामकेलि समय को हमारो बंधन फांस है औकि कामकेलिस- मयको हमारे ताड़िबे को ताज नोकशा है कोड़ाइति अर्थ कामकेलिमें अति चंचल कर्ता है औ कि कामकेलिको जो बिचार कहे बिगत चार चलन है रतांत इलिताको रत श्रमहर चमरकहे बाल व्यजन है यहां चमर पदते व्यजन जानौं अथवा हमारे बिचारको चमर है अर्थ बिचारको शोभाकर्ता है अर्थ प्रकाश कर्ता है ऐसो हमारो बिचार अनुमान है औ कि सीताजूके मानकी जमनिका कनात है अर्थ याही की आड़में सीताजूको मान रहत रह्यो औ कि सीताजूको कंजमुख मूंदिबेको सब सुखसार उत्तरीय है या-

१ खँड़ैरचा

हीविधि उत्तरीयको बर्णन हनुमन्नाटकमें है। द्यूतेपणःप्रणयकेलिषुकंठपाशः क्रीड़ापरिश्रमहरंव्यजनं रतांते । शय्यानिशीथसमयेजनकात्मजाया प्राप्तं मयाविधिवशादिहचोत्तरीयम् ॥ ६० ॥

मू०— स्वागताछंद ॥ बानरेन्द्रलबयोंहँसिबोल्यो । भीतभेद जियकोसबखोल्यो ॥ आगिबारिपरतक्षकरीजू । रामचन्द्रहँसि बांहधरीजू ॥ ६१ ॥

टी०— जब निश्चय मित्र जान्यो तब आपनो भीतभेदकहे बालि कृत भय को सब भेद खोल्यो कहे कह्यो मित्र सों अंतःकरण को सब भेद कह्यो चाहिये. ॥ ६१ ॥

मू०— सूरपुत्रतबजीवनजान्यो । बालिजोरबहुभांतिबखान्यो ॥ नारिछीनिजेहिभांतिलईजू । सोअशेषबिनतीबिनईजू ॥ ६२ ॥ एकबारशरएकहनौजो ॥ साततालबलवंतगनोतो । रामचन्दहँसिबाणचलायो । तालबेधिफिरिकैकरआयो ॥ ६३ ॥ सुग्रीव—तारकछंद ॥ यह अद्भुतकर्मऔरपैहोई । सुरसिद्धप्रसिद्धनमेंतुमकोई ॥ निकरीमनतेंसिगरीदुचिताई । तुमसोंप्रभुपाय सदासुखदाई ॥ ६४ ॥ बिजयछंद—बावनकोपदलोकनमापिज्यों बावनकेबपुमांहसिधायो । केशवसूरसुताजलसिंधुहिपूरिकैसूरहिकोपदपायो ॥ रामकेबाणत्वचासबबेधिकैकामपैआवतज्यों जगगायो ॥ रामकोशायकसातहुतालनि बेधिकैरामहिकेकर आयो ॥ ६५ ॥ सोरठा ॥ जिनकेनामाबिलास,अखिललोकबेधतपतित ॥ तिनकोकेशवदास,साततालबेधतकहा ॥ ६६ ॥ रामतारकछंद—अतिसंगतिबानरकीलघुताई । अपराधबिनावधकौनिबडाई ॥ हतिबालिहिदेउतुम्हैंनृपशिक्षा । अबहैंकछुमो मनऐसियइच्छा ॥ ६७ ॥

टी०॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ बालिके शीघ्र बधमें

आवने अंतर निश्चयको प्रकट करत मित्रताधिक्य को दिखावत रामचन्द्र परिहास पूर्वक सुग्रीव सों कहतें हैं कि हे सुग्रीव वानरकी संगति अति लघुता है काहेते अपराध बिना बधमें कछू बड़ाई नहीं है लघुताइही है परंतु हमारे मनमें अब यहै इच्छा है कि बालिको मारि तुमको नृपशिक्षा दीजे अर्थात् राजाकीजिये यह केवल बानर संगतिको प्रभाव है बिनकाज अकाज करिबो सब बानरनको स्वभाव होतहै तिनकी संगतिते तैसो स्वभाव भयोचाहै ॥ ६७ ॥

मू०-- इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचंद्रिकायां इन्द्रजिद्विरचितायांसीताहरणरामसुग्रीवमैत्रीवर्णनंनामद्वादशःप्रकाशः ॥ १२ ॥

टी०--इति श्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायांद्वादशःप्रकाशः ॥ १२ ॥

मू०-- ॥ यातेरहेंप्रकाशमें,बालिबध्योकपिराज ॥ बर्णनबर्षाशरदको,उदधिउलंघनसाज ॥ १ ॥ पद्धटिकाछंद ॥ रविपुत्रबालिसोंहोतयुद्ध । रघुनाथभयेमनमांहक्रुद्ध ॥ शरएकहन्योउरमित्रकाम ॥ तबभूमिगिरयोकहिरामराम ॥ २ ॥ कछुचेतभयेतेहिबलनिधान ॥ रघुनाथबिलोकेहाथबान ॥ शुभचीरजटाशिरश्यामगात । बनमालहियेउरबिप्रलात ॥ ३ ॥ बालि ॥ तुमआदिमध्यअवशानएक । जगमोहतहौबपुधरिअनेक ॥ तुमसदाशुद्धसबकोसमान । केहिहेतुहत्योकरुणानिधान ॥४॥ राम ॥ सुनिबासवसुतबुधिबलबिधान । मैंशरणागतहितहतेप्रान ॥ यहसांटोलैकृष्णावतार । तबव्हैहौतुमसंसारपार ॥ ५ ॥

टी-० मित्र जे सुग्रीव हैं तिनके काम कहे अर्थ बालि के वधमें केवल सुग्रीवही को हित है रामचंद्रको कछु हित नहीं है ॥ २ ॥ ३ ॥ जग को आदि कहे उत्पत्ति मध्य कहे प्रतिपाल अवशान कहे संहार कर्ता एक तुमही हौ अर्थ ब्रह्मारूप ह्वै तुमहीं सृष्टि करते हौ बिष्णु रूप ह्वै प्रतिपाल

करत हौ रुद्र रूप ह्वै संहार करतहौ सोअनेक वपुशरीर धरिकै जगको मोहत हौ अर्थ दशरथके पुत्र रामचन्द्र हैं इत्यादि मोह बढ़ावत हौ ॥ ॥ ४ ॥ सांटो कहे बदलो ॥ ५ ॥

मू०— रघुबीररंकतेराजकीन । युवराजबिरदअंगदहिदीन ॥ तबकिष्किंधातारासमेत ॥ सुग्रीवगयेअपनेनिकेत ॥ ६ ॥ दोहा ॥ कियोनृपतिसुग्रीवहति,बालिबलीरणधीर । गयेप्रबर्षण अद्रिको,लक्ष्मणश्रीरघुवीर ॥ ७॥ त्रिभंगीछंद ॥ देख्योशुभगिरिवरसकलसोभधरफूलबरनबहुफलनिफरे । संगसरभऋक्षजन केशरिकेगणमनहुधरणिसुग्रीवधरे ॥ सँगशिवाबिराजैगजमुखगाजैपरभृतबोलैचित्तहरे । शिरशुभचन्द्रकधरपरमदिगंबरमानोंहरअहिराजधरे ॥ ८ ॥

टी०— रामचंद्र सुग्रीवको रंक कहे दरिद्री ते राजा कीन्हो सुग्रीव पदको संबंध रंक राज पदहुमोंहे बिरद पदवी ॥ ६ ॥ प्रबर्षन नामा जो अद्रि पर्वत है तामें जाइ बास कऱ्यो ॥ ७ ॥ रामचंद्र कैसो पर्वत देखत भये कि फूल हैं बरन बहु कहे अनेक रंगके औ बहुत फलन सों फरे बहुपदको संबंध फलन हूं मोंहै आगे श्लेषोरक्षा करि बर्णत हैं शरभवानर नाम बिशेष है औ पशुजाति विशेष ॥ शरअस्तु पशो भिदिकरभेवानरेभिदि इति मेदिनी । ऋक्ष पर्वतहूमें हैं सुग्रीवहूके संग जाम्वंतादि हैं केशरी कहे सिंह ताके गण समूह औ केशरी नामा बानर हनूमान के पिता तिनके गण सैन्य समूह शिवा पार्वती औ शृगाली गजमुख गणेश औ हस्ती आदि और बनजीव आदिपदते गैंडा आदि जानौं पर कहे बडे जे भृत सेवक हैं नंदिकेश्वरादि औ कोकिलचंद्रक चंद्रमा औ कपूर अर्थ कदली वृक्षनमें कपूर होतहैतेकदली जामें बहुत हैं अथवा जलअनेक बाप्यादिकनमोभऱ्यो है अथ चंद्रक धर मोर ॥ चंद्रः कर्पूरको कांपिल्य सुबार्णवारिषु इति मेदिनी । दिगंबरनग्नदु वौप्रच्छमेंएकैहै अहिराज वासुकी औ बडे सर्प ॥ ८ ॥

मू०— तोमरछंद ॥ शिशुसोलसैसँगधाइ । बनमालज्योंसुर

राइ ॥ अहिराजसोयहिकाल । बहुशीशसोभनिमाल ॥ ९ ॥ स्वागताछंद ॥ चंद्रमंदद्युतिवासरदेखौ । भूमिहीनभुवपालबिशेषौ ॥ मित्रदेखियहशोभतहैयों । राजसाजबिनुसीताहिहौं ज्यौं ॥ १० ॥ दोहा ॥ पतिनीपतिबिनुदीनअति, पतिपतिनीबिनुमंद ॥ चंद्रबिनाज्योंयामि, नीज्योंबिनयामिनिचंद ॥ ११ ॥ स्वागताछंद ॥ देखिरामबरषाऋतुआई । रोमरोमबहुधादुखदाई ॥ आसपासतमकीछबिछाई । रातिदिवसकछुजानिनजाई ॥ ॥ १२ ॥ मंदमंदधुनिसोंघनगाजें । तूरतारजनुआवझबाजें ॥ ठौरठौरचपलाचमकैयों । इंद्रलोकतियनाचतिहैंज्यों ॥ १३ ॥ मोटनकछंद ॥ सोहैंघनश्यामलघोरघनें । मोहैंतिनमेंबकपांतिमनें ॥ संखावलिपीबहुधाजलसों । मानीतिनकोउगिलैबलसों ॥ ॥ १४ ॥ शोभाअतिशक्रशरासनमें । नानाद्युतिदीसतिहैघनमें ॥ रत्नावलिसीदिविद्वारभनो । बर्षागमबांधियदेवमनो ॥ १५ ॥

टी०— शिशु बालक धाइ जो माताते अन्य आपनो स्तन दूध पिआवति है औ वृक्षविशेष सुरराइ कहे बिष्णु ते बनमाल पहिरेहैं पर्वतमें बनकी माला पंगतिसमूहेति है अर्थ बडोबनहै बहुशीश सहस्रशिर औ बहुतशीशसों सोहैं वृक्ष ॥ ९ ॥ दिनमें द्युतिहीन चंद्रमाको देखि रामचंद्र लक्ष्मण सों कहतहैं मित्र सूर्य अथवा मित्र लक्ष्मणको संबोधन है ॥ १० ॥ ११ ॥ एकादश छंदन मो जैसो बर्णन कर्‍यो है ऐसी बर्षाऋतु आई देखिके रामचंद्र कलहंस कलानिधि खंजन कंज याते इसयें छंद में जे बचन हैं ते कहत भये इति शेषः ॥ १२ ॥ तूर नगारे तारउच्चस्वर ॥ १३ ॥ १४ ॥ दिवि द्वार कहे आकाशके द्वारमें रत्नावलि पदते रत्नके बंदन वार जानौं बडे की अवाईमें वंदनवार बांधिबे की रीति प्रसिद्ध है ॥ १५ ॥

मू०— तारकछंद ॥ घनघोरघनेदशहूंदिशिछाये । मघवाजनुसूरजपैचढिआये ॥ अपराधबिनाक्षितिकेतनताये । तिनपीडनपीडितह्वैउठिधाये ॥ १६ ॥

टी०-- तीनि छंद को अन्वय एक है ग्रीष्मऋतु में अति तेजसों सूर्य क्षिति पृथ्वीके तनताये तप्त करयो है जो कोऊ काहू को बिन दोष दुःख देइ ताको दंड करिबो राजन को उचित है सो इंद्रदेवन के राजा हैं तासों सूर्य को उचित दीर्घ दंड कियो जासों ऐसो अबना करैं उत्प्रेक्षा करि यह राजनीति प्रगट देखायो अथवा पृथ्वीको अशरण जानि कै अशरण को सहाय करिबो बडेनको उचित है तासों अथवा पृथ्वी को स्त्री जानिकै स्त्री की रक्षा करिबो बडेन को उचित है तासों दुंदुभि कहे जे गजादि बाहन पर चमूके आगे नगारे बाजत हैं निर्घात कहे जाको बज्र शब्द सब कहत हैं सो नहीं है सबै कहे जे ते निर्घात होतहैं तेते पबि कहे वज्र के पात गिरिबो बखानो कहे कहत हैं अर्थ जेबार निर्घात होत है सो निर्घात नहीं है बार बार इंद्र सूर्यको वज्र चलावत हैं ताहीको शब्द होत है सम कहे बराबरि अर्थ जैसे अत्रिकी स्त्रीके उरमें देख्यो तैसे याके उरमें देख्यो है गोर मदाइनि कहे इन्द्र धनुष नहीं है प्रत्यक्ष धनुष है गोर मदाइनि इंद्र धनुष को नाम पश्चिममो प्रसिद्ध है औ बर्नना तुसार हूसो प्रगट होत है कहूं गोर सदाय न नाहीं पाठ है तौगोजे किरणे हैं ते रसद कहे मेघनके अपन कहे घरमें मध्यमें इति नहीं है प्रत्यक्ष धनुष है सूर्य की किरणैं मेघन में परि इंद्र धनुष होत है यह प्रसिद्ध है खड्ग कहे तरवारि द्युतिवंत चन्द्रशुक्रादि तो एककी चूकसों जातिमात्र को दंडबडे कोप को जनावत हैं चन्द्रबधू बीरबहोटी रसराज में द्यो है नवलबधू उरलाजे इन्द्र बधूसीहोइ ॥ १६ ॥

मू०-- अतिगाजतबाजतदुंदुभिमानो ॥ निरघातसबैपविपातवषानो ॥ धनुहैयहगोरमदाइनिनाहीं । शरजालबहैजलधारवृथाहीं ॥ १७ ॥ भटचातकदादुरमोरनबोलै । चपलाचमकैंनफिरैखगखोलै ॥ द्युतिवंतनकोबिपदाबहुकीन्ही । धरनीकहंचंद्रवधूधरिदीन्हीं ॥ १८ ॥ तरुनीयहअत्रिऋषीश्वरकीसी । उरमेंहमचंद्रकलासमदीसी ॥ बरषानसुनौकिलकैकिलकाली । सबजानतहैंमहिमाअहिमाली ॥ १९ ॥ घनाक्षरी ॥ भौंहैंसुरचापचारुप्रमुदितपयोधरभूषण जरायजोतितड़ितरलाईहै । दू

रिकरीसुखसुखमाशशीकीनैनअमलकमलदलदलितनिकाईहै ॥
॥ केशवदासप्रवलकेरेनुकागमनहरमुकुतसुहंसकसबदसुखदाई
है । अंवरवलितमतिमोहैनीलकंठजूकीकालिकाकीवरषाहरषि
हियआईहै ॥ २० ॥

टी०-॥ १७ ॥ १८ ॥ सम कहे बराबरि अर्थ जैसे अत्रि की स्त्री के उरमें देख्योहै तैसे याके उरमेंदेख्योहै अनसूया को पातिव्रत देखि ब्रह्मा बिष्णु महेश पुत्र होवेकी इच्छा करि गर्भमें आय चन्द्रमा दत्तात्रेय दुर्वासारूप यथाक्रम अवतार लियो है कथा पुराणनमें प्रसिद्ध है अहिमाली महादेव औ सर्पन की माला वर्षा गमनमें सर्प अति प्रसन्न होत हैं ॥ १९ ॥ कैसी है वर्षा कि जामें अनेक ग्रहपतन चौरादिके भी कहे डर हैं औ सुरचाप कहे इन्द्र धनुष है चारु सुन्दर औ प्रमुदित कहे प्रसन्न हैं पयोधर मेघ जामें औ भू कहे पृथ्वी औ ख कहे आकाशमें नजराइ कहे देखि परति है ज्योति जाकी ऐसी तडित जो बिजुली है ताकी तरलता है औ दुरि कीन्हों है सुख कहे सहजेही मुखकी सुखमा शोभा शशी कहे चन्द्रमाकी अर्थ चन्द्रप्रकाश नहीं होन पावत औ नै जे नदी हैं ते न कहे नहीं हैं अमल निर्मल अर्थ नदिनको जल म्लान है जात है औ कमलनको दल समूह दलित होत है औ निकाई कहे काई सों रहित है अथवा कमलदलकी दलित है निकाई जामें केशवदास कहत हैं कि रेणुका जो धूरि है ताको गमनहर प्रबल है क कहे जल जामें अर्थ ऐसो जल चारों ओर भयो है जासों धूलि नहीं उड़ति औ मुकुत कहे त्यक्त है हंसक जे हंस हैं तिनको सुखदायी शब्द जामें बर्षामें हंस उड़िजातहैं यह प्रसिद्ध है औ अम्बर जो प्रकाश है तामें बलित कहे युक्त नीलकण्ठ जे मोर हैं तिनकी मतिको मोहै कहे प्रसन्न करति है कालिका कैसी है कि भौहैं हैं सुरचाप इन्द्रधनुषहू ते चारु जाकी औ प्रमुदित कहे उन्नत हैं पयोधर स्तन जाके भूषणनमें जराइ कहे जराऊ जो ज्योति है तामें तड़ित जो बिजुली है ताकी तरलाई चंचलता है अथवा भूषणमें जड़ाऊकी जो ज्योतिहै सो जटित समरलाई कहे योजित है अर्थ भूषणनमें रत्ननकी ज्योति बिजुली सम दमकति है रत्नजटित भूषण जड़ाऊ

कहावत हैं औ दूरि कीनी है सुखमुख कहे सहज मुखही सों शशि जो चन्द्र है ताकी सुखमा शोभा अर्थ सहजमुख ऐसो छबिवान् है जामें चन्द्र द्युति मंद होति है औ अमल कहे स्वच्छ जे नयन हैं तिन करिकै कमलदल की निकाई दलित है अर्थ जिनके नयनन के आगे कमलनकी छबि दलि जाति है औ केशवदास कहत हैं कि प्रबल कहे नीको जो करेनुका हस्तिनी को गमन है ताकी हरणहारी है औ मुकुत कहे छूट्यो अर्थ उच्चरित जो हंसक कहे बिछुवान को शब्द है सोहै सुखदायी जाको अर्थ जाके चलतमें सुखदायक अनेक रंगको बिछुवानको शब्द होतहै औ अम्बर जो बस्त्रहैं तामें वलित युक्त नीलकण्ठ जे महादेव हैं तिनकी मति को मोहन है यहां काली पदते पार्व्वती जानों ॥ २० ॥

मू०—तारकछन्द ॥ अभिसारिनिसीसमुझैंपरनारी । सतमारगमेटनकोअधिकारी ॥ मतिलोभमहामदमोहछयीहै । द्विजराजसुमित्रप्रदोषमयीहै ॥ २१ ॥ दोहा ॥ बर्णतकेशवसकलकवि, बिषमगाढ़तमसृष्टि ॥ कुपुरुषसेवाज्योंभई, संततमिथ्यादृष्टि ॥ ॥ २२ ॥ चंद्रकलाछंद ॥ कलहंसकलानिधिखंजनकंजकछूदिन केशवदेखिजिये । गतिआननलोचनपायनकेअनुरूपकसेमन मानिलिये । यहिकालकरालतेशोधिसबैहठिकैबरषामिसदूरि किये । अबधौंबिनप्राणप्रियारहिहैंकहिकौनाहितूअबलम्बिहि ये ॥ २३ ॥

टी०— सत कहे उत्तम मार्ग यथोचित कुलांगनन की रीति औ राजमार्गादि ग्रामते ग्रामांतर की राह इति कि लोभ औ महामद औ मोह सों छई मति बुद्धि है वर्षा द्विजराज चन्द्रमा औ सुमित्र सूर्य तिनके दोषमयी है अर्थ चंद्र सूर्यको उदय नहीं होन पावत औ मति द्विजराज ब्राह्मण औ सुमित्र इनके दोषमयी है यासों या जानों लोभ मद मोह युक्त प्राणी मित्र दोष द्विजदोष करत नहीं डरत ॥ २१ ॥ बिषम कहे भयानक जो गाढ़ तम अन्धकार है ताकी सृष्टि कहे वृद्धि में मिथ्या दृष्टि भई जैसे कु-

१ सुंदर.

पुरुषकी सेवामें होति है तैसी सकल कवि बर्णत हैं अर्थ जब कुपुरुष सेवा कोऊ करत है तब वाहि यह देखि परतहै कि कछू पायहैं जब कछू ना पायो तब पूर्ण दृष्टि मिथ्या होतभई तैसे जा दृष्टि सों सब विषय पदार्थ देखि परत हैं ताही दृष्टिसों बर्षांधकारमें निकटगत बस्तु नहीं देखियत पूर्ण दृष्टि मिथ्या होतिहै ॥ २२ ॥ अनुरूपक कहे प्रतिम जा बस्तुके बियोगसों बिकलता होति है ताकी प्रतिमा देखि कछू बोध होतहै यह जो हमारो कराल कहे भयानक काल कहे समयहै जामें सीयबियोगादि दुःख भये ताही काल बर्षाको ब्याज करि हमको दुःख देबे को तिनहुन कलहंसादिकन को दूरि कीन्हों ॥ २३ ॥

मू०— दोहा ॥ बीतेवर्षाकालयों, आईशरदसुजाति ॥ गये अँध्यारीहोतिज्यों, चारुचांदनीराति ॥ २४ ॥ मोटनकछंद ॥ दंतावलिकुन्दसमानगनो । चंद्राननकुन्तलचौंरघनो । भौंहैंधनुखंजननैनमनो । राजीवनिज्योंपदपानिभनो ॥ २५ ॥ हारावलिनीरजहीपरमैं । हैंलीनपयोधरअम्बरमैं । पाटीरजोन्हाइहि अंगधरे । हंसीगतिकेशवचित्तहरे ॥ २६ ॥ श्रीनारदकीदरशैमतिसी । लोपैतमताअपकीरतिसी ॥ मानोपतिदेवनकीरतिको । सतमारगकीसमुझैगतिको ॥ २७ ॥

टी०— सुजातिकहे उत्तम ॥ २४ ॥ है छंदको अन्वय एकहै शरदको स्त्री रूपकरि कहतहैं कुंदके जे पुष्पहैं तेई दंतनकी अवली पंगतिहै कुन्द शरत्कालमें फूलतहै यह कवि नियमहै औ चन्द्रमा जो है सोई आनन मुखहै चन्द्रमा बर्षाके मेघनमें मूंद्यो रहत है शरत्कालमें प्रकाशित होतहै औ सबराजा शरत्काल में पूजन करि धनुष चामरादि धारण करत हैं सो चौंर जे हैं तेई कुन्तलकेशपाश हैं घनो कहे अति सघन औ धनुष जे हैं तेई भौंहैं हैं औ शरत्काल में खंजन आवत हैं तेई नयन हैं औ राजीव कहे कमल फूलतहैं तेई पद औ पाणि कहे करहैं औ स्वाती नक्षत्र की बर्षा सो नीरज मोती होतहै तिनकी हारावलि हृदय में है जाके औ पयोधर जे मे-

१ सदृश.

षहैं ते अम्बरकहे आकाशमें लीनहैं मिलेहैं स्त्री पक्ष पयोधर कुच अम्बर बस्त्रमें लीनहैं औ जोन्हाई जोहै सोई पाटीर कहे चन्दनलेपहै शरत्पक्षहंसी गति कहे हंसनकी गति स्त्रीपक्ष हंसन की ऐसी गति इन सब करिकै सबके चित्त को हरे है बश्य करे है ॥ २५ ॥ २६ ॥ तमता अंधकार औ तमोगुण नारद सत्वगुणी हैं पतिदेव जे पतिब्रता हैं तिनकी रति प्रीति को मानौ कहे जानौं अर्थ शरत्काल नहींहै पतिव्रतन की प्रीति है प्रीति कैसी है पतिसेवा आदि जे सत कहे उत्तम मार्ग हैं तिनकी गति कहे तिनबिषे गमन समुझति कहे जानतिहै शरत्कैसी है सत कहे उत्तम जे मार्ग राह हैं तिन की गति कहे प्रभाव को समुझै कहे जानतिहै अर्थ बर्षा करिके बिदारित जे सतमार्ग हैं तिनको प्रकट करति है ॥ २७ ॥

मू०– दोहा ॥ लक्ष्मणदासीवृद्धसी,आईशरदबजाति ॥ मनहुंजगावनकोहमहिं,बीतेवर्षाराति ॥ २८॥ कुंडलिया ॥ तातेनृपसुग्रीवपै,जैयेसत्वरतात । कहियोबचनबुझाइकै,कुशलनचाहोगात ॥ कुशलनचाहौगातचहतहौबालिहिदेखो । करहुनसीताशोधकामवशरामनलेखो ॥ रामनलेखोचित्तचहीसुखसंपतिजाते । मित्रकह्योगहिबांहकानिकीजतहैताते ॥२९॥ दोहा ॥ लक्ष्मणकिष्किंधागये,बचनकहेकरिक्रोध ॥ तारातबसमुझाइयो,कीन्होबहुतप्रबोध ॥ ३० ॥ दोधकछंद ॥ बोलिलयेहनुमानतबैजू । ल्यावहुबानरबोलिसबैजू ॥ बारलगैनकहूंबिरमाहीं । एकनकोउरहैघरमाहीं ॥ ३१ ॥ त्रिभंगीछंद ॥ सुग्रीवसंघातीमुखदुतिरातीकेशवसाथहिसूरनये । आकाशबिलासीसूरप्रकाशीतबहींबानरआइगये ॥ दिशिदिशिअवगाहनसीताहिचाहनयूथपयूथसबैपठये । नलनीलऋच्छपतिअंगदकेसँगदक्षिणदिशिकोबिदाभये ॥ ३२ ॥

टी०– जैसे वृद्धदासीके शुक्लरोमनकरिकै सर्बांग शुक्लहोतहैं तैसे याहूशुक्लहै तासों वृद्धदासी समकह्यो लक्ष्मणसंबोधन है ॥ २८ ॥ सत्वर कहे शी-

घ्न चित्त चही कहे म मानी ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ साथहि कहे लक्ष्मणके साथहि रामचंद्र के पास आइ गये लक्ष्मण इतिशेषः सूरप्रकाशीकहे सूर्यको ऐसोहै प्रकाश जिनको ॥ ३२ ॥

मू०- दोहा ॥ बुधिबिक्रमव्यवसाययुत,साधुसमुझिरघुनाथ ॥ बलअनंतहनुमंतके,मुंदरीदीन्हींहाथ ॥ ३३ ॥ हीरकछंद ॥ चंडचरणछंडिधरणिमंडिगगनधावहीं । तत्क्षणहूयदाक्षिणादिशि लक्ष्यनहींपावहीं ॥ धीरधरनबीरबरणसिंधुतटसुभावहीं । नामपरमधामधरमरामकरमंगावहीं ॥ ३४ ॥

टी०- बुद्धिपद सो दान उपाउ जानौं काहेते बुद्धिवान हठ नाहीं करत समय बिचारि दान उपाइ सों कार्य्य साधत हैं औ बिक्रम कहे अति बल विक्रम स्त्वतिशक्तिता । इत्यमरः । यासों दंड उपाउ जानौं बली अतिबल सों दंडकरि कार्य्य साधत है व्यवसाय कहे यत्न सों भेद उपाउ जानौं यत्नी पुरुष अनेक यत्न करि मंत्र्यादिकन सों भेदकरिकै कार्य्य साधत हैं औ साधु पद ते साम उपाउ जानौं साधु प्राणी मिलापही सों कार्य्य साधतहैं सो यासों समयोचित चारिहू उपाइ करि कार्य्य साधिबेको लायक हनूमान को समुझि कै बल कहे सैन्य अनंत है ताके मध्यमें हनुमंत के हाथमें रामचंद्र मुँदरी दीन्ही ॥ ३३ ॥ तत्क्षण कहे जब रामचंद्रकी आज्ञा पायो ताही क्षण चंड कहे प्रचंड चरणन सों धरणि पृथ्वीको छंडि कै अर्थ अति जोर सों कूदिकै गगन कहे आकाश को मंडि कै भूषित करिकै अर्थ आकाश मार्ग ह्वै कै धावत हैं सीताको लक्ष्म कहे खोज नहीं पावत धीरके धरन हार जे बीर बरण बीर स्वरूप सब हैं ते सिंधुके तटमें स्वभावहीं साधरमको परम कहे बड़ो धाम जो रामनाम है औ कर्म बालिबधादि तिन्हैं गावत हैं धीर धरण कहि या जनायो कि यद्यपि खोज नहीं सीताको पायो परंतु धीरको धरे हैं अधीर नहीं भये तौ जहां ताईं खोज पाइहैं तहां ताईं ढूंढ़िहैं औ सुभावही कहि या जनायोकि कछू भय मानिकै रामनाम को नहीं गावत ॥ ३४ ॥

मू०- अंगद-अनुकूलछंद ॥ सीयनपाईअवधिबिनासी ।

होहुसबैसागरतटबासी ॥ जोघरजैयेसकुचअनंता । मोहिंनछोड़ै जनकनिहंता ॥ ३५ ॥ हनूमान ॥ अंगदरक्षारघुपतिकीन्हों । सोधनसीताजलथललीन्हों ॥ आलसछांडौंकृतउरआनौं । हो हुकृतघ्नीजनिशिखमानौं ॥ ३६ ॥ अंगददंडक ॥ जीरणजटायु-गीधधन्यएकजिनरोंकि रावणबिरथकीन्होसहिनिजप्राणहानि। हुतेहनुमंतबलवंततहांपांचजनदीनेहुतेभूषणकछूकनररूपजा-नि ॥ आरतपुकारतहीरामरामबारबारलीन्होंनछंड़ाइतुमसीता अतिभीतमानि । गाइद्विजराजातियकाजनपुकारलागैभोगवैन रकघोरचोरकोअभयदानि ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ सुनिसंपातिसप क्षह्वै, रामचरितसुखपाय। सीतालंकामांझहैं, खगपतिदईबताय ॥ ३८ ॥ दंडक ॥ हरिकैसोवाहनकीबिधिकैसोहेमहंसलीकसी लिखतनभयाहनकेअंकको । तेजकोनिधानराममुद्रिकाबिमान कैधोंलक्ष्मणकोबाणछूव्योरावणनिशंकको । गिरिगजगंडतेउड़ा न्योसुवरण अलि सीतापदपंकजसदाकलंकरंकको । हवाईसी छूटीकेशवदासआसमानमेंकमानकैसोगोलाहनुमानचल्योलंक को ॥ ३९ ॥

टी०– मास दिवस की अवधि दियो है। यथा बाल्मीकीये ॥ अधिग म्यतुवैदेहीनिलयंरावणस्यच । मासेपूर्णेनिवर्तध्वमुदयंप्राप्यपर्वतम् ॥ १ ॥ ऊर्ध्वमासान्नवस्तव्यंवसन्वध्योभवेन्मम ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ जीरण वृद्ध ॥ ३७ ॥ चंद्रमा ऋषि को आशीर्वाद रह्यो है कि सीता के खोज को बानर ऐ हैं ति-न्हैं मिले पच्छ तेरे जामिहैं तुलसीकृत रामायणमों प्रसिद्ध है ॥ ३८ ॥ स-दा कलंकही को रंक कहे दरिद्र अर्थ कलंक रहित जो सीतापदपंकज हैं कमान तोपको नाम पश्चिम मों प्रसिद्ध है औ गोला के साहचर्य सों अति निश्चित है। यथा भूषणकविः । छूटतकमाननकेगोलीतीरबाननकेमुसकिल-गात मुरचानहूं के ओटमें । ताहीसमयशिवराजदाबकरीपैंड़ापर देसुरंगहला-

कोहुकुमकरचोगोटमें । भूषणभनतकहौंकिमतिकहांलोदेसीहिम्मतिइहांलोंश-रजाकेभटजोटमें । ताउदैदै मोछन कंगूरनमैं पाउंदैदै घाउदैदै अरुमुख कूदे-जाय कोटमें ॥ ३९ ॥

मू०— दोहा ॥ उदधिनाकपतिशत्रुको, उदितजानिबलवंत ॥ अंतरिक्षहींलक्षिपद, अच्छछुयोहनुमंत ॥४०॥ बीचगयेसुरसा मिली, औरसिंहिकानारि ॥ लीलिलियोहनुमंततेहि, कढ़ेउदरक हँफारि ॥ ४१ ॥

टी०— उदधि जो समुद्रहै तामें नाकपति जेइन्द्र हैं तिनको शत्रु मैनाक ताको उदित कहे आपने बिश्रामके लये उव्यो जानिकै अंतरिक्षही कहे आ-काशही सों लक्षिकहे देखिकै बलवंत जे हनुमंतहैं तिन ता मैनाकके बोधके लिये अछू कहे स्वच्छ जो पद है तासों छुयो स्पर्श मात्र करचो काहे ते बाल्मीकी रामायण में लिख्यो है कि हनूमान मैनाक सों अपनी प्रतिज्ञा कह्योहै कि मध्यमें बिश्राम न करिहौं । यथा—त्वरतेकार्यकालोमेअहश्चाप्यनि-वर्तते । प्रतिज्ञाचमयादत्तानस्थातव्यमिहांतरा ॥ अथवा पदके सदृश अ-च्छसो छुयो अर्थ जैसे पदसों स्पर्शकरि लघुविश्राम करनोरहै तैसे केवल दृष्टि सों स्पर्श करि बिश्राम कियो ॥ ४० ॥ सिंहिकाने हनुमंत को लीलिलियो ॥ ४१ ॥

मू०— तारकछंद ॥ कछुरातिगयेकरिदंशदशासी । पुरमांझ चलेबनराजिबिलासी ॥ जबहींहनुमंतचलेतजिशंका । मगरो किरहीतियह्वैतबलंका ॥ ४२ ॥ लंका ॥ कहिमोहिंउलंघ्यचले तुमकोहौ ॥ अतिसूक्षमरूपधरेमनमोहौ ॥ पठयेक्यहिकारणको नचलेहौ । सुरहौकिधौंकोउसुरेशभलेहौ ॥ ४३ ॥ हनूमान ॥ ह मबानरहैंरघुनाथपठाये । तिनकीतरुणीअवलोकनआये ॥ लं का ॥ हतिमोहिंमहामतिभीतरजैये ॥ हनूमान ॥ तरुणीहिंह तेकबलौसुखपैये ॥ ४४ ॥ लंका ॥ तुममारेहिपैपुरपैठनपैहौ । हठकोटिकरौघरहीफिरिजैहौ ॥ हनुमंतबलीतेहिथापरमारी ।

तजिदेहभईतबहींबरनारी ॥ ४५ ॥ लंका-चौपाई ॥ धनदपु
रीहौंरावणलीन्ही । बहुबिधिपापनकेरसभीनी । चतुराननचि
तचिंतनकीन्हो ॥ बरुकरुणाकरिमोकहँदीन्हो ॥ ४६ ॥ जबद
शकंठसियाहरिलैहैं । हरिहनुमंतबिलोकनऐहैं ॥ जबवहतोहिं
हतेतजिशंका । तबप्रभुहोइबिभीषणलंका ॥ ४७ ॥ चलनल
गोंजबहींतबकीजो । मृतकशरीरहिपावकदीजो ॥ यहकहिजा
तभईवहनारी । सबनगरीहनुमंतनिहारी ॥ ४८ ॥

टी०- दंसकहे डास यामें कोऊ कोऊ संदेह करत हैं कि दंस रूप धरिकै
गये मुद्रिका कैसे लैगये तालिये और अर्थ करि दंसकहे सिंह करिनंहस्ति-
नंदशतीतिकरिदंसः । ताको रूप करि चले तौ सिंहको औ श्वानको रूप एक
होतहै ताही सों श्वानको नाम ग्रामसिंह है श्वानको ग्राममें जैबो साधा-
रण रहत है तासों श्वानकोरूप धरिकैगये ॥ ४२ ॥ सूक्ष्म कहे लघु श्वानके
अर्थमें सूक्ष्म कहे तुच्छ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ धनद कुबेर ॥ ४६ ॥
हरि बानर ॥ ४७ ॥ मृतक शरीर कहे पुरी रूप मृतक शरीर लंकाने या
प्रकार को बर मांग्यो है ताही लिये हनुमान लंकापुरीको जारि हैं ॥ ४८ ॥

मू०- तबहरिरावणसोवतदेख्यो । मणिमयपालिककीछबि
लेख्यो ॥ तहँतरुणीबहुभांतिनगावैं । बिच बिचआवझ बीन
बजावैं ॥ ४९ ॥ मृतकचितापरमानहुंसोहै । चहुंदिशिप्रेतबधू
मनमोहै ॥ जहं जहं जाइतहांदुखदूनो । सियबिनहौंसिगरोपुर
सूनो ॥ ५० ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ कहूंकिन्नरीकिन्नरीलैबजावैं।
सुरीआसुरीबांसुरीगीतगावैं । कहूंयच्छिणीपच्छिणीलैपढ़ावैं ।
नगीकन्यकापन्नगीकोनचावैं ॥ ५१ ॥ पियैंएकहालागुहैएकमा
ला । बनीएकबालानचैंचित्रशाला ॥ कहूंकोकिलाकोककीका
रिकाको । पढ़ावैंसुआलैशुकीशारिकाको ॥ ५२ ॥ फिरयोदेखि
कैराजशालासभाको । रह्योरीझिकैबाटिकाकीप्रभाको । फिरयो
बीरचौंहंचितैशुद्धगीता । बिलोकीभलीसिंसिपामूलसीता ५३॥

टी०-॥ ४९ ॥ ५० ॥ किन्नरी सारंगीबांसुरीमें गीत गावती हैं अथवा बांसुरी सम गीत गावतीहैं॥ ५१ ॥ हाला मदिरा सुष्ट जे आलय घर हैं तिनमें शुकी औ शारिका मैना कोकिला जे हैं ते कोकशास्त्र की कारिका पढ़ावती हैं अथवा स्त्री कोकिला सम पढ़ावती हैं ॥ ५२ ॥ या प्रकार सब स्थानन में फिरयो सो ऐसी राजशाला सभा कहे राजभवनमें स्त्रीनकी सभाको देखिकै रीझि रह्यो अथवा या प्रकार राजशाला औ राजसभाको देखिकै रीझि रह्यो जब सीता को तहां न देख्यो तब बाटिका की प्रभा को फिरयो अर्थ बाटिका को गमन करयो शुद्ध गीता सीताको विशेषण है सिंसुपासी सौ अथवा अगुरु पिच्छिला गुरु सिंसुपा इति विश्वः ॥ ५३ ॥

मू०- धरेएकबेनीमिलीमैलसारी । मृणालीमनोपंकसोंकाढ़िडारी ॥ सदारामनामैररैदीनबानी । चहूंवोरहैएकसीदुःखदानी ॥ ५४ ॥ ग्रसीबुद्धिसीचित्तचिंतानिमानों । कियोजीभदंतावलीमैंबखानों ॥ किधौंघेरिकैराहुनारीनलीनी । कलाचंद्रकीचारुपीयूषभीनी ॥ ५५ ॥ किधौंजीवकोजोतिमायानलीनी । अविद्यानकेमध्यविद्याप्रबीनी ॥ मनोसंबरस्त्रीनमैंकामबामा । हनूमानऐसीलखीरामरामा ॥ ५६ ॥ तहांदेवद्वेषीदशग्रीवआयो । सुन्योदेविसीतामहादुःखपायो ॥ सबैअंगलैअंगहीमैंदुरायो । अधोदृष्टिकैअश्रुधाराबहायो ॥ ५७ ॥ रावण ॥ सुनोदेविमोपैकछूदृष्टिदीजै । इताशोचतारामकाजैनकीजै ॥ बसैदंडकारण्यदेखैनकोऊ । जोदेखैमहाबावराहोयसोऊ ॥ ५८ ॥

टी०- पंकसदृश मैल सारोहै कहूंपंक शोकाधिकारी पाठ है तौ मानौं पंक युक्त मृणाली है शोकाधिकारी कहे अति शोक युक्त दुहन को विशेषणहै ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ संसार विषे कीनी बुद्धि अविद्या है ईश्वर विषेकीनी बुद्धि विद्या है रामा स्त्री ॥ ५६ ॥ अति लाज भयसों अंग सिकोरि कै बैठी ॥ ५७ ॥ चारि छंदको अन्वय एक है रावण कहत है कि हे देवि ऐसे जे रामचंद्र हैं तिनको शोचनाकरौ हमजे तुह्मारे सदादास हैं तिनपै कृपा

काहे नाहीं करियत जासों अदेवी दैत्य स्त्री देवांगना तिन की रानी होउ औ बाणी सरस्वती औ मघौनी इंद्राणी मिडानी पार्वती तुम्हारी सेवा करैं औ किन्नरी सारंगी लिये किन्नरी किन्नर कन्या तुम्हारे समीप गीत गावैं औ सुकेशी औ उर्वशी नाचैं तुमसों मान कहे आदर पावैं यामें आपनो प्रभाव देखायो किए सब इंद्रादि मेरे आज्ञा कर हैं रामचंद्र कैसे हैं दंडकारण्य में बसत हैं अर्थ बनबासी हैं औ ऐसे छपे रहत हैं जिनको कोऊ कबहूं देखत नहीं औ जो देखत है सो महा बावरो आपने तनकी औ भवनादि की सुधि भूलिजात है यासों या जनायो कि बावरो होतहै ताहीको संग्रह कोऊ नाहीं करत औ वे ऐसे हैं जिनको देखत औरऊ बावरो होत है तासों सोच करिबे लायक नहीं है अनाथ के अनुसारी कहे अनुगामी हैं अर्थ यहकि काहू बड़ेके अनुगामी नहीं हैं तुम्हैं देवि दूषै हितूताहि मानैं इत्यादि दुवौ वचन भेद उपायके हैं सरस्वती उक्तार्थः हे देवि हेजगदंब हमपर कछु कृपादृष्टि दीजे अर्थतुम्हारी नेक कृपादृष्टिसों हमारो भलो होतहै औ रामचंद्रके काज येतो शोच काहे को करतीहो रामचंद्र शोचनीय नहीं हैं काहेते वै ऐसे प्रतापी हैं की निर्जन दंडकारण्य में बसते हैं आशय की अति निर्भय हैं औ देखैन कोऊ अर्थ अनेक ध्यानादि उपाय योगी जन जिनके देखिबे को करत हैं ताहूपर दरशन नहीं पावत सो छठयें प्रकाशमें कह्यो है कि सिद्धिसमाधि सजैं अजहूं न कहूं जग योगिन देखन पाई । औ जो देखत है अर्थ जाको दरशन होत है सो महा बावरो होत है अर्थ बावरे सम संसार सुखको त्याग करि जीवन्मुक्त ह्वै जात है अथवा बावरे सम देहकी सुधि नहीं रहति जैसे सुतीक्ष्ण को भयो अथवा महा बावरो महादेव होइ अर्थ महादेव सम प्रभाव को प्राप्त होइ ॥ ५८ ॥

मू०— कृतघ्नीकुदाताकुकन्याहिचाहै ॥ हितूनग्रमुंडीनहींकोप्रदाहै ॥ अनाथैसुन्योमैंअनाथानुसारी । बसैंचित्तदंडीजटीमुंडधारी ॥ ५९ ॥

टी०— कृत जो कर्महैं ताके हंता नाशकर्त्ताहैं अर्थ शुभाशुभ कर्म बंधन टारि दासनको मुक्तकरत हैं औ कू जो पृथ्वी है ताके दाता हैं अर्थ पूर्ण पृ-

थ्वीके दाताहैं बावन रूप ह्वै बलिसों लै इंद्रको दियो औ कू जो पृथ्वी है ताकी कन्या चैत्रमही तिन्हैं चाहत हैं औ नग्न औ मुन्डी जे तप स्त्री हैं तिनके हितू हैं औ अनाथ कहे जिनको नाथ स्वामी कोऊ नहीं है आशय कि आपही सबकेनाथ हैं औ अनाथ कहे अशरण जे मानी हैं तिनके अनुसारी अगामी हैं जाको रक्षक कोई नहीं है ताकी रक्षा करिबे को पाछे पाछे आपु फिरत हैं जैसे गज प्रह्लाद की रक्षा कर्‌यो औ दण्डी औ जटीऔ मुण्ड धारी जे तपस्वी हैं तिनके चित्तमें बसत हैं अर्थ राजाको सदा ध्यान करत हैं अथवा दंडी औ जटी औ मुण्डधारी ऐसे जे महादेव हैं तिनके चित्त में बसत हैं औ द्रब्य रूप लक्ष्मी को जे दूषत हैं औ उदासीन रहत हैं ते दास बिष्णु को अति प्रिय हैं औ निर्गुणी कहे प्राकृत गुणन करि रहित हैं अर्थ अति उत्कृष्ट गुण हैं जिनके । यथा बायुपुराणे ॥ सत्वादिगुणहीनत्वान्निर्गुणो हरिरीश्वरः ॥ औ ता नाम कहे ताको नाम ऐसो है जा करिकै नहीं लीजियत अर्थ जाके नामको शिव आदिदेव सब जपत हैं अथवा महा निर्गुणी कहे रज सत्व तमोगुण करि रहितहै औ ताको नाम नहीं लीजियतहै अर्थ जाके नाम का जप नहींहै ऐसी जो ब्रह्मज्योति है सो है अथवा हे देवि जेतुम्हैंदूषतहैं तिन्हैंकहाहितूमानतहै अर्थहितूनहीं मानत जो तुम्हारिरंचककऊ बिरोधीहै ताहीरामचंद्रपरम बिरोधी मानतहैं जयंतादि ते जानौं औ तोसों उदासीन है ताहू को कहा हितू मानत है अर्थ ताहू को आपनो परम हितूहू होइ पै बिरोधिही जानत हैं सीय खोजको बानर पठाइबे में सुग्रीव उदासीनता कर्‌यो प्रेम करि आपुही सों बानर न पठयो तब कोपकरि लक्ष्मणसों विरोधी सम बचन कहि पठावनादि सो जानौं औ महानिर्गुणी कहे उत्कृष्ट गुणन करि युक्त जे रामचंद्र हैं तिन को नाम कहे ना लीजै अर्थ की लीजै ताही के नाम सों मुक्ति प्राप्ति होतीहै मैं तुम्हारो सदा दास हौं मोपै कृपा काहे नाहीं कीजत सेवकपर कृपा करिबो स्वामीको उचित है अदेवीन की रानीहोहु इत्यादि वचन आशीर्बादात्मकहैं कि तुम ऐसे सुखको प्राप्त होहु ॥ ५९ ॥

मू०—तुम्हैंदेविदूषैंहितूताहिमानैं । उदासीनतोसोंसदाताहि

जानै ॥ महानिर्गुणीनामताकोनलीजै । सदादासमोपैकृपाक्यों नकीजै ॥ ६० ॥ अदेवीनृदेवीनकीहोहुरानी । करैंसेवबानीम घौनीमृडानी ॥ लियेकिन्नरीकिन्नरीगीतगावैं । सुकेशीनचैंउर्व शीमानपावैं ॥ ६१ ॥ मालिनीछंद ॥ तृणबिचदैबोलीसीयगं भीरबानी । दशमुखशठकोतूकौनकीराजधानी ॥ दशरथसुतद्वे षीरुद्रब्रह्मानभासे । निशिचरवपुरातूक्योंनश्योमूलनासे ॥६२॥ अतितनुधनुरेखानेकनाकीनजाकी । खलशरखरधाएक्योंसहैति च्छताकी । विडकनघनघूरेभक्षिक्योंबाजजीवे । शिवशिरशशि श्रीकोराहुकैसेसोछीवे ॥ ६३ ॥

टी०- ॥ ६० ॥ ६१ ॥ पतिब्रतन को परु पुरुषसों संभाषण अनुचित है तासों तृण कहे खरको अंतरकरचो यहलोक मर्य्यादा है अथवा तृण अं- तरमें करि या जनायो कि हम प्राणनको तृण समान समुझे हैं जो तू स्पर्श करिहै तौ प्राण तृण समान छोड़ि देहैं अथवा रावणको जनायो कि तू तृ- णसमानहै काहेते गंभीरबाणी बोली याते कछू भयनहीं सूचितहोत कोऊको- ऊ तृणअंचलहूको कहत हैं तौ अंचल ओट सों बोली या जानौं तेरोतो मूल तबहीं नशिगयोरहै जब हम को हरिल्यायोरहै तामें कछू लग्योहै ताको अयशी बातैं कहि अवनीकी भांतिसों काहेको नाशत है ॥ ६२ ॥ तनु कहे सूक्ष्म बिट पुरीष तेरो राज्य सुख बिडकन सदृश हे हम बाज सदृश हैं औ हम शिव शिर शशि सदृश हैं तू राहु सदृश है ॥ ६३ ॥

मू०-उठिउठिशठह्यांतेभागुतौलों अभागे। ममबचनबिसर्यो सर्पजोलोनलागे ॥ बिकलसकुलदेखौंआसुहीनाशतेरो । निप टमृतकतोकोरोषमारैनमेरो ॥ ६४ ॥ दोहा ॥ अवधिदईद्वैमास की,कह्योराक्षसिनबोलि। ज्योंसमुझैसमुझाइयो,युक्तिछुरीसोंछो लि ॥ ६५ ॥ चामरछंद ॥ देखिदेखिकेअशोकराजपुत्रिकाक ह्यो । देहिमोहिंआगितेंजोअंगआगिह्वैरह्यो ॥ ठौरपाइपवन पुत्रडारिमुद्रिकादई । आसपासदेखिकेउठायहाथकैलई ॥६६॥

तोमरछंद ॥ जबलगीसियरीहाथ । यहआगिकैसीनाथ ॥ यह कह्योलषितबताहि । मणिजटितमुंदरीआहि ॥ ६७ ॥ जबबांचिदेख्यौनाउ । मनपरयोसंभ्रमभाउ ॥ आवालतेरघुनाथ । यहधरीअपनेहाथ ॥ ६८ ॥ बिछुरीसोकौनउपाउ । केहिआनियोयहिठाउ ॥ सुधिलहौंकौनउपाउँ । अबकाहिबूझनजाउँ ॥ ॥ ६९ ॥ चहुंओरचितैसत्राश । अवलोकियोआकाश ॥ तहंशाखबैठोनीठि । तबपरयोबानर डीठि ॥ ७० ॥

टी०– हमारे बचननमें विप्रशरण शील जे सर्पहैं इहां सर्प पदते सर्पशाप जानौ ते जबलों तेरे अंगनमें नहीं लागे अर्थ जैसे सर्पके काटतही प्राण छूटतहैं तैसे हमारे शापसों तेरोप्राण छूट जैहै अथवा हमारे बचनहीं जेबिसर्पी कहे प्रशरण शील सर्पहैं ते जबलौं तेरे अंगन में नहीं लागे ॥६४॥ ॥ ६५ ॥ अरुणपत्र युक्त अशोक वृक्ष बिरहसों दाहक अग्नि समदेखि परतहैं तासों सीता जू कह्यो कि तिहारो सर्बांग आगि सम ह्वै रह्यो है सो हमको आगि तू देहु जामें जरि कै दुसह रामबियोग ताप मिटाइये इति भावार्थः ॥ ६६ ॥ सियरी शीतल ॥ ६७ ॥ आवाल ते कह्यो लड़िकाइहीं सों ॥ ६८ ॥ सुधिकहे खबरि ॥ ६९ ॥ नीठि कहे मरू मरकै ॥ ७० ॥

मू०– तबकह्योकोतूआहि । सुरअसुरमोतनचाहि ॥ कैपक्षपक्षविरूप । दशकंठबानररूप ॥ ७१ ॥ कहिआपनोतूभेद । नतुचित्तउपजतखेद ॥ कहिबेगबानरपाप । नतुतोहिं देहौंशाप ॥ तबवृक्षशाखारूमि । कपिउतरिआयोभूमि ॥ ७२ ॥ पधटिकाछंद ॥ करजोरिकह्योहौंपवनपूत । जियजननिजानुरघुनाथदूत ॥ रघुनाथकौनदशरत्थनंद । दशरत्थकौनअजतनयचन्द ॥७३॥ केहिकारणपठयेयहिनिकेत । निजदेनलेनसंदेशहेत ॥ गुणरूपशीलशोभासुभाउ । कछुरघुपतिकेलक्षणबताउ ॥ ७४ ॥ अतियदपिसुमित्रानंदभक्त । अतिसेवकहैंअतिशूरशक्त ॥ अरुयदपिअनुजतीन्योसमान । पैतदपिभरतभावतनिदान ॥ ७५ ॥

ज्योंनारायणउरश्रीबसंति । त्योंरघुपतिउरकछुद्युतिलसंति ॥ ज
गतितनेहैंसबभूमिभूप । सुरअसुरनपूजेंरामरूप ॥ ७६ ॥ सीत
जू—निशिपालिकाछंद ॥ मोहिंपरतीतियहिभांतिनहिं आवई
प्रीतिकहिधोंसुनरबानरनिक्यों भई ॥ बातसबबर्णिपरतीतिहरि
त्योंदई । आशुअन्हवाइउरलाइसुंदरीलई ॥ ७७ ॥ दोहा ।
आशुबरषिहियरेहरषि,सीतासुखदसुभाइ । निरखिनिरखिपियमु
द्रिकहि,बरणतिहैंबहुभाइ ॥ ७८ ॥

टी०— पच्छ जोहैज्ञाति बर्ग तासों विरूप कहे अन्य रूप ॥ ७१ ॥
खेदडर पापछलयह छंदछः चरणकोहै तासों गाथा जानो यथा वृत्तरत्नाकरे ॥
शेषंगाथास्त्रिःषड्भिमिश्चरणैश्चोपलक्षिताः ॥ माघको दूसरो छंद छः चरण-
को है ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ कछु कहे गुणादिकनमों काहूकोलक्षणकहो ॥७४॥
शक्तसमर्थ ॥ ७५ ॥ नपूजैकहेसमतानहींकरत ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ भाइकहेअ-
भिप्राय ॥ ७८ ॥

मू०— पधटिकाछंद ॥ यहसूरकिरणतमदुःखहारि । शशिक
लाकिधोंउरश्रीतकारि ॥ कलकीरतिसीशुभसहितनाम । कैरा
ज्यश्रीयहतजीराम ॥ ७९ ॥ कैनारायणउरसमलसंति । शुभअं
कनऊपरश्रीबसंति ॥ बरबिद्यासीआनंददानि । युतअष्टापदम
नशिवामानि ॥ ८० ॥ जनुमायाअच्छरसहितदेखि । कैपत्रीनि
श्चयदानिलेखि ॥ प्रियप्रतीहारनीसीनिहारि । श्रीरामोजयउच्चा
रकारि ॥ ८१ ॥ पियपठईमानौंसखिसुजान । जगभूषणकोभूष
णनिधान ॥ निजआईहमकोशीषदेन । यहिकिधोंहमारोमरम
लेन ॥ ८२ ॥

टी०— हमारो तमअंधकार सदृश जोदुःखहै ताकी हरनहारी है तातें
कैधों सूर्य की किरण है कल कहे अविघ्न मुद्रिका में रामनाम लिख्यो है
औ कीरतिहू जा प्राणी की होति है ताके नाम के साथही रहति है प्रथम
ताको नाम कहि कीरति कही जातिहै राज्य श्रीहूको रामचंद्र छोंड्यो है औ

याहू को छोंड्यो है ॥ ७९ ॥ नारायण के उरमें अंक जो गोदहै तापर श्री बसतिहै अथवा अंक कहे श्रीबत्सादि चिह्नन पर श्री बसति है मुद्रिका में श्री रामोजयति लिख्यो है तहां रामोजयति इन अंकन के ऊपर श्रीअंक लिख्यो है शिवा पार्वती पक्ष अष्टापद कहे पशु पशुपदते सिंह अथवा वृष-भजानौ। चामीकरं जातरूपं महारजतकांचने ॥ रुक्मं कार्तस्वरं जाम्बूनद मष्टापदोऽस्त्रियामित्यमरः मुद्रिका पद सुवर्ण ॥ ८० ॥ अक्षर बिष्णु औ अंक पियजे रामचन्द्र हैं तिनकी प्रति हारिणी चोपदारिनी है यामें श्री रामोज-यति लिख्यो है प्रतिहार को नामोच्चार करिबो धर्म है ॥ ८१ ॥ सखी कैसी है जगके जेतने भूषण गहने हैं तिनको जो भूषण कहे भूषिबो है ताको निधान भांडा है अर्थ अनेक प्रकार सों भूषण पहिराइ बे में चतुर है औ मुद्रिका कैसी है जग भूषण जे रामचन्द्र हैं तिनको भूषणनको निधान कहे भांडा है अर्थ जब याको रामचन्द्र पहिरत हैं तब अनेक भूषण पहिरे सम अपना को मानत हैं अथवा जब या मुद्रिका को धारण करत हैं तब अनेक भूषण पहिरे समान छबि होति है अथवा जगके जे भूषण गहने हैं तिनको जो भूषण है सो माताकोनिधान कहे भांडा है काहेते मोहर है सब राज्यको ब्यवहार मोहरके अंकन सों सही होतहै ॥ ८२ ॥

मू०— दोहा ॥ सुखदा शिखदा अर्थदा, यशदा रसदातारि। रामचन्द्रकी मुद्रिका, किधौं परम गुरुनारि ॥ ८३ ॥ बहु बरणा सहजप्रिया तमगुनहराप्रमान। जगमारग दरशावनी, सूरज किरण समान ॥ ८४ ॥

टी०— परमगुरुनारि कैसीहै कोमलभाषनादि करिकै सुखदा है औ शिषदाताहै कि कुलांगननको ऐसोकरिबो उचितहै सो करौ औ अर्थ जो प्रयोजनहै ताकी दाताहै कि स्त्रिनको पतिब्रत सों देवलोक गमनहोतहै यह पतिब्रतमें देवलोक गमन रूप जो प्रयोजन है ताको देति है औ पतिब्रत साधव करार यश देति है औ अनेक बचन चातुर्य्यादि रस कहे गुण देति है औ मुद्रिका दर्शन सों सुखदा है औ शिष दाता है काहेते शिक्षा दिया कि धीरजधरो औ अर्थ प्रयोजन की दाता है काहेते रामचन्द्र को संदेशरूप ह-

मारो प्रयोजन रह्यो ताको दियो अथवा अर्थ जोज्ञान है ताको दाताहै औ अति मूल्याधिक्य सो जाके पास रहै ताको यश दाताहै औरस कहे प्रेम-की दाताहै अर्थ रामचन्द्र प्रतिप्रेम बढ़ावन हारी है ॥ शृंगारादौविषेवीर्येगुणेरागेद्रवेरसः ॥ इत्यमरः ॥ ८३ ॥ बहु बरणाकहे बहुतहैं बरण रंग अक्षर जिनके औ सहज प्रिया दुवौ हैं तमगुण अंधकार औ अज्ञान सूरज किरण जगके मारग राह देखावत हैं औ मुद्रिकाहू जग मारग दरशावनी है काहे-ते जहां रामचन्द्र हैं तहां की राह देखायो जा मारग ह्वै हमारो मन राम-चन्द्र के निकट गयो दोहा क्षेपक है ॥ ८४ ॥

मू०—दोहा श्रीपुरमेंबनमध्यहों,तूमगकरीअनीति।कहिमुंदरीअबतियनकी,कोकरिहैपरतीति ॥८५॥ पद्धटिकाछंद ॥ कहिकुशलमुद्रिकेरामगात । पुनिलक्ष्मणसहितसमानतात ॥ यहउत्तरदेतिनबुद्धिवंत । केहिकारणधौंहनुमंतसंत ॥ ८६ ॥ हनूमान—दोहा ॥ तुमपूंछतकहिमुद्रिके,मौनहोतियहिनाम ॥ कंकनकीपदवीदई,तुमबिनयाकहंराम ॥ ८७ ॥ दंडक ॥ दीरघदरीनबसैंकेशवदासकेशरीज्यों केशरीकोदेखिबनकरीज्योंकपतहैं ॥ बासरकीसंपतिउलूकज्योंनचितवतचकवाज्योंचंदचितैचौगुनोचपतहैं । केकासुनिव्यालज्योंबिलातजातघनश्यामघननकेघोरनजवासोज्योंतपतहैं ॥ भँवरज्योंभवतबनयोगीज्योजगतरैनिसाकतज्योंरामनामतेरोईजपतहैं ॥ ८८ ॥

टी०— श्रीजो राज्य श्रीहै तेहिपुरमें अयोध्यामें रामचन्द्रको छोड़िदियो औ बनके मध्यमें हमछांड्यो राम हमैंतू छांड्यौ सो हेसुन्दरी कहौ तियनको अबको परतीतिकरिहै अर्थ कोऊ ना करिहै ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ तुह्मारे बिरह सों रामचन्द्र ऐसे दुर्बल भयेहैं जासों याको कंकन के स्थानमों पहिरत है इति भावार्थः ॥ ८७ ॥ सीताजू सों हनुमान कहतहैं कि हे सीता तुह्मारे बिरह सों रामचंद्र ऐसी दशाको प्राप्त हैं कि दीरघ दरीन में केशरी जो सिंहहै ताके समान बसत हैं जैसे सिंह भूमिहीमें सोवत बैठत है कछू

सेनादि सुख की इच्छानहीं करत तैसे रामचंद्र हैं औ केशरी पदश्लेष है करी कहे हस्ती पच्छ सिंह जानो रामपक्ष केशरी केशरि उदीप कहे तासों औ बासर जो दिन है ताकी संपत्ति कहे लक्ष्मी शोभा इति ताको उलूक जो घूघू पक्षी बिशेष है ताके समान नहीं देखत घूघू को दिनको देखि नहीं परत औ रामचन्द्र को अनेक बस्तु देखि बिरह उद्दीपन होतहै तासों दिनमें इतउत नहीं निरखत औ चंद्रमा को देखि चक्रवाक समान चपत हैं चन्द्रमा बिरह उद्दीपन है तासों औ केका जो मोरबाणी है ताको सुनि ब्याल जो सर्पहैं ताके समान बिलात जातहैं सर्प भक्षनके भयसों रामचन्द्र विरह बर्द्धन भयसो ॥ केकाबाणीमयूरस्येत्यमरः ॥ औ घनश्याम कहे सजल जे घनमेघ हैं तिनको जो घोर शब्द है तासों जवासे सम तपत हैं जवासी जल वृष्टिसों निज जरिबो जानिकै औ रामचंद्रके बिरहाग्नि ज्वलित होतिहै तासों औ बनमें ठौरठौर भौंरसम भँवतरहत हैं औ जैसे योगीध्यान धारणादि करत राति बितावत हैं तैसे तुम्हारे बियोग सों बिकल जे रामचंद्र हैं तिनको रात्रिहू में निद्रा नहीं आवति औ जैसे शाक्त कहे देवी को उपासक देवी को नाम जपत है तैसे राम तिहारोई नाम रात्रि दिन जपतहैं ॥ ८८ ॥

मू०– हनूमान–बारिधरछंद ॥ राजपुत्रियकबातसुनोपुनि । रामचन्द्रमनमांहकहीगुनि ॥ रातिदीहयमराजजनीजनु । यातनानितनजानतकैमनु ॥ ८९ ॥

टी०– दीह कहे बडी जो राति है सो जानो यमराज की जनी कहे किंकरी है तारात करिकै कृत जो यातना पीडा है ताको कि हमारो तन जानत है कि मन जानतहै जापै बीतति है अर्थ कहिबे लायक नहीं है अति बड़ी है औ यम किंकरनहूं करिकै कृत यातना कहिबे लायक नहीं होति अति कठोर होति है तासों यमकिंकरी सम कह्यो ॥ ८९ ॥

मू०– दोहा ॥ दुखदेखेसुखहोहिगो,सुक्खनदुःखविहीन । जे सेतपसीतपतपै,होतपरम्मपदलीन ॥ ९० ॥ बरषावैभवदेखिकै देखीशरदसकाम । जैसेरणमेंकालभट,भेंटिभेंटियतबाम ॥९१॥

खदेखिकैदेखिहौं,तवसुखआनँदकंद । तपनतापतपिद्योसनि ।,जैसेशीतलचन्द ॥९२॥ अपनीदशाकहाकहौं,दीपदशासीदे । जरतजातिबासरनिशा, केशवसहितसनेह ॥९३॥ सुगति कैसिसुनैनिसुनि,सुमुखिसुदंतिसुश्रोणि। दरशावैगोबेगिही,तुम ोसरसिजयोनि ॥ ९४ ॥ हरिगीतछंद ॥ कछुजननिदेपरती ।जासोंरामचन्द्रहिआवई । शुभशीशकीमणिदईयहकहिसुय तवजगगावई ॥ सबकालह्वैहौअमरअरुतुमसमरजयपदपाइ ो । सुतआजुतेरघुनाथकेतुमपरमभक्तकहाइहौ ॥ ९५ ॥

टी०– तुमको हमारे बिरह कृत जो दुखहै ताके अनंतर मिलापरूप ुख ह्वै है इति भावार्थः ॥ ९० ॥ बैभव ऐश्वर्य जैसे बर्षा बिताइ शरदको ।व्यो तैसे रावणादिकनको मारि तुमको भेंटिहैं इति भावार्थः ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ और अपनी दशा कहा कहिये तुह्मारे स्नेह प्रेम सहित जो देह ै सो स्नेह तैल सहित दीपदशा कहे दीपकी बाती सम बासर निशा कहे ातोदिन जरतजाति है ॥ ९३ ॥ सुन्दर है श्रोणि कहे कटि जाकी । क- टश्रोणिककुद्मतीत्यमरः ॥ सरसिजयोनि ब्रह्मा तुमको मोहिं दरशावैगा मोहिं इतिशेषः ॥ ९४ ॥ ९५ ॥

मू०– करजोरिपगपरितोरिउपबनकोरिकिंकरमारियो । पु निजंबुमालीमंत्रिसुतअरुपंचमंत्रिसँहारियो ॥ रणमारिअक्षकु मारबहुबिधिइन्द्रजीतसोंयुद्धकै । अतिब्रह्मशस्त्रप्रमाणमानिसो बश्यभोमनशुद्धकै ॥ ९६ ॥ इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोर चिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायां इन्द्रजिद्विरचितायां हनूमद्बंध नंनामत्रयोदशः प्रकाशः ॥ १३ ॥

टी०– जंबुमाली प्रहस्तनामा मंत्रीको पुत्र है यथा वाल्मीकीये ॥ सन्दि ष्टो राक्षसेंद्रेण प्रहस्तस्य सुतो बली ॥ जम्बुमाली महादंष्ट्रो निर्जगाम धनुर्द्धरः ॥ ॥ १ ॥ पुनःपंचमंत्रिनउक्ताः वाल्मीकीये ॥ सविरूपाक्षयूपाक्षौ दुर्द्धर्षं चैव रा- क्षसम् ॥ प्रघसम्भासकर्णं च पंच सेनाग्रनायकान् ॥ ९६ ॥ इति श्रीमज्जगज्जन-

निजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायारामभक्तिप्रकाशिकायांत्रयोदशःप्रकाशः ॥ १३ ॥

मू०– दोहा ॥ याचौदहेंप्रकाशमें,व्हैहैलंकादाह ॥ सागरतीरमिलानपुनि,करिहैंरघुकुलनाह ॥ १ ॥ रावण-विजयछंद ॥ रे कपिकौनतूअक्षकोघातक दूतबलीरघुनंदनजीको । कोरघुनंदन रेत्रिशिराखरदूषणदूषणभूषणभूको ॥ सागरकैसेतऱ्योजैसेगोपदकाजकहासियचोरहिदेखो । कैसेबँधायोजोसुंदरितेरीछुईदृगसोवतपातकलेखो ॥ २ ॥ रावण-चामरछंद ॥ क्रोरिक्रोरियातनानिफोरिफारिमारिये । काटिकोटिफारिमाँसुबांटिबांटिडारिये ॥ खालखैंचिखैंचिहाड़भूजिभूजिखाहुरे । पौरिटांगिरुंडमुंडलैउमद्रजाहुरे ॥ ३ ॥ बिभीषण ॥ दूतमारियेनराजराजछोड़िदीजई । मंत्रिमित्रपूँछिकैसोऔरदंडकीजई ॥ एकरंकमारिक्योंबड़ोकलंकलीजई । बुंदसोकिगोकुहामहासमुद्रछीजई ॥ ४ ॥

टी०– मिलान कहे बिश्राम ॥ १ ॥ हम तेरी स्त्रीको सोवत में दृग सों छुयो अर्थ देख्यो ता पातक सों बांधेगये तू रामचंद्रकी स्त्रीको हरि ल्यावो है तेरी अति दुर्गति ह्वै है इतिभावार्थः ॥ २ ॥ हनूमानके कठोर बचन सुनि कोप करि रावण राक्षसन सों कहत है क्रोरि क्रोरि कहे करोरि करोरि जे यातना बाधा हैं नखदंत ता जनदंडघातादि सों फोरि फोरि कहे जामें चर्म फोरि रुधिर कढ़ि आवै या प्रकारसों मारि डारो कहूं ताजनानि पाठ है तौ ताजन कहे चाबुक औ खालखैंचै रोमांचिके कुठारादि सों हाड़नके स्थान में काटिकै औ छुरिकादि सों फारिकै ताको माँसु बांटि बांटि डारिये कहे आपनो आपनो हीसा करि लीजिये औ हाड खैंचिकै कहे निकारिकै भूजिभूजिकै खाइडारो रुंड पदते रुण्डकी खाल जानो अर्थ यह कि रुण्ड की खालमें तृणादि भरिकै सबके देखिबेके लिये पौरिमें कहे पुरद्वारमें टांगिदेहु औ मुण्डको लैकै उड़ाइ कहे उड़िकै राम पास जाउ रामपासइतिशेषः । जासों मुण्ड चीन्हि रामचन्द्र दूतको माऱ्यो जानि दुःख पावैं इतिभावार्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥

मू०– तूलतेलबोरिबोरिजोरिजोरिबाससी । लैअपाररारऊ नदूनसूतसोंकसी । पूछपवनपूतकोसंवारिबारिदीजहीं ॥ अंग कोघटाइकैउड़ाइजातभोतहीं ॥ ५ ॥ चंचरीछंद ॥ धामधामनि आगिकीबहुज्वालमालबिराजहीं । पवनकेझकझोरतेझंझरीझ रोखनभ्राजहीं ॥ बाजिबारणशारिकाशुकमोरजोरणभाजहीं । छुद्रज्योंबिपदाहिआवतछोड़िजातनलाजहीं ॥ ६ ॥ भुजंगप्रया तछंद ॥ जटीअग्निज्वालाअटासेतहैयों । शरत्कालकेमेघसं ध्यासमयज्यों ॥ लगीज्वालधूमावलीनीलराजैं । मनोस्वर्णकी किंकिणीनागसाजैं ॥ ७ ॥ लसैपीतक्षत्रीमठीज्वालमानौ । ठ केओठनीलंकबक्षोजजानौ ॥ जरेजूहनारीचढ़ीचित्रसारी । म नोचेटकामेंसतीसत्यधारी ॥ ८ ॥ कहूंरैनिचारीगहेज्योतिगा ढे । मनोईशरोषाग्निमेंकामडाढ़े ॥ कहूंकामिनीज्वालमालानिभो रैं । तजैंलालसारीअलंकारतोरैं ॥ ९ ॥

टी०– तूलरुई बाससो बस्त्र ॥५॥ झंझरीके जे झरोखा कहेछिद्र हैं तिनमें भ्राजहीं कहे शोभित हैं जैसे छुद्रप्राणी जाके पास रहत है ताको कछू बि-पत्तिपरे तो सहाय नहीं करत ताको छोड़िकै भागत है लजात नहीं है तैसे अग्निदाह की जो विपत्तिहै तामें बारणादि सब भागत भये ॥६॥ नागकहे हाथी ॥७॥ वक्षोज कुचसम पीत क्षत्रिय हैं ओढ़नी सम अग्निज्वाल है ॥८॥ भोरे कहे भ्रमसों अलङ्कार स्वर्ण भूषण ॥ ९ ॥

मू०– कहूंभौनरातेरचेधूमछाहीं । शशीसूरमानोलसैंमेघमा हीं । जरैशस्त्रशालामिलीगंधमाला ॥ मिलैआद्रिमानोलगीदावजा ला ॥ १० ॥ चलीभागिचौहूंदिशाराजधानी । मिलीज्वालमा लाफिरैंदुःखदानी ॥ मनोईशबानाबलीलालल्लोलैं । सबैदैत्य जायानकेसंगडोलैं ॥ ११ ॥ सवैया ॥ लंकलगाइदईहनुमंत बिमानबचेअतिउच्चरुखीहै । याचिफटैंउचटैंबहुधामनिरानीरटैं

पानीपानीदुखीव्है ॥ कंचनकोपबिल्योपुरपूरपयोनिधिमेंपसरे तिसुखीव्है । गंगहजारमुखीगनिकेशवगिरामिलीमानोंअपार मुखीव्है ॥ १२ ॥

टी०- शशी कहे श्रीजो प्रताप है त्यहिसहित प्रतापरहित सूर्य्यको रंग श्वेत है प्रतापसहित अरुण है तासों शशी कह्यो अथवा कि शशि कहे चन्द्रमा सहित मानों सूर्य लसत हैं अर्थ चन्द्रयुक्त सूर्य होते हैं तब सूर्य्यग्रहण होत है सो मानों ग्रहण समयमें सूर्य शोभित हैं इत्यर्थः । औ की मानों सूर्य मेघनमें शोभित हैं यथा सिद्धांत रहस्ये । छादयन्यर्कमिन्दुरिति । सर्प सम शस्त्र हैं चन्दन गंधसम गंध है ॥१०॥ महादेव त्रिपुरका भस्म करिबे को बाण चलायो है ते बाण दैत्यजाया जे दैत्यस्त्री हैं तिनके भागत में तनुमें लागे भस्म करचो है मानो तेई हैं बाणावली सम ज्वाला माला हैं दैत्यजाया सम राक्षसी हैं ॥११॥ पाचि कहे पन्नामणि अथवा पाचि कहे पाकिकै फटै कहे फूटती हैं ते मणि बहुधा उचटती हैं कहे उछरती हैं गंगको सहस्रमुखी कहे सहस्रधारा ह्वै समुद्रको मिलीं गुणिके गिरा जो सरस्वती हैं सो मानों अति सुखी ह्वै कै अपार कहे अगन्यमुखी ह्वै कै समुद्रको मिली हैं सुवर्णद्रव सरस्वतीके जल समहै ॥ १२ ॥

मू०- दोहा ॥ हनुमतलाईलंकसब,बच्योबिभीषणधाम ॥ ज्योंअरुणोदयबेरमें,पंकजपूरबयाम ॥ १३ ॥ संयुताछंद ॥ हनुमंतलंकलगाइकै । पुनिपूछसिंधुबुझाइकै ॥ शुभदेखिसीतहि पाँपरे । मनिपायआनँदजीभरे ॥ १४ ॥ रघुनाथपैजबहींगये । उठिअंकलावनकोभये ॥ प्रभुमेंकहाकरणीकरी । शिरपायकीधरणीधरी ॥ १५ ॥ दोहा ॥ चिन्तामणिसीमणिदईरघुपतिकरहनुमंत ॥ सीताजूकोमनरँग्योजनुअनुरागअनंत ॥१६॥

टी०- हनुमान करिकै लाई कहे जारी जो जरति सब लङ्का है तामें बच्यो जो बिभीषणको धाम है सो ज्वालमध्य कैसो शोभित है जैसे पूर्व याम कहे प्रथम पहर अरुण जे सूर्य हैं तिनके उदयके बेरमें कही समयमें पङ्कज कमल शोभित हैं जैसे कमल रात्रिको मुकुलित रहत है प्रातही सू-

र्योदय होत अति प्रफुल्लित ह्वै प्रकाशको प्राप्त होत है तैसे रावणको प्रभाव-रूपी जो रात्रि है तामें बिभीषणको धाम उदासीन रह्यो सो लङ्कामें रामप्र-तापरूपी सूर्योदय सों घाम सम जो अग्नितेज है तामें शोभित भयो पूर्व-याम कहि या जनायो कि ज्यों ज्यों सूरज सम प्रताप अधिक उदय को प्राप्त ह्वै है त्यों त्यों कमल सम बिभीषणको घर अधिक प्रकाशको प्राप्त ह्वै है इतिभावार्थः पूर्वयाम यासों कह्यो कि मेघादि करिकै आच्छादित ह्वै मेघ-नसों कहि तृतीयादि पहरहू में उदित कहावत है ॥ १३ ॥ वाल्मीकीय रामायण में कह्यो है की लङ्क दाहिकै हनुमान पश्चात्ताप करयो है कि यामें सीताहू जरि गई ह्वै हैं तासों फेरि सीताके पास जाइ सीता को शुभ कहे सकुशल देखिकै मणिसम पाइकै आनन्द जीमें भरत भये जैसे कछू मणि रत्न पाये आनन्द होत है तैसे भयो ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥

मू०— दोधकछंद ॥ श्रीरघुनाथजबैमणिदेखी । जीमहँभाग दशासमलेखी ॥ फूलिउठ्योमनुज्योंनिधिपाई । मानहुंअंधसो दीठिसोहाई ॥ १७ ॥ तारकछंद ॥ मणिहोहिनहींमनुआहि सियाको । उरमेंप्रगट्योतनुप्रेमदियाको ॥ सबभागिगयोजोहु तोतमछायो । अबमैंअपनेमनकोमतपायो ॥ १८ ॥ दरशैहम कोबनहींदरशाये । उरलागतिआइबस्याइलगाये ॥ कुछउत्तर देतिनहींचुपसाधी । जियजानतिहैहमकोअपराधी ॥ १९ ॥ हनूमान ॥ कछुसीयदशाकहिमोहिंनआवै । चरकाजउबातसु नेदुखपावै ॥ सरसोप्रतिबासरबासरलागै । तनधावनहींमन प्राणनखागै ॥ २० ॥

टी०— भाग्यकी दशा कहे अवस्था ॥ १७ ॥ प्रिया प्रियके मनसों मन मिले अति प्रेम प्रगट होत है यह प्रसिद्ध है सो रामचन्द्र कहत हैं कि ता मणिको देखि प्रेमरूपी जो दिया कहे दीपक है ताको तनु कहे स्वरूप ज्योति इति हमारे उरमें प्रगट भयो तासों यह सीताको मन है जा दीपके प्रगट भये सो हमारे मनमें जो तम अन्धकार छायो रहै सो सब भागिगयो

तो इहां तम पद ते अज्ञान अथवा वियोग दुःख जानौं ता तम से हमारे म-नको रावण बचरूप अथवा कर्त्तव्य बस्तु बिचाररूप जो मत हिरानो रहै ताको पायो ॥ १८ ॥ अब यह दरशायेहू कहे हमारी ओर निहारो यह कहे हू पर हमको नहीं दरशै कहे देखति अर्थ हमारी ओर नहीं निहारति औ जब बरिआइकहे जबरई अपने हाथन सों उरमें लगाइयत है तब लागति है आपनी ओर सों नहीं लागति ॥ १९ ॥ चर कहे जंगम मनुष्यादि जड़ वृक्षादि प्रतिबासर कहे रोज रोज अर्थ निरन्तर बासर जो दिन है अथवा रागभेद जो रावण के मन्दिरन में नित्य राग होत है सो सीताके शर कहे बाण सम लागत है सो शरके लागे तनुमें घाव होतहै वा शरके लागे त-नमें घाव नहीं होत औ मन औ प्राणन में खागै कहे लपटात है अर्थ म-न औ प्राणन को छेदत है बासर रागभेदेन्हीत्यभिधानचिन्तामणिः ॥ २० ॥

मू०— प्रतिअंगनकेसँगहीदिननाशै । निशिसोंमिलिबाढ़ति दीहउसासै ॥ निशिनेकहुनींदनआवतिजानौं । रबिकीछबि ज्योंअधरातबखानौं ॥ २१ ॥ घनाक्षरी ॥ भौंरनीज्योंभ्रमतर हतिबनबीथिकानि हंसिनीज्योंमृदुलमृणालिकाचहतिहै । ह रिणीज्योंहेरतिनकेशरीकेकाननहिंकेकासुनिब्यालीज्योंबिलान हींचहतिहै ॥ पीउपीउरटतरहतिचितचातकीज्योंचंदचितैचक ईज्योंचुपव्हैरहतिहै । सुनहुंनृपतिरामबिरहतिहारेऐसीसूरतिन सीताजूकीमूरतिगहतिहै ॥ २२ ॥

टी०— शरद ऋतु सों शिशिर पर्यंत दिनमान घटत है रात्रि मान बा-ढ़त है सो हनूमान शरदऋतु में गये सो लंका जारि कै शरद मों अथवा हेमंत मों रामचन्द्र के पास आयेहै हैं सो रामचन्द्र सों कहत हैं कि जैसेया समय के दिन मर्याद करिकै नाशत कहे घटत हैं तैसे सीता के सब अंग घ-टत हैं दूबरे होतहैं औ ज्योंज्यों निशा बाढ़ति है त्योंत्यों दीह उसास बाढ-ति है दूसरो अर्थ खुलो है अधराति मों जैसे रबिकी छबि नेक नहीं रहति तैसे सीता को रातिके नींद नहीं आवति अधरात कहे अति बिनिद्रता ज-नायो जैसे तुलसीकृत मों कह्यो है कि । सिरिस कुसुम कहुं बेधत हीरा

॥ २१ ॥ भौरनी सम बन अशोक बाटिका की बीथिकानिमें कहे गलीन में भ्रमत रहति है अथवा मन करिकै बन बीथिकानि में भ्रमति रहति है तुम्हारो बियोग बन हीं मों भयो है तासों सीता को मन बन बन भ्रम्यो करत है हंसिनी सुखभाव से सीता शीतलताकेलिये केसरी सिंह औ कुंकुमहरिणीबधभयसोंसीता बिरहोद्दीपनभयसों ॥ २२ ॥

मू०– सीताजूसंदेश–दोहा ॥ श्रीनृसिंहप्रह्लादकी,वेदजोगावतगाथ । गयेमासदिनआशुही, झूंठीह्वैहैनाथ ॥ २३ ॥ आगमकनककुरंगके,कहीबातसुखपाइ । कोपानलजरिजायजनि,शोकसमुद्रबुड़ाइ ॥ २४ ॥

टी०– नृसिंहरूप ह्वै खंभको फारि निकसि प्रह्लादकी रक्षा करयो यह जो गाथा वेद गावत हैं सो हम प्रति रावणकृत जे अवधि मास के दिन हैं तिनके गये कहे बीते आसुही कहे थोरेही दिन मों झूंठी ह्वै हैं अवधि दिन बीते रावण हमको मारि डारि है तब सब कहिहैं कि साक्षात् स्त्री सीता की रक्षा रावण सों न करयों तो असंबंधी प्रह्लाद की रक्षा कहा करयो ह्वै है इतिभावार्थः जे बनकृत अवधि दिन तेरहें प्रकाश में कह्यो है । अवधि दई है मासकी । सो जानो अथवा मास दिन कहे एक महीना गये कहे बीते अर्थ एक महीना के बाद हम प्राण छोडिदेहैं बाल्मीकीय में कह्यो है । इदंब्रूयाश्चमेनाथं शूरंरामंपुनःपुनः । जीवितंधारयिष्यामि मासंदशरथात्मजम् । ऊर्ध्वंमासन्नजीवेयं सत्येनाहं ब्रवीमिते ॥ २३ ॥ राजसुता यक मंत्र सुन्यो अब चाहत हौं भुव भार हरयो सब पावकमें निज देहहिं राखहु । छायाशरीर मृगै अभिलाषहु । या प्रकार राक्षसन को मारि भुवभार हरिबो कह्यो रहै सो बात को या नल मैं जरन न पावे औ शोक रूपी समुद्र में डूबन न पावे ता बात की रक्षा तुम को नीके प्रकार सों करिबे है ॥ २४ ॥

मू०– राम-दंडक ॥ सांचोएकनामहरिलीन्हेसबदुःखहरिऔरनामपरिहरिनरहरिठायेहौ । बानरनहींहौतुममेरेबाणरोपसमबलीमुखशूरबलीमुखनिजगायेहौ । शाखामृगनाहींबुद्धिबलनकेशाखमृगकैधौंवेदशाखामृगकेशवकोभायेहौ । साधुहनुमन्त

बलवंतयशवंततुमगयेएककाजकोअनेककरिआयेहो ॥ २५ ॥
हनूमान–तोमरछंद ॥ गइमुद्रिकालैपार । मनिमोहिंल्याईवार ॥
कहकरयोमैंवलरंक । अतिमृतकजारीलंक ॥ २६ ॥

टी०– सीताको संदेश दैके हमारो सब दुःख तुम हरिलीन्हों ताते हरि यहजो तुह्मारो नामहै सोसांचोहै हरतिदुःख मितिहरिः । अर्थ जो दुःखको- हरै सो हरि कहावै सो तुम नरहरि कहे नृसिंह हौ और नामजो नर है ताको परिहरि कहे छोडि कै हरि एते नाम सों ठाये कहे युक्त हौ यासों या जनायो कि प्रह्लाद के समान तुम हमारो दुःख हरयो है अथवा औरजे ना- महैं इंद्रादिक तिनको परिहरि कहे छोंडिकै नरहरि कहे नृसिंह यह जो नाम है ताके सम ठाये हौ अर्थ इन्द्रादिकन की समता करिबे लायक तुम नहीं हौ बिक्रमादि करिकै तुम नृसिंहके समान हौ मेरे बाण को जो रोष क्रो- ध है ताके समहौ अर्थ जैसे हमारे बाण को क्रोध निष्फल नहीं होत तै- से तुम निष्फल नहीं होत जो काज करिबो चाहौ सो करिही आवो अथ- वा मेरे बाण के सम हौ औ मेरे रोष के सम हौ कहूं बाण रस सम पाठ है तौ बाण को जो रस कहे बल है ताके सम हौ अर्थ जैसे हमारे बाण में बल है तैसे तुह्मारे बलहै शृंगारादौविषेवीर्येद्रवेरागेगुणेरसः इत्यमरः । हे बलीमुख शूर अर्थ वलीमुख जे बानर हैं तिनमें शूर कहे बीरबली जे बलवान हैं तिनके मुखन करिकै निज कहे निश्चय करिकै गाये हौ अर्थ बड़े बड़े बलवान तुह्मारो बखान करत हैं औ शाखा जे वृक्षशाखा हैं तिनके मृग कहे गामी तुम नहीं हौ बुद्धि बलन के जेशाखा हैं तिनके गामी हौ अर्थ अनेक बुद्धि बल करि कारज साधत हौ औ कि वेदकी जे कलाआदि शाखा हैं तिनके मृग कहे गामी हौ अर्थ वेदाध्ययन मों प्र- बीण हौ एक काज सीय खोज अनेक काज लंका दाहादि ॥ २५ ॥ २६ ॥

मू०– अतिहत्योबालकअच्छ । लैगयोबांधिविपच्छ ॥ ज डवृक्षतोरेदीन । मैंकह्मोविक्रमकीन ॥ २७ ॥ तिथिबिजयदश मीपाइ । उठिचलेश्रीरघुराइ ॥ हरियूथयूथपसंग । बिनपच्छ केतिपतंग ॥ २८ ॥

टी०– विपच्छ कहे शत्रु जो मेघनाद है सो म्वहिं बांधि लैगयो ॥२७॥ शरत्कालमें सीताके ढूंढ़िबेके लिये बानरनको रामचन्द्र पठायो है औ मास दिवसकी अवधि दईहै सो समुद्र तटमें अंगद कह्यो है कि । सीय नपाई अवधि बिताई । तौ शीतकालके माससों अधिक दिन बीते औ अमरकोष-में कह्यो है कि । द्वौद्वौमाघादिमासौस्यादृतुः । या मतसों क्वाँर औ कार्त्तिक द्वै मास शरत्काल जानौ औ क्वांर शुक्लदशमी बिजयदशमी कहावतीहै ताको रामचंद्र चले यह बिरोधहै तहां और अर्थ दशमी तिथिमों बिजय-नामा मुहूर्त्तको पाइके श्रीरामचंद्र चले यथा । वाल्मीकीये अस्मिन्मु-हूर्त्तेसुग्रीव प्रयाण मभिरोचय । युक्तोमुहूर्तो विजयः प्राप्तो मध्यं दिवाकरः । कैसे हैं हरियूथ बिना पच्छके पतंग कहे पक्षी हैं अर्थ बिन पच्छ पक्षी-सम उड़त हैं ॥ २८ ॥

मू०– समुझैंनसूरप्रकाश । आकाशवलितविलाश ॥ पुनि ऋक्षलक्ष्मणसंग । जनुजलधिगंगतरंग ॥ २९ ॥ सुग्रीव-दंड-क ॥ केशवदासराजचंद्रसुनौराजारामचंद्रराचरीजबाहिंसैनउच किचलतिहै । पूरतिहैभूरिधूरिरोदासिंहिआसपासदिशिदिशि बरषाज्योंबलनिबलतिहै । पन्नगपतंगतरुगिरिगिरिराजगजरा जमृगमृगराजराजानिदलतिहै । जहांतहांऊपरपतालपयआइ जातपुरइनिकेसेपातपुहुमीहलतिहै ॥ ३० ॥

टी०– बानरनके संगमें लक्षन ऋच्छ हैं सो बानर औ ऋच्छ कैसे शो-भित हैं जानौं जलधि औ गंगाके तरंग हैं जलधि तरंगसम ऋच्छ हैं गंगतरंग-सम बानर हैं ॥ २९ ॥ रोदसी कहे भू, आकाश । द्यावाभूमीच रोदसीत्य-मरः । बलनि कहे बानरयूथनि औ मेघसमूहनि करि दिशि दिशि कहे इशौ दिशनिको बतिल कहे आच्छादित करतिहै पन्नग-सर्प, पतंग- पक्षी ॥ ३० ॥

मू०– लक्ष्मण ॥ भारकेउतारिबेकोअवतरेहौरामचंद्रकिधौं केशवदासभूरिभारतप्रबलदल । टूटतहैंतरुवरगिरगणगिरिवर सूखेसबसरवरसरितासकलजल । उचकिचलतहरिदचकनिद

चकतमंचएैसेमचकतभूतलकेथलथल । लचकिलचकिजातशे षकेअशेषफणभागिगईभोगवतीअतलबितलतल ॥ ३१ ॥ गीतिकाछंद ॥ रघुनाथजूहनुमंतऊपरशोभियेतेहिकालजू । उदयाद्रिशोभनशृंगमानहुंशुभ्रसूरबिशालजू । शुभअंगअं- गदसंगलक्ष्मणलक्षियेबहुभांतिजू । जनुमेरुमंदरसंगअद्भुतचं- द्रराजतरातिजू ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ बलसागरलक्ष्मणसहित, क- पिसागररणधीर ॥ यशसागररघुनाथजू, मेलेसागरतीर ॥३३॥

टी०- भोगवती कहे नागपुरी ॥ ३१ ॥ अंगदके ऊपर शुभ अंग जे लक्षण हैं तिन्हैं रामचंद्रके संग बहु भांतिसों लक्षये कहे देखियत है मेरु कहे सुमेरुके शृंगमें के मंदर कहे मंदराचलके शृंगमें रातिको चंद्र राजत है ॥ ३२ ॥ कपिसागर कहे कपिनकी सागर सदृश सैन्य ॥ ३३ ॥

मू०- बिजयाछंद ॥ भूतिबिभूतिपियूषहुकीबिषईशसरीर किपायवियोहै । हैकिधौंकेशवकश्यपकोघरदेवअदेवनकेमनमो- है । संतहियोकिबसैहरिसंततशोभअनंतकहैकविकोहै । चंदन नीरतरंगतरंगितनागरकोउकिसागरसोहै ॥ ३४ ॥ गीतिका- छंद ॥ जलजालकालकरालमालतिमिंगिलादिकसोंबसै । उर लोभक्षोभविमोहकोहसकामज्योंखलकोलसै ॥ बहुसंपदायुत जानियेअतिपातकीसमलेखिये । कोउमांगनोअरुपाहुनोनहिं नीरपीवतदेखिये ॥ ३५ ॥ इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोर- चिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायां समुद्रतट रामसैन्यनिवेशनंनामचतुर्दशःप्रकाशः ॥ १४ ॥

टी०- ईश कहे महादेव केशरीपच्छ भूति कहे अधिक है बिभूति कहे भस्मकी औ पियूष कहे अमृतकी अमृत युक्त चंद्रमा धारण करे हैं तासों औ बिषको सागर पच्छ भूति कहे उत्पत्ति है बिभूति कहे रत्नादि द्रव्य औ पियूष कहे अमृत औ बिष की जासों देव अदेव कश्यप के पुत्र हैं तासों पिताको घर पुत्रनको लाग्यौई चाहै औ समुद्रकी दीर्घता देखि देव अ-

देव मोहित कहे मूर्च्छित होत हैं नागर कहे बगर श्रेष्ठ सो चंदनको जो नीर कहे उद्धर है ताके जे तरंग हैं तासों तरंगित चित्रित है अर्थ अंगनमों नीकी विधि चंदन लेप करे हैं सागर पच्छ चंदन वृक्ष करिकै नीरके तरंग तरंगित हैं जाके अर्थ जाके तरंगमें चंदन वृक्ष बहत हैं जो कहो अमृतोत्पत्ति औ हरिशयन क्षीरसागरमों है तौ इहां समुद्रकी जातिमात्रको वर्णन है लवण क्षीर भेदसों नहीं है सो जानौं ॥ ३४ ॥ जा समुद्रके जल को जातिल कहे समूह जो है सो कालहूते कराल जे तिमिंगिल मत्स्यभेद हैं तिन्हैं आदि जे जलजीव हैं तिनसों कहे तिनसहित बसत हैं अर्थ जा जलमें तिमिंगिलादि रहत हैं आदि पदते ग्राहादि जानों सो कैसो शोभित है जैसे लोभ औ क्षोभ कहे उर औ बिमोह औ कोह कहे क्रोध औ काम सहित खलको दुष्टको उर लसत है औ बहुत संपत्ति रत्नादिसों युक्त है ताहूपर कोऊ मांगनो कहे याचक अर्थ जे रत्नादि लेनेके लिये जात हैं पाहुनो कहे नातो विष्णु आदि तिनको नीर जल पीवत नहीं देखियत ताते बड़े पातकी सम लेखियत है गोवधादि पाप युक्त बड़े पातकीहूको जल अति संपत्तिहूके लोभसों कोऊ नहीं पीवत इति भावार्थः ॥ ३५ ॥ इति श्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां चतुर्दशः प्रकाशः ॥ १४ ॥

मू०— दोहा ॥ यहप्रकाशदशपंचमे, दशशिरकरैबिचार ॥ मिलनबिभीषणसेतुरचि, रघुपतिजैहैंपार ॥ १ ॥

मू०— रावण-गीतिकाछंद ॥ सुरपालभूतलपालहौसबमूल मंत्रतेजानिये । बहुमंत्रवेदपुराणउत्तममध्यमाधमगानिये ॥ करियेजोकारजआदिउत्तममध्यमाधमभानिये । उरमध्यआनिअनुत्तमैजेगयेतेकाजबखानिये ॥ २ ॥ स्वागताछंद ॥ आजुमोहिंकरनेसोकहौजू । आपुमांहजनिरोषगहौजू ॥ राजधर्मकहिये छबिछाये । रामचन्द्रनहिंजौंलगिआये ॥ ३ ॥

टी०— सब महोदरादि जे राक्षस हैं तिनसों रावण कहत है कि तुम सब सुरपाल जे इंद्रहैं तिनको जो भूतल स्वर्गहै ताके पालनहार हौ अर्थ इं-

द्रलोकमें राज्य कर्यौ है आशय यह कि मंत्रनहींकेजोरसों इंद्रको जीति इंद्रलोक अमल्यौ अथवा सुरपाल इंद्र सम भूतलपाल हौ इंद्रको ऐसो राज्य करत हौ सो मूलमंत्र कहे सिद्धांतमंत्र अर्थ जिनसों शत्रुकी पराजय आपनो जय होय ऐसे मंत्र जानिये कहे जानत हौ वेद पुराणनमें बहुत जे मंत्र हैं तिन्हैं उत्तम औ मध्यम औ अधम तीनि प्रकारके वेद पुराणनकरिकै गाइयत है अर्थ वेद पुराण कहत हैं यथा शास्त्रकी दृष्टिसों अर्थ जैसो शास्त्र कहत है ताही विधिसों एक मत ह्वैकै मंत्र ठहरावै सो मंत्र उत्तम है औ जहां मंत्रीजन अपने मतको मंत्र भिन्न भिन्न कहैं फिरि राजभयादि कारणसों उदासीनतासों एकमत ठहरावैं सो मंत्र मध्यम है औ मंत्री जो आपनेही अपने मनको मत भिन्न भिन्न कहैं एकमत कैसेहू नाहोइ सो मंत्र अधम है यथा । वाल्मीकीये । एकमत्यमुपागम्य शास्त्रदृष्टेन चक्षुषा । मंत्रिनो यत्र निरतास्तमाहुर्मंत्रमुत्तमम् ॥ १ ॥ बह्वीरपि मतीर्गत्वा मंत्रिणामर्थनिर्णयः ॥ पुनर्यत्रैकतां प्राप्तः समंत्रोमध्यमःस्मृतः ॥ २ ॥ अन्योन्यं मतिमास्थाय यत्र संप्रतिभाष्यते । नचैकर्मण्यश्रेयोस्ति मंत्रः सोधम उच्यते ॥ ३ ॥ तिन तीनहूं प्रकारके मंत्रनमें आदि उत्तम जो कारज है ताको करिये अर्थ एक मत ह्वै कारज करिये औ मध्यम औ अधमको भानिये कहे दूरि करो ऐसे समयमें जे अनुत्तम काज व्यतीत ह्वैगये अर्थ आपनेहीं आपने मनकी सब मिलि कह्यौ तिन बातनको उरमें आनिकै बखानिये कहे कहत हौ अर्थ ऐसे समयमों ऐसी बात कहिबो उचित नहींहै तासों एकमत ह्वै मंत्र करौ ॥ २ ॥ ३ ॥

मू०-- प्रहस्त ॥ वामदेवतुमकोवरदीन्हो । लोकलोकासिगरेवशकीन्हो ॥ इन्द्रजीतसुतसोजगमोहै । रामदेवनरबानरको है ॥ ४ ॥ मृत्युपाशभुजजोरनितारे । कालदंडतुमसोंकरजोरे ॥ कुंभकर्णसमसोदरजाके । औरकौनमनआवततांके ॥ ५ ॥ कुंभकर्ण--चतुष्पदी० ॥ आपुनसबजानतकह्योनमानतकीजैजोमनभावै । सीतातुमआनीमीचुनजानीआनीकिमंत्रबतावै ॥ जेहिबरजगजीत्यौसर्वअतीत्यौतासोंकहाबसाई । अतिभूलिगई

तबशोचकरतअबजबशिरऊपरआई ॥ ६ ॥ मंदोदरी-विजयछंद ॥ रामकिवामजोआनीचोराइसोलंकमेंमीचुकीबेलिबईजू । क्योंरणजीतहुगेतिनसोंजिनकीधनुरेखननांघिगईजू ॥ बीसबिसेबलवन्तहुतेजोहुतीदृगकेशवरूपरईजू । तोरिशरासनशंकरकोपियसीयस्वयंवरक्योंनलईजू ॥ ७ ॥

टी०— वामदेव महादेव सरस्वती उक्तार्थः ॥ रामचन्द्र देव हैं नर औ वानर को हैं इहां देव पदते ईश्वर जानौ अर्थ रामचन्द्र ईश्वर हैं औ सुग्रीवादि वानर सब देवसैन्य हैं ॥ ४ ॥ ५ ॥ बर कहे बल अर्थ तपोबल अथवा शिवादिके वरसों सब अतीत्यौ कहे बीतो तासों कहा बसाइ कहे जोर चलै अर्थ विनाशको समय आयो सोई तुमसों ऐसे सीयहरणादि कार्य करायो है अथवा जेहि शिव औ ब्रह्माके बरसों जगको जीत्यौ सो वरदान सब बीतो काहेते कि यह वर दीन रह्यो कि नर वानरको छोडिकै औरसों तुमको भय न ह्वै है सो और औ वानर ही लरिबेको आवत हैं सो बानरको प्रभाव तौ कछू यामें चलिहै नहीं सो तुमको तब कहे सीयहरणादि समयमों यह सुधि भूलि गई कि हमको नर वानरसों भय है जब शिर ऊपर आई है तब शोच करत हौ तौ तासों कहा बसाइ कहे जोर चलै अर्थ अब मृत्युते रक्षाको कछू उपाय नहीं है ॥ ६ ॥ जो तुम्हारे दृगनमों सीतारूप जो सौंदर्य है ता करिकै रई कहे बसी रहे ॥ ७ ॥

मू०—बालिबलीनबच्योबरखोरिहिक्योंबचिहौतुमआपनिखोरहि । जालगिक्षीरसमुद्रमथ्यौकहिकैसेनबांधिहैबारिधिथोरहि ॥ श्रीरघुनाथगनौअसमर्थनदेखिबिनारथहाथिनघोरहि । तोरयोशरासनशंकरकोजेहिसोवकहातुवलंकनतोरहि ॥ ८ ॥ मेघनाद-दोहा ॥ मोकोआयसुहोइजो, त्रिभुवनपालप्रवीन ॥ रामसहितसबजगकरौं, नरबानरकरिहीन ॥ ९ ॥ विभीषण-मोटनकछंद ॥ कोहैअतिकायजोदेखिसकै । कोकुंभनिकुंभवृथाजोबकै ॥ कोहैइन्द्रजीतजोभीरसहै । कोकुंभकर्णहथ्यारुगहै ॥ १० ॥

टी०– जालगि कहे जा लक्ष्मीरूप जे सीता हैं तिनके लिये ॥ ८ ॥ सरस्वती उक्तार्थः मेघनाद कहत है कि जो मंत्र कहिबेको हमको आज्ञा होइ तौ हम कहियत है कि त्रिभुवनपाल कहे तीनों लोकके रक्षा करणहार औ प्रवीण कहे विवेकी यासों या जनायो कि केवल समदृष्टिहीसों नहीं प्रतिपाल करत भक्तनपर अतिकृपा शरणागतरक्षण शत्रुनाशादि कर्म यथोचित करत हैं ऐसे जे रामचन्द्र हैं तिनहींकरिकै सहित सब जग है अर्थ रामचंद्रही सर्वत्र व्याप्त हैं अर्थ कि विष्णु हैं यथावृत्तरत्नाकरे ॥ म्यरस्तजभ्नगैर्लांतैरेभिर्दशभिरक्षरैः ॥ समस्तं वाङ्मयं व्याप्तं त्रैलोक्यमिव विष्णुना ॥ इनको नर औ वानर करिकै हीन करौ कहेकरि मानत हौं अर्थ रामचन्द्र विष्णुहैं वानर सब देवताहैं अंगदहू सोरहें प्रकाशमें कह्यो है कि। कौनइहांनरवानरकोरे ॥ ९ ॥ १० ॥

मू०– देखेरघुनायकधीररहै । जैसेतरुपल्लवबातबहै ॥ जौलौंहरिसिंधुतरैइतरै । तौलौंसियलैकिनपाइपरै ॥ ११ ॥ जौलौंनलनीलनसिंधुतरै । जौलौंहनुमंतनदृष्टिपरै ॥ जौलौंनहिंअंगदलंकढही । तौलौंप्रभुमानहुबातकही ॥ १२ ॥ जौलौंनहिंलक्ष्मणबाणधरै । जौलौंसुग्रीवनक्रोधकरै ॥ जौलौंरघुनाथनशीशहरै । तौलौंप्रभुमानहुंपाइपरै ॥ १३ ॥ रावण-कलहंसछंद ॥ अरिकाजलाजतजिकैउठिधायो । धिकतोहिंमोहिंसमुझावनआयो ॥ तजिरामनामयहबोलउचारयो । शिरमांझलातपगलागतमारयो ॥ १४ ॥

टी०– अर्थ रघुनाथको देखि अतिकायादिकनके काहूके धीर न रहि है ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ रामनामको तजि कहे छोडु यह बोलु रावण उचारयो कहे कह्यो सरस्वतीउक्तार्थः अरि कहे शत्रुके काजसों लाज तजिकै उठि धायो है अर्थ रामचन्द्रके हाथ मृत्युसों हमारी मुक्ति है है तामें चाहिये कि तू भाई है सहाय करै सो तू शत्रुता करत है जामें याकी मुक्ति ना होइ यामें तोको लाज नहीं है भाई ह्वैकै शत्रुको काम करत है तोको धिक् है जो मोहिं समुझावत है कि रामचंद्रसों न लरौ अथवा मोहि कहे मोहबश ह्वै कै रामको नाम जो जपत रह्यौ ताको तजिकै यह बोल उचारयो कहे

एती कथा कह्यौ यह कहिकै पाँयनमें परत बिभीषणके शिरमे
त मारयौ ॥ १४ ॥

मू०— करिहायहायउठिदेहसँभारेउ । लियअंगसंगस
यचारेउ ॥ तजिअंधबंधुदशकंधउड़ान्यो । उररामचंद्रजग
तिआन्यो ॥ १५ ॥ दोहा ॥ मंत्रिनसहितबिभीषण,बाढी
अकाश ॥ जनुअलिआवतभावतो,प्रभुपदपद्मनिवास ॥
चौपाई ॥ निकटबिभीषणआवतजाने । कपिपतिसोंत
दराने ॥ रघुपतिसोंतिनजाइसुनायो । दशमुखसोदरसेव
यो ॥ १७ ॥ श्रीराम०॥ बुधिबलवंतसबैतुमनीके । मतसु
जैमंत्रिनहीके ॥ तबजोबिचारपरैसोइकीजे । सहसाशत्रुन
नदीजै ॥ १८ ॥ अंगद-सुंदरीछंद ॥ रावणकोयहसांचहुसो
आपुबलीबलवंतलियेअरु ॥ राकसबंशहमैंहतनेसब ।
कहातिनसोंहमसोंअब ॥ १९ ॥ वध्यबिरोधहमैंइनसोंआ
क्योंमिलिहैहमसोंतिनसोंमति ॥ रावणक्योंनतजोतबहीं
सीयहरीजबहींवहनिर्घृन ॥ २० ॥ नल०॥ चारपठैइनकोम
जिय । ऐसेहिकैसेबिदाकरिदीजिय ॥ राखियजोअतिज
उत्तम । नाहिंतौमारियछोड़िसबैभ्रम ॥ २१ ॥

टी०— ॥ १५ ॥ १६ ॥ कपि जे बानर हैं तिनके पति जे सुग्रीव हैं
सों गुदराने कहे कहत भये ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ बध्य कहे
रिबे लायक निर्घृण कहे निर्दय ॥ कारुण्यं करुणा घृणा इत्यमरः ॥
चार कहे दूत ॥ २१ ॥

मू० नील० ॥ सांचेहुजोयहहैशरणागत । राखियराजि
चनमोमत ॥ भीतनराखियतौअतिपातक । होइजोमा
कुलघातक ॥ २२ ॥ हनूमान — हरिलीलाछंद ॥ जानौं

ग्रीवनीलनलअंगदजाम्बवंत। राजाधिराजबलिराजसमानसंत ॥ २३ ॥ दोहा ॥ कहननपाईबातसब, हनूमंतगुणधाम ॥ कह्यौबिभीषणआपुही, सबनसुनाइप्रणाम ॥ २४ ॥ सवैया ॥ दीनदयालुकहावतकेशवहौंअतिदीनदशागह्योगाढो । रावणके अघओघमेंकेशवबूड़तहौंवरहींगहिकाढ़ो । ज्योंगजकीप्रहलादकीकीरतित्योंहींबिभीषणकोयशबाढ़ो । आरतबंधुपुकारसुनोकिनआरतहौंतौपुकारतठाढ़ो ॥ २५ ॥

टी०- जो माता औ पिता औ कुलको घात कहूं होय औ भीत ह्वै के आवै ताको न राखै तौ बडो पातक है अथवा जो माता पिता औ कुल घातकको पातक होत है सोई पातक जो भीतको ना राखै ताको होत है ॥ २२ ॥ प्रह्लाद औ नारदके समान हैं बिशारद कहे धृष्ट परिपक्व इति बुद्धिकी साज जिनकी अर्थ प्रह्लाद नारद सम तुम्हारो भक्त है ॥विशारदः पंडितेच धृष्टे इतिमेदिनी ॥ २३ ॥ २४ ॥ बाढ़ो कहे बाढ़ो ॥ २५ ॥

मू०-केशवआपुसदासह्योदुःखपैदासनदेखिसकेनदुखारे । जाकोभयोजेहिभांतिजहांदुखत्योंहींतहांतिहिभांतिपधारे । मेरियबारअवारकहांकहूंनाहिंतुकाहूकेदोषबिचारे । बूड़तहौंमहामोहसमुद्रमेंराखतकाहेनराखनहारे ॥ २६ ॥ हरिलीलाछंद ॥ श्रीरामचंद्रअतिआरतवंतजानि । लीन्होबोलायशरणागतसुखदानि ॥ लंकेशआउचिरजीवहिलंकधाम । राजाकहाउजगजौलगिरामनाम ॥ २७ ॥ तोटकछंद ॥ जबहींरघुनायकबाण लियो । सविशेषविशोषितसिंधुहियो ॥ तबहींद्विजरूपसोआइगयो । नलसेतुरचैयहमंत्रदयो ॥ २८ ॥ दोहा ॥ जहँतहँबानर सिंधुमें,गिरिगणडारतआनि ॥ शब्दरह्योभरिपूरिमहि,रावणको दुखदानि ॥ २९ ॥ तोटकछंद ॥ उछलैंजलउच्चअकाशचढ़ै ।

जलजोरदिशाबिदिशानमढै ॥ जनुसिंधुअकाशनदीअरिकै । बहुभांतिमनावतपांपरिकै ॥ ३० ॥

टी०— त्योहीं कहे तत्कालही मोह कहे दुःख ॥ २६ ॥ २७ ॥ समुद्र-तटमें रामचंद्र तीनदिन डेरा किये रहे जब समुद्र राह नहीं दियो तब समुद्र-को शोषिवेके लिये कोप करि रामचंद्र बाण लियो इति कथाशेषः ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ समुद्रको जल उछरि आकाशको चढत है सो मानहु समुद्र पायन परिकै आकाशगंगाको मनावत है ॥ ३० ॥

मू०—बहुब्योमबिमानतेभीजिगये । जलजोरभयेअँगरागमये ॥ सुरसागरमानहुयुद्धजये । सिगरेपटभूषणलूटिलये ॥३१॥ अतिउच्छलिछिंछिछित्रिकूटछयो । पुररावणकेजलजोरभयो ॥ तबलंकहनूमतलाइदई । नलमानहुआइबुझाइलई ॥ ३२ ॥ लगिसेउजहांतहँशोभगहे । सरितानिकेफेरिप्रवाहबहे ॥ पतिदेवनदीरतिदेखिभली । पितुकेघरकोजनुरूसिचली ॥ ३३ ॥ सबसागरनागरसेतुरची । बरणैबहुधायुतशक्रशची ॥ तिलकावलिसीशुभशीशलसै । मणिमालकिधौंउरमेंविलसै ॥ ३४ ॥ तारकछंद ॥ उरतेशिवमूरतिश्रीपतिलीन्ही । शुभसेतुकेमूलअधिष्ठितकीन्ही ॥ इनकेदरशैपरशैपगजोई । भवसागरकेतरिपारसो होई ॥ ३५ ॥

टी०— जल जोर भये सो बहुत ब्योम आकाशमें देवतनके विमान भीजि गये ग कहे जो अंगनमें लग्यो कुंकुमादि लेप है तासों रये कहे युक्त पट औ भूषण बहि आये हैं सो मानों सुर जे देवता हैं तिनको सागर युद्धमें जीत्योहै सो मानों लूटि लीन्हो है इहां पट भूषणनको बहि आइबो बिषय कहे उपमेय है सो अनुक्त है तासों अनुक्त बिषय वस्तूत्प्रेक्षा है ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ सेतुमें लगिकै जहां तहां सोभरयेन जे सरितनके प्रवाह हैं ते फेरि कहे उलटिकै बहन लगे सो पाँय परि परि मनावत हैं ऐसी भली कहे बड़ी रति प्रीति पतिकी समुद्रकी देवनदी आकाशगंगामें देखिकै मा-

नों आपने पिताके घरको रूसि चली हैं ॥ ३३ ॥ नागर श्रेष्ठ ॥ ३४ ॥ उरते अर्थ विचारते जो वस्तु करिबो होत है ताको बिचार प्रथम मनहीं-मो आवत है ॥ ३५ ॥

मू०– दोहा ॥ सेतुमूलशिवशोभिजै, केशवपरमप्रकाश ॥ सागरजगतजहाजको, करियाकेशवदास ॥ ३६ ॥ तारकछंद ॥ शुकसारणरावणदूतपठायो । कपिराजसोंएकसँदेशसुनायो ॥ अपनेघरजैयहुरेतुमभाई । यमहूंपहँलंकलईनहिंजाई ॥ ३७ ॥ सुग्रीव० ॥ भजिजैहौंकहांनकहूंथलदेखों । जलहूंथलहूंरघुनायकपेखों ॥ तुमबालिसमानसहोदरमेरे । हतिहौंकुलस्योंतिनप्राणनतेरे ॥ ३८ ॥ सबरामचमूतरिसिंधुहिआई । छबिऋक्षनकीधरअंबरछाई ॥बहुधाशुकसारणकोजोबताई। फिरिलंकमनोंबर्षाऋतुआई ॥ ३९ ॥

टी०– संसार सागरको जो जहाज रामनाम है ताके करिया कहे केवट जे शिव हैं जैसे केवट जहाजमें चढाइ समुद्रपार करत हैं तैसे शिव मरणकाल काशीमें रामरूपी तारक मंत्र जहाजपर चढाइ संसारपार करतहैं ते सेतुके मूलमें परम प्रकाश कहे प्रसन्नतासों शोभित हैं जो जहाजपर चढाइ पार करत है सो आपने प्रभुसों सेतुपर चढाइ पार करिबेको अधिकार पाइ प्रसन्न भयोई चाहै इतिभावार्थः ॥ ३६ ॥ ३७॥ ता रावणके संदेशमें सुग्रीवको भाई कह्यौ ताको जवाब सुग्रीव दियो कि रावणसों कहियो कि तुम बालिके समान हमारे भाई हौ तासों तुम्हारो बध उचित है ॥ ३८ ॥ जा रामचमूको काहू नीके प्रकारसों सुग्रीवादि वीरनको शुकसारण दूतसों बहुधा बहुत प्रकारसों बताई कहे बतायो रहै अर्थ वर्णन कर्यो है सो तुलसीकृत रामायणमें रावणसों शुकसारण कह्यौ है कि ॥ असमैंश्रवणसुनाद-शकंधर । पदुमअठारहयूथपबंदर ॥ अथवा जा प्रकार शुकसारणको बतायो है सो आगे कवित्तमें वर्णन है सो रामचमू सिंधुको तरि कहे उतरिकै लंकामें आई है सो भू आकाशमें ऋक्ष मेघसम श्याम शोभित हैं सो मानों फेरि हेमंत ऋतुमें वर्षा ऋतु लंकामें आई है ॥ ३९ ॥

मू०-- दण्डक ॥ कुंतलललितनीलभृकुटीधनुषनैनकुमुदक टाक्षबाणसबलसदाईहै। सुग्रीवसहिततारअंगदादिभूषणमध्य देशकेशरीसुगजगतिभाईहै ॥ विग्रहानुकूलसबलक्षलक्षऋक्षब लऋक्षराजमुखीमुखकेशवदासगाईहै । रामचन्द्रजूकीचमूराज्य श्रीविभीषणकीरावणकीमीचुदरकूचचलिआईहै ॥ ४० ॥

टी०-- रामचन्द्रकी चमू कैसी है कि कुंतल औ ललित औ नील औ भृकुटी औ धनुष औ नयन औ कुमुद औ कटाक्ष औ वाण औ सबलई जे वानर हैं ते सदा हैं जामें अथवा वाणपर्यंत इन नामन करिकै युक्त औ सदा सबल कहे बलवान ऐसे जे वानर ऋक्षहैं तेहैं जामें औ सुग्रीव सहित है औ तार नामा जे वानर हैं तिन सहित है औ अंगदादिक जे भूषण कहे सेना-नायक हैं तिनसों युक्त है औ मध्यदेशनामा औ केशरीनामा औ सुगजना-मा जे वानर हैं तिनकी गति भाई कहे नीकी है जामें औ विग्रहनामा औ अनुकूलनामा औ ऋक्षराजमुखी कहे ऋक्षराज जे जाम्बवंत हैं ते हैं मुख कहे मुखिया जामें ऐसो लक्ष लक्ष कहे अनेक लक्ष ऋक्षन ऋक्षनकोहै बल सैन्य जामें बिभीषणकी राज्यश्री कैसी है कि कुंतल जे केश हैं ते हैं ललित कहे सुंदर औ नील कहे श्याम जाके औ भृकुटी धनुषसम जाकी औ नयन हैं कुमुद कहे कमलसम जाके औ कटाक्ष हैं वाणसम जाके औ सबल कहे सुंदरता सहित सदा हैं अर्थ जाकी छबि काहू समयमों म्लानि नहीं होति॥ बलं गंधरसे रूपे इति मेदिनी ॥ औ सुष्ठु जो ग्रीवा है सो सहित है तार कहे विमल मुक्तनसों अर्थ मोतिनकी माला पहिरे हैं ॥ तारो निर्मलमौक्तिके-मुक्ता सुद्धावुच्चनादे इत्यभिधानचिंतामणिः ॥ औ अंगद जो बिजायठ है तेहि आदिदै जे भूषण हैं तिनसों युक्त है औ मध्यदेश जो कटि है सो है केशरी कहे सिंहको ऐसो जाको औ सुष्ठु जो गज है अर्थ जो अति ललित चाल चलत है ताकी ऐसी गति है भाई कहे नीकी जाकी औ विग्रह कहे शरीर है अनुकूल कहे यथोचित सब कहे पूर्ण अर्थ जैसो जौन अंग चाहिये तौन अंग तैसोई है अथवा अनुकूल कहे हित है सबको अर्थ जे देखत हैं ताको मन बश ह्वै जात है अथवा अनुकूल कहे व्याधि रहित 'गात्रं वपुःसंह-

ननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः इत्यमरः ॥ औ लक्ष लक्ष जे ऋक्ष नक्षत्र हैं गन कहे जो बल सौंदर्य है तेहि सहित जो ऋक्षराज चन्द्रमा है ताके सदृशहै मुख जाको अर्थ जब अनेक लक्ष नक्षत्रनकी शोभा लैके चन्द्रमा आपु धारण करै तब जाके मुखके सम होय ॥ ऋक्षस्तुस्यान्नक्षत्राक्षभल्लयोः इत्यभिधानचिंतामणिः ॥ रावणकी मीच कैसी है कि कुंत जो बरछी है सोहै ललित कहे लचकति जाके अर्थ बरछी हाथमें लिये है अथवा कुंतलजो भालाहै सो है ललित कहे अति तीक्ष्ण जाको अर्थ हथियारको धरे है ॥ कुंतलोभल्लकेशयोरित्यभिधानचिंतामणिः ॥ औ नील कहे श्यामवर्ण है औ भृकुटी भौंह हैं धनुषसम विकराल जाकी इहां कवि क्रूर स्त्री करि वर्णत है तासों भौंहनकी धनुषकी क्रूरता धर्म करि साम्य जानौ औ नयन हैं कुमुद कहे कुत्सित है मुद आनंद जिनमें ऐसे हैं जाके अर्थ रावणके वधको आनंद है बिभीषणके राज्यलाभादि उत्सवको आनंद नहीं है अथवा नयन हैं कुमुद कहे मुद जो आनंद है प्रसन्नता इति तासों रहित अर्थ अतिकोपसों अरुण अति विकराल हैं प्रशस्त नहीं हैं औ कटाक्षहैं वाणसम कराल जाके औ सबल कहे बुद्धिबल सहित सदा हैं इहां बलपदते बुद्धिबल जानौ अर्थ बुद्धिबलसों सीताहरणादि कार्य कराइ रामचन्द्रसों विरोध कराइ दियो तार कहे उच्चस्वर करिकै सहित है सुष्टु ग्रीवा जाकी सुष्टु पदको अर्थ यह कि ऐसी उच्चस्वर करिबेकी शक्ति और काहूकी ग्रीवामें नहीं है औ अंगद जो विजायठ हैं ते है आदि भूषण कहे नहीं हैं अर्थ मुंडमालादि क्रूर भूषण पहिरे हैं औ मध्य कहे अधम अनुत्तमेति हैं देश कहे जाके अंग ॥ मध्यंविलग्नेन स्त्रीस्यान्नयाय्येंऽतरेधमे ऽपिचेति मेदिनी ॥ औ केशरी जो सिंह है ताकी गजपर ऐसी गति भाई है जाको अर्थ जैसे गजके मारिबेको सिंह चलत है तैसे रावणके मारिबेको चली आवति है औ रामचन्द्रको जो विग्रह विरोध है सोई है अनुकूल हित जाको अर्थ रामचन्द्रके विरोधहीसों है कार्यसिद्धि जाकी औ सब कहे पूर्ण अनेकलक्ष जे ऋक्ष भालु हैं तिनको है बल जाके औ ऋक्षराज जे जाम्बवंत हैं तिनको ऐसो है मुखजाको ॥ ४० ॥

मू०– हीरकछंद ॥ रावनशुभश्यामलतनुमंदिरपरसोहियो ।

मानहुदशशृंगयुतकलिंदगिरिबिमोहियो ॥ राघवशरलाघवगति छत्रमुकुटयोंहयो । हंससबलअंशसहितमानहुउड़िकैगयो ॥४१॥ लज्जितखलतज्जिसुथलभज्जिभवनमेंगयो । लक्षणप्रभुतक्षण गिरिदक्षिणपरसोभयो ॥ लंकनिरखिअंकहरषिमर्मसकलजोल ह्यो । जाहुसुमतिरावणवहअंगदसनयोंकह्यो ॥ ४२ ॥ चंचला छंद ॥ रामचन्द्रजूकहंतस्वर्णलंकदेखिदेखि । ऋच्छबानरालि घोरओरचारिहूंबिशेखि॥ मंजुकंजगंधलुब्धभौंरभीरसीबिशाल । केशवदासआसपासशोभिजैमनोमराल ॥ ४३ ॥

टी०— सबल कहे अनेकरंगमिश्रित हैं अंशु कहे किरण जाके ऐसे जे सूर्य हैं तिन सहित मानों कलिंदगिरि शृंगते हंस कहे हंस समूह उडिगयो है यहां जातिबिषे एक बचन है हंसनके सदृश श्वेत छत्र है औ सूर्यनके सदृश अनेक रंग नग जटित मुकुट हैं ॥४१॥ दक्षिण गिरि कहे समुद्रके दक्षिण कूलकी गिरि समुद्र पारको गिरि इति मर्म भेद ॥ ४२ ॥ भौंर भीर सम ऋच्छ हैं मराल हंस सम बानर हैं ॥ ४३ ॥

मू०— ताम्रकोटलोहकोटस्वर्णकोटआसपास । देवकीपुरी घिरीकिपर्बतारिकेविलास ॥ बीचबीचहैंकपीशबीचबीचऋक्षजाल । लंककन्यकागरेकिपीतनीलकंठमाल ॥ ४४ ॥ इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणि श्रीरामचन्द्रचंद्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांरामसैन्यसमुद्रतरणंनामपंचदशः प्रकाशः ॥ १५ ॥

टी०— अर्थ इंद्रकी शत्रुतासों मानों पर्वतन देवपुरीको घेरि लियो है देवपुरी सदृश स्वर्णकोट है जाके मध्यमों पुरी है औ ताके आस पास ताम्रादिके कोट हैं ते पर्वत समान हैं यासों या जनायो कि लंका देवपुरी सम है ४४ इति श्रीमजग्गजननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायांपंचदशः प्रकाशः ॥ १५ ॥

मू०— दोहा ॥ यहबर्णनहैषोड़शे, केशवदासप्रकाश । रावण

कवैरिपुजीत्योमहा । बालिबलीछलसोंभृगुनंदनगर्वसहोद्विज दीनमहा ॥ दीनसोक्योंक्षितिछत्रहत्योबिनप्राणनिहैहयराज कियो। हैहयकौनवहैबिसरयोजिनखेलतहीतुम्हैंबांधिलियो॥१२

टी०— जा स्त्रीके संग राज्याभिषेक होइ सो देवी कहावै ॥ देवी कृताभिषे-कायांइत्यभिधानचिंतामणिः ॥१०॥ कल्पांतके अंतमें ब्रह्मा सृष्टि रचत हैं विष्णु रक्षा करत हैं सो ताहि कहे लोक सृष्टिको औ देवेश इन्द्र औ विष्णु औ ब्रह्मा-दि दै जे देव हैं तिन्हैं रुद्र जे महादेव हैं ते भ्रू जो भौंहहै ताके भंगही टेढी करनेहींसों संहारकालमों संहारकरि डारत हैं ॥११॥ छत्र कहे छत्रवर्णः॥ १२॥

मू०— अंगद-विजयछंद ॥ सिंधुतरयोउनकोबनरातुमपैध नुरेषगईनतरी । बांध्योइबांधतसोनबंध्योउनबारिधिबांधिके बाटकरी ॥ अजहूंरघुनाथप्रतापकीबाततुम्हैंदशकंठनजानिप री । तेलनितूलनिपूंछिजरीनजरीजरिलंकजराइजरी ॥ १३ ॥ मेघनाद ॥ छांड़िदियोहमहींवनरावहपूंछकीआगनलंकजरी । भीरमेंअक्षमरयोचपिबालकवादिहिंजाइप्रशस्तिकरी ॥ ताल विंधेअरुसिंधुबँधेयहचेटकविक्रमकौनकियो । वानरकोनरकोव पुरापलमेंसुरनायकबांधिलियो ॥ १४ ॥

टी०— बांध्योइ कहे हनुमानको बंधन तुम काहूविधिसों करिबोहू करयौ ताहूपर बांधत ना बन्यौ तेल औ तूल कहे रुईयुक्त जो वस्तु होतिहै सो विशेष जरति है सो या प्रकारकी पूंछ तुम करी सो ना जरी औ केवल सुवर्ण औ रत्ननमें अग्नि ज्वलित नहीं होति परंतु तुम्हारी लंका तृणादि रहित केवल रत्नादिक जरायसों जरी जरत भई रामके प्रभावसों ऐसी अनहोनी बातैं होती हैं ताहूपर तुम्हैं नहीं जानि परतो इतिभावार्थः ॥ १३ ॥ वादि कहे वृथा प्रशस्ति कहे स्तुति सप्ततालवेध्यौ औ सिंधु बांध्यो यह चेटक कहे भगरविद्या है सरस्वती उक्तार्थः ॥ जो रामचन्द्र तालवेधन सिंधु-बंधन करयौ सो तो चेटक कहे भगरविद्यासम है अर्थ खेलसम है यामें कौन विक्रम कहे अतिबल कियोहै ॥ विक्रमस्त्वति शक्तिता इत्यमरः ॥ अर्थ

वै चाहैं तौ त्रैलोक्यको संहार करि डारैं सिंधुबंधादि सदृश कर्मनमें उनको
कौन श्रम है ऐसे प्रवल वै ना होते तौ जिन हम पलमें सुरनायकको बांधि
लियो ते बानर औ नरको वपुरा ह्वै जाते अर्थ हम इन्द्र लोकादिमें जाइकै
इन्द्रादिको जीत्यौ औ वै हमपर चढ़ि आये हैं हम वपुरासम कछू करि नहीं
सकत अथवा वपुरा समुझि हमपर चढ़ि आये हैं ॥ १४ ॥

**मू०- अंगद ॥ चेटकसोंधनुभंगकियोप्रभुरावरेकोअतिजी
रनहो । वाणसमेतरहेपचिकैतुमजासहँपैनतज्योथलुहो ॥ वा
णसुकौनवलीवालिकेसुतवैबलिबावनबांधिलियो । ओईसोतै
जिनकीचिरचेरिननाचनचाइकैछांड़िदियो ॥ १५ ॥ रावण ॥
नीलसुखेनहनूउनकेनलऔरसबैकपिपुंजतिहारे। आठहुआठदि
शावलिदैअपनोपदुलैपितुजालगिमारे ॥ तोसेसपूतहिजाइकै
वालिअपूतनकीपदवीपगुधारे । अंगदसंगलैमेरोसबैदलआजु
हिक्योंनहनैबपमारे ॥ १६ ॥ दोहा ॥ जोसुतअपनेबापको, बैर
नलेइप्रकाश। तासोंजीवतहीमरयो, लोगकहैंतजित्राश ॥ १७ ॥**

टी०- कवित्वमें उक्ति मेघनादकी है औ जबाब रावणको अंगद दियो
ता जबाबहीसों या जानो कि रामचन्द्र सिंधुबंधनादि सम शंभुधनुष भंग
चेटकहीसों कियो है यहबात रावण कह्यो है अंगद कहत हैं कि प्रभु जे राम
चन्द्र हैं तिन चेटकसों धनुषभंग कीन्हों औ तुम कहत हौ कि जीरण को
पुरानो रहे परंतु तुमको पुरानो तौ रहे पै वाणसमेत तुम पराक्रम करि
पचिकै कहे थकिकै रहिगये ताहू पर थलहू ना छोंड्यो अर्थ रंच ना उक्यो ॥१५॥
नील, सुखेन, हनुमान औ सुग्रीव औ राम लक्ष्मण औ विभीषण ये
जे आठ हैं सरस्वती उक्तार्थः ॥ नील सुखेनादि चारि वानर उनके सुग्रीव
के हैं ते वालिके भयसों भागे रहैं तब तिनहींके संग रहे यासों या जनायो
कि जो रामचन्द्र आज्ञाहू करैं औ मोहसों वै तिहारो राज्य न दियो चाहैं
तौ सब वानर तेरेई साथी ह्वै हैं तासों तू आठहू आठ दिशा वलिद जे
रामचन्द्र हैं आठ दिशनके आठौ जे इन्द्रादि दिक्पाल हैं ते हैं वलिद कहे
हे भेंटके दाता जिनके अर्थ इंद्रादि दिक्पाल जिनको भेंट देत हैं तिनहीं

सों आपनो पद जो राज्य है ताको ले जाके लिये सुग्रीव तिहारे पितुको मारिडारचौ है काहेते राज्य तिहारे पिताको है रामचन्द्र मर्यादापुरुषोत्तम हैं जो तू कहि है तौ तोंको विशेष दे हैं । बलिर्दैत्योपहारयोरित्यभिधान-चिंतामणिः ॥ बपमारे कहे जो तेरे बापको मारचौ है ॥ १६ ॥ १७ ॥

मू०-अंगद ॥ इनकोबिलगुनमानिये, कहिकेशवपलआधु । पानीपावकपवनप्रभु, ज्योंअसाधुत्योंसाधु ॥ १८ ॥ रावण ॥ द्रुतबिलंबितछंद ॥ उरसिअंगदलाजकछूगहौ । जनकघातक बातवृथाकहौ ॥ सहितलक्ष्मणरामहिँसंहरौ । सकलवानरराज तुह्मैंकरौ ॥ १९ ॥

टी०- बिलगु कहे द्वेष साधु कहे भलो असाधु कहे बुरो ॥ १८ ॥ जनक पिता सरस्वती उक्तार्थः ॥ हे अंगद तुम रामचन्द्रसों मिलिबेको हमको कहत हौ यामें तुमको कछू लाज नहीं होति ऐसी बात कहि कछू लाज तौ उरमें गहौ काहेते कि तुह्मारे जनक वालि तिनके जे घातक रामचन्द्र हैं तिनकी बात वृथा है यह तुम कहौ अर्थ रामचंद्रकी बात वृथा नहीं होति जो मनमें संकल्प करत हैं सो करिबोई करत हैं यासों या जनायो कि अति बली बालिके बध करिबेको संकल्प कियो सो बध करिबोई कियो तैसे वैतो हमारे मारिबेको संकल्प करैहैं यह संकल्प वृथा काहू उपावसों न ह्वै है तासों मैं लक्ष्मण सहित रामहिंसों संहरौं कहे संहार नाशको प्राप्त होत हौं अर्थ लक्ष्मणसहित राम मोहिं मारतही हैं नाहीं तो ऐसो हित सीख तुमको दियो है जासों सब बानरनको राजा तुमको करों अर्थ सुग्रीवसों छोरि तुह्मारो राज्य तुह्मैं देऊं अथवा जनकघातक जे सुग्रीव हैं तिनकी बात वृथा कहत हौ अर्थ जो तुह्मारे पिताको मारचो ताकी तुम बड़ाई वृथा करत हौ मैं लक्ष्मणसहित राम करिकै संहरौं कहे नाशको प्राप्त होत हौं नाहीं तो सुग्रीवको मारि सब बानरनको राजा तुमको करौं ॥१९॥

मू०- अंगद-निशिपालिकाछन्द ॥ शत्रुसबमित्रहमचित्तप हिचानहीं । दूतविधिनूतकबहूंनउरआनहीं ॥ आपमुखदेखि अभिलाषअभिलाषहू । राखिभुजशीशतबऔरकहँराखहू॥२०॥

रावण–इन्द्रबज्राछन्द ॥ मेरीबड़ीभूलसोकाकहौंरे । तेरोकह्योदूतसबैसहौंरे ॥ वैजोसबैचाहततोहिंमारयो । मारोंकहांतोहिंजोदैवमारयो ॥ २१ ॥ अंगद–उपेन्द्रबज्राछन्द ॥ नराचश्रीरामजहींधरैंगे । अशेषमाथेकटिभूपरैंगे ॥ शिखाशिवाश्वानगहेतिहारी । फिरैंचहूंवोरनिरैंबिहारी ॥ २२ ॥

टी०– तुह्मारी जो यह नूत कहे नवीन दूतविधि कहे दूतता तोर फोर है ताको कबहूं न उरमें आनि है पाइ है ॥ २० ॥ २१ ॥ नराच वान निरैबिहारी रावणको संबोधन है अथवा शिवा औ श्वान औ और जेनिरै बिहारी काकादि हैं ते तिहारी शिखा गहे तिहारे शिरको लिये फिरैंगे ॥ २२ ॥

मू०–रावण भुजंगप्रयातछन्द ॥ महामीचुदासीसदापाँइधोवै । प्रतीहारह्वैकेकृपाशूरसोवै ॥ क्षपानाथलीन्हेरहैछत्रजाको । करैगोकहाशत्रुसुग्रीवताको ॥ २३ ॥ सकामेघमालाशिखीपाककारी । करैकोतवालीमहादंडधारी ॥ पढ़ैवेदब्रह्मासदाद्वारजाके । कहाबापुरोशत्रुसुग्रीवताके ॥ २४ ॥

टी०– अंगद कह्यो कि श्रीराम बाण धरिकै तुमको मारिहैं ताको उत्तर रावण दियो कि महामीचु जो है सो मेरे सदा पाइं धोइबेके अर्थ दासी है याते अति न्यून दासी जनायो एकशत एक मीचु हैं तामें शत अकालमीचु हैं एक महामीचु है शतमीचु उपायसों दूरि होतीं हैं एक महामीचु काहू उपायसों नहीं मिटति । यथा भावप्रकाशे । एकोत्तरं मृत्युशतमथर्वाणः प्रयच्छते । तत्रैकः कालसंयुक्तः शेषास्त्वागंतवः स्मृताः । यामों या जनायो कि युद्धादिमें मरिबो तो अकालमृत्यु है सो मेरे समीप कैसे आइ है ॥ २३ ॥ सका कहे सक्का पाककारी रसोईदार ॥ २४ ॥

मू०– अंगद–विजयछन्द ॥ पेटचढ़योपलनापलिकाचढ़िपालकिहूचढ़िमोहमढ़योरे । चौकचढ़योचित्रसारीचढ़योगजबाजिचढ़योगढ़गर्वचढ़योरे ॥ व्योमविमानचढ़योइरह्योकहिकेश-

वसौंकबहूंनपढ़्योरे । चेततनाहींरह्योचढ़िचित्तसौंचाहतमूढ़-चिताहूचढ़्योरे ॥ २५ ॥

टी०— प्रथमहिं पेटमें चढ़्यो कहे गर्भमें आयो जब जन्म भयो तब पलनामें चढ़िकै झूल्यो कछू और बड़ो भयो पलिका जो खट्वा है तामें चढ़ि सोवन लाग्यो औ जब ब्याह भयो तब पालकीमें चढ़ि ब्याहन चल्यो तब मोह जो माया है तामें मढ़्यो कहे युक्त भयो फेरि पाणिग्रहणमें चौकमें चढ़्यो फेरि स्त्रीके संग चित्रसारीमें चढ़्यो फेरि राजा ह्वैकै गजबाजिमें चढ़्यो औ गढ़पर चढ़्यो औ गर्वपर चढ़्यो अर्थ राज्याभिमान भयो औ जेहि कहे जाते अर्थ जाकी कृपासों ब्योममें विमानन पर चढ़्योई रह्यो अर्थ पुष्पकादि विमानन पर चढ़्यो आकाश आकाश फिरत रह्यो केशव कहत हैं कि सो जो वह प्रभु रामचन्द्र है ताको कबहूं न पढ़्यो अर्थ राम नाम कबहूं न जप्यो सो हे मूढ़! अब चिताहू पर चढ़्यो चाहत है ताहू पर तेरो चित्त चढ़ि रह्यो है कहे मत्त ह्वै रह्यो है तामें तू चेतत नहीं अर्थ चेत नहीं करतो चिताहूमें चढ़्यो चाहत है यह कहि या जनायो कि रामचन्द्र तोहिं शीघ्रही मारि हैं तासों उनके शरणमों जाइकै आपनो भलो करु ॥ २५ ॥

मू०— रावण—भुजंगप्रयातछंद ॥ निकार्योजोमैंपालियोराजजाको। दियोकाढ़िकैजूकहात्रासताको ॥ लियेबानरालीकहौंबाततोसों। सोकैसेलरैरामसंग्राममोसों ॥ २६॥ अंगद—विजयछन्द ॥ हाथीनसाथीनघोरेनचेरेनगाऊंनठाऊंकोठाउंबिलैहै। तातनमातनपुत्रनमित्रनवित्तनतीयकहींसंगरैहै ॥ केशव कामकोरामबिसारतओरनिकामनकामहिंऐहै । चेतिरेचेतिअजौंचितअन्तरअंतकलोकअकेलोईजैहै ॥ २७ ॥

टी०— रामचन्द्रके राज्याभिषेकको येतो बड़ो उत्सव तामें भरत घरमें नहीं रहे सो सुनिकै रावण याही समुझ्यो कि परस्पर स्वाभाविक बन्धु विरोध समुझि भरतकृत अभिषेकोत्सवभंग भयसों भरतको दशरथ निकारि दियो ह्वै है सो कहत हैं कि निकारो जो भैया भरत है ताने पिता करि करिकै दियो राज जाको काढ़िकै कहे देशसो निकारिकै लै लीन्हों ताको कहा

त्रास कहे रहै आशय यह कि जा भयसों दशरथ भरतको निकारिकै रामचन्द्रको राज्य दियो सोई आपने बलसों भरत रामचन्द्रसों छोरि लीन्हों औ देशसों निकारि दीन्हों तो जिनसों पिताको दियो राज्य न राखत बन्यो ते हमको मारिकै कहा हमारी राज्य छोरि हैं औ ताहू पर सैन्य बानरनको लिये हैं औ वेष यतीको धरे हैं यतिनको औ बानरनको काम लरिबेको नहीं है सरस्वती उक्तार्थः। संकल्प करिकै जो रामचन्द्र हमारो राज्य लियो औ हमकरिकै निकारो जो भाई बिभीषण है ताको दियो है ता बातको कहा हमारे आत्रास है अर्थ बड़ो त्रास है यह हम निश्चय जानत हैं कि रामचन्द्रको संकल्प निष्फल न ह्वै है हमसों राज्य छोरि बिभीषणको दे हैं और कहे अग्नि ताकी आली कहे समूह अर्थ जिनमों अति अग्नि है ऐसे बाण लिये हैं अथवा र कहे तीक्ष्ण जे बाण हैं तिनकी आली कहे पंक्ति समूह इति तिनको लिये हैं सो रामचन्द्रके संग्राममों मोसों कहे हम ऐसो प्राणी कैसे जुरै अर्थ हम उनके युद्ध करिबे लायक नहीं हैं । रस्तीक्ष्णे दहन इत्यभिधानचिंतामणिः । पुस्यालिविशदाशये त्रिषु स्त्रियां पस्यायां सेतौ पंक्तौ च कीर्त्तिता इत्यभिधान चिंतामणिः ॥ २६ ॥ वित्तधन ॥ २७ ॥

मू०– रावण–भुजंगप्रयातछंद ॥ डरैगाइबिप्रैअनाथैजोभाजै । परद्रव्यछोंड़ैपरस्त्रीहिलाजै ॥ परद्रोहजासोंनहोवैरतीको । सुकैसेलरैबेषकीन्हेंयतीको ॥ २८ ॥ ॥ दोहा ॥ गेंदकरेउमेंखेलको,हरगिरिकेशवदास । शीशचढ़ायेआपने,कमलसमानसहास ॥ २९ ॥

टी०– जे रामचन्द्र गाइ औ विप्रको डरात हैं अर्थ अति दीन गाइ औ बिप्र तिनहूंको डरात हैं तासों अति कादर हैं औ अनाथ जे प्राणी हैं जिनको नाथ कोऊ नहीं है ताहीको भजै कहे सेवन करत हैं अर्थ ताहीसों संग करत हैं यासों या जनायो कि भयसों रंचकहूं परद्रव्य नहीं लै सकत हमारो राज्य कैसे ले हैं औ परस्त्रीको लजात हैं यासों या जनायो कि जे स्त्रीको लजात हैं ते बीरनसों कहा धृष्टता करि हैं औ जिनसों परद्रोह कबहूं रत्तीहूभरि नाहीं ह्वै सकत आशय कि शत्रुता करते डेरात हैं औ ताहू पर बेष यती

तपस्वीको धरे हैं अर्थ बेषहू बीरको नहीं है सो मोसों कैसे लरि हैं सरस्वती उक्तार्थः मर्यादा पुरुषोत्तम हैं तासों ब्रह्मशाप गोशापको डेरात हैं भृगु लातहू मारयौ ताहू पर कछू ना कर्यौ अनाथ जे प्रह्लाद गजादि हैं तिनके निकट ही रहे जा भांति कष्ट भयो ताही विधि निकटबर्ती सम रक्षा कियो औ परद्रव्य परस्त्रीहरनमों पाप होत है तासों त्याग करत हैं औ परद्रोह जासों रत्तीहू भरि नाहीं होत यासों समदरशी जानौं सबको समान जानत हैं तिनसों हम कैसे लरैं अर्थ वे ईश्वर हैं बेष कहे रूप मात्र यतीको कीन्हें हैं ॥ २८ ॥ २९ ॥

मू०— अंगद--दंडक ॥ जैसोतुमकहतउठायोएकगिरिवरऐसेकोटिकपिनकेबालकउठावहीं । काटेजोकहतशीशकाटतघनेरेघाघमगरकेखेलेकहाभटपदपावहीं ॥ जीत्योजोसुरेशरणशापऋषिनारिहीकोसमुझहुहमाँद्विजनातेसमुझावहीं । गहौरामपायँसुखपाइकरैंतपीतपसीताजूकोदेहुदेवदुंदुभीबजावहीं ॥३०॥ रावण—बंशस्थछंद ॥ तपीजपीबिप्रानिछिप्रहीहरौं । अदेवद्वेषीसबदेवसंहरौं ॥ सियानदेहौंयहनेमजीधरौं । अमानुषीभूमिअवानरीकरौं ॥ ३१ ॥ अंगद—बिजयछंद ॥ पाहनतेपतिनीकरिपावनटूककियोहरकोधनुकोरे । छत्रबिहीनकरेउक्षणमेंक्षितिगर्वहर्यौतिनकेबलकोरे ॥ पर्वतपुंजपुरैनिकेपातसमानतरेअजहूंधरकोरे । होइँनरायणहूपैनयेगुणकौनइहांनरबानरकोरे ॥ ॥ ३२ ॥ रावण—चंचरीछंद ॥ देहिंअंगदराजतोकहंमारिबानरराजको । बांधिदेहिंबिभीषणैअरुफोरिसेतुसमाजको ॥ पूंछजारहिंअक्षरिपुकीपाइंलागहिंरुद्रके । सीयकोतबदेहुंरामहिंपारजाइंसमुद्रके ॥ ३३ ॥

टी०— घाघ कहे नटादि इंद्रजालिका ॥ ३० ॥ सरस्वती उक्तार्थः हे अंगद! हौं केशव हौं कि तपी औ जपी जे बिप्रहैं अथवा तपी औ जपी औ बिप्रनको छिप्रहीं हरौं कहौं कि तपी औ जपी जे बिप्र हैं अथवा तामें कछू

बिचार नहीं करत औ अदेव जे दैत्य जे राक्षस हैं तिनके द्वेषी शत्रु देवता हैं तिन्हैं छिप्रहीं संहरत हौं कहे मारतहौं यासों हौं बड़ो पापी हौं सो सियाको न देहौं यह नेम जो जीमें धरतहौं सो अब कहे या समयमों अमानुषी कहे नाहीं हैं मानुष्य जहां औ अनरी कहे नाहीं है कोऊ काहू को अरि शत्रु जहां ऐसी जो भूमि कहे स्थानहै विष्णुलोक ताको करो कहे साधत हौं । भूमिः क्षितौ स्थानमात्रे इति अभिधानचिंतामणिः । ब्रह्म दोष देवदोषादि बड़े पातकनसों छूटिबेको उपाव और नहीं है तासों सीताको नहीं देतो कि सीताके लिये आइके रामचंद्र मोहिं मारिहैं तौ सब पातकनसों छूटिकै विष्णुलोक जैहौं इति भावार्थः ॥ ३१ ॥ अजहूं कहे अवहूं अर्थ एतेहू पर तौ धरकौ कहर करो ॥ ३२ ॥ सरस्वती उक्तार्थः यामें प्रहस्तादि मंत्रिन- प्रति काकोक्ति है रावण कहत है कि हे अंगद! तुमतौ नीकी शिष देतहो परंतु प्रहस्तादि मंत्रिनकरि दी कर्मबश मेरी ऐसी दुर्मति है कि जब रामचंद्र येती बातैं करैं तब सीताको देहुं सो ऐसो काहेको कैहैं तासों दुर्मति कृत हमारी मृत्यु बिशेष सो ह्वै चुको यह निश्चय जानौं ॥ ३३ ॥

मू०—अंगद—लंकलाइगयो बलीहनुमंतसंतनगाइयो ॥ सिंधु बांधतशोधिकैनलक्षीरछींटबहाइयो । ताहितोहिंसमेतअंधउ- खारिहौंउलटीकरौं ॥ आजुराजकहांविभीषण बैठिहैं तेहितेड- रौं ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ अंगदरावणकोमुकुट, लैकरिउड़्योसुजा- न । मनोचलोयमलोकको, दशशिरकोप्रस्थान ॥ ३५ ॥ इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणि श्रीरामचंद्रचंद्रिकाया- मिंद्रजिद्विरचितायां अंगदरावणसंबादबर्णनं नाम षोडशः प्र- काशः ॥ १६ ॥

टी०— क्षीर कहे जल ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ इति श्रीमज्जगज्जननिजनक जानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशि- यां अंगदसंबादबर्णनं नाम षोडशः प्रकाशः ॥ १६ ॥

मू०— दोहा ॥ यासत्रहैंप्रकाशमें, लंकाकोअवरोध । शत्रूच- मूवर्णनसमर, लक्ष्मणकोपरबोध ॥ १ ॥ अंगदलैवासुकुटको, परे

रामकेपाइ । रामबिभीषणकेशिरसि,भूषितकियोबनाइ ॥ २ ॥

मू०- पद्धटिकाछंद ॥ दिशिदक्षिणअंगदपूर्वनील ॥ पुनि हनूमंतपश्चिमसुशील ॥ दिशिउत्तरलक्ष्मणसहितराम । सुग्रीव मध्यकीन्हेबिराम ॥ ३ ॥ सँगयूथपयूथपबलबिलास। पुरफिर-तिविभीषणआसपास ॥ निशिबासरसबकोलतसोध । यहिभां तिभयोलंकानिरोध ॥ ४ ॥ तबरावणसुनिलंकानिरोध । उपजो तनमनपरमक्रोध ॥ राख्योप्रहस्तहठिपूर्वपौरि । दक्षिणहिंमहोद-रगयोदौरि ॥ ५ ॥ भयोइंद्रजीतपश्चिमदुवार । हैउत्तररावणबलउ-दार ॥ कियोबिरूपाक्षथितिमध्यदेश । करैनरान्तकचहुंधामबेश ॥ ६ ॥ प्रमिताक्षराछंद ॥ अतिद्वारद्वारमहँयुद्धभये । बहुकू-च्छकँगूरनलागिगये ॥ तबस्वर्णलंकमहँशोभभई । जनुअग्नि-ज्वालमहँधूममई ॥ ७ ॥

टी०- अवरोध घेरनो औ बिभीषणकरि शत्रु जो रावण है ताके चमूको बर्णन है परमोधु मूर्छा ॥ १ ॥ २ ॥ रामचंद्रके औ लंकाके मध्यमें सुग्रीव बिश्राम कीन्हे हैं ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ छंद उपजातिहै ॥ ७ ॥

मू०- दोहा ॥ मरकतमणिकेशोभिजे,सबैकंगूराचारु ॥ आइगयोजनुघातको,पातकक्कोपरिवारु ॥ ८ ॥ कुसुमबिचित्रा छंद ॥ तबनिकसोरावणसुतशूरो । जेहिरनजीत्योहरिबलपू-रो ॥ तपबलमायातमउपजायो । कपिदलकेमनसंभ्रमछायो ॥ ९ ॥ दोधकछंद ॥ काहुनदेखिपरैवहयोधा । यद्यपिहैंसिगरे बुधिबोधा ॥ शायकसोंअहिनायकसाध्यो । सोदरस्योरघुना-यकबांध्यो ॥ १० ॥ रामहिंबांधिगयोजबलंका । रावणकी सिगरीगईशंका । देखिबंधेतबसोदरदोऊ । यूथपयूथत्रसेसब-कोऊ ॥ ११ ॥ स्वागताछंद ॥ इंद्रजीततेहिलैउरलायो । आ-जुकाजसबभोमनभायो ॥ कैबिमानअधिरूढ़तिधाये । जानकी

हिरघुनाथदेखाये ॥ १२ ॥ राजपुत्रयुतनागनिदेख्यो । भूमियुक्ततरुचंदनलेख्यो ॥ पन्नगारिप्रभुपन्नगसाई । कालचालि कछुजानिनजाई ॥ १३ ॥ दोहा ॥ कालसर्पकेकवलते,छोरतजिनकोनाम ॥ बँधेतेब्राह्मणबचनबश,मायासर्पहिराम ॥ १४ ॥

टी– कगूरनमें ऋक्ष लपटे हैं तासों मानों मरकत मणिहींके कगूरा शोभित हैं पातक देवदोष ब्रह्मदोषादि ॥ ८ ॥ हरि इन्द्र ॥ ९ ॥ बुद्धि बोधा कहे बुद्धियुक्त ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ तेहिँ रावण इंद्रजीतको उरमें लगायो ॥ ॥ १२ ॥ भूमिमें युक्त कहे गिरे चंदन वृक्षहू नागयुक्त रहत हैं दुःखयुक्त सीता यह कहत भई कि हे पन्नगारिप्रभु ! हे पन्नगासांई पन्नग जे सर्प हैं तिनके अरि कहे भक्षक जे गरुड़ हैं तिनके तुम स्वामी हौ यासों या जनायो कि तुह्मारे बाहन जे गरुड़ हैं. ते अनेक सर्प भक्षण करतहैं औ पन्नगसाईं ! कहि या जनायो कि तुम सदा सर्प ही पर सोयो करत हौ ते तुम नागपासमें बाँधे हौ तौ काल जो समय है ताकी चाल कछू जानि नहीं परति बलाबल समय ही नत उन्नतको उन्नत नत करत है इति भावार्थः ॥ १३ ॥ १४ ॥

मू०– स्वागताछंद ॥ पन्नगारितबहींतहँआये । व्यालजालसबमारिभगाये ॥ लंकमांझतबहींगइसीता । शुभ्रदेहअवलोकिसुगीता ॥ १५ ॥ गरुड़--इंद्रबज्राछंद ॥ श्रीरामनारायणैलोककर्त्ता । ब्रह्मादिरुद्रादिकेदुःखहर्त्ता ॥ सीतेशमोकोकछूदेहुशिक्षा । नान्हींबड़ीईशजोहोइइक्षा ॥ १६ ॥ राम ॥ कीबहुतोकाजसबैसोकीन्हों । आयेइहांमोकहंसुक्खदीन्हों ॥ पांलागि बैकुंठप्रभाविहारी । स्वर्लोकगोतत्क्षणबिष्णुधारी ॥ १७ ॥ इंद्रबज्राछन्द ॥ धूम्राक्षआयोजनुदंडधारी । ताकोहनूमंतभयेप्रहारी ॥ जितेअकंपादिबलिष्टभारे । संग्राममेंअंगदवीरमारे ॥ १८ ॥ उपेंद्रबज्राछंद ॥ अकंपधूम्राक्षहिजानिजूझ्यो । महोदरैरावणमंत्रबूझ्यो ॥ सदाहमारेतुममंत्रबादी । रहेकहाहैअतिहीबिषादी ॥

टी०— ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ छंद उपजाति है ॥ १८ ॥ बिषादी कहे दुखी उदासीन इति ॥ १९ ॥

मू०— महोदर ॥ कहैजोकोऊहितवंतबानी । कहौसोतासों अतिदुःखदानी ॥ गुनौनदावैबहुधाकुदावै ॥ सुधीतबैसाधत मौनभावै ॥ २०० ॥ कहौशुक्राचार्य्यसुहौंकहौंजू । सदातुह्मा रोहितसंग्रहौंजू ॥ नृपालभूमैविधिचारिजानौं । सुनोमहाराजस-बैबखानौं ॥ २१ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ यहैलोकएकैसदासाधि जानै । वलीबेनज्योंआपुहीईशमानै ॥ करैंसाधनाएकपरलोक-हीको । हरिश्चन्द्रजैसेगयेदैमहीको ॥ २२ ॥ दुहूंलोककोएकसा-धैंसयाने । बिदेहीनज्योंवेदबानीबखाने ॥ नटैलोकदोऊहठीएक ऐसे । त्रिशंकैहँसैज्योंभलेऊअनैसे ॥ २३ ॥ दोहा ॥ चहूंराज-केमैंकहे, तुमसोंराजचरित्र ॥ रुचैसोकीजैचित्तमें, चिंतहुमित्रअ-मित्र ॥ २४ ॥ चारिभांतिमंत्रीकहे, चारिभांतिकेमंत्र ॥ मोहिं सुनायोशुक्रजू, सोधिसोधिसबतंत्र ॥ २५ ॥

टी०— जो कोऊ तुह्मारे हितकी बात कहत है तासों कहे प्राणीको तुम दुखदा कहे दुखदायक कहत हौ अथवा दुखदानी कहे कटुबाद कहत हौ औ दांव कुदांव कहे समय कुसमयको गुनत नहीं हौ अर्थ जा समय मों-को करिबो उचित है ताको बिचार नहीं करत हौ आपने मनहींकी करत हौ तासों अथवा दांवको नहीं गुनत हौ बहुधा कुदांवहींको गुनत हौ तासों सु-धि जे सुबुद्धि हैं मंत्री जन ते मौनभावको साधत हैं कहे चुप ह्वै रहत हैं ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ मित्र कहे हित अमित्र कहे अहितकी चिं-ता करौ कि कौन चरित्र हमको हित है कौन अहित है अथवा सब मंत्रिन मंत्र कह्यो है तामें मित्र अमित्रकी चिंता करौ कि कौन हितकी कहत है औ कौन अहितकी कहत है ॥ २४ ॥ चारि भांतिके मंत्री हैं औ चारि भांतिके मंत्र होत हैं तंत्र कहे सिद्धांत अथवा तंत्र शास्त्र ॥ २५ ॥

मू०— छप्पै ॥ एकराजकेकाजहतैंनिजकारजकाजे । जैसेर-

थनिकारिसबैमंत्रीसुखसाजे ॥ एकराजकेकाजआपनेकाजबिगारत । जैसेलोचनहानिसहीकविबलिहिनिवारत ॥ एकप्रभुसमेतअपनोभलोकरतदाशरथिदूतज्यों । एकआपनोप्रभुकोबुरोकरतरावरोपूतज्यों ॥ २६ ॥ दोहा ॥ मंत्रजोचारिप्रकारके, मंत्रिनकेजेप्रमान ॥ विषसेदाड़िमबीजसे,गुड़सेनींबसमान ॥ २७॥ चंद्रवर्त्मछंद ॥ राजनीतिमततत्त्वसमुझिये । देशकालगुणियुद्ध अरुझिये ॥ मंत्रिमित्रअरिकोगुणगहिये । लोकलोकअपलोकनबहिये ॥ २८ ॥

टी०— दाशरथि दूत अंगद औ हनुमान सीताको देहु तुमसों इत्यादि संधिकी बातैं कहि आपने प्रभुको काज साधत हैं औ युद्धमें आपनो मरण घातादि बचाइ आपनों हित करत हैं औ रावरो पूत युद्ध कराइ आपनी औ तुह्मारीऊ मृत्यु कियो चाहत हैं ॥ २६ ॥ बिषसे खातहूमें कटु औगुण जिनको मृत्युदायक है औ दाड़िम बीजसे खातहूमें मधुर औ गुण जिनको पुष्टि कर्त्ता है औ गुड़से खातमें मधुर गुण दुखद है औ नींबसे खातमें कटु गुण सुखद है ॥ २७ ॥ कहूं यहपाठ है कि और बिचार तत्त्व सब लहिये तौ; उपजाति चंद्रवर्त्म छंद जानौं ॥ २८ ॥

मू०— रावण ॥ चारिभांतिनृपतातुमकहियो ॥ चारिमंत्रिमतमैंमनगहियो ॥ राममारिसुरएकनबचिहैं ॥ इंद्रलोकवसोवासहिरचिहैं ॥ २९ ॥ प्रमिताक्षराछंद ॥ उठिकैप्रहस्तसजिसेनचले ॥ बहुभांतिजाइकपिपुंजदले ॥ तबदौरिनीलउठिमुष्टिहन्यो । असुहीनागिर्‌योभुवमुंडसन्यो ॥ ३० ॥ बंशस्थाछंद ॥ महाबलीजूझतहींप्रहस्तको । चल्योतहींरावणमीड़िहस्तको ॥ अनेकभेरीबहुदुंदुभीबजें । गयंदक्रोधांधजहांतहांगजें ॥ ३१ ॥ सनीरजीमूतनिकासशोभहीं ॥ बिलोकिजाकोसुरसिद्धक्षोभहीं ॥ प्रचंडनैऋत्यसमेतिदेखिये । सप्रेतमानोंमहकाललेखिये ॥ ३२ ॥

बिभीषण-- बसंततिलकछंद ॥ कोदंडमंडितमहारथवंतजोहै। सिंहध्वजासमरपंडितवृन्दमोहै ॥ महाबलीप्रबलकालकराल- नेता। समेघनादसुरनायकयुद्धजेता ॥ ३३ ॥

टी०- रामचंद्रको मारिकै औ सुर देवता येकौ ना मोंसो बचिहैं अर्थ सब देवनहूंको मारिकै इंद्रलोकमें बसोंबास रचिहौ सरस्वती उक्तार्थः रामचंद्र जेहैं ते हमैं मारिकै एको देवता न बचिहैं कहे बाकी रहिहैं सब देवतनको बसो- बास इंद्रलोकमें रचिहैं अर्थ हमारे भयसों इंद्रलोकसों भागिकै देवता कंदरादिकनमों जाइ बसे हैं तिन्हैं निर्भय करिकै इंद्रलोकमें बसाइ हैं ॥ २९ ॥ छंद उपजाति है ॥ ३० ॥ ३१ ॥ सनीर कहे सजल जीमूत कहे मेघनके निकास सदृश शोभित है क्षोभहीं कहे डेरात हैं नैऋत्य राक्षस ॥ ॥ ३२ ॥ रामचंद्र पूंछ्यौ है इति कथा शेषःनेता कहे दंड कर्ता ॥ ३३ ॥

मू०--जोव्याघ्रवेषरथव्यघ्रनिकेतधारी। संरक्तलोचनकुबेरवि- पत्तिकारी ॥ लीन्हेत्रिशूलसुरशूलसमूलमानो। श्रीराघवेंद्रअति- कायवहैसोजानो ॥ ३४ ॥ जोकांचनीयरथशृंगमयूरमाली। जा- केउदारउरषण्मुखशक्तिशाली ॥ स्वर्धामधामहरकीरतिकैनजा- नी। सोईमहोदरवृकोदरबंधुमानी ॥ ३५ ॥ जाकेरथाग्रपरसर्प- ध्वजाविराजै। श्रीसूर्यमंडलबिडंवनज्योतिसाजै ॥ आखंडली- यवपुजोतनत्राणधारी। देवांतकैसोसुरलोकविपत्तिकारी ॥३६ जोहंसकेतुभुजदंडविषङ्गधारी। संग्रामसिंधुबहुधाअवगाहकारी॥ लीन्हींछँडाइजेहिदेवअदेववामा। सोईखरात्मजबलीमकरा- क्षनामा ॥ ३७ ॥

टी०- त्रिशूल कैसो है सुर जे देवताहैं तिनको मानौं समूल कहे पूर्णशूल कहे मृत्युहै। शूलोस्त्री रोगआयुधे मृत्युके तनयोगेषु इतिमेदिनी ॥ ३४ ॥ कांचनीयरथ कहे सुवर्णको रथ ताके शृंगमें अग्रभागमें मयूरनकी माला पंगति लगी है अर्थ मयूरध्वजी है जाकी शक्ति बरछी षटमुख जे स्वामिका- र्त्तिक हैं तिनके उदार कहे बड़े उरमें शाली कहे लगी है स्वः जो स्वर्ग है ताके

धाम धाम कहे घर घरको हर कहे हरणहार है अर्थ लूटनहार है ॥ ३५ ॥ श्रीसूर्यमंडलको विडंबन कहे निंदक जोति कहे तेजको साजत है रथ अथवा आप अथवा तनत्राण अखण्डलीय कहे इन्द्रको ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

मू०— भुजंगप्रयातछंद ॥ लगेस्यंदनैबाजिराजीबिराजैं । जिन्हैबेगकोपौनकोबेगलाजैं॥ भलेस्वर्णकीकिंकिणीयूथबाजैं । मिलेदामिनीसोंमनोमेघगाजैं ॥ ३८॥ पताकाबन्योशुभ्रशार्दूलशोभै । सुरेंद्रादिरुद्रादिकोचित्तछोभै ॥ लसैछत्रमालाहँसैसोमभाको । रमानाथजानौंदशग्रीवताको ॥ ३९ ॥ पुरद्वारछांड्यो सबैआपुआयो । मनोद्वादशादित्यकोराहुधायो ॥ गिरिग्रामलैलैहरिग्राममारै । मनोपद्मिनीपत्रदंतीबिहारै ॥ ४० ॥

टी०— दामिनीसम स्वर्णकिंकणीके यूथ कहे समूह हैं मेघसम रावणके श्याम घोड़े हैं यथा बाल्मीकीये । रथंराक्षसराजस्य नरराजोददर्शह ॥ कृष्णबाजिसमायुक्तं युक्तं रौद्रेण बर्चसा ॥ ३८ ॥ शार्दूल कहे व्याघ्र ॥ ३९ ॥ पुररक्षाके लये मेघनादादिको पुरद्वारमें छांड़िकै आप लरिबेको आयो है यथा बाल्मीकीये रावणोक्तिः । ततस्सरक्षोधिपतिर्महात्मा रक्षांसि तान्याहमहाबलानि । द्वारेषु चार्यागृहगोपुरेषु सुनिर्वृतास्तिष्ठतु निर्विशंकाः ॥ इहागतं मांसहितं भवद्भिर्वनौकसः छिद्रमिदं बिदित्वा । सून्यां पुरीं दुःप्रलहां प्रमथ्यप्रधर्षयेयुःसहसा समेताः ॥ विसर्जयित्वा सचिवांस्ततस्तान् गतेषु रक्षस्सयथानियोगे ॥ सो गिरि जे पर्वत हैं तिनके ग्राम कहे समूह लै लैकैहरि जे बानर हैं तिनको समूह मारत है तिन गिरि समूहनमें रावण पद्मिनी कमलिनी पत्रमें दंतीसम बिहार कौतुक करत है अर्थ गिरिग्राम रावणकी देहमें दंतीकी देहमें पद्मिनीपत्रसम लागत है ॥ ४० ॥

मू०— सवैया ॥ देखिबिभीषणकोरणरावणशक्तिगहीकररोषरईहै । छूटतहीहनुमंतसोंबीचहिंपूंछलपेटिकैडारिदईहै ॥ दूसरिब्रह्मकीशक्तिअमोघचलावतहीहाइहाइभईहै । राख्योभलेशरणागतलक्ष्मणफूलिकैफूलसीओढ़िलईहै ॥ ४१ ॥ स्रग्विनीछं-

द ॥ जोरहींलक्ष्मणैलेनलाग्योजहीं । मुष्टिछातीहनूमंतमाऱ्यो तहीं ॥ आशुहीप्राणकोनाशसोह्वैगयो । दंडद्वैतीनिमेंचेततोको भयो ॥ ४२ ॥ मरहट्टाछंद ॥ आयोडरिप्राणनिलैधनुबाणनि कपिदलदियोभगाइ ॥ चढिहनूमंतपररामचन्द्रतबरावणरोक्यो जाइ ॥ धरिएकबाणतबसूतछत्रध्वजकाटेमुकुटबनाइ ॥ लागे दूजोशरछूटिगयोबरुलंकगयोअकुलाइ ॥ ४३ ॥ दोधकछंद ॥ यद्यपिहैअतिनिर्गुणताई । मानुषदेहधरेरघुराई ॥ लक्ष्मणरामजहींअवलोक्यो ॥ नैननतेनरह्योजलरोक्यो ॥ ४४ ॥ राम ॥ वारकलक्ष्मणमोहिँबिलोको । मोकहँप्राणचलेतजिरोको ॥ हौंसुमिरौंगुणकेतिकतेरे । सोदरपुत्रसहायकमेरे ॥ ४५ ॥

टी०— फूलिकै प्रसन्न ह्वैकै ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ हनूमानसों प्राणनको डरिकै कपि दलको भगायो जाय तहां हनूमान क्यों न गये तौ जब रावण वा ठौरसों भागो तब लक्ष्मणको लै हनूमान रामचन्द्रके पास गये इतिकथाशेषः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

मू०— लोचनबाहुतुहींधनुमेरो । तूबलबिक्रमवारकहेरो ॥ तूबिनहौंपलप्राणनराखौं । सत्यकहौंकछुझूंठनभाखौं ॥ ४६ ॥ मोहिंरहीयतनीमनशंका । देननपाईविभीषणलंका ॥ बोलिउठौ प्रभुकोप्रणपारो । नातरुहोतहैमोमुखकारो ॥ ४७ ॥ विभीषण सुंदरीछंद ॥ मैंबिनऊंरघुनाथकरौअब । देवतजोपरिदेवनकोसब ॥ औषधिलैनिशिमैंफिरिआवहि॥ केशवसोसबसाथजिआवहि ॥४८॥ सोदरसूरकोदेखतहीसुख ॥ रावणकेपुरवैसिगरेसुख ॥ बोलसुनेहनुमंतकऱ्योप्रन । कूदिगयोजहँऔषधिकोबन ॥ ४९ ॥

टी०— बल कहे सैन बिक्रम पराक्रम ॥ ४६ ॥ प्रभु जो मैं हौं ताको बिभीषणको लंकदान रूपी जो प्रण है ताको पारो कहे पूरण करौ ॥ ॥ ४७ ॥ हे रघुनाथ! जो मैं बिनऊं कहे बिनती करत हौं सो तुम करो हे

देव ? सब मिलिकै परिदेवन जो बिलाप है ताको छौंड़ि देहु ॥ बिलापः प-रिदेवनमित्यमरः ॥ ४८ ॥ प्रथम कह्यो है कि औषधि लैकै निशिहीमें फिरि आवै ताको हेतु कहत हैं सोदर जे लक्ष्मण हैं सूर जे सूर्य हैं तिनको मुख देखतही रावणके सिगरे सुख पुरवैं कहे पूरित करिहैं अर्थ सूर्योदय भये लक्ष्मण न जीहैं या प्रकारको बिभीषणको बोल सुनिकै निशिहीमें हम औषधि ल्याइ हैं हनुमंत यह प्रण करयो ॥ ४९ ॥

मू०—रागषट्पद ॥ करिआदित्यअदृष्टनष्टयमकरौंअष्टबसु । रुद्र-नबोरिसमुद्रकरौंगंधर्बसर्वपसु ॥ बलितअबेरकुबेरबलिहिगहिदे-उंइन्द्रअब । बिद्याधरनिअबिद्यकरौंबिनासिद्धिसिद्धसब॥निजहो-हिदासिदितिकीअदितिअनिलअनलमिटिजाइजल । सुनिसूर-जसूरजउवतहींकरौंअसुरसंसारबल ॥ ५० ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ हन्योबिघ्नकारीबलीबीरबामैं । गयोशीघ्रगामीगयेएकधामैं ॥ च-ल्योलैसबैपर्बतैकैप्रणामैं ॥ नजान्योबिशल्यौषधीकौनतामैं ५१

टी०—रामचन्द्र सुग्रीवसों कहत हैं कि जो सूर्य उदयको प्राप्त होइं तौ जे-ते देवता हैं तिनकी सबकी आयुर्दशा करौं औ देवतनके शत्रु जे असुर दै-त्य हैं तिनको बल संसार भरेमों करि देउं अर्थ तीनों लोकमें दैत्यनको राज करिदेउं दिति दैत्यनकी माता अदिति देवतनकी माता ॥ ५० ॥ बा-म कहे कुटिल ऐसा जो हनुमानके सूर्योदय पर्यंत बेलंबाइबेके लिये क-पट तपस्वीको रूप धरे मगमें बैठो कार्यको बिघ्नकारी कालनेमि राक्षस है ताको मारिकै एकयामै पहैर गये कहे बीते औषधि पास गयो बिशल्यौ-षधी कहे बिशल्य करनी औषधी ॥ ५१ ॥

मू—लसैंऔषधीचारुभाब्योमचारी । कहैदेखियोंदेवदेवाधि-कारी ॥ पुरीभौमकीसीलियेशीशराजै । महामंगलार्थीहनूमंत गाजै ॥ ५२ ॥ लगीशक्तिरामानुजैरामसाथी । जड़ैह्वैगयेज्यों गिरैहैमहाथी ॥ तिन्हैंज्याइबेकोसुनोप्रेमपाली । चल्योज्वालमा-लीहिलैकीतिमाली ॥ ५३ ॥ किधोंप्रातहीकालजीमेंबिचाऱ्यो ।

चल्योअंशुलैअंशु,मालीसँहान्यो ॥ किधौंजातज्वालामुखीजोर लीन्हें । महाम्रत्युजामेंमिटैहोमकीन्हें ॥ ५४ ॥

टी०—वा पर्वतमें ज्वलित औषधी सोहती हैं ताको लै हनुमान ब्योमचारी आकाश मगगामी भयो देव औ देवाधिकारी गंधर्बादि अथवा देवदेव जे इन्द्र हैं तिनके अधिकारी जे देवता हैं अर्थ औषधिनकी रक्षामों जिन देवतनको इन्द्र अधिकार दियो है अथवा देवदेव इन्द्र औ मंत्रादिमें अधिकारी जे देवता हैं ते कहतहैं कि महामंगल कल्याणके अर्थी जे हनुमान हैं ते भौम जे मंगल हैं तिनकी पुरीहीको लिये जात हैं अनेक मंगल सम ज्वलित औषधी वृंद हैं मंगल पद श्लेष हैं कल्याण औ भौमको नाम है ॥ ५२ ॥ तिन्हैं कहे तिन लक्ष्मणको ज्याइबेको औषधिनके ज्वालाकी माली कहे समूह हैं जामें सो ज्वालमाली कहावै ऐसा जो पर्वत है ताहीको लैकै चल्यो है अर्थ ज्वलित हैं औषधिवृंद जामें ऐसो जो औषधिपर्वत द्रोणाचल है ताहीको लिये जात हैं अथवा ज्वालकी है माली समूह जामें ऐसी जो विशल्य करनी औषधि है ताहीको लै चल्यो है अथवा ज्वालमाली जे अग्नि हैं तिनको लै चल्यो है कीर्तिमाली हनूमानको विशेषण है ॥ ५३ ॥ औ प्रातहि कहे सूर्योदय होतही लक्ष्मणको काल कहे मृत्यु जीमें बिचारयो है सो अंशुमाली जे सूर्य हैं तिनको संहारि कहे मारिकै सूर्यके अंशु कहे किरण अथवा प्रभाव लिखे जातहैं जामें सूर्योदय ना होइ ॥ अंशुः प्रभा किरणयोरिति मेदिनी ॥ ५४ ॥

मू०—बिनापत्रहैपत्रपालाशफूले । रमैंकोकिलासीभ्रमैंभौंरभूले ॥ सदानंदरामैंमहानंदकोलै । हनूमंतआयेबसंतैमनोंलै ॥ ५५ ॥ मोटनकछंद ॥ ठाढ़ेभयेलक्ष्मणमूरिछिये । दूनीशुभशोभशरीरलिये ॥ कोदंडलियेयहबातररै । लंकेशनजीवतजाइघरै ॥ ५६ ॥ श्रीरामतहींउरलाइलियो ॥ सूंघ्योशिरआशिषकोटिदियो ॥ कोलाहलयूथपयूथकियो ॥ लंकाहहलीदशकंठहियो ॥ ५७ ॥ इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्र चंद्रिकाया मिन्द्रजिद्विरचितायांलक्ष्मणमूर्छामोचनंनामसप्तदशःप्रकाशः १७

टी०— यत्र जा पर्वतमें औषधी वृन्द नहींहैं बिनापत्र फूले पलाशके वृक्ष हैं या प्रकार भूले कोकिलनकी आली पंगती रमती हैं औ भौंर जामें भ्रमैं कहे घूमत हैं बसंत कैसो है कि यत्र कहे जामें बिनापत्र पलाश फूलि रहेहैं औ जामें कोकिलाली रमती हैं औ भूले कहे उन्मत्ततासों देहकी सुधि बिसराये भौंर भ्रमत हैं यामें (श्लेषोत्प्रेक्षा) है सो सदानन्द जे राम हैं तिनके महानंदके लये हनूमान मानों बसंत ही ल्याये हैं बसंतको देखि सबके आनंद होत है तासों अथवा जैसे राजनके इहां आनंदार्थ माली बसंत बनाइकै लैजात हैं तैसे मानौं रामचन्द्रके महाआनंदको हनूमान बसंतको रूपही बनाइ ल्याये हैं ॥ ५५ ॥ मूरि जो औषधि है ताको छिये कहे छुयेसों ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ इति श्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां सप्तदशः प्रकाशः ॥ १७ ॥

मू०—॥ दो०॥ अष्टादशेप्रकाशमें,केशवदासकराल। कुम्भकर्णकोबर्णिबो,मेघनादकोकाल ॥१॥ दोधकछंद ॥ रावणलक्ष्मणकोसुनिनीके। छूटिगयेसबसाधनजीके । रैसुतमंत्रिबिलंबनलावो। कुंभकरन्नहिंजाइजगावो ॥ २ ॥ राक्षसलक्ष्मणसाधनकीन्हे । दुंदुभिदीहबजाइनवीने॥ मत्तअमत्तबड़ेअरुवारे। कुंजरपुंजजगावतहारे ॥ ३ ॥ आइजहींसुरनारिसभागीं । गावनवीनबजावनलागीं ॥ जागिउठोतबहींसुरदोषी । क्षुद्रक्षुधाबहुभक्षणपोषी ॥ ४ ॥

टी०— कुम्भकर्णको औ मेघनादको काल कहे मृत्यु बर्णिबो ॥ १ ॥ साधन कहे जयसिद्धिके उपाय ॥ २ ॥ साधन कहे जगाइवेको यत्न ॥ ३ ॥ यह महादेवसे बर रह्यो है कि देवांगननको गान सुनि कुंभकर्ण अकालहूमें जागि है तासों जब देवांगना आइ गावन लागीं तब जाग्यो ॥ यथा ॥ हनुमन्नाटके ॥ निद्रां तथा पि न जहौ यदि कुंभकर्णः ॥ श्रीकंठलब्धवरकिन्नरकामिनीनां ॥ गंधर्वयक्षसुरसिद्धवरांगनानामाकर्ण्य गीतममृतं परमं बिनिद्रः ॥ ४ ॥

मू०— नराचछंद ॥ अमत्तमत्तदंतिपंक्तिएककौरकोकरै । सु-

जापसारिआसपासमेयवोपसंहरै ॥ बिमानआसमानकेजहांतहांभगाइयो । अमानमानसोंदिवानकुंभकर्णआइयो ॥ ५ ॥ रावण ॥ समुद्रसेतुबांधिकैमनुष्यदोइआइयो । लियेकुचालिबानरालिलंकअंकलाइयो ॥ मिल्योबिभीषणौनमोहितोहिंनेकहूडरेउ । प्रहस्तआदिदैअनेकमंत्रिमित्रसंहरेउ ॥ ६ ॥ करोसोकाजआशुआजचित्तमेंजोभावई । असुख्यहोइजीवजीवशुक्रसुख्यपावई ॥ समेतिरामलक्ष्मणैसोबानरालिभक्षिये । सकोसमंत्रिमित्रपुत्रधामग्रामरक्षिये ॥ ७ ॥

टी०– मान (गर्व) दिवान (सभा) ॥ ५ ॥ बानरालिको लंकके अंक कहे गोदमें लायो है अर्थ लंकके मध्यमें प्राप्त कियो है अथवा जो पुरी काहू कबहूं न घेऱ्यौ ताको घेरिकै अंक कहे कलंक लायो है यामें रामचंद्रके बलको वर्णन है निंदा नहीं है तासों सरस्वती उक्तार्था नहीं कियो ॥ ६ ॥ ऐसो काज करौ जासों देवतनको बिघ्न हो जीव जे बृहस्पति हैं ते असुख्य होइं औ हमारो जय होइ शुक्र सुख पावैं सरस्वती उक्तार्था राम लक्ष्मण समेत या बानरालिको भक्षिये कहे भक्षण करि सकियत है अर्थ नहीं भक्षण करि सकियत काहेते अनेक नर बानर हम भक्षण करे हैं इनको सेतुबंधनादि कर्म देखिकै हमारो जीव अति डरो है ताते कोश कहे खजाना सहित मंत्र्यादिकनको रक्षिये कहे रक्षण करि सकित है अर्थ नहीं रक्षण करि सकियत अर्थ ये हमको सबको-मारि ग्रामादि लेन चाहत हैं ॥ ७ ॥

मू०– कुंभकर्ण--मनोरमाछंद ॥ सुनियेकुलभूषणदेवबिदूषण । बहुआजिबिराजिनकेतुमपूषण ॥ भवभूपजेचारिपदारथसाधत । तिनकोकबहूंनहिंबाधकबाधत ॥ ८ ॥ पंकजबाटिकाछंद ॥ धर्मकरतअतिअर्थबढ़ावत । संततिहितरतिकोबिदगावत ॥ संततिउपजतहींनिशिबासर । साधततनमनमुक्तिमहीधर ॥ ९ ॥

टी०– बहुतै जे हैं आजि कहे समरनके बिराजी कहे शोभनहार अर्थ अनेक

समरकर्ता तिनके मध्यमें तुम पूषण पाठ है तहा अर्थ कि बहुत जे आ-
जिविराजी संग्रामकर्ता हैं तिनके तम पूषण कहे तमको मूषण सम हौ
अर्थ जैसे सूर्य तमको नाश करत हैं तैसे तुम संग्रामकर्त्ता जे शत्रु भट हैं
तिन्है नाश करत हौ चारि पदार्थ अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष, ॥८॥ चारो पदार्थ-
नके साधिबेको समय कहत हैं कि महीधर जे राजा हैं ते सन्तत कहे निरंतर
धर्महू करत हैं औ संततति अर्थ द्रव्यहूको बढ़ावत हैं अथवा धर्मको
करत अर्थ बढ़ावत हैं अर्थ सतरीतिसों अर्थ बढ़ावत हैं औ संततहित हैं
रतिस्त्री भोग अर्थ काम साधन जिनको ऐसै कोबिद गावत हैं अर्थ ये तीन्यों
एकही समयमों साध्य हैं औ जब संतति कहे पुत्र उत्पन्न भयो तब निशि
औ बासर तन औ मन करिकै मुक्तिको साधन करत हैं आजतक तुम अर्थ,
धर्म, कामको साधन कीन्हों अब तुम्हारो पुत्र सामर्थ है ताको सब राज-
भार सौंपि सीताको रामचंद्रको दैकै हेतु करि मुक्ति साधन करौ इति
भावार्थः ॥ ९ ॥

मू०— दोहा ॥ राजाअरुयुवराजजग, प्रोहितमंत्रीमित्र ।
कामीकुटिलनसेइये,कृपणकृतघ्नअमित्र ॥ १० ॥ घनाक्षरी ॥
कामीबामीझूंठक्रोधीकोढ़ीकुलद्वेषीखलुकातरकृतघ्नीमित्रदोषी-
द्विजद्रोहिये । कुपुरुषकिंपुरुषकाहलीकलहीक्रूरकुटिलकुमंत्री-
कुलहीनकेशौठोहिये ॥ पापीलोभीझूठअंधबावरोबधिरगूंगा-
बौनाअविवेकीहठीछलीनिरमोहिये । सूमसर्बभक्षीदेवबादीजो
कुबादीजड़अपयशीऐसोभूमिभूपातिनसोहिये ॥ ११ ॥

टी०— ये पांचौ राजादि इन दूषण सहित होहिं तौ सेवनके योग नहीं होत
अथवा यथाक्रमसों जानौं राजा कामी काहेते उचितानुचित बिचार बि-
ना सुन्दरी देखि प्रजाजनकी स्त्रिनको गहि मंगावत हैं तासों देश उजार होत
है औ युवराज कुटिल कहेते मंत्र्यादिकनसों बिरोध राज्यबिध्वंस करत हैं
औ प्रोहित कृपण कहे दरिद्र कहेते बिवाहादि समयमों द्रव्य लोभ बश वेद-
बिहित घट्यादि बिताइ अमंगल करत हैं अथवा शत्रुसों कछु द्रव्य पाइ
मारणादिके लये राशि नाम बतावत हैं औ मंत्री कृतघ्नी कहेते स्वामीको

कृत बिसारि शत्रुसों मिलि राज्य छोंड़ावैं औ मित्र अमित्र कहे हृदयमों भलो ना चाहे काहेते कछू गूढ़ मंत्र कहै सो शत्रु पास पहुंचावै ये पांचौ इन पांचहुन दोष सहित सेवन योग नहीं होत यासों या जनायो कि तुम राजा हौ तुह्मै ऐसो काम साधन ना चाहिये जासों ईश्वर जे रामचंद्र हैं तिनकी स्त्रीको हरि ल्याये हौ ॥१०॥ वामी (वाममार्गी) कुपुरुष कहे पुरुषार्थरहित किंपुरुष कहे कुछु है पुरुषकी आकृति जिनकी काहला (रोगी) दैवबादी कहे जे भाग भरोसे रहत हैं याहूमें या जनायो कि तुमको ऐसो कामसाधन ना चाहिये ॥ ११ ॥

मू०— निशिपालिकाछंद ॥ बानरनजानुसुरजानुशुभगाथहैं । मानुषनजानुरघुनाथजगनाथहैं । जानकिहिदेहुकरि नेहुकुलदेहुसो ॥ आजुरणसाजुपुनिगाजुहँसिमेहुसो ॥ १२ ॥ रावण-दोहा॥कुंभकरणकरियुद्धकै,सोइरहौघरजाइ। वेगिबिभीषणज्योंमिल्यो,गहौशत्रुकेपाइ ॥ १३ ॥ मंदोदरी-दो० ॥ इंद्रजीतअतिकायसुनि,नारांतकसुखदाइ । भैयनसोंप्रभुझुकतहैं,क्यों नकहौसमुझाय ॥ १४ ॥ मंदोदरी—चंचलाछंद ॥ देवकुंभकर्णकेसमानजानियेनआन । इन्द्रचंद्रबिष्णुरुद्रब्रह्मकोहरेउगुमान ॥ राजकाजकोकहैजोमानियेसोप्रेमपालि । कैचलीनकोचलैनकालकीकुचालिचालि ॥ १५ ॥

टी०— कुल औ देहसो नेंह करिकै जानकीको देहु यह कहि या जनायो कि ना देहौ तौ रामचंद्र तुह्मारे कुलके सहित तुह्मारो नाश करि हैं ॥ १२ ॥ कारि कहे करौ ॥ १३ ॥ झुकत कहे रिस करत है भैयनसों बहुबचन कहि या जनायो कि एक भाई बिभीषण समुझावन लाग्यो ताको लात मार्यो अब वैसेही कुंभकर्णसों रिस करत हैं ॥ १४ ॥ देव रावणको संबोधन है जो बात कुंभकर्ण कहत है सो राजके काजके हितको कहत है ताहि प्रेमको पालिकै कहे हित करिकै मानिये अर्थ सीताको दैकै रामचंद्रसों हित करौ काहेते काल जो समय है ताकी जो कुचालि कहे प्रतिकूलता है तामें चालि कहे चाल युद्धा-

दि उत्कृष्ट कर्म रहित विचार युक्त निजहितसाधक कार्य कृत्यकैं पूर्व नाहीं चल्यो को अब नाहीं चलत अर्थ जे पूर्व भये हैं तिन चल्यो है अब जे होत जात हैं ते चलत हैं जब आपनो समय टेढ़ो होत है तबशत्रु मिलनादि कार्य करिबो साधिबो अनुचित नहीं है इति भावार्थः ॥ अथवा कालकी जो कुचालि है ताकी जो चालि कहे चालु है अर्थ जब आपतो काल प्रतिकूल भयो ता समयमों जो कार्यसाधक उचित चाल है ॥ १५ ॥

मू०-- विष्णुभाजिभाजिजातछोंड़िदेवताअशेष । जामदग्न्य देखिदेखिकैंनकीननारिवेष ॥ ईशरामतेबचेबचेकबानरेशबालि । कैंचलीनकोचलैनकालकीकुचालिचालि ॥ १६ ॥ बिजयाछंद ॥ रामहिंचोरिनदीन्हींसियाजितकेदुखतोतपलीलिलियोहै । रामहिंमारनदीन्होंसहोदररामहिंआवनजानदियो है ॥ देहधन्योतुमहींलगिआजुलोंरामहिंकेपियन्यायेजियोहै । दूरिकन्योद्विजताद्विजदेवहरेहीहरेआततायीकियोहै ॥ १७ ॥

टी०- कालकी कुचालिमें चालु कैं चली है सो कहत हैं देवदानवनके युद्धमें देवतनके सहायको विष्णु जात हैं परन्तु जब जानत हैं कि दैत्यनको समय सहायक है हमको कुटिल है हम इनसों ना जीति हैं तब यशकी सुद्धि भुलाइ आपने प्राणनकी रक्षाके लिये भागि जात हैं या प्रकार कयोबारकी कथा पुराणनमें प्रसिद्ध है यासों या जनायो कि विष्णुसों बली कोऊ नहीं है तेऊ समय बिचारि गों साधि जात हैं औ जामदग्नि जे परशुराम हैं तिनको देखिकै कैं क्षत्री नारिको बेष नहीं धरयो यासों या जनायो कि जब परशुरामको समय रह्यो तब बड़े बड़े क्षत्री समय बिचारि नारिको वेष धरि जीव बचायो औ तेई परशुराम ताही क्षत्रीवंशमें उत्पन्न जे रामचन्द्र हैं तिनको समय बली बिचारि आपनो धनुषबाण दै हेतु करयो तासों हेईश! रामचन्द्रको समय बली है सो सीताको दैकै हेतुरूपी जो बचिबेको उपाय है तासों बचो काहेते बालि बली रहे तिन बचिबेको उपाय न कियो ते ना बचे मारेही गये चौथो तुमको अर्थ पाछेके छंदमें कह्यो है ॥ १६ ॥ आवन जान दियो

अर्थ युद्धमंडलमें आवन दियो फेरि युद्धमंडलसों फिरि जानदियो स्त्री-हर्तादिक छह आततायी कहावत हैं यथा भागवते ॥ अग्निदोगरदश्चैव शस्त्रपाणिर्धनापहः ॥ क्षेत्रदारापहश्चैव षडेते आततायिनः ॥ आततायी ब्राह्मणहू होइ ताके वधसों ब्रह्मदोष नहीं है तासों ॥ १७ ॥

मू०— दोहा ॥ संधिकरोविग्रहकरो, सीताकोतोदेह । गनौ-नपियदेहीनमें, पतिव्रताकीदेह ॥ १८ ॥ रावण--बिजयाछंद ॥ हौंसतुछांड़िमिलौंमृगलोचनिक्योंक्षमिहैंअपराधनये ॥ नारिहरी सुतबांध्योतिहारेहौंकालिहिसोदरसाँगिहये ॥ बामनमांग्योत्रि-पैगधरादक्षिणाबलिचौदहलोकदये ॥ रंचकबैरहुतोहरिवंचक बांधिपतालतऊपठये ॥ १९ ॥ दोहा ॥ देवरकुम्भकरन्नसों,ह-रिअरिसोंसुतजाइ । रावणसोंप्रभुकौनको ,मंदोदरीडेराइ ॥२०॥

टी०— पतिव्रता जे स्त्री हैं तिनकी देह स्वरूप देहिनमें न गनौं ॥ १८ ॥ अपराधन ये कह्यो तासों बलिको प्राचीन बैर जानों अर्थ हिरण्यकशिपुके रंचक बैरसों बलिको बांधि पाताल पठायो ॥ १९ ॥ २० ॥

मू०— चामरछन्द ॥ कुम्भकर्णरावणैंप्रदक्षिणाहिदैचल्यो । हाइहाइह्वैरह्योअकाशआशुहीहल्यो । मध्यक्षुद्रघंटिकाकिरीट संगशोभनो । लक्षपक्षसोकलिन्द्रइन्द्रकोचढ़्योमनो ॥ २१ ॥ नाराचछंद ॥ उड़ैंदिशादिशाकपीशकोरिकोरिइवासहीं । च-पैंचपेटपेटबाहुजानुजंघसोतहीं ॥ लियेहैंओरऐंचिऐंचिबीरबा-हुबातहीं । भषेतअन्तरिक्षरिक्षलक्षलक्षजातहीं ॥ २२ ॥ कु-म्भकर्ण--भुजंगप्रयातछन्द ॥ नहौंताडकाहौंसुबाहैनमानो । नहौंशंभुकोदंडसांचोबखानो ॥ नहौंतालमालीखरैजाहिमारो । नहौंदूषणैसिंधुसूधोनिहारो ॥ २३ ॥ सुरीआसुरीसुन्दरीभोग-कर्णै । महाकालकोकालहौंकुम्भकर्णै ॥ सुनौरामसंग्रामकोतो हिंबोलौं । बढ़्योगबलंकाहिआयेसोखोलौं ॥ २४ ॥

टी०– लक्ष बिधिको जो पक्ष कहे विरोध है तासों अर्थ बड़े बिरोधसों अथवा लक्ष बिधिको जो पक्ष कहे बलहै तासों अर्थ बड़े बलसों इहां लक्ष शब्द अधिकार्थमें है ॥ पक्षो मासार्धके पार्श्वगृहे साध्वबिरोधयोः ॥ केशादेःपरतो वृंदे वले सखिसहाययोः इतिमेदिनी ॥ २१ ॥ जे लक्षन ऋक्ष भयसों अन्तरिक्षको जात हैं तिन्हैं बांहके बात बायुसों खैंचिकै भषे खाइ डार्‍यो ॥ ॥ २२ ॥ द्वै छन्दको अन्वय एक है खरै कहे खर राक्षसै सूधो निहारो अर्थ कपिनको सूधो समुझिकै मारन बेधन कर्‍यो सरस्वती उक्तार्थां ॥ मेरी और इनसम शत्रु दृष्टिसों ना निहारो सूधो कहे कृपादृष्टिसों निहारो अथवा मोंको सूधो कहे शत्रुभावरहित आपनो दास निहारो सरस्वती उक्तार्थां ॥ लंकामें आयेते जो तुह्मारे गर्ब बढ़्यो है ताहि खोलों कहे प्रसिद्ध करौं आशय कि जब मोको मारिहौ तब तुह्मारो बलादिको जो गर्ब है सो सब प्राणिनमें प्रसिद्ध ह्वै है ॥ २३ ॥ २४ ॥

मू०– उठ्योकेशरीकेशरीजोरछायो । बलीबालिकोपूतलैनीलधायो ॥ हनूमन्तसुग्रीवसोंभैसभागे । डसैंडांससेअंगमातंगलागे ॥ २५ ॥ दशग्रीवकोबंधुसुग्रीवपायो । चल्योलंकमेंलैभलेअंकलायो । हनूमन्तलातैंहत्योदेहभूल्यो । छुट्योकर्णनाशाहिलैइन्द्रफूल्यो ॥ २६ ॥ सँभार्‍योघरीएकदूमैमरूकै । फिर्‍योरामहींसामुहेंसोगदालै ॥ हनूमंतजूपूंछसोंलाइलीन्हों । नजान्योंकबैसिंधुमेंडारिदीन्हों ॥ २७ ॥

टी०– केशरी नामा बानर केशरी कहे सिंहके जोरसों छायो उठ्यो अर्थ सिंह सम गर्जिकै शीघ्र चल्यो ॥ २५ ॥ इन्द्रसम सुग्रीव फूल्यो सुखी भयो ॥ २६ ॥ २७ ॥

मू०– जहींकालकेकेतुसोंताललीन्हो । कर्‍योरामजूहस्तपादादिहीनो ॥ चल्योलोटतैधाइबक्रैधाचाली । उड़्योमुंडलैबाणज्योंमुंडमाली ॥ २८ ॥ तहींस्वर्गकेदुंदुभीदीहबाजैं । कर्‍योपुष्पकीवृष्टिजैदेवगाजैं ॥ दशग्रीवशोकग्रस्योलोकहारी । भयो

लंकहीमध्यआतंकभारी ॥ २९ ॥ दोहा ॥ तबहींगयोनिकुं-
भिला,होमहेतइन्द्रजीत ॥ कह्योतहांरघुनाथसों,मतोबिभीषण
मीत ॥ ३० ॥ चंचरीछंद ॥ जोरिअंजुलिकोबिभीषणरामसों
बिनतीकरी । इंद्रजीतनिकुंभिलागयोहोमकोरिसजीभरी ॥
सिद्धहोमनहोइजौलगिईशतौलगिमारिये ।सिद्धहोहिप्रसिद्धहैय-
हसर्बथाहमहारिये ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ सोईवाहिहतैकिनर,बान-
रऋक्षजोकोइ ॥ बारहबर्षक्षुधातृषा,निद्राजीतेहोइ ॥ ३२ ॥ चं-
चरीछंद ॥रामचन्द्रबिदाकऱ्योतबबेगिलक्ष्मणबीरको । त्योंबि-
भीषणजामवंतहिँसंगअंगदधीरको ॥ नीललैनलकेशरीहनुमंत
अंतकज्योंचले । बेगिजाइनिकुंभिलाथलयज्ञकेसिगरेदले॥३३॥

टी०– तालवृक्षआदिपदते आयुधै जानो वक्रै कहे मुखै मुण्डमाली महा-
देव ॥ २८ ॥ २९ ॥ दोहा क्षेपक है निकुंभिला राक्षसके देवतनको स्थान बट-
वृक्षसों युक्त है तामें यज्ञ करि इन्द्रजीत अजय होत रह्यो है॥३०॥३१॥३२॥३३॥

मू०– जामवंतहिमारिद्वैशरतीनिअंगदछेदियो । चारिमारि
बिभीषणैहनुमंतपंचसुबेधियो ॥ एकएकअनेकवानरजाइल-
क्ष्मणसोंभिऱ्यो । अंधअंधकयुद्धज्योंभवसोंजुऱ्योभवहीह-
ऱ्यो ॥ ३४ ॥ गीतिकाछंद ॥ रणइन्द्रजीतअजीतलक्ष्मणअ-
स्त्रशस्त्रनिसंहरै । शरएकएकअनेकमारतबुंदमंदरज्योंपरै ॥
तबकोपिराघवशत्रुकोशिरबाणतत्क्षणकरधऱ्यो । दशकंधसं-
ध्यहिकोकियोशिरजाइअंजुलिमेंपऱ्यो ॥ ३५ ॥ रणमारिल-
क्ष्मणमेघनादहिस्वच्छशंखबजाइयो । कहिसाधुसाधुसमेतइंद्र-
हिदेवतासबआइयो ॥ कछुमाँगियेबरबीरसत्त्वरभक्तिश्रीरघु-
नाथकी । पहिराइमालबिशालअर्चहिकैगयेसबसाथकी ॥
॥ ३६ ॥ कलहंसछंद ॥ हतिइंद्रजीतकहँलक्ष्मणआये । हँसि-
रामचंद्रबहुधाउरलाये ॥ सुनिमित्रपुत्रशुभसोदरमेरे । कहि-

कौनकौनसुमिरौंगुणतेरे ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ नींदभूखअरुप्या-सको,जोनसाधतबीर ॥ सीताहिक्योंहमपावते, सुनुलक्ष्मणरणधीर ॥ ३८ ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणि-श्रीरामचंद्रचंद्रिकायामिंद्राजिद्विरचितायामिंद्राजिद्वधबर्णनोना-माष्टादशःप्रकाशः ॥ १८ ॥

टी०– लक्ष्मणसों कैसे जाय भिरयो भय जो डर है सोही कहे हृदय-सों हन्यो कहे दूरि भयो है जाके ऐसो जो गर्वादि करिकै अंध कहे आंधरो अंधक नाम दैत्य है सो जैसे भव जे महादेव हैं तिनसों युद्धमें जुन्यो है अर्थ जैसे महादेवसों निर्भय अंधक लन्यो तैसे लक्ष्मणसों इन्द्रजीत लरत-भयो ॥ ३४ ॥ एक एक कहे एकको परस्पर अनेक शर मारत हैं अर्थ ल-क्ष्मणको मारत हैं ते शर दुहुनके अंगनमें मंदरमें जलबुंदसम परत हैं अर्थ अति बलीन तासों कछू पीड़ा नहीं करत उद्धन्यो काढ़यो ॥ ३५ ॥ साथकी कहे जो अर्चाकी बिधि संगमो लै आये रहैं कहूं शुभगाथकी पाठ है तौ शुभगाथ कहे लक्ष्मण ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ इतिश्रीमज्जगज्जननि जनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रका-शिकायामष्टादशःप्रकाशः ॥ १८ ॥

मू०– दोहा ॥ उनईसयेंप्रकाशमें,रावणदुःखनिधान ॥ जूझे गोमकराक्षपुनि,ह्वैहैदूतबिधान ॥ १ ॥ रावणजैहैगूढ़थल,रावर लुटैबिशाल ॥ मंदोदरीकढ़ारिबो,अरुरावणकोकाल ॥ २ ॥ मोटनकछंद ॥ देख्योशिरअंजुलिमेंजबहीं । हाहाकरिभूमिप-न्योतबहीं ॥ आयेसुतसोदरमंत्रितबै । मंदोदरित्योंतियआई सबै ॥ ३ ॥ कोलाहलमंदिरमांझभयो । मानौंप्रभुकोउड़िप्रा-णगयो ॥ रोवैंदशकंठबिलापकरै । कोऊनकहूंतनधीरधरै ॥४॥ रावण-दंडक ॥ आजुआदित्यजलपवनपावकप्रबलचंदआ-नंदमयतापजगकोहरौं । गानकिन्नरकरहुनृत्यगंधर्बकुलयक्ष बिधिलक्षउरयक्षकर्दमधरौं ॥ ब्रह्मरुद्रादिदैदेवत्रैलोककेराजको

जायअभिषेकइन्द्रहिकरौं । आज्ञुसियरामदैलंककुलदूषनाहिंय-ज्ञकोजायसर्वज्ञविप्रनवरौं ॥ ५ ॥ महोदर-तोटक ॥ प्रभुशोक-तजौतनधीरधरौ । सकशत्रुबधोसोबिचारकरौ ॥ कुलमेंअब-जीवतजोरहिहै । सबशोकसमुद्रहिसोबहिहै ॥ ६ ॥

टी०— दुःखको निधान कहे बड़ो दुःख ॥ १ ॥ रावरे स्त्रिनके रहिवे-को घर, कढ़ोरिबो कहे केशादि पकरि निर्दय खैंचिबो ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ इन्द्रजीतके मरे रावण बड़े दुःखसों संयुक्त ह्वै ऐसे बिलाप बचन कहत भयो कि जो इन्द्रजीत मर्‍यो तो मोंहूं मरतही हौं तासों मेरे डरसों जे बातें जे जन नाहीं करत रहे ते सब भयको छोंड़िके आपने आपने भाये काज करौ कपूर औ अगुरु औ कस्तूरी औ कंकोल मिलाइ यक्षकर्दम होत है सो यक्षनको अति प्रिय है अंगनमें लेप करत हैं ॥ कपूरागुरुकस्तूरीकंकोलैर्य-क्षकर्दमः ॥ औ सीता राम मिलिकै कुलदूषण (बिभीषण) को लंका दैकै सर्वज्ञ ब्राह्मणनको यज्ञको निवारो कहे अवकाश देहिं ॥ ५ ॥ अति दुःखमें धीर्य्यके बचन कहिबो उचित है तासों महोदर, मंदोदरी धीर धराइवेके बचन कहत हैं जा उपायसों शत्रु बधोसक कहे सकै अर्थ शत्रू मार्‍यो जाय सो बिचार करौ सबके मरेको जो शोक है ताके समुद्रमें बह्यो करि है ॥ ६ ॥

मू०— मंदोदरी-चौपाई ॥ सोदरजूझ्योसुतहितकारी । को-गहिहैलंकागढ़भारी ॥ सीतहिदैकैरिपुहिसँहारो । मोहतिहैविक्रमबलभारो ॥ ७ ॥ रावण ॥ तुमअबसीतहिदेहुनदेहू । विनसुतबंधुघरौनहिंदेहू ॥ यहितनजोतजिलाजहिरैहौ । वनबसिजाइसबैदुखसैहौ ॥ ८ ॥ मकराक्ष-भुजंगप्रयातछंद ॥ कहाकुंभकर्णौकहाइंद्रजीतै । करैसोइवोवैकरैयुद्धभीतै ॥ सुजौलौंजिऔंहौसदादासतेरो । सियाकोसकैदैसुनोमंत्रमेरो ॥ ९ ॥

टी०— यह जो तुह्मारो भारी लंकागढ़ है ताहि कौन गहि है कहे लै सकि है अर्थ लंकागढ़ शत्रुके लीबे लायक नहीं है विक्रम कहे यत्न बल-कहे शक्तिको मोहति है कहे मूर्छित करति है अर्थ तुम्हारो यत्न औ बल

निष्फल होत है सो याहीके दुख प्रभावसों ॥ ७ ॥ ८ ॥ भीत युद्ध कहि या जनायो कि बाण वेधनादि भयसों अंतर्धान ह्वै युद्ध करि हैं सरस्वती उक्तार्था ॥ वै आपने बलसों सबको मारि सीताको ले हैं इति व्यंग्यार्थः ॥ ९ ॥

मू०— महाराजलंकासदाराजकीजै । करौंयुद्धमेरीविदावेगिकीजै ॥ हतौंरामस्यौंबंधुसुग्रीवमारौं । अयोध्याहिलैराजधानीसुधारौं ॥ १० ॥ विभीषण—बसंततिलकाछंद ॥ कोदंडहाथरघुनाथसँभारिलीजै । भागेसबैसमरयूथपदृष्टिदीजै ॥ बेटावलिष्टखरकोमकराक्षआयो । संहारकालजनुकालकरालधायो ॥ ॥ ११ ॥ सुग्रीवअंगदबलीहनुमंतरोंक्यो । रोंक्योरह्योनरघुबीरजहींविलोक्यो ॥ माऱ्योबिभीषणगदाउरजोरठेली । कालीसमानभुजलक्ष्मणकंठमेली ॥ १२ ॥ गाढ़ेगहेप्रवलअंगनिअंगभारे । काटेकटैनबहुभांतिनकाटिहारे ॥ ब्रह्मादियोवरहिअस्त्रनशस्त्रलागे । लैहीचल्यौसमरसिंहहिजोरजागे ॥ १३ ॥ गाढ़ांधकारदिविभूतललीलिलीन्हो । ग्रस्तास्तमानहुँशशीकहराहुकीन्हो ॥ हाहादिशब्दसबलोगजहींपुकारे । बाढ़अशेषअँगराक्षसकेबिदारे ॥ श्रीरामचन्द्रपगलागतचित्तहर्षे । देवाधिदेवमिलिसिद्धनपुष्पवर्षे ॥ १४ ॥

टी०— सरस्वती उक्तार्था ॥ काकूक्तिसों कहत हैं कि हे महाराज ! अब लंकामें तुम सदा राज किया करौ महाराज पद कहि या अनायो कि मंत्रको त्याग करि प्रभुतासों अपने मनहींकी बात कऱ्यो औ जैसे कुंभकर्णादिकनकी सबकी बिदा कियो है तैसे मेरीहू बिदा करौ हौं युद्ध करौं जाइ औ तुम्हारी आज्ञाके सदृश जैसे कुंभकर्णादिकन बंधु सहित राम औ सुग्रीवको मारि राजधानी अयोध्यामें सुधाऱ्यो है तैसे हौंहूं बंधु सहित राम औ सुग्रीवको मारिकै राजधानी अयोध्यामें सुधारौं जैसे सब मरि गये हैं तैसे हौंहूं मरौं जाइ इति व्यंग्यार्थः ॥ १० ॥ ११ ॥ बिभीषण गदा माऱ्यौ

ताको उरके जोरसों ठेलिकै लक्ष्मणके कंठमें काले सर्पके समान भुजा मेलत भयो ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥

मू०— दोहा ॥ जूझतहीमकराक्षके, रावणअतिदुखपाइ । सत्त्वरश्रीरघुनाथपै, दियोवसीठपठाइ ॥ १५ ॥ सुंदरीछंद ॥ दूतहिदेखतहीरघुनायक । तापहँबोलिउठेसुखदायक ॥ रावणकेकुशलीसुतसोदर । कारजकौनकरैअपनेघर ॥ १६ ॥ दूत–विजयछंद ॥ पूजिउठेजबहींशिवकोतबहींविधिशुक्रबृहस्पतिआये । कैविनतीमिसकश्यपकेतिनदेवअदेवसबैबकसाये ॥ होमकीरीतिनईसिखईकछुमंत्रदियोश्रुतिलागिसिखाये । हौंइतकोपठयोउनकोउतलैप्रभुमंदिरमांझसिधाये ॥ १७ ॥

टी०—कि शशीको दिवि आकाशते भूतलमें पाइकै अर्थ स्थानच्युत (अबल) जानिकै स्वाभाविक शत्रुतासों गाढ़ो कहे बहुत जो अंधकार है ताने लीलि लियो है औ कि राहूने ग्रस्तास्त कीन्हो है शशीसम लक्ष्मण हैं अंधकार औ राहुसम मकराक्ष है जब मकराक्षको शस्त्रास्त्रसों मरण ना जान्यो तब हाथनसों कसिकै गाढ़े जो गहे रहे ताही समय शीघ्रतासों लक्ष्मणजी बाढ़ कहे स्थूलकाय ह्वै कै राक्षसके अशेष संपूर्ण अंग विदारे कहे विदीर्ण कीन्हे अर्थ फारि डारे ऐसी शीघ्रतासों लक्ष्मणजू आपने अंगस्थूल किये कि मकराक्ष जो हस्तग्रहण करे रहे सो हस्तग्रहण ना छूटन पायो तासों वक्षस्थल फाटि गयो अधिदेव गंधर्वादि औ आदिदेव पाठ होइ तौ ब्रह्मादि जानौ यह छंद छे चरणको है ॥१५ ॥ १६ सत्त्वर कहे शीघ्र वसीठ (दूत) पूंछौ कि रावण कौन कारज करत हैं ताको जवाब रावणके प्रभावको देखावत चतुरतासों दियो जब रावण देव औ अदेव सबके नाश करिबेके लिये शिव जे महादेव हैं तिनको पूजन करिकै उठे हैं कि ताही क्षण अति डर मानिकै विधि (ब्रह्मा) औ शुक्र औ बृहस्पति ये तीनों आइकै कश्यपके व्याजसों विनती करिकै देव औ अदेव सब बकसाये कहे मांगि लीन्हें अर्थ ब्रह्मादिकन आइ यह कह्यो कि कश्यप यह विनती कऱ्यो है कि देव औ अदेवनको हमको बकसीस देव अर्थ इनको नाश ना करौ इहां अदेव पदते

जे देवतनते अतिरिक्त प्राणी हैं दैत्य मनुष्यादि ते सब जानौ यासों या जनायो कि जब रावण शिवकी पूजा करत है तब संहार करिबेकी शक्ति प्राप्ति होति है औ देव अदेवनको बकसाइकै कछू नई होमकी रीति सिखायो औ श्रुति (कान) में लागिकै कछू मंत्र दीन्हों याके आगे मोहिं याओर पठायो औ ब्रह्मादिकनको लैकै प्रभु जो रावण है सो मंदिरको गया कहिबेको हेतु या जामें रामचन्द्र जानैं कि हमप्रति कोपसों रावण सब देव औ अदेवको नाश करिबेको चाह्यो तिनको बकसाइ ब्रह्मादिकन कछु हमारिही हानि हेत होम औ मंत्र सिखायो है है ॥ १७ ॥

मू०— दूत-संदेश ॥ सूर्पणषाजोबिरूपकरीतुमतातेकियोह-महूंदुखभारो । बारिधिबंधनकीन्होंहुतोतुममोसुतबंधनकीन्हों तिहारो ॥ होइजोहोनीसोहोइहीरहैनमिटैजियकोटिबिचारबि-चारो । दैभृगुनंदनकोपरशारघुनंदनसीतहिलैपगुधारो ॥ १८ ॥ दोहा ॥ प्रतिउत्तरदूतहिदियो,यहकहिश्रीरघुनाथ ॥ कहियोरा-वणहोहिंजब,मंदोदरिकेसाथ ॥ १९ ॥ रावण-संयुताछंद ॥ क-हिधौंबिलंबकहाभयो । रघुनाथपैजबतूगयो ॥ कहिभांतितू अवलोकियो । कहुतोहिंउत्तरकादियो ॥ २० ॥

टी०—सीताको हरिकै तुमको दुख दीन्हों अथवा सीताहीको भारी दुख दीन्हों परशुराम तौ धनुषबाण दियो है इहां रावण परशा मांग्यो तहां या जान्यों कि रावण सुन्यौ है कि रामचंद्र परशुरामको हथियार छोरि लीन्हों है औ परशुरामको मुख्य हथियार परशाही है तासों परशा जान्यौ ॥१८॥ रामचंद्र मंदोदरीकी बुद्धिकी स्तुति बिभीषणसों सुन्यों है तालिये मंदोदरीके साथ कह्यो है अर्थ जो मंदोदरी इन बचननको सुनि है तो समय बिचारि ग्लानि दै रावणको लरिबेको पठाइ है अथवा जा मंदोदरी सहित रावण दुख पावै अथवा कुंभकर्णादिके मरेसों रावण भीत है संधिके लिये दूत पठायो है ऐसा न होइ कि आपही शरणमां चलि आवै जो हमको शरणा-गत रक्षकत्वधर्म प्रतिपालन करि रावणको रक्षतही बनै तालिये जो मंदोदरी

इन वचनको सुनिहै तौ समय बिचारि ग्लानि दै लरिबेहीके लिये पठाइ है संधिकेलिये ना पठाइ है ॥ १९ ॥ २० ॥

मू०— दूत-दंडक ॥ भूतलकेइंद्रभूमिबैठेहुतेरामचंद्रमारिचकनकमृगछालहिबिछायेजू । कुंभहरकुंभकर्णनाशाहरगोदशीशचरणअकंपअक्षअरिउरलायेजू । देवांतकनारांतकत्योंमुसक्यातबिभीषणबैनतनकानरूषबायेजू । मेघनादमकराक्षमहोदरप्राणहरबाणत्योंबिलोकतपरमसुखपायेजू ॥ २१ ॥ रामसंदेश-बिजयछंद ॥ भूमिदईभुवदेवनकोभृगुनंदनभूपनसोंबरलैकै । बामनस्वर्गदियोमघवैसोबलीबलिबांधिपतालपठैकै । संधिकीबातनकोप्रतिउत्तरआपुनुहींकहियेहितकैकै । दीन्हींहैलंकाबिभीषणकोअबदेहिंकहांतुमकोयहदैकै ॥ २२ ॥ मंदोदरी-मालिनीछंद ॥ तबसबकहिहारेरामकोदूतआयो । अबसमुझिपरीजोपुत्रभैयाजुझायो ॥ दशमुखसुखजीजैरामसोंहौंलरौंयो ॥ हरिहरसबहारेदेविदुर्गालरीज्यों ॥ २३ ॥

टी०—रावण पूंछेउ कि केहिभांति तू रामचंद्रको देख्यो है ताको उत्तर यामें दियो है कुंभहर औ कुंभकर्ण नाशाहर सुग्रीव अकंप औ अक्षके अरि (हनुमान) शत्रु हैं सत्रहें प्रकाशमें कह्यो है कि ॥ जिते अकंपादि बलिष्ट भारे संग्राममें अंगद बीर मारे ॥ यामें विरोध होत है तासों या जनायो दूसरो अकंप रह्यो ताको हनुमान मार्‍यो है यथा वाल्मीकीये ॥ सचतुर्दशभिर्बाणैर्निशितैर्देहदारणैः । निर्बिभेद महावीरो हनुमंतमकंपनः । ततोवृक्षसमुत्पाट्य कृत्वा वेग मनुत्तमं । शिरस्यभिजधानाशु राक्षसेन्द्रमकंपनं । यथा पद्मपुराणे ॥ जघान हनुमान्भूयो चतुर्थेहन्यकंपनं । औ देवांतक औ नरांततकके अंतक (अंगद) औ मेघनाद औ मकराक्ष औ महोदरके प्राणहर (लक्ष्मण) यह अति निर्भय समय स्वरूप जानौ ॥ २१ ॥ बर कहे बलसों या प्रकार अवतार धरि धरि हम तीनों लोक बांटि दियो अब तुमको यह जो परशा है ताको दैकै कहा कौन स्थान देहिं जामें तुम रहौ परशुरामकी कथा कहि या

जनायो कि जिन सहस्रार्जुन तुम्हैं बांधि राख्यो तिनको हम क्षणमें मान्यो बामनकी कथा कहि या जनायो कि जिन बलिकी दासिन पालसों तुम्हैं गहिकै निकारि दीन्हों तिनको बांधिकै हम पाताल पठायो तैसे तुमहूंको मारि बिभीषणको लंका देहैं ॥ २२ ॥ शुम्भ निशुम्भादिके युद्धमें हरिहरादि सब हारि गये हैं तब दुर्गा लरिकै मान्यो है यह कथा मार्कंडेयपुराणमें प्रसिद्ध है ॥ २३ ॥

मू०— रावण ॥ छलकरिपठयोतोपावतोजोकुठारै । रघुपतिवपुराकोधावतोसिंधुपारै ॥ हतिसुरपतिभर्ताबिष्णुमाया विलासी । सुनहिंसुमुखितोकोल्यावतोलक्षिदासी ॥ २४ ॥ चामरछंद ॥ प्रौढ़रूढ़िकोसमूढ़गूढ़गेहमेंगयो । शुक्रमंत्रशोधि शोधिहोमकोजहींभयो ॥ वायुपुत्रबालिपुत्रजामवंतधाइयो । लंकमेंनिशंकअंकलंकनाथपाइयो ॥ २५ ॥ मत्तदंतिपंक्तिबाजिराजिछोरिकैदई । भांतिभांतिपक्षिरानिभाजिभाजिकैगई ॥ आसनेबिछावनेबितानतानतूरियो । यत्रतत्रछत्रचारुचौंरचारुचूरियो ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ भगीदेखिकैशंकिलंकेशबालादुरीदौरिमंदोदरीचित्रशाला ॥ तहांदौरिगोबालिकोपूतफूल्यो । सबैचित्रकीपुत्रिकादेखिभूल्यो ॥ २६ ॥

टी०— सिंधुके पारै धावतो कहे भागि जातो सुरपति (इंद्र) तिनके भर्ता रक्षक औ मायाके विलासी जे बिष्णु हैं तिनको हति कहे मारिकै तोकों लक्षि जो लक्ष्मी हैं ताको दासी ल्यावतो यासों या जनायो कि रामचंद्र जो करत हैं सो सब परशाहीके बलसों करत हैं यामें रामचंद्रकी शक्ति कछु नहीं है ॥ २४ ॥ प्रौढ़ जो धृष्टता है ताकी रूढ़ि कहे परिपक्वता ताको समूढ़ कहे समूह अर्थ अति धृष्ट ऐसा जो रावण है सो यज्ञ करिबेको गूढ़गेहमों जात भयो मंदोरीकी ऐसी कटु बातैं सुनि कछू लाज न कियो तासों अतिधृष्ट कह्यो ॥ समूढःपुं जिते भुग्ने इति मेदिनी ॥ सो शुक्रके मंत्रको शोधि कहे शुद्धोच्चार करिकै होमके अर्थ जब उद्यत भयो तब निशंक कहे

शंकाते रहित है अंक (हृदय) जिनको ऐसे जे वायुपुत्रादि हैं ते धावत भये तब लंकनाथके जे अंक कहे राजचिन्ह हैं छत्र चामरादि तिन्हैं पायो कहे देख्यौ तब जान्यौ कि याही मंदिरमें रावण ह्वै है ताळिये या प्रकारको उपद्रव कन्यो सो आगे कहत हैं ॥ २५ ॥ तान (डोरी)॥ २६ ॥

मू०— गहैदौरिजाकोतजैताकिताको । तजैजादिशाकोभजैबामताको ॥ भलीकैनिहारीसबैचित्रसारी । लहैसुंदरीक्योंदरीकोबिहारी ॥ २७ ॥ तजैदृष्टिकोचित्रकीसृष्टिधन्या । हँसीएकताकोतहींदेवकन्या ॥ तहींहासहीदेवकन्यादिखाई । गहीशंकिकैलंकरानीबताई ॥ २८ ॥

टी०—फूल्यो कहे आनन्दित जा पुतरीको अंगद दौरिकै गहत हैं ताको पुतरी जानि तजत हैं औ अंगद जा दिशाको तजत हैं ता दिशाको बाम कहे मंदोदरी भजति है अथवा जा दिशाको अर्थ जा दिशाकी पुतरिनको अंगद गहत हैं ता दिशामें अंगदको ताकिकै देखिकै ता दिशाको तजै कहे छोड़ति है अर्थ ता दिशाकी पुतरिनको छोड़ति है औ जा दिशाको अंगद तजत हैं ता दिशाको मंदोदरी भजै कहे प्राप्त होति है अथवा भागति है दरी (कन्दरा) ॥ २७ ॥ धन्या कहे अति निपुण जो चित्रकी सृष्टि है सो अंगदकी दृष्टिको तजै कहे त्याग करति है अर्थ मंदोदरी पास दृष्टि नहीं जान देति मंदोदरीको नहीं देखन देति इति अथवा धन्या जो चित्रकी सृष्टि है तामें मंदोदरीकी दृष्टिको तजै कहे त्याग करति है अर्थ आपने पास नहीं आवन देति यह मंदोदरी है येतो ज्ञानदृष्टिमें नहीं होत इतिभावार्थः ॥ या प्रकार कौतुक देखिकै अंगदको एक देवकन्या हँसत भई सो हांसीसों देवकन्या अंगदको देखाइ कहे देखि परी तब ताहीको मंदोदरी जानि अंगद गही तब शंकिकै ताने लंकरानी जो मंदोदरी है ताको बतायो कहूं तहीं शंकिकै पाठ है॥२८॥

मू०— सुआनीगहेकेशलंकेशरानी । तमश्रीमनोंसूरशोभानिशानी ॥ गहेबांहऐंचेचहूंओरताको । मनोंहंसलीन्हेमृणालीलताको ॥ २९ ॥ छुटीकंठमालालुरैहारटूटे । खसैफूलफूलेलसै-

केशछूटे ॥ फटीकंचुकीकिंकिणीचारुछूटी । पुरीकामकीसीम-नौरुद्रलूटी ॥ ३० ॥ बिनाकंचुकीस्वच्छबक्षोजराजें । किधौं-सांचहूश्रीफलैशोभसाजैं ॥ किधौंस्वर्णकेकुंभलावण्यपूरे । ब-शीकर्णकेचूर्णसंपूर्णपूरे ॥ ३१ ॥ मनोंइष्टदेवैसदाइष्टहीके । कि-धौंगुच्छद्वैकामसंजीवनीके ॥ किधौंचित्तचौगानकेमूलसोहैं । हियेहेमकेहालगोलाबिमोहैं ॥ ३२ ॥ सुनीलंकरानीनकीदीनबा-नी । तहींछांड़िदीन्होमहामौनमानी ॥ उठ्योसोगदालैयदालंक-वासी । गयेभागिकैसबैशाखाबिलासी ॥ ३३ ॥ मंदोदरी दो-हा ॥ सीतहिदीन्होदुखवृथा,सांचोदेखोआजु ॥ कैरेजोजैसीत्यों-लहै, कहारंककहँराजु ॥ ३४ ॥

टी०—सूर्यकी शोभानसों सानी मानों तमश्री (अन्धकारकी) श्री (शोभा) है तमश्रीसम बार हैं सूरशोभासम सिंदूर है इहां सिंदूर नहीं कह्यो सो उपमानते उपमेयको ग्रहण कियो अथवा सूरशोभासम अंगद हैं मृणाली-लतासम बाहु हैं हंससम अंगदादि बानर हैं ॥ २९ ॥ ३० ॥ लावण्य (सुन्दरता) ॥ ३१ ॥ सदा दुष्ट जो स्वामी रावण है ताके इष्टदेवै हैं अर्थ जैसे सबप्राणी इष्टदेवको हृदयमों बसाये रहत हैं तैसे रावणके मनमों सदा बसत हैं गुच्छ पुष्प गुच्छ कामसंजीवनी लतासम मंदोदरी है औ कि चित्त जे मन हैं तिनको जो चौगान खेल है ताको मूल कहे जर अर्थ कारण जो मं-दोदरीको हियो कहे बक्षःस्थल है तामें शोहत हैं कहे सुवर्णके हालगोला कहे गेंद हैं अर्थ जैसे हालगोलानको खेलनहार आपनी आपनी ओर खैं-चत हैं तैसे देखनहारनके चित्त इन कुचनको आपनी आपनी ओर खैंचत हैं मूल कहि या जनायो कि मनुष्य चौगान खेल खेलत हैं चित्त नहीं खेलत सो याहीते चित्तनको चौगान खेल नयो उत्पन्न भयो है सो जानो अथवा चित्त चौगानके मूल हालगोलानहींको विशेषण है चौगान खेल प्रसिद्ध है ॥ ३२ ॥ मौन है मन्त्रको जो जपत है ताको छोड़ि दीन्हों मा-नी कहे गर्बी यदा कहे जब ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

मू०— रावण—बिजयछन्द ॥ कोबपुराजोमिल्योहैबिभीषण हैकूलदूषणजीवैगोकौलौं। कुंभकरन्नमऱ्योमघवारिपुतौरीकहान डरौंयमसौलौं । श्रीरघुनाथकेगातनिसुंदरिजानैनतूकुशलीतनु तौलौं । शालसबैदिगपालनकेकररावणकेकरवालहैजोलौं ॥ ॥ ३५ ॥ चामरछंद ॥ रावणैचलेचलेतेधामधामतेसबै । साजिसाजिसाजसूरगाजिगाजिकैतबै ॥ दीहदुंदुभीअपारभांति भांतिबाजहीं । युद्धभूमिमध्यक्रुद्धमत्तदंतिराजहीं ॥ ३६ ॥ चंचरीछंद ॥ इन्द्रश्रीरघुनाथकोरथहीनभूतलदेखिकै । बेगिसारथिसोंकहेउरथजाहिलैसुविशेषिकै ॥ तूणअक्षयबाणस्वच्छअभेदलैतनत्राणको । आइयोरणभूमिमेंकरिअप्रमेयप्रणामको ॥ ॥ ३७ ॥ कोटिभांतिनपौनतेमनतेमहालघुतालसै। बैठिकैध्वजअग्रश्रीहनुमंतअंतकज्योंहँसै ॥ रामचन्द्रप्रदक्षिणाकरिदक्षह्वैजबहींचढ़े। पुष्पवर्षिबजायदुंदुभिदेवताबहुधाबढ़े ॥ ३८ ॥

टी०— तनु कहे रंचकहू कुशली ना जानै सरस्वती उक्तार्थी ॥ हेसुन्दरि! श्रीरघुनाथके गातनि करिकै मेरे तनको तू कुशली न जानै अर्थ मोको रामचन्द्र मारि हैं ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ तूण कहे तर्कस अक्षय कहे जाते बाण ना चुकैं ॥ ३७ ॥ लघुता शीघ्रता हनूमान ध्वज अग्रमें यासों चढ़े कि यह रथ कछू राक्षसन माया ना कियो होइ बढ़े (फूले) अर्थ आनंदित भये ॥३८॥

मू०— रामकोरथमध्यदेखतक्रोधरावणकेबढ्यो । बीसबाहुनकीशरावलिव्योमभूतलसोंमढ्यो ॥ शैलह्वैसिकतागयेसबदृष्टिकेबलसंहरे । ऋक्षबानरभेदितत्क्षणलक्षधाक्षतनाकरे ॥ ३९ ॥ सुंदरीछंद ॥ बाणनसाथविधेसबबानर । जायपरेमलयाचलकीधर ॥ सूरजमंडलमेंएकरोवत । एकअकाशनदीमुखधोवत ॥ ॥ ४० ॥ एकगयेयमलोकसहेदुख । एककहेंभवभूतनसोंरुख ॥ एकतिसागरमांझपरेमरि । एकगयेबड़वानलमेंजरि ॥ ४१ मो-

टनकछंद ॥ श्रीलक्ष्मणकोपकर्‌यो जबहीं । छोड़्यो शरपावक-कोतबहीं ॥ जार्‌यो शरपंजरछारकर्‌यो । नैऋत्यनको अतिचित्तडर्‌यो ॥ ४२ ॥ दौरे हनुमंतबलीबलसो । लै अंगदसंगसबै दलसो ॥ मानों गिरिराजतजे डरको । घेरे चहुंओर पुरंदरको ॥ ४३ ॥

टी०- सिकता (वारू) दृष्टिके बल कहे पराक्रम अर्थ अति बाणांधकारमों काहूको कछू देखि नहीं परत क्षतना कहे मधुमक्षिकादिकनके छाता जामें मधु रहत है ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ नैऋत्य (राक्षस) ॥ ४२ ॥ पुरंदर (इन्द्र) सम रावण है गिरिराजनके सदृश अंगदादि हैं ॥ ४३ ॥

मू०- हरिछंद ॥ अंगदरणअंगनसबअंगनमुरझाइकै । ऋक्षपतिहिअक्षरिपुहिलक्षगतिबुझाइकै ॥ बानरगणवाणनसनकेशवजबहीं मुर्‌यो । रावणदुखदावनजगपावनसमुहेजुर्‌यो ॥ ॥ ४४ ॥ ब्रह्मरूपकछंद ॥ इंद्रजीतजीतआनिरोकियोसुबाणतानि । छोंडिदीनबीरबानिकानकेप्रमानआनि ॥ शिवप्रतापकाढ़िचापचर्मबर्ममर्मछेदि । जातभोरसातलैअशेषकंठमालभेदि ॥ ४५ ॥ दंडकछंद ॥ सूरजमुसलनीलपट्टिशपरिघनलजामवंतअसिहनूतोमरप्रहारेहैं । परशासुखेनकुंतकेशरीगवयशूलविभीषणगदागजभिंदिपालतारेहैं । मोंगराद्विबिदतीरकटराकुमुदनेजाअंगदशिलागवाक्षविटपबिदारेहैं । अंकुशशरभचक्रदधिमुखशेषशक्तिबाणतिनरावणश्रीरामचंद्रमारेहैं ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ द्वैभुजश्रीरघुनाथसों, बिरचेयुद्धबिलास ॥ बाहुअठारहयूथपनि, मारेकेशवदास ॥ ४७ ॥

टी०- रण अंगन कहे रणभूमिके मध्यमें अंगदको सब अंगनसों मुरझाइकै कहे मूर्च्छित करिकै अर्थ सर्बांग शिथिल करिकै लक्ष कहे निशानाकी गतिसों बुझाइकै कहे समुझाइकै अर्थ निशानासम वेधिकै औ और जो बानरगणनसों जब मुरे तौन रामचन्द्रके समुहैं जुर्‌यो अर्थ लरन लग्यो ॥ ४४ ॥ बीरबानि कहे बीरस्वभावसों चर्म (ढाल) बर्म (बखतर) नर्म (मर्म-

स्थल) ॥ ४५ ॥ सुरज (सुग्रीव) शेष (लक्ष्मण) ॥ ४६ ॥ श्रीरामचन्द्रसों धनुर्बाणसों लरत हैं तासों एक हाथ बाणमें एक धनुषमें लग्यो है तासों द्वै भुज जानों ॥ ४७ ॥

मू०– गंगोदकछंद ॥ युद्धजोईजहांभांतिजैसीकरैताहिताहीदिशारोंकिराखैतहीं । आपनेअस्त्रलैशस्त्रकाढ़ैसबैताहिकेहूकहूंघावलागैनहीं ॥ दौरिसौमित्रलैबाणकोदंडज्योंखंडखंडीध्वजाधीरछत्रावली । शैलशृंगावलीछोड़िमानोंउड़ीएकहीबेरकैहंसवंशावली ॥ ४८ ॥ त्रिभंगीछंद ॥ लक्ष्मणशुभलक्षणबुद्धिबिचक्षणरावणसोंरिसछोड़िदई । बहुबाणनिछंडैजेशिरखंडैतेफिरखंडैशोभनई ॥ यद्यपिनरपंडितगुणगणमंडितरिपुबलखंडितभूलिरहे । तजिमनबचकायकसूरसहायकरघुनायकसोंबचनकहे ॥ ४९ ॥ ठाढ़ोरणगाजतकेहुनभाजततनमनलाजतसबलायक । सुनिश्रीरघुनंदनमुनिजनबंदनदुष्टनिकंदनसुखदायक । अबटरैनटार्‌योमरैनमार्‌योहौंहठिहार्‌योधरिशायक । रावणनहिंमारतदेवपुकारतहैअतिआरतजगनायक ॥ ५० ॥

टी०– ज्यों धनुषगुण शैलशृंग सदृश रावण शिर हैं हंशवंशावली सदृश स्वेत छत्र हैं ॥ ४८ ॥ रिपुबल करिकै खंडित हैं रणपांडित्यादि जाके ऐसे जे लक्ष्मण हैं ते भूलि रहे कहे आश्चर्ययुक्त ह्वै रहे हैं तासों मनसा, बाचा, कर्मणा, रावणसों लरिबो तजिकै ॥ ४९ ॥ मैं तन औ मनसों लज्जित होत हौं ॥ ५० ॥

मू०– राम-छप्पै ॥ जेहिशरमधुमदमरदिमहासुरमर्दनकीन्हेउ । मारेहुकर्कशनर्कशंखरुतिशंखजोलीन्हेउ ॥ निष्कंटकसुरकटकक्र्‌योकैटभबपुखंड्‌यो । खरदूषणत्रिशिराकबंधतरुखंडबिहंड्यो ॥ कुंभकर्णज्यहिसंहर्‌योपलनप्रतिज्ञातेटरौं । तेहिबाणप्राणदशकंठकेकंठदशौखंडितकरौं ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ रघुपतिपठयोआसुही,असुहरबुद्धिनिधान ॥ दशशिरदशहूदिशन-

को,बलिदैआयोबान ॥ ५२ ॥ मदनमनोरमाछंद ॥ भुवभारहिसंयुतराकसकोगणजाइरसातलमेंअनुराग्यो । जगमेंजयशब्दसमेतिहिकेशवराजबिभीषणकेशिरजाग्यो । यमदानवनंदिनिकेसुखसोंमिलिकैसियकेहियकोदुखभाग्यो । सुरदुंदुभिसीसँगजाशररामकोरावणकेशिरसाथहिलाग्यो ॥ ५३ ॥ मंदोदरी-विजयछंद ॥ जीतिलियेदिगपालशचीकेउसासनदेवनदीसबसूकी । बासरहूनिशिदेवनकीनरदेवनकीरहैसंपतिहूकी । तीनिहुँलोकनकीतरुणीनकीबारीबँधीहुतीदंडदुहूकी । सेवतश्वानशृगालसोरावणसोवतसेजपरेअबभूकी ॥ ५४ ॥

टी०— कर्कश (कठोर) तरुखंड (सप्त ताल)॥ ५१ ॥ असुहर (प्राणहर) ॥ ॥ ५२ ॥ मयदानवनंदिनि (मंदोदरी) (सहोक्ति अलंकार है) ॥ ५३ ॥ सदा रावणके भयसों स्वर्गसों भागे जे इन्द्र हैं तिनके बिरहसों शची (इंद्राणीके) जे उष्ण उसास हैं तिनसों देवनदी (आकाशगंगा)सब सूकी कहे सूखि गई॥५४॥

मू०— राम-तारकछंद ॥ अबजाहुबिभीषणरावणलैकै । सकलत्रसबंधुक्रियासबकैकै ॥ जनसेवकसम्पतिकोशसँभारो । मयनंदिनिकेसिगरेदुखटारो ॥ ५५ ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांरावणबधवर्णनंनामैकोनविंशःप्रकाशः ॥ १९ ॥

टी०—जनसेवक कहे सेवक जन अथवा जन(बंधुजन) सेवक (चाकर) संपत्ति अश्व, गज, वस्त्रादि कोश(खजाना)॥ ५५ ॥ इति श्रीमज्जगज्जनिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां एकोनविंशः प्रकाशः ॥ १९ ॥

टी०— दोहा ॥ याबीसयेंप्रकाशमें, सीतामिलनविशेषि ॥ ब्रह्मादिककीस्तुतिगमन, अवधपुरीकोलेषि ॥ १ ॥ प्रागवरणि अरुबाटिका, भरद्वाजकीजानि ॥ ऋषिरघुनाथमिलापकहि, पूजाकरिसुखमानि ॥ २ ॥ श्रीराम-तारकछंद ॥ जयजायकहो

हनुमंतहमारो। सुखदेवहुदीरघदुःखबिदारो ॥ सबभूषणभूषि-
तकैशुभगीता। हमकोतुमबेगिदिखावहुसीता ॥ ३ ॥ हनुमं-
तगयेतहहींजहँसीता। तबजायकहीजयकीसबगीता ॥ पग
लागिकह्योजननीपगुधारो। मगचाहतहैंरघुनाथतिहारो ॥ ४ ॥
सिगरेतनभूषणभूषितकीने। धरिकैकुसुमावलिअंगनवीने ॥
द्विजदेवनिबंदिपढ़ीशुभगीता। तबपावकअंकचलीचढ़िसीता॥
॥ ५ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ सबस्त्रासबैअंगशृंगारसोहैं। बि-
लोकेरमादेवदेवीबिमोहैं ॥ पिताअंकज्योंकन्यकाशुभ्रगीता।
लसैअग्निकेअंकत्योंशुद्धसीता ॥ ६ ॥

टी-० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ सीताको बंदि कहे बंदना करिकै देवतन, द्विज ब्राह्मण, समान शुभगीता कहे मंगलपाठ पढ़्यो अर्थ जैसे गमन सम-यमों ब्राह्मण मंगलपाठ पढ़त हैं तैसे सीताजूके रामचन्द्रके पास गमनमें देव पढ़त भये अथवा द्विज औ देवन औ बंदीजनन शुभगीता पढ़त भये औ जो अग्निके अंकमें बैठिकै सीता आई सो लोकके देखाइबेको तौ शुद्धताकी साक्षी दियो औ जो सीताको देह कनककुरंगके आगमनमें रामचन्द्र अग्नि-को सौंप्यो रहै ता देहकी थातीसम रामचन्द्रके दीबेको अग्नि ल्याये हैं सो जानौ ॥ ५ ॥ ६ ॥

मू०— महादेवकेनेत्रकीपुत्रिकासी। किसंग्रामकीभूमिमेंचं-
डिकासी ॥ मनोंरत्नसिंहासनस्थाशचीहै। किधौंरागिनीराग-
पूररचीहै ॥ ७ ॥ गिरापूरमेंहैपयोदेवताशी। किधौंकंजकीमंजु
शोभाप्रकाशी ॥ किधौंपद्महींमेंसिफाकंदसोहै। किधौंपद्मके-
कोशपद्माविमोहै ॥ ८ ॥ किसिन्दूरशैलाग्रमेंसिद्धकन्या। कि-
धौंपद्मिनीसूरसंयुक्तधन्या ॥ सरोजासनाहैमनोंचारुबानी।
जपापुष्पकेबीचबैठीभवानी ॥ ९ ॥ मनोंऔषधीवृन्दमेंरोहि-
णीसी। किदिग्दाहमेंदेखियेयोगिनीसी ॥ धरापुत्रज्योंस्वर्ण
मालाप्रकाशै। मनोंज्योतिसीतच्छकाभोगभासै ॥ १० ॥ सुरे-

न्द्रबज्राछंद ॥ आसावरीमाणिककुंभशोभै अशोकलग्नाबनदे
तासी । पालाशमालाकुसुमालिमध्येबसन्तलक्ष्मीशुभलक्ष
सी ॥ आरक्तपत्राशुभचित्रपुत्रीमनोंबिराजैअतिचारुवेषा ॥
पूर्णसिन्दूरप्रभासकैधौंगणेशभालस्थलचंद्ररेषा ॥ ११ ॥

टी०— जहां केवल रत्नपद पाये तहां अरुणही रत्नको बोध होत है यह
विनियम है रागदीपकादि अथवा अनुराग प्रेम इति ॥ ७ ॥ गिरा सरस्व
के पूर कहे जलसमूहमेंकी पयो देवता कहे जलदेवता है औ कि गिर
में कंजकी शोभा है अर्थकी कमल है सरस्वतीको जल अरुण प्रसिद्ध है
पूरो जलसमूह स्यादिति मेदिनी ॥ ८ ॥ सूर जे सूर्य हैं तिनसों संयुक्त मिली
ञिनी कमलिनी है सूरसम अग्नि है कमलिनी सम सीता हैं इहां अरुण
रोज जानौ ॥ ९ ॥ चन्द्रमा औषधीश है औ रोहिणी चंद्रमाकी स्त्री है
संबंधसों जानौं औषधिनको अग्निसम ज्वलन प्रसिद्ध है धरापुत्र मंगल
जैसे स्वर्णमाला प्रकाशै कहे शोभै, धरापुत्र सम अग्नि हैं स्वर्णमाला
सीता हैं भोगिफण तक्षकको अरुणवर्ण प्रसिद्ध है ॥ १० ॥ आसावरी रागि
अशोक वृक्षमें लग्ना कहे संलग्न स्थित इति जो बनदेवता हैं ताके सम
अशोकवृक्षको अरुणवर्ण है ॥ ११ ॥

मू०— विजयछंद ॥ हैमणिदर्पणमेंप्रतिबिंबकिप्रीतिहिये
नुरक्तअभीता । पुंजप्रतापमेंकीरतिसीतपतेजनमेंमनोंसिद्धा
नीता । ज्योंरघुनाथतिहारियेभक्तिलसैउरकेशवकेशुभगीत
त्योंअवलोकियआनँदकंदहुताशनमध्यसुवासनसीता ॥ १२
दोहा ॥ इन्द्रबरुणयमसिद्धसब, धर्मसहितधनपाल ॥ ब्रह्म
द्रलैदशरथहि, आयगयेतेहिकाल ॥ १३ ॥ अग्नि–बसंतति
कछंद ॥ श्रीरामचन्द्रयहसंततशुद्धसीता । ब्रह्मादिदेवसबगा
तशुभ्रगीता ॥ हूजैकृपालगहिजैजनकात्मजाया । योगीश
तुमहौयहयोगमाया ॥ १४ ॥ श्रीरामचन्द्रहँसिअंकलगाइल

न्हों । संसारसाक्षिशुभपावकआनिदीन्हों ॥ देवानदुंदुभिबजा-
यसुगीतगाये । त्रैलोक्यलोचनचकोरनिचित्रभाये ॥ १५ ॥

टी०- कि अनुरक्त कहे अनुरागी हृदयमों अभीता (निश्चला) प्रीति है वि-
नीता (उत्तमा) ॥ १२ ॥ १३ ॥ योगीश जे महादेव हैं तिनके ईश कहे
स्वामी तुम हौ अर्थ विष्णु हौ औ यह जो सीता है सो योगमाया
(लक्ष्मी) हे पुनरुक्ति, 'नित्यंवक्षसि योगं प्राप्नोतीति योगमाया लक्ष्मीः' अर्थ
विष्णुके वक्षस्थलमें सदा युक्त रहति है तासों योगमाया नाम है यो-
गमाया कहि या जनायो कि यह तौ सदा तुम्हारे वक्षस्थलमें प्राप्त रहति है
कहूं रंचहू भिन्न नहीं होति तासों अदोष है ॥ १४ ॥ श्रीरामचंद्र कह्यो है
तासों त्रैलोक्य लोचन चकोर कह्यो ॥ १५ ॥

मू०- ब्रह्मा-दोधकछंद ॥ रामसदातुमअन्तर्यामी। लोकच-
तुर्दशकेअभिरामी ॥ निर्गुणएकतुम्हैंजगजानै । एकसदागुण-
वन्तबखानै ॥ १६ ॥ ज्योतिजगैजगमध्यतिहारी । जाइकही-
नसुनीननिहारी ॥ कोउकहैपरिमानन्ताको । आदिनअन्तन-
रूपनजाको ॥ १७॥ तारकछन्द ॥ तुमहौगुणरूपगुणीतुमठा-
ये । तुमएकतेरूपअनेकबनाये॥एकहैजोरजोगुणरूपतिहारो ।
त्यहिसृष्टिरचीविधिनामबिहारो ॥ १८ ॥ गुणसत्वधरेतुमरक्ष-
तजाको । अबविष्णुकहैंसिगरेजगताको ॥ तुमहींजगरुद्रस्व-
रूपसँहारो । कहियेतिनमध्यतमोगुणभारो ॥ १९ ॥

टी०- अन्तर्यामी कहे सबके अन्तरमे व्याप्त रहत हौ अभिरामी कहे
रमता अर्थ चौदहौ लोकमें रमत हौ या जगके एकै प्राणी (वेदांती) तुमको
निर्गुण कहे रज, सत्व, तमोगुण तीनों करिकै रहित ज्योतिरूप जानत हैं औ
एकै सदा रज, सत्त्व, तमोगुण युक्त ब्रह्मादि रूप बखानत हैं ॥ १६ ॥ यामें
निर्गुण रूप कहत हैं कहो नहिं जाइ इत्यादिसों या जनायो जहां इन्द्रिन-
को गमन नहीं ॥ १७ ॥ अब सगुण कहत हैं सत्वादि तीनों गुणरूप तुमहीं
हौ जो गुणी ब्रह्मादिरूप तुमहीं हौ रजोगुणरूप कहे रजोगुणयुक्त रूप
॥ १८ ॥ जाको कहे जा सृष्टिको ॥ १९ ॥

मू०– तुमहींजगहौजगहैतुमहींमें । तुमहींबिरचीमर्य्याददुनीमें ॥ मर्य्यादहिँछोड़तजानतजाको । तबहीं अवतारधरोतुमताको ॥ २० ॥ तुमहींधरकच्छपवेषधरेजू । तुममीनह्वैवेदनकोउधरेजू ॥ तुमहींजगयज्ञबराहभयेजू । क्षितिछीनिलईहिरण्याक्षहयेजू ॥ २१ ॥ तुमहींनरसिंहकोरूपसँवाऱ्यो । प्रहलादकोदीरघदुःखबिदाऱ्यो ॥ तुमहींबलिबावनवेषछल्योजू । भृगुनन्दनह्वैक्षितिछत्रदल्योजू ॥ २२ ॥ तुमहींयहरावणदुष्टसँहाऱ्यो । धरणीमहँबूड़तधर्म्मउबाऱ्यो । तुमहींपुनिकृष्णकोरूपधरौगे । हतिदुष्टनकोभुवभारहरौगे ॥ २३ ॥ तुमबौद्धस्वरूपदयाहिधरौगे । पुनिकल्किह्वैम्लेच्छसमूहहरौगे ॥ यहिभाँतिअनेकस्वरूपतिहारे । अपनीमर्य्यादकेकार्य्यसँवारे ॥ २४ ॥ महादेव–पङ्कजबाटिकाछन्द ॥ श्रीरघुवरतुमहौजगनायक । देखहुदशरथकोसुखदायक ॥ सोदरसहितपितापदपावन । वंदनकियतबहींमनभावन ॥ २५ ॥

टी०– विराटरूप सो जग तुमहीं हौ औ यह जग तुमहींमें बसत है" यथा कविप्रियायां, शेष धरे धरणी धरणी विधि केशव जीव रचे जग जेते । चौदहलोक समेत तिन्हैं हरिके प्रति रोमनमें चितये ते ॥ ताको कहे ताके बधको ॥ २० ॥ धर कहे पर्वत अर्थ समुद्र मथन--समय मंदराचलको कच्छपरूप ह्वै पृष्ठमें धारण कियो ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ अनेक और स्वरूप व्यासादिजानो ॥ २४ ॥ २५ ॥

मू०– दशरथ–निशिपालिकाछन्द ॥ रामसुतधर्म्मयुतसीयमनमानिये । बन्धुजनमातुगनप्रानसमजानिये ॥ ईशसुरईशजगदीशसमदेखिये । रामकहँलक्ष्मणविशेषप्रभुलेखिये ॥ २६ ॥ रामचन्द्र–चञ्चलाछन्द ॥ जूझिजूझिकैगयेजबानरालिऋक्षराजि । कुम्भकरणलोकहरणभक्षियाजेगाजिगाजि ॥ रूपरेख-

स्योविशेषिजीउठैंकरौसोआज । आनिपांइलागियोतिन्हैंसमे-तदेवराज ॥ २७ ॥ दोहा ॥ बानरराक्षसऋक्षसब, मित्रकलत्रस-मेत ॥ पुष्पकचढ़िरघुनाथजू, चलेअवधिकेहेत ॥ २८ ॥

टी०– हेराम! सुत! सीताको धर्म्मयुत मनमें मानों अर्थ सीता निर्दोष हैं जो संदेह करो कि हम ग्रहण करैं हमारे बंधुआदि गृहजन कैसे ग्रहण करिहैं तौ बंधुजन भरतादि औ मातुगण कौशल्यादिकनकी सम जानों जैसे कोऊ प्राणनको त्याग आपुसों नहीं करत तैसे सीताको त्याग वे ना करिहैं या प्रकार रामचन्द्रको शिक्षा दै लक्ष्मणसों कहत हैं कि हे लक्ष्मण! रामचंद्रको ईश (महादेव) सुरईश (विष्णु) जगदीश (ब्रह्मा)के सम देखौ कहे जानों इनको विशेषिकै प्रभु कहे स्वामी लेखौ अर्थ स्वामी सम इनकी सेवा करौ बंधुसम न जानों इति भावार्थः ॥२६॥ रूप (स्वरूप) रेख (चिन्ह) तिनसों स्यो कहे सहित जो उठें सो उपाय करौ या प्रकार रामचन्द्र देवराज जे इंद्र हैं तिनसों कह्यो सो रामचन्द्रकी आज्ञासों संजीवनी आदि उपायसों सबको जियाइकै रामचन्द्रके आइ पांइ लगे ॥ २७ ॥ भरतकी प्रतिज्ञा है कि जो चौदह बर्षमें रामचन्द्र ना ऐहैं तौ हम नहीं जी हैं ता अवधि कहे मर्यादाके लिये पुष्पकमें चढ़ि अतिशीघ्र चले अथवा अवधि (अयोध्या) ॥ २८ ॥

मू०– चञ्चरीछन्द ॥ सेतुसीतहिशोभनादरशाइपञ्चबटीगये । पाँइलागिअगस्त्यकेपुनिअत्रियैतेबिदाभये ॥ चित्रकूटबिलोकिकैतबहींप्रयागबिलोकियो । भरद्वाजबसैंजहाँजिनतेनपावनहैबियो ॥ २९ ॥ राम-तारकछन्द ॥ चिलकैंद्युतिसूक्षमशोभतिबारू । तनुहैजनुसेवतहैसुरचारू ॥ प्रतिबिम्बितदीपदिपैजलमाहीं । जनुज्वालमुखीनकेजालनहाहीं ॥ ३० ॥ जलकीद्युतिपीतसितासितसोहै । चहुँपातकघातकरैयककोहै ॥ मदएणमलैघसिकुंकुमनीको । नृपभारतखण्डदियोजनुटीको ॥ ३१ ॥

टी०– बियोग कहे दूसरो ॥ २९ ॥ तनु कहे सूक्ष्म ॥ ३० ॥ एक कहे

केवल जो बहुत पातक है ताके घात कहे नाश करैको कहे करिबेके अर्थ ऐण-मद जो कस्तूरी है औ मलय (चंदन) औ कुंकुम (केशरिको) घसिकै भारतंख-डरूपी जो नृप राजा है ताने मानों मारण तिलक दियो है जाको देखतही पातकनको नाश होत है औरौ राजा शत्रुके नाश करिबेको मारण तिलक शिरमें देते हैं जाके देखतही शत्रु मरत है मारण मोहनोच्चाटनादि षट्कर्म-की तिलकादि क्रिया मंत्रशास्त्रमों प्रसिद्ध है भारतखंडबासिनको पातक दरि-द्रादि पीड़ा करत हैं सोई शत्रुता जानों ॥ ३१ ॥

मू०—लक्ष्मण—दंडक ॥ चतुरबदनपंचबदनषटबदनसहस बदनहूसहसगतिगाईहै । सातलोकसातद्वीपसातहूरसातल-निगंगाजीकीशोभासबहीकोसुखदाईहै । यमुनाकोजलरह्योफै-लिकैप्रबाहपरकेशवदासबीचबीचगिराकीगोराईहै । शोभान शरीरपरकुंकुमबिलेपनकोश्यामलदुकूलझीनझलकतिझाईहै ३२ सुग्रीव-चंद्रकला ॥ भवसागरकीजनुसेतुउजागरसुंदरतासि-गरीसबकी । तिहुँदेवनकीद्युतिसीदरशैगतिशोषैत्रिदोषनके रसकी । कहिकेशववेदत्रयीमतिसीपरितापत्रयीतलकोमसकी। सबबंदैंत्रिकालत्रिलोकत्रिबेणिहिंकेतुत्रिबिक्रमकेजसकी ॥३३॥

टी०— चतुरवदन (ब्रह्मा) पंचबदन (शिव) षटवदन (स्वामिकार्तिक) सहस्रबदन (शेष) तिनकरिकै सहसगति कहे सहस्र प्रकारसों गाई है अथवा सहसगति कहे सहस्रधारा सात लोक भू, अंतरिक्षादि; सात द्वीप जंबूद्वीपा-दि; सात रसातल अतल, बितलादि; ॥ ३२ ॥ सेतुसम जाके मग प्राणी भ-वसागर पार होत हैं तीनों देव ब्रह्मा, बिष्णु, महेश; त्रिदोष बात, पित्त, कफको जो रस कहे बल है ताकी गतिको शोषति है अर्थ कफ, पित्त,वात दुःखद दोषकृत जो मृत्यु है तासों बचावति है ऐसी त्रिदेवनकी द्युतिहू है वेणीहू है वेदत्रयी ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, त्रयी; परिताप अध्यात्मिक, अधिभौ-तिक, अधिदैविकको तलको अधोभागको मसकी कहे दबायो है अर्थ पठा-यो है ऐसी वेद मतिहू बेणीहू है त्रिबिक्रम कहे बामनजू तीनि पैगसों तीनों लोक नाप्यो है तिन तीनि पादबिक्षेपको त्रिरूप पताका है ॥ ३३ ॥

मू०–बिभीषण–दंडक ॥ भूतलकीबेणीसीत्रिबेणीशुभशोभिजातिएककहैंसुरपुरमारगबिभातहै । एककहैंपूरणअनादिजोअनंतकोऊताकोयहकेशवदासद्रवरूपगातहै । सबसुखकरसवशोभाकरमेरेजानकोनोयहअद्भुतसुगंधअवदातहै । दरशपरशहूतेथिरचरजीवनकोकोटिकोटिजन्मकीकुगंधमिटिजातहै॥ ॥ ३४ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ भरद्वाजकीबाटिकारामदेखी । महादेवकैसीबनीचित्तलेखी ॥ सबैवृक्षमंदारहूतेभलेहैं । छहूकालकेफूलफूलेफलेहैं ॥ ३५ ॥ कहूंहंसिनीहंससोंचित्तचोरैं । चुनैंओसकेबुंदमुक्तानिभोरैं ॥ शुकालीकहूंसारिकालीबिराजैं । पढ़ैंवेदमंत्रावलीभेदसाजैं ॥ ३६ ॥

टी०– कुगंध पदते पातक जानौ ॥ ३४ ॥ महादेवकी वाटिकासी बनी चित्तमें लेष्यो मंदार (कलपवृक्ष–विशेष) छहू काल (छह ऋतु) ॥ ३५ ॥ कहूं हंससों कहे हंस सहित हंसिनी मुक्तानके भोरे कहे भ्रमसों ओसके बुंद चुनती हैं सो सबके चित्तको चोरावती हैं यासों हंसनकी मदमत्तता जनायो वेदमंत्रावलीके जे भेद साजैं हैं तिन्हैं पढती हैं अर्थ अनेक प्रकारके मंत्र ऋषिनके पढ़त सुनत हैं तिन्हैं शिष्य ताही बिधि आप पढ़त हैं ॥ ३६ ॥

मू०–कहूंवृक्षमूलस्थलीतोयपीवैं । महामत्तमातंगसीमानछीवैं ॥ कहूंविप्रपूजाकहूंदेवअर्चा । कहूंयोगशिक्षाकहूंवेदचर्चा ॥ ३७ ॥ कहूंसाधुपौराणकीगाथगावैं । कहूंयज्ञकीशुभ्रशालाबनावैं ॥ कहूंहोममंत्रादिकेधर्मधारैं । कहूंबैठिकेब्रह्मबिद्याबिचारैं ॥ ३८ ॥ सुआईजहांदेखियेबक्ररागी । चलैंपिप्पलैंतिच्छबुध्यैसुभागी ॥ कँपैंश्रीफलैपत्रहैंपत्रनीके सुरामानुरागीसबैरामहीके– ॥ ३९ ॥

टी०– कहूं महामत्त मातंग वृक्षकी मूलस्थली (थाल्हा) में तोय (जल) पीवत हैं परंतु वृक्षनकी औ थाल्हकी सीमा (मर्यादा) नहीं छुवत अर्थ

वृक्ष औ थालह्नको तोरत बिदारते नहीं हैं ॥ ३७ ॥ पौराणकी कहे अष्टादश पुराणसंबंधिनी ब्रह्मविद्या (वेदांत) ॥ ३८ ॥ बक्र कहे मुख हैं रागी कहे अरुण जिनके ऐसे शुक हैं और काहू ऋषिको मुख तांबूलके रागयुक्त नहीं है यतीको ताम्बूल भक्षण निषिद्ध है तासों ॥ विधवानां यतीनां च तांबूलं ब्रह्माचारिणाम् । एकैकं मांसतुल्यं स्यान्मिलितं मदिरासमम् ॥ सभागी कहे भाग्यवान् अर्थ अति वृद्ध युक्त अति बड़े इति; श्रीफल कहे कदलीके जे पत्र हैं तेई जहां कांपत हैं यांसों या जनायो कि सभागी तौ सब हैं ये और कोऊ काहू भयसों कंपत नहीं हैं औ सबै रामानुरागी हैं परंतु रामा जो स्त्री हैं ताके अनुरागी नहीं हैं रामचंद्रके अनुरागी हैं ॥ ३९ ॥

मू०–जहांवारिदैवृन्दवाजानिसाजें । मयूरैजहांनृत्यकारीबिराजें ॥ भरद्वाजबैठेतहांविप्रमोहे । मनोंएकहीवक्रलोकेशसोहै ॥ ४० ॥ लक्ष्मण–दंडक ॥ केशवदासमृगजबछेरूचूषैंबाघिनीनचाटतसुरभिबाघबालकबदनहै । सिंहनकीसटाऐंचैंकलभकरनिकरिसिंहनकोआसनगयंदकोरदनहै । फणीकेफणनपरनाचतमुदितमोरक्रोधनबिरोधजहांमदनमदनहै । बानरफिरतडोरेडोरेअंधतापसनिशिवकोसमाजकैधौंऋषिकोसदनहै ॥ ४१ ॥

टी०–तहां ता आश्रममों बिप्रनके बीचमों बैठे अनेक इतिहासादि कहि बिप्रनके मनको मोहत हैं इत्यर्थः लोकेश (ब्रह्मा) ४० मृगजबछेरु (मृगबालक) सटा (ग्रीवाके बार) डोरेडोरे कहे डोल डोल अंध तापस कहे बड़े तपस्वी यासों बानरनको ऋषिनके ताडनसों अति निर्भयता जनायो, अथवा अंध कहे आंधरे जो तापस कहे तपस्वी हैं तिनको डोरे कहे हाथको गहे अर्थ जहां जाइबेकी इच्छा करत हैं तहां बानर पठाइ आवत हैं, औ शिवके समाजमें मृगजबछेरू पदते चंद्रमाके रथके हरिण जानौं अथवा और अनेक गणके मृगबाहन हैं यथा तुलसीकृत रामायणे ॥ नानाबाहननानावेषा । हरषेशिवसमाजनिजदेखा ॥ औ सुरभि पदते महादेवको बाहन वृषभ जानौं औ वाघबालक पदते काहू गणको बाहन बाघ जानौं औ सिंहपदते देवीको बाहन सिंह जानौं अथवा दूनों पदते सिंहही

जानौं औ गयंदपदते गणेश जानौं औ फणी महादेव धारण करे हैं मोर स्वामिकार्तिकको बाहन है अंधतापस कहे तापस वेषधारी जे आंधरे गण हैं ॥ यथा तुलसीकृतरामायणे ॥ विपुलनयनकोउनयनबिहीना ॥ औ बानरपदते वानरमुख गण जानौ ॥ यथा तुलसीकृतरामायणे । खरश्वानशुकरशृगालमुखगणवेषअगणितकोगनै । जैसे शिवके समाजमें स्वाभाविक बिरोधी जीव अविरुद्ध रहत हैं तैसे आश्रमहूंमें रहत हैं इतिभावार्थः ॥ ४१ ॥

मू०—भुजंगप्रयातछंद ॥ जहांकोमलैवल्कलैबाससोहैं । जिन्हैंअल्पधीकल्पसाषीबिमोहैं ॥ धरेशृंखलादुःखदाहैदुरंतै । मनोंशम्भुजीसंगलीनेअनंतै ॥ ४२ ॥

टी०—यामें आश्रमके ऋषिजननको वर्णन है जहां जा आश्रममें ऋषिनके कोमल बल्कलहींनके वस्त्र सोहत हैं परंतु जिनको देखि अल्पधी (लघुबुद्धि) अर्थ स्पर्द्धायुक्त है बुद्धि जिनकी ऐसे जे कल्पसाखी (कल्पवृक्ष) हैं ते बिमोहैं कहे मोहित होत हैं, अथवा अल्पकी धी कहे बुद्धिसों अर्थ हम इनसों लघु हैं या बुद्धिसों मोहत हैं केवल बचनहीसों एतो देत हैं जे तो कल्पवृक्षनहूंको मोह होत है कि हमहूं इनसम न भये; अथवा (कल्पसाक्षी) पाठ होइ तौ जिनको देखि अल्पकी धी करिकै अर्थ हम इनसों लघु हैं या बुद्धिसों कल्पाक्षी जे कल्पांतयोनी (मार्कंडेय) आदि हैं ते मोहत हैं औ केवल शृंखला जो कठिन बंधन है ताको धारण करे हैं परंतु दुरंत कहे बड़े जे औरनके दुःख हैं तिनको दाहै कहे नाश करत हैं अर्थ ऐसे ऐसे आचार्य कृत्यनसों युक्त हैं। शृंखला पुंष्कटीवस्त्रबंधे च निगडे त्रिषु इति मेदिनी। महादेव, अनंत जे शेष हैं तिनको संगमें लीन्हें हैं धारण करे हैं औ ऋषिजन अनंत जे भगवान हैं तिनके ध्यानसों अथवा कथनसों संगमें लीन रहते हैं ॥ ४२ ॥

मू०—मालिनीछंद ॥ प्रशमितरजराजैहर्षवर्षासमयसे । बिरलजटनसाषीस्वर्नदीकूलकैसे ॥ जगमगदरशाईसूरकेअंशुऐसे । गहकेशपाशैप्रियासीबखानौं । कँपैशापकेत्रासतेगातमानौं ॥ मनोंचंद्रमाचंद्रिकाचारुसाजैं । जरासोंमिलेयोंभरद्वाजराजैं॥४४

टी०– फेरि कैसे हैं ऋषिजनसों कहत हैं बर्षासमयमें रज जो धूरि है सो प्रशमित कहे नष्ट राजति है ऋषिनके रजोगुण सब ऋषि सत्वगुणी हैं इतिभावार्थः स्वर्नदी (गंगा) के कूलको साखी (वृक्ष) विरल कहे प्रगट जटा जे जरे हैं तिनसहित हैं इहां स्वर्नदीकूलको साखी कहि अति पावन-ताहू जनायो अथवा स्वर्नदी उपलक्षणमात्र है नदीमात्रके कूलको जानौं नदीके प्रबाहके बेगसों जरें खुलि जाती हैं प्रसिद्ध है औ ऋषिजन जटा जे लग्न भये कच हैं तिन सहित हैं ॥ जटा लग्नकचे मूले, इति मेदिनी ॥ सूरके अंशु (किरणि) जगके जे मग (राह) हैं तिनके दरशाई (देखावनहार) हैं औ ऋषि यमलोकके जे ब्रह्मदोषादि स्वर्गलोक के यज्ञादि इत्यादि सब लोकनके मग दरशाई हैं राम नामके जपसों स्वर्ग नरकको भोग मिटत है मुक्ति होति है ऋषिजन ज्ञानोपदेश करि स्वर्ग नरकको भोग दूरि करि मोक्षको प्राप्त करत हैं औ जो सब चरणनके अंतमें सो, पाठ होइ तौ केवल भरद्वाजहीको बर्णन है ॥ ४३ ॥ जरा जो वृद्धता है सो भरद्वाजके केशपाश गहे है तासों प्रिया कहे अतिप्रिया स्त्रीसम बखानियत है प्रियाहू अतिप्यारसों धृष्टता करि पतिके केश गहति है सो केश गहिबो अनुचित समुझि ऋषि शाप न देहिं याही त्राससों मानों ताके गात कांपत हैं; जो कहो अंग तौ भरद्वाजके कांपत हैं वृद्धताके कैसे कह्यो तौ भरद्वाजके अंगनमें मिले वृद्धताके अंग कांपत हैं ताहीमों भरद्वाजहूके अंग कांपत हैं काहेते भरद्वाजके अंगनमें प्रथम कंप नहीं रह्यो तासों जानौं चंद्रसम ऋषि हैं चंद्रिकासम शुक्ल जरा है अर्थ जरायुक्त शुक्ल बार हैं ॥ ४४ ॥

मू०–दोहा ॥ भस्मत्रिपुंडकशोभिजै, बरणतबुद्धिउदार ॥ मनोंत्रिस्त्रोतासोतद्युति, बंदतलगीलिलार ॥ ४५ ॥ भुजंगप्रयातछन्द ॥ मनोंअंकुरालीलसैसत्यकीसी । किधौंवेदविद्याप्रभाईभ्रमीसी ॥ रमैगंगकीज्योतिज्योंजन्हुनीकी । बिराजैसदा शोभदंतावलीकी ॥ ४६ ॥

टी०– त्रिस्रोता (गंगा) कहूं "बंदति" पाठ है तहां या अर्थ कि त्रिस्रोताके सोतनकी द्युति लिलारमें लगी भरद्वाजको बंदति है अर्थ सेवति है

॥ ४५ ॥ सत्यको रंग श्वेत है प्रभा (शोभा) भ्रमी कहे भरद्वाजको मुखरूपी शुभस्थान पाइकै आश्चर्ययुक्त ह्वै रही है अर्थ प्रसन्न ह्वै रही है ज्यों कहे जानों जन्हु ऋषिके मुखमें नीकी गंगाकी ज्योति रमति है जन्हु ऋषि गंगाको पान कियो है सो कथा प्रसिद्ध है ॥ ४६ ॥

मू०–गीतिकाछन्द ॥ भ्रकुटीबिराजतिश्वेतमानहुँमंत्रअद्भुतसामके । जिनकेबिलोकतहींबिलातअशेषकर्मजकामके ॥ मुखबासआशप्रकाशकेशवभौंरभीरनसाजहीं । जनुसामकेशुभस्वक्षअक्षरहंसपक्षबिराजहीं ॥ ४७ ॥ तनुकम्बुकण्ठत्रिरेखराजतिरज्जुसीउनमानिये । अबिनीतइंद्रियनिग्रहीतिनकेनिबंधनजानिये । उपवीतउज्ज्वलशोभिजैउरदेखियोबरणैंसबै । सुरआपगातपसिंधुभेजसश्वेतश्रीदरशैअबै ॥ ४८ ॥

टी०-- (सामवेद) काम जो कंदर्प है ताके जे कर्म हैं परस्त्रीगमनादि तिनते ज कहे उत्पन्न जे बस्तु हैं अम (पातक) ते अशेष कहे संपूर्ण बिलात हैं अथवा काम जो हैं शुभ अशुभ अभिलाष तिनके जे कर्म हैं तिनते ज कहे उत्पन्न बस्तु हैं अर्थ स्वर्ग, नरक भोग शुभ अभिलाषके कर्मनसों स्वर्गभोग उत्पन्न होत है; अशुभ अभिलाषके कर्मनसों नरकभोग उत्पन्न होत है; ते दुवौ बिलात हैं अर्थ जिनको देखि प्राणी स्वर्ग, नरक भोगसों भिन्न होत हैं अंतमें मुक्ति पावत हैं; प्रथम कह्यो है कि । स्वर्गनरकहंतानामश्रीरामकैसो । औ सामके मंत्रके पुरश्चरणसों कामके कर्मज बिलात हैं इनके देखतही तासों अद्भुत कन्यो वास सुगंध ॥ ४७ ॥ कंबु सदृश कंठमें तनु सूक्ष्म त्रिरेख राजति है ताहि रज्जु कहे जेवरीसम अनुमानियत है सो जेवरी कोहेके लिये है अविनीत कहे अशिक्षित अर्थ आज्ञा टारि अभिलषित बात कर्त्ता जे इंद्रिय नेत्रादि हैं तिनके निग्रही कहे ताड़न कर्त्ता अर्थ दुःखद निबंधन कहे बंधन है तपसिंधु (भरद्वाज) हैं सुरआपगा (गंगाके) तीनों सोतसम उपवीतके तीनों सूत्र हैं सिंधुमें मिलिवो नदीको धर्म है ॥४८॥

मू०–दोहा ॥ फटिकमालशुभशोभिजै, उरऋषिराजउदार ॥

अमलसकलश्रुतिवरणमय, मनोंगिराकोहार ॥ ४९ ॥ सुंदरी-छंद ॥ यद्यपिहैरसरूपरस्योतनु । दंडहिसोंअवलंवितहैमनु ॥ धूमशिखानकेव्याजमनोंगुनि । देवपुरीकहँपंथरच्योमुनि॥५०॥ रूपधरेबड़वानलकोजनु । पोषतहैंपयपानहिंसोंतनु ॥ क्रोध-भुजंगममंत्रबखानहुँ । मोहमहातमकेरविमानहुँ ॥ ५१ ॥

टी०— श्रुतिबर्ण (वेदाक्षर) सम फटिक गुरिया हैं औ भरद्वाजकी बाती (सरस्वती) डोरासम है अर्थ सरस्वतीमें गुहिके मानों वेदाक्षरनहीकी माला पहिरे हैं ॥ ४९ ॥ वृद्धतासों चलिबेके लिये दंड लिये हैं तामें तर्क करत हैं कि ऋषिको तनुरूप रस पदते रूप, रस, गंध, शब्द, स्पर्श, पांचौ इंद्रिनके पांचौ बिषय जानों तिनकरिकै कहे तिनकी बासना करिकै रह्यो कहे ब्यै गयो है रहित भयो है इति अर्थ वृद्धतासों नेत्रादि इंद्रिनसों रूपादि बिषयकी वासना टरि गई है ताहू पर मानों दंडसों अवलंबित कहे युक्त है दंडपद श्लेष है दंड कहे निग्रह औ लकुट औ अग्निहोत्राग्निको आहुतिसों नित्यहीं प्रज्वलित कियो करत हैं तामें तर्क है कि धूमशिखा जो अग्नि है ताके व्याज मानों देवपुरीकी पंथ (राह) बनायो है ॥ ५० ॥ पय (दुग्ध) औ (जल) ॥ ५१ ॥

मू०— सत्यसखाअसखाकलिकेजनु । पर्बतऔषधिसिद्धिनकेमनु ॥ पापकलापनकेदिनदूषण । देखिप्रणामकियोजगभूषण ॥ ५२ ॥ पद्धटिकाछंद ॥ सीतासमेतशेषावतार । दंडवत कियेऋषिकेअपार ॥ नरवेषबिभीषणजामवंत । सुग्रीववालिसुतहनूमंत ॥५३॥ ऋषिराजकरीपूजाअपार । पुनिकुशलप्रश्न पूंछीउदार ॥ शत्रुघ्नभरतकुशलीनिकेत । सबमित्रमन्त्रिमातन समेत ॥५४॥ भरद्वाज ॥ कहकुशलकहौंतुमआदिदेव। सबजानतहौसंसारभेव ॥ बिधिबिष्णुशंभुरविशशिउदार । सबपावकादिअंशावतार ॥५५॥ ब्रह्मादिसकलपरमाणुअंत । तुमहींहोरघु

पतिअनंत ॥ अबसकलदानदैपूजिविप्र । पुनिकरहुबिजयबैकुंठक्षिप्र ॥ ५६ ॥ इतिश्रीमत्सकललोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांरामस्यभरद्वाजाश्रमगमनंनामबिंशःप्रकाशः ॥ २० ॥

टी०– सत्य कहे सत्ययुग औषधि सम जे आठौ सिद्धि हैं तिनके पर्वत हैं जैसे पर्वतमें औषधी रहती हैं तैसे ऋषिमें आठौ सिद्धी रहती हैं कलाप (समूह) जगभूषण (रामचंद्र) ॥ ५२ ॥ प्रथम दूरसों करनसों प्रणाम कियो यामें निकट जाइ दंडप्रणाम करयौ ॥ ५३ ॥ पुनि कहे फिर ऋषिकी पूजा किये पर रामचंद्र कुशलप्रश्न पूछत भये ॥ ५४ ॥ अंशावतार कहे तुम्हारे अंशावतार हैं ॥ ५५ ॥ जालांतरगते भानौ यत्सूक्ष्मं दृश्यते रजः । तस्य षष्ठितमो भागः परमाणुः स उच्यते ॥ बिजय कहे हमारे इहां भोजन करौ वैकुंठ! रामचंद्रको (संबोधन) है ॥ बिष्णुर्नारायणः कृष्णो बैकुंठो विष्टरश्रवः इत्यमरः ॥ ५६ ॥ इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायांनामबिंशतितमःप्रकाशः ॥ २० ॥

मू०– दोहा एकईसयेंप्रकाशमें, कहऋषिदानबिधान ॥ भरतमिलनकपिगुणनको, श्रीमुखआपबखान ॥ १ ॥ श्रीरामसोमराजीछंद ॥ कहादानदीजे । सुकैभांतिकीजे ॥ जहांहोहिँ जेसो । कहोविप्रतैसो ॥ २ ॥ भरद्वाज–दोहा ॥ सात्विकतामसराजसी, दानतीनिबिधिजानि ॥ उत्तममध्यमअधमपुनि, केशवदासबखानि ॥ ३ ॥ चंचरीछंद ॥ पूजियेद्विजआपनेकरनारिसंयुतजानिये । देवदेवहिथापिकैपुनिवेदमंत्रबखानिये । हाथलैकुशगोतउच्चरिस्वर्णयुक्तप्रमानिये । दानदेकछुऔरदीजहिदानसात्विकजानिये ॥ ४ ॥

टी०– १ कहा कहे कौन बस्तु कैभांति कहे कैप्रकारसों दान कीजै दान पदको संबंध याहूमों है ॥ २ ॥ ३ ॥ देव देव जे बिष्णु हैं तिनहिं था-

पिकै कहे तिनके अर्थ फल समर्पण करिकै अथवा ब्राह्मणको देवहि (बिष्णुहि) थापिकै कहे मानिकै अथवा देवदेवकी स्थापना करिकै सुबर्णसों युक्त कुश हाथमें लैकै गोतको उच्चरिकै वेदके मंत्रसों दान दै फेरि कछू और दीजै अर्थ सांगतादान दीजै दानके बादि जो दान दियो जात है सो सांगतादान कहावत है ॥ ४ ॥

मू०- दोधकछंद ॥ देहिँ नहींअपनेकरदानैं। औरकेहाथजो मंगलजानै ॥ दानहिँ देतजोआरसुआवै। सोवहराजसदानकहावै ॥ ५ ॥ बिप्रनदीजतहीनाबिधानैं। जानहुँताकहँतामसदानैं ॥ बिप्रनजानहुँजैनररूपै। जानहुँयेसबबिष्णुस्वरूपै ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ साचारो वा निराचारो साधुर्वासाधुरेवच । अविद्यो वा सविद्यो वा ब्राह्मणो मामकी तनुः ॥ ७ ॥ तोमरछंद ॥ द्विजधामदेहिँ जोजाइ। बहुभाँतिपूजिसुराइ ॥ कछुनाहिँ नैपरिमान। कहियेसोउत्तमदान ॥ ८ ॥ द्विजकोजोदेतबोलाइ। कहियेसोमध्यमराइ ॥ गुनियाचनामिसदानु। अतिहीनताकहँ जानु ॥ ९ ॥

टी०- ५ बिप्रनको जग रूपै कहे जगतके सदृशै जै कहे जनि जानहुँ ॥ ६ ॥ पाछे कह्यो कि बिप्रनको बिष्णुस्वरूपै जानौं ताको बिष्णु बाक्यसों पुष्ट करत हैं बिष्णु कह्यो है कि ब्राह्मण कहे आचार सहित होइ और अर्थ सुगम है मामकी कहे हमारो तनु कहा है ॥ ७ ॥ ताकी उत्तमताको कछू प्रमाण नहीं है ॥ ८ ॥ अतिहीन कहे अधम ॥ ९ ॥

मू-० श्लोक ॥ अभिगम्योत्तमं दानमाहूतं चैव मध्यमं। अधमं याच्यमानं स्यात्सेवादानं तु निष्फलं ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ प्रतिदिनदीजतनेमसों, ताकहँनित्यबखान ॥ कालहिपाइजो दीजिये, सोनैमित्तिकदान ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ आश्रितं साधुकर्माणं ब्राह्मणं यो व्यतिक्रमेत् । तस्यपुण्यचयोप्याशु क्षयं याति न संशयः ॥ १२ ॥ तोटकछंद ॥ पहिलेनिजबर्तिनदेहुअ-

वै । पुनिपावहिंनागरलोगसबै ॥ पुनिदेहुसबैनिजदेशिनको । उबरोधनदेहुबिदेशिनको ॥ १३ ॥ दोधकछंद ॥ दानसकाम अकामकहेहैं । पूरिसबैजगमांझरहेहैं ॥ इच्छितहीफलहोतसकामैं । रामनिमित्ततेजानिअकामै ॥ १४ ॥

टी०— अभिगम्य कहे ब्राह्मणके घरमें जाइकै जो दान है सो उत्तम है औ आहूत कहे ब्राह्मणको बोलायकै जो दान है सो मध्यम है औ याच्यमान कहे जब ब्राह्मण मांगै आइ तब जो दान है सो अधम है औ सेवादान कहे जब ब्राह्मण सेवा करै तब जो दान है सो निष्फल है अर्थ वामें कछू पुण्य नहीं है ॥ १० ॥ काल पाइ अर्थ चन्द्र सूर्य ग्रहणादि समयमों ॥ ११॥ आपनो आश्रित जो साधुकर्मा ब्राह्मण है ताको जो व्यतिक्रमेत कहे व्यतिक्रम करत है अर्थ तिन्हैं छोड़ि औरको दान देत है ताको पुण्यचय कहे पुण्यसमूह आशु कहे शीघ्र ही "क्षयं याति" कहे क्षयको प्राप्त होत है यामें संशय नही अपि शब्दते या जनायो कि थोरी पुण्य तौ क्षयको प्राप्त होतिही है ॥ १२ ॥ आश्रितको व्यतिक्रम न कियो चाहिये तासों पहिले निज कहे आपने वर्त्ती कहे आश्रितनको देहु औ "निजवृत्तिन" पाठ होइ तौ निज कहे आपने इहां है दानहीसों वृत्ति कहे जीविका जिनकी नागर कहे नगरवासी ॥ १३ ॥ १४ ॥

मू०— दानतेदक्षिणबामबखानों । धर्मनिमित्ततेदक्षिणजानों ॥ धर्मबिरुद्धतेबामगुनौजू । दानकुदानसबैतेसुनौजू ॥१५॥ देहुसुदानतेउत्तमलेखो । देहुकुदानतिन्हैंजनिदेखो ॥ छांड़िसबै दिनदानहिँदीजै । दानहिँतेसबकेमतलीजै ॥ १६ ॥ दोहा ॥ केशवदानअनंतहैं, बनैंनकाहूदेत ॥ यहैजानिभुवभूपसब, भूमिदानहीदेत ॥ १७॥ ॥ श्लोक॥ यत्किंचित्कुरुते पापं ज्ञानतोज्ञानतोपि वा । अपि गोचर्ममात्रेण भूमिदानेन शुध्यति ॥ १८॥ सप्तहस्तेन दंडेन त्रिंशद्दंडैर्निवर्तनं । दशतान्येव गोचर्म दत्त्वा स्वर्गे महीयते ॥ १९ ॥ अन्यायेन कृता भूमिर्यैर्नरैरपहारिता ।

हरंतो हारयंतश्च हन्यते सप्तमं कुलं ॥ २० ॥ राम–दोहा ॥ कौनहिदीजैदानभुव, हैंऋषिराजअनेक ॥ देहुसनाढ्यनआदि दै, आयेसहितबिवेक ॥ २१ ॥ श्रीराम–उपेंद्रवज्राछंद ॥ कहौ भरद्वाजसनाढ्यकोहैं । भयेकहांतेसबमध्यसोहैं ॥ इतेसबैबिप्रप्रभावभीने । तजेतेक्योंयेअतिपूज्यकीने ॥ २२ ॥

टी०– मारणोच्चाटनादिके लिये जो दान है सो धर्मविरुद्ध जानौ अथवा वेश्यादिके अर्थ दान ॥ १५ ॥ सबके मीमांसकादिकनके मत कहे सम्मत अर्थ सम्मत फलको लीजे कहे पाइयत है अर्थ मीमांसकादिकनको मत है कि यज्ञादिसों ऐहिक पारलौकिक फल होत है सो सब फल दाननहींसों पाइयत है तासों सबको यज्ञादिकनको छोड़िकै दिनप्रति दानहींको दीजै ॥ १६ ॥ १७ ॥ यत्कहे जो ज्ञानतः कहे जानिकै अज्ञानतः कहे बिनजाने कोऊ प्राणी किंचित्कहे कछु पापं कहे पाप जो है ताहि कुरुते कहे करत है, सो प्राणी गोचर्ममात्रेण भूमिदानेन कहे गोचर्ममात्र भूमिदान करत संते शुद्ध होत है अपि शब्दकोअर्थ यह कि अधिक भूमिदान करै तासों तौ शुद्ध यामें गोचर्मको लक्षण कहत हैं ॥ १८ ॥ सप्तहस्तेन दंडेन कहे सात हाथके दंडकरिकै त्रिंशद्दंडैः कहे तीसदंड करत संते निवर्तन संज्ञक भूमिक्षेत्र होत है हस्तप्रमाण दुइसैदश औ दशतान्येव कहे तेई निवर्त्त नहीं एक गोचर्म संज्ञक क्षेत्र होत है हस्तप्रमाण इकीससै २१०० सो गोचर्म प्रमाणहूं भूमिको दत्वा कहे दैकै स्वर्गे कहे स्वर्गको महीयते कहे जात है ॥ १९ ॥ येर्नरैः कहे जिन नरन करिकै अन्यायेन कहे न्याव बिनाहीं भूमिहृता कहे हरी गई औ जिन नरन करिकै अपहारिता कहे हराई गई ता भूमिकरिकै हरंतः कहे हरनहार औ हारयंतः (हरावनहार) ते हन्यते कहे पीड़ाको प्राप्त होत हैं अर्थ सो भूमि तिनको पीड़ा करती है औ "तेषां सप्तमं कुलमपि हन्यते" अर्थ ताही भूमि करिकै तिनके सातपुरुस्ति पर्यंत पितर पीड़ाको प्राप्त होत हैं अर्थ जे दानकी भूमिको निर्दोष छोरत हैं औ वृथापवाद कहि छोरावत हैं सो भूमि तिनको औ तिन दुहुनके सप्तपुरुस्तिपर्यंत पितरनको पितृलोकमें पीड़ा करति है ॥ २० ॥ ऋषि कह्यौ सनाढ्यनको

दान देहु काहेते इन सनाढ्यनको आदिहीसों असअर्थ जबसों इनकी उत्पत्तिहै तबहीसों तुम विवेक सहित दै आये हो ॥ २१ ॥ २२ ॥

मू०- भरद्वाज ॥ गिरीशनारायणपैसुनीयों । गिरीशमोसों जोकहीकहौंत्यों ॥ सुनोसोसीतापतिसाधुचर्चा । करीसोजाते तुमब्रह्मअर्चा ॥ २३ ॥ नारायण--मोटनकछंद ॥ मोतेजलनाभि सरोजबढ़्यो । ऊंचोअतिउग्रअकाशचढ़्यो ॥ तातेचतुराननरूप रयो । ब्रह्मायहनामप्रगट्टभयो ॥ २४ ॥ ताकेमनतेसुतचारिभ- ये । सोहैंअतिपावनवेदमये ॥ चौहूंजनकेमनतेउपजे । भुवदेव सनाढ्यतेमोहिंभजे ॥ दीन्होतुमहींतिनजोहितजू । ह्वैहौतुमब्र- ह्मपुरोहितजू ॥ २५ ॥

टी०- गिरीश (महादेव) जाते कहे जाकारणते तुम ब्रह्म अर्चा कहे सनाढ्य ब्राह्मणनकी पूजा करी है अथवा ब्रह्म जे तुम हौ ते सनाढ्यनकी अर्चा आदिहीसों करी है ॥ २३ ॥ २४ ॥ यह छंद छह चरणको है चारि सुत स- नक, सनंदन, सनातन, सनत्कुमार वेदमये कहे वेदस्वरूप ये नारायणके व- चन शिव प्रति हैं तिन्हैं कहिकै द्वै चरणनमों भरद्वाज रामचन्द्रसों कहत हैं कि हे रामचंद्र ! नारायणरूप जे तुम हौ तिनहीं तिनको हितसों यह वचन दियो है वचन इतिशेषः ॥ कि तुम ब्रह्म कहे परब्रह्मके पुरोहित ह्वै हो ॥ २५ ॥

मू०- गौरीछंद ॥ तातेऋषिराजसबैतुमछांड़ो । भूदेवसना- ढ्यनकेपदमाड़ो ॥ दीन्होतुमहींतिनकोबरुरूरे । चौहूँयुगह्वोहु तपोबलपूरे ॥ २६ ॥ उपेन्द्रबज्राछंद ॥ सनाढ्यपूजाअघओघ- हारी । अखंडआखंडललोकधारी । अशेषलोकावधिभूमिचारी । समूलनाशैंनृपदोषकारी ॥ २७ ॥ श्रीराम–तोटकछंद ॥ हनुम- न्तबलीतुमजाहुतहां । मुनिवेषभरत्थबसंतजहां ॥ ऋषिकेह- मभोजनआजुकरैं । पुनिप्रातभरत्थहिँअंकभरैं ॥ २८ ॥ चतुष्प

दीछंद ॥ हनुमंतबिलोकेभरतसशोकेअंगसकलमलधारी । बक-लापहिरेतनशीशजटागणहैंफलमूलअहारी ॥ बहुमंत्रिनगणमें राजकाजमेंसबसुखसोहिततोरे । रघुनाथपादुकातनमनप्रभुक-रिसेवतअंजुलिजोरे ॥ २९ ॥

टी०— ब्रह्मपुरोहित हूबेको इन्हैं तुह्मारोई बर है औ तुम ब्रह्म हौ ताते कहे ता हेतुते ॥ २६ ॥ अखंड कहे पूर्ण आखंडललोकधारी कहे इंद्रलोक-की धरणहारी है जो कोऊ सनाव्यनकी पूजा करत है ताको पूर्ण इंद्रलोक देति है इति भावार्थः अशेषलोकावधि कहे चौदहो लोक पर्यंत जो भूमि कहे स्थान है तिनमें चारी कहे गमनकारी है अर्थ चौदहोंलोकमें सनाव्य-नकी पूजा सब करत है अथवा चौदहोंलोकनमें नैनमारग, श्रवणमारग ह्वै गमन करति है अर्थ चौदहोंलोकमें बिदित है ॥ २७ ॥ बीसयें प्रकाशमें भरद्वाज कह्यो है कि अब करहु बिजय वैकुंठ छिप्र या प्रकार निमंत्रण दि-यो है तासों रामचन्द्र हनूमानसों कहत हैं कि आज ऋषिको निमंत्र-ण है तासों ऋषिके इहां भोजन करि प्रात भरतपास नन्दिग्राममें आइ हैं ॥ २८ ॥ २९ ॥

मू०— हनुमान ॥ सबशोकनिछाड़ौभूषणमाड़ौकीजेबिबिधि बधाये । सुरकाजसँवारेरावणमारेरघुनंदनघरआये ॥ सुग्रीवसु-योधनसहितबिभीषनसुनहुभरतशुभगीता । जयकीरतिज्योंसँ-गअमलसकलअँगसोहतलक्ष्मणसीता ॥३०॥ पद्धटिकाछंद ॥ सुनिपरमभावतीभरतबात । भयेसुखसमुद्रमेंमगनगात ॥ यह सत्यकिधौंकछुस्वमईश । अबकहाकह्योमोसनकपीश ॥ ३१ ॥ जैसेचकोरलीलैअँगार । त्योहिभूलिजातिसिगरीसँभार ॥ जीउ-ठतउबतज्योंउदधिनंद । त्योंभरतभयेसुनिरामचन्द ॥३२॥ ज्यों सोइरहतसबशूरहीन । अतिह्वैअचेतयद्यपिप्रबीन ॥ ज्योंउबत उठतहँसिकरतभोग । त्योंरामचंद्रसुनिअवधिलोग ॥३३॥ मा लिनीछंद ॥ जहँतहँगजगाजैंदुंदुभीदीहबाजैं । बहुबरणपता-

कास्यंदनाश्वादिराजैं ॥ भरतसकलसेनामध्ययोंवेषकीने । सुरपतिजनुआयेमेघमालानिलीने ॥ ३४ ॥ सकलनगरबासीभिन्नसेनानिसाजैं । रथसुगजपताकाझुंडझुंडानिराजैं ॥ थलथलसबशोभैंशुभ्रशोभानिछाई । रघुपतिसुनिमानोंऔधिसीआजआई ॥ ३५ ॥ चामरछंद ॥ यत्रतत्रदासईशव्योमतेंबिलोकहीं । बानरालिरीछराजिदृष्टिसृष्टिरोकहीं । ज्योंचकोरमेघओघमध्यचंद्रलेखहीं । भानुकेसमानजानत्योंबिमानदेखहीं ॥ ३६ ॥ मदनमनोहरदंडक ॥ आवतबिलोकिरघुबीरलघुबीरतजिब्योमगतिभूतलबिमानतबआइयो । रामपदपद्मसुखसद्मकहँबंधुयुगदौरितबषट्मदसमानसुखपाइयो । चूमिमुखसूंघिशिरअंकरघुनाथधरिअश्रुजललोचननिपेखिउरलाइयो । देवमुनिवृद्धपरसिद्धसबसिद्धजनहर्षितनपुष्पबर्षानिबरषाइयो ॥ ३७ ॥

टी०— माड़ौ कहे पहिरौ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ उदधिनंद (चन्द्रमा) ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ स्यंदन (रथ) अश्व (घोड़े) आदि पदते पालकीआदि और जानौं ॥ ३४ ॥ थल थलमें सकल नगरबासी कैसे शोभित हैं कि अनेकप्रकारके भूषण बस्त्रादिकी शोभानसों छायो रघुपतिको आगमन इतिशेषः सुनिकै मानों अवधपुरीहीसी आई है ॥ ३५ ॥ बानरनकी आलि कहे पंक्ति औ ऋक्षनकी राजि पंक्ति है सो पुरबासिनकी दृष्टिकी जो सृष्टि कहे ताको रोंकति है अर्थ आगे बानर ऋक्ष उड़त आवत हैं तासों रामचन्द्र नहीं देखि परत भानु कहे सूर्यरूपी जो यान कहे बाहे बाहन है तामों चढ़्यो चंद्रमाको जैसे मेघओघ कहे मेघसमूहमें चकोर लेखैं ताही विधि भानु (सूर्य) सम जान (पुष्पक) में रामचन्द्रको ऋक्ष बानरनके मध्यमें पुरबासी देखत हैं यामें (अभूतोत्प्रेक्षा) है दूसरो अर्थ सुगम है ॥ ३६ ॥ अंक कहे गोदमें धरि लियो कहे बैठारि लियो फेरि लोचननमें अश्रु देखि अति प्रीतिसों उरमें लाइ लियो ॥ ३७ ॥

मू०— दोहा ॥ भरतचरणलक्ष्मणपरे, लक्ष्मणकेशत्रुघ्न ॥ सी-

तापगलागतादियो, आशिषशुभशत्रुघ्न ॥ ३८ ॥ मिलेभरतअरु शत्रुहन, सुग्रीवहिअकुलाइ ॥ बहुरिबिभीषणको, मिलेअंगदको सुखपाइ ॥ ३९ ॥ आभीरछंद ॥ जामवंतनलनील। मिलेभरतशुभशील ॥ गवयगवाक्षगयंद। कपिकुलसबसुखकंद ॥ ४० ॥ ऋषिबशिष्ठकोदेखि। जन्मसफलकरिलेखि ॥ रामपरेउठिपांय। लक्ष्मणसहितसुभाय ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ लैसुग्रीवबिभीषणहिं, करिकरिबिनयअनंत ॥ पाँयनपरेबशिष्ठके, कपिकुलबुधिबलवंत ॥ ४२ ॥ श्रीराम--पद्धटिकाछंद ॥ सुनिजैबशिष्ठकुलइष्टदेव। इनकपिनायकके सकलभेव ॥ हमबूड़तहैंबिपदासमुद्र। इन राखिलियोसंग्रामरुद्र ॥ ४३ ॥

टी०— जब भरत शत्रुघ्न सीताके पद लागे तब सीताजू आशिष दियो कि शत्रुघ्न कहे शत्रुनको मारौ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ कपिनायक (सुग्रीव) संग्राममें रुद्र कहे भयंकर ॥ ४३ ॥

मू०— सबआसमुद्रकीभूशोधाइ । तबदईजनकतनयाबताइ ॥ निजभाइभरतज्योंदुःखहरण । अतिसमरअमरहत्यो कुंभकरण ॥ ४४ ॥ इनहरेबिभीषणसकलशूल । मनमानतहौंशत्रुघ्नतूल ॥ दशकंठहनतसबदेवसाखि। इनालियेएकहनुमंतराखि ॥ ॥ ४५ ॥ ताजितियसुतसोदरबंधुईश । मिलेहमहिंकायमनबच ऋषीश ॥ दईमीचुइन्द्रजितकीबताय । अरुमंत्रजपतरावणदेखाय ॥ ४६ ॥ तोटकछंद ॥ इनअंगदशत्रुअनेकहने । हमहेतुसहेदिनदुःखघने ॥ बहुरावणकोसिखदैदुखलै । पुनिआयेभलेसियभूषणलै ॥ ४७ ॥

टी०— शोधाइ कहे ढुंढ़ाइके कुंभकर्णको तो रामचंद्रही मारयो है परंतु कुम्भकर्णको नासा, श्रवण, प्रथम सुग्रीव काटि लियो है ताहीं समयमें रामचन्द्र मारयो है तासों ताको मारिबो सुग्रीव ही पर स्थापित करत हैं अमर कहे काहूके मारिबे लायक नहीं ॥ ४४ ॥ जब मेघनाद ब्रह्मपाशमें

हनुमानको बांधि लैगयो है तब रावण हनूमानके बध करिबेकी आज्ञा राक्षसनको दियो है तब बिभीषण "दूत मारिये न राज छोड़ि दीजई" ऐसे बचन कहि हनुमानको बचायो है सो कथा चौदहें प्रकाशमों है ॥ ४५ ॥ सोदर (कुंभकर्ण) बंधु (ज्ञातिसमूह) ईश- (रावण) के मंत्र जपत समय अंगदादि गये हैं ता समय बिभीषणके कछू बचन नहीं हैं तौ इहां रामचंद्रकी उक्तिसों जानो कि बिभीषणहीके बतायेसों अंगदादि गये हैं ॥ ४६ ॥ हम हेतु कहे हमारे हेतु ॥ ४७ ॥

मू०-- दशकंधकेजायजोगूढ़थली । तिनकेतनसोंबहुभांतिदली ॥ महिमेंमयकीतनयाकर्षी । मतिमारिअकंपनकोहर्षी ॥ ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ मार्‌यौमेंअपराधबिन, इनकोपितुगुणग्राम ॥ मनसाबचाकर्मणा,कीन्हेमेरेकाम ॥४९॥गीतिकाछंद॥ इनजामवंतअनेकराक्षसलक्षलक्षनहींहने। मृगराजज्योंबनराजमेंगजराजमारतनीगने ॥ बलभावनाबलवानकोटिकरावणादिकहारहीं । चढ़िब्योमदीहबिमानदेवदिवानआनिनिहारहीं ॥ ५० ॥ दोहा ॥ करैनकरिहैकरतअब, कोऊऐसोकर्म ॥ जैसेबांध्योनलउपल, जलनिधिसेतुसधर्म ॥ ५१ ॥ गीतिकाछंद ॥ हनुमन्तयेजिनमित्रतारविपुत्रसोंहमसोंकरी । जलजालकालकरालमालउफालपारधराधरी ॥ निइशंकलंकनिहारिरावणधामधामनिधाइयो। यकबाटिकातरुमूलसीनहिंदेखिकेदुखपाइयो॥५२॥

टी०-- गूढ़स्थली (जयस्थान) तिनके अंगदके तनसों कर्षी कहे खैंची कठोरी इति औ अकंपनको मारिकै इनकी मति हर्षी (प्रसन्न) भई ॥४८॥ ॥ ४९ ॥ लक्षलक्षनही अर्थ एक एक बारमें लाख लाख मार्‌यो है बनराज कहे बड़ो बन बलभावता कहे बलक्रिया हारही कहे हारत भये यहां भूतार्थमों बर्त्तमान प्रत्ययको अर्थ है ॥ ५० ॥ उपल (पाषाण) सधर्म कहे यथोचित ॥ ५१ ॥ कालहूते कराल जे नक्रादि जंतु हैं तिनको है माल कहे समूह जामें ऐसो जो जलजाल कहे समुद्रको जलसमूह है ताके पारकी

धरा पृथ्वीको उफाल कहे कूदिबो ताहीसों धरी कहे प्राप्त भये अर्थ एतो बड़ो समुद्र ताके पार कूदिही कै गये काहू पोतादिमें नहीं गये इति भावार्थः ॥ ५२ ॥

मू०- तरुतोरिडारिप्रहारिकिंकरमंत्रिपुत्रसँहारियो। रणमारिअक्षकुमाररावणगर्वसोंपुरजारियो । पुनिसौंपिसीतहिँमुद्रिकामणिशीशकीजबपाइयो । बलवन्तनांघिअनंतसागरतैंसही फिरिआइयो ॥ ५३ ॥ दशकंठदेखिबिभीषणैरणब्रह्मशक्तिचलाइयो । करिपीठिस्योंशरणागतैतबआपवक्षासिलाइयो । यकयामयामिनिमेंगयोहतिदुष्टपर्वतआनिकै । त्यहिकाललक्ष्मणकोजिआइजियाइयोहमजानिकै ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ अपने प्रभुकोआपनो, कियोहमारोकाज ॥ ऋषिजुकहौहनुमन्तसों, भक्तनकोशिरताज ॥ ५५ ॥ चामरछन्द ॥ बीरधीरसाहसीबलीजेंबिक्रमीक्षमी । साधुसर्वदासुखीतपीजपीजेसंयमी ॥ भोगभागयोगयागबेगवन्तहैंजिते । बायुपुत्ररामकाजवारिडारियेतिते ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ सीतापाईरिपुहत्यो, देख्योतुमअरुगेहु ॥ रामायणजपसिद्धिको, कपिशिरटीकादेहु ॥ ५७ ॥ दोहा यहिबिधिकपिकुलगुणनको, कहतहुतेश्रीराम ॥ देख्योआश्रमभरतको, केशवनन्दिग्राम ॥ ५८ ॥

टी०-अनंत कहे बड़ो ॥ ५३ ॥ दुष्टपदते कालनेमि जानो लक्ष्मणको जियाइ हम कहे हमैं जियायो लक्ष्मणके मरे राम न जी हैं यह जानिकै ॥ ५४ ॥ सब भक्तनके शिरताज एई हैं इति भावार्थः ॥ ५५ ॥ विक्रमी (उपायी) भाग कहे (भाग्य) वतुप्रत्ययांत भोगादि पांचौ शब्द जानौ रामकाजमें वायुपुत्र पर इत्यादिन- (बीरादिकन) को सबन वारि डारियत है अर्थ जो रामकाज वायुपुत्र संवाऱ्यो है सो इन बीरादिकनको काहूको सँवाऱ्यो न सँवारतो ॥ ५६ ॥ रामायण कहे रामकथा ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

मू०- सुन्दरीछंद ॥ पुष्पकतेउतरेरघुनायक ॥ यक्षपुरीपठये

सुखदायक ॥ सोदरकोअवलोकितपोथलु । मूलिरह्योकपिराक्षसकोदलु ॥ ५९ ॥ कंचनकोअतिशुद्धसिँहासन । रामरच्योत्यहिऊपरआसन ॥ कोपरहीरनकोअतिकोमल । तामहँकुंकुमचन्दनकोजल ॥ ६० ॥ दोहा ॥ चरणकमलश्रीरामके, भरतपखारेआप ॥ जातेगंगादिकनको, मिटतसकलसंताप ॥ ६१ ॥ पंकजबाटिकाछंद ॥ सूरजचरणविभीषणकेअति । आपुहिभरतपखारिमहामति ॥ दुन्दुभिधुनिकरिकैबहुभेवनि । पुष्पबरषिहरषेदिविदेवनि ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ पीछेदुरिशत्रुघ्नसन, लक्ष्मणध्वायेपाइ ॥ चरणसौमित्रिपखारियो, अंगदादिकेआइ ॥ ॥ ६३ ॥ तोमरछन्द ॥ शिरतेजटानिउतारि । अँगअंगरागनिधारि ॥ तनभूषिभूषणबस्त्र । कटिसोंकसेसबशस्त्र ॥ ६४ ॥ दोहा ॥ शिरतेपावनपादुका, लैकरिभरतबिचित्र ॥ चरणकमलतरहरिधरी, हँसिपहिरीजगमित्र ॥ ६५ ॥

टी०—यक्षपुरी (कुबेरपुरी) ॥ ५९ ॥ कोमल कहे चिक्कण ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ सौमित्रि (शत्रुघ्न) ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ तरहरि कहे तरे ॥ ६५ ॥

मू०— इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणि श्रीरामचंद्रचंद्रिकाया मिन्द्रजिद्विरचितायांरामस्यनन्दिग्रामप्रवेशोनामैकविंशतितमःप्रकाशः ॥ २१ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसाद निर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायांएकविंशतितमः प्रकाशः ॥ २१ ॥

मू०— दोहा ॥ याबाइसेप्रकाशमें, अवधपुरीहिप्रवेश ॥ पुरबासिनमातानिसों, मिलिबोरामनरेश ॥ १ ॥ सुन्दरीछंद ॥ अवधपुरीकहँरामचलेजब । ठौरहिठौरबिराजतहैंसब ॥ भरत भयेशुभसारथिशोभन । चमरधरेरविपुत्रविभीषन ॥ २ ॥ तो-

मरछंद ॥ लीनीछरीदुहुंबीर । शत्रुघ्नलक्ष्मणधीर ॥ टारैंजहांतहँभीर । आनन्दयुक्तशरीर ॥ ३ ॥ दोधकछंद ॥ भूतलकीदिविभीरबिराजैं । दीहदुहूंदिशिदुन्दुभिबाजैं ॥ भाटभलेबिरदावलिगावैं । मोदमनोंप्रतिबिम्बबढ़ावैं ॥ ४ ॥ भूतलकीरजदेवनशावैं । फूलनकीबरषाबरषावैं ॥ हीनानिमेषसबैअवलोकैं । होड़परीबहुधाडुहुंलोकैं ॥ ५ ॥

टी०—॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ देवतनके प्रतिबिंब सम अवधबासी अवधवासिनके प्रतिबिंब सम देवता मोद बढ़ावत हैं अर्थ जो आनंदक्रिया हास्यादि अवधबासी करत हैं सोई देवता करत हैं ॥ ४ ॥ होड़ कहे बहस मानों अवधबासी बहस करि देवता लोकको धूरि उड़ावत हैं औ देवता ता धूरिको फूलनकी अतिवृष्टि करि नशाइ देते हैं अर्थ दबाइ लेते हैं औ देवता तौ अनिमेषही हैं औ रामचन्द्रके दर्शनमें अवधबासिनहूंकी पलक नहीं लागत सो मानों परस्पर होड़ किये हैं कि देखिये धौं काकी पलक लागति है यामें (असिद्ध बिषय हेतूत्प्रेक्षा) है ॥ ५ ॥

मू०— तारकछंद ॥ सिगरेदलऔधपुरीतबदेखी । अमरावतितेअतिसुन्दरलेखी ॥ चहुंओरबिराजतिदीरघखाई । शुभदेवतरंगिनिसीफिरिआई ॥ ६ ॥ अतिदीरघकंचनकोटबिराजै । मणिलालकँगूरनकीरुचिराजै ॥ पुरसुन्दरमध्यलसैछबिछायो । परिवेषमनोरबिकोफिरिआयो ॥ ७ ॥ दोहा ॥ बिबिधिपताका शोभिजैं, ऊंचेकेशवदास ॥ दिविदेवनकेशोभिजैं, मानहुंव्यजनबिलास ॥ ८ ॥ बिजयछंद ॥ चढ़ीप्रतिमंदिरशोभबढ़ीतरुणीअवलोकनकोरघुनन्दनु । मनोंगृहदीपतिदेहँधरेसुकिधोंगृहदेविबिमोहतिहैंमनु । किधोंकुलदेविदियेअतिकेशवकैपुरदेविनकोडुलस्योगनु । जहींसोतहींयहिभांतिलसैंदिविदेविनकोमदघालतिहैंमनु ॥ ९ ॥

टी०— देवतरंगिनि (गंगा) सम कह्यो तासों बिमल जल युक्त जानो

॥ ६ ॥ रविसम अयोध्यापुरी है परिबेष सम कंचनकोट है ॥ ७ ॥ ब्यजन (पंखा) ॥ ८ ॥ अपनी सुन्दरतादि देखाइ देविनके सुन्दरतादिको मद दूरि करती हैं अवधपुरीकी स्त्री देविनहूंसों अधिक सुंदरी हैं इति भावार्थः॥९॥

मू०- दोहा ॥ अतिऊंचेमंदिरनपर, चढ़ींसुन्दरीसाधु ॥ दिविदेवनकोकरतिहैं, मनुआतिथ्यअगाधु ॥ १० ॥ तोटकछंद ॥ नरनारिभलीसुरनारिसबै । तिनकोऊपरैंपहिँचानिअबै ॥ मिलिफूलनकीवरषैंबरषा । अरुगावतिहैंजयकेकरषा ॥ ११ ॥ पद्मावतीछंद ॥ रघुनन्दनआयेसुनिसबधायेपुरजनजैसेतैसे । दर्शनरसभूलेतनमनफूलेबरणेजाहिँनजैसे ॥ पतिकेसँगनारीसबसुखकारीरामहियोंहगजोरी । जहँतहँचहुँओरनिमिलीझकोरनिचाहतिचन्दचकोरी ॥ १२ ॥ पद्धटिकाछंद बहुभांतिरामप्रतिद्वारद्वार । अतिपूजतलोगसबैउदार ॥ यहिभांतिगयेनृपनाथगेह । युतसुन्दरिसोदरस्योसनेह ॥ १३ ॥ दोहा ॥ मिलेजायजननीनको, जबहींश्रीरघुराइ ॥ करुणारसअद्भुतभयो, मोपैकह्योनजाइ ॥ १४ ॥ सीतासीतानाथजू, लक्ष्मणसहितउदार ॥ सबनमिलेसबकेकिये, भोजनएकहिबार ॥ १५ ॥

टी०- अति सुंदर रूप आतिथ्यसम है ॥ १० ॥ यासों या जनायो कि जेती दूरि देविनको बिमान है तेतेई ऊंचे अवध बासिनके गृह हैं ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ नृपनाथ (दशरथ) ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

मू०- सोरठा ॥ पुरजनलोगअपार, यहईसबजानतभये ॥ हमहींमिलेअगार, आयेप्रथमहमारेही ॥ १६ ॥ मदनहराछंद ॥ सँगसीतालक्ष्मणश्रीरघुनन्दनमातनकेशुभपाइपरेसबदुःखहरे । आंसुनअन्हवायेभागनिआयेजीवनपायेअंकभरेअरुअंकधरे ॥ तेबदननिहारैंसरबसुवारैंदेहिंसबैसबहीनघनोअरुलेहिंघनो । तनमननसँभारैंयहीबिचारैंभागबड़ोयहहैअपनोकिधौंहैसपनो ॥

॥ १७ ॥ स्वागताछंद ॥ धामधामप्रतिहोतिबधाई । लोकलोकतिनकीधुनिधाई ॥ देखिदेखिकपिअद्भुतलेखें । जाहियत्रतितरामहिंदेखें ॥ १८ ॥ दौरिदौरिकपिरावरआवें । बारबारप्रतिधामनिधावें ॥ देखिदेखितिनकोदैतारी । भांतिभांतिविहसैंपुरनारी ॥ १९ ॥

टी०— ॥ १६ ॥ रामचन्द्रजू आगनसों आये तासों मातन जीवनसम पाये सो अंकमे भरे कहे अति प्रेमसों छातीमें लगाये फेरि अंक जो गोद है तामें धरे कहे बैठारे तब आनंदाश्रुनसों सीता राम लक्ष्मणको अन्हवाये औ ते सबै कौशल्यादि माता रामादिके बदन निहारती हैं औ तिनपर सर्बस्व वारि वारि सबको अर्थ याचक नेगिनको देती हैं औ तिन याचकनसों आशीर्बाद करि घनो लेती हैं पावती हैं अर्थ याचक आशीर्बाद देते हैं कि जो हमको तुम दियो ताको कोटिगुणित तुम्हारे होय अथवा रामादिके बदन दर्शनहीसों घनो लेती हैं पावती हैं अर्थ मुखदर्शन करि घनो पायो सम मानती हैं ॥ १७ ॥ १८ ॥ रावर (स्त्रीभवन) ॥ १९ ॥

मू०— श्रीराम–दोहा ॥ इनसुग्रीवबिभीषणै, अंगदअरुहनुमान ॥ सदाभरतशत्रुघ्नसम, माताजीमेंजान ॥ २० ॥ सुमित्रा-सोरठा ॥ प्राणनाथरघुनाथ, जियकीजीवनमूरिहौ ॥ लक्ष्मणहेतुमसाथ, क्षमियहुचूकपरीजोकछु ॥ २१ ॥ राम-दंडक ॥ पौरियाकहौंकिप्रतीहारकहौंकिधौंप्रभुपुत्रकहौंमित्रकिधौं मंत्रीसुखदानिये । सुभटकहौंकिशिष्यदासकहौंकिधौंदूतकेशवदासहाथकोहथ्यारउरआनिये । नैनकहौंकिधौंतनमनकिधौंतनत्राणबुद्धिकहौंकिधौंबलबिक्रमबखानिये । देखिबेकोएकहैंअनेकभांतिकीन्हीसेवालक्ष्मणकेमातकौनकौनगुणगानिये ॥ २२ ॥

टी०— ॥ २० ॥ २१ ॥ पौरिया जो मुख्य द्वारकी रक्षामें रहते हैं प्रतीहार जो राजसभाद्वारमें सुवर्णादिको दंड लै ठाढ़ो रहत है बल, जोर, बिक्रम, यत्न ये सब एक एक आपनो आपनो कार्य करि सुख देत हैं सो

लक्ष्मणने जहां जाको काज लाग्यो है तहां ताही बिधि तीन काज करि हमको परम सुख दीन्हो है ॥ २२ ॥

मू०— मोटनक—छंद ॥ शत्रुघ्नबिलोकतरामकहैं । डेरानिस- जौजहँसुःखलहैं ॥ मेरेघरसंपतियुक्तसबै । सुग्रीवहिदेहुनिवास अबै ॥ २३ ॥ साजेजोभरत्थसबैधनको । राखौतहँजाइबि- भीषणको ॥ नैऋत्यनकोकपिलोगनको । राखौनिजधामनि भोगनको ॥ २४ ॥ दोहा ॥ एकएकनैऋत्यको, जितनेबानर लोग ॥ आगेहीठाढ़ेरहत, अमितइंद्रकेभोग ॥ २५ ॥ इतिश्री- मत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायामिंद्र जिद्विरचितायांरामस्यायोध्यापुरप्रवेशोनामद्वाविंशःप्रकाशः२२

टी०— संपति (अनेक भोग बस्तु) ॥ २३ ॥ २४ ॥ अमित कहे अप्रमाण ॥ २५ ॥ इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायज- नजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायांद्वाविंशःप्रकाशः ॥ २२ ॥

मू०— दोहा ॥ यातेइसयेंप्रकाशमें, ऋषिजनआगमलेषि ॥ राज्यश्रीनिंदाकही, श्रीमुखरामबिशेषि ॥ १ ॥ मल्लिकाछंद ॥ एककालरामदेव । सोधुबंधुकरतसेव ॥ शोभिजैंसबैसोऔर । मंत्रिमित्रठौरठौर ॥ २ ॥ बानरेशयूथनाथ । लंकनाथबंधुसा- थ ॥ शोभिजैंसबैसमीप । देशदेशकेमहीप ॥ ३ ॥ दोहा ॥ स- रसस्वरूपबिलोकिकै, उपजीमदनहिंलाज ॥ आइगयेताहीस- मय, केशवऋषिऋषिराज ॥ ४ ॥ असितअत्रिभृगुअंगिरा, कश्यपकेशवब्यास ॥ विश्वामित्रअगस्त्ययुत, बाल्मीकिदु- र्वास ॥ ५ ॥

टी०— ॥ १ ॥ २ ॥ बानरेश (सुग्रीव) यूथनाथ (अंगदादि) लं- कनाथ जे बंधु बिभीषण अथवा बंधु जे ज्ञातिवर्ग हैं राक्षसगण इति ते हैं साथ जिनके ऐसे लंकनाथ जे बिभीषण हैं ते ॥ ३ ॥ सरस कहे अपनासों अधिक सुंदर ॥ ४ ॥ ५ ॥

दोहा– वामदेवमुनिकण्वयुत, भरद्वाजमतिनिष्ठ । पर्वतादिदै सकलमुनि । आयेसहितवशिष्ठ ॥ ६ ॥ नगस्वरूपिणीछंद ॥ सबंधुरामचंद्रजूउठेविलोकिकैतबै । सभासमेतिपाँपरेविशेषिपूजियोसबै ॥ विवेकसोंअनेकधादशेअनूपआसने । अनर्घअर्घआदिदैविनयकियेघनेघने ॥ ७ ॥ राम-रूपमालाछंद ॥ रावरेमुखकेविलोकतहीभयेदुखदूरि । सुप्रलापनहींरहेउरमध्यआनँदपूरि ॥ देहपावनह्वैगयोपदपद्मकोपयपाइ । पूजतैभयोवंशपूजितआशुहीमुनिराइ ॥ ८ ॥ संनिधानभरेतपोधनधामधीधनधर्म । अद्यसद्यसबैभयेनिरवद्यबासरकर्म ॥ ईशयद्यपिहृष्टिहीभइ भूरिमंगलसृष्टि । पूंछिबेकहँहोतिहैसोतथापिबाकविसृष्टि ॥ ९ ॥

टी०– निष्ठ कहे उत्कृष्ट है मति जिनकी ॥ निष्ठोत्कर्ष व्यवस्थयोरिति अभिधानचिंतामणिः ॥ ६ ॥ बिबेक. (बिचार) सों अर्थ यथोचित अनर्घ कहे अमोल अर्घ पाद्यादि पूजाबिधि प्रसिद्ध है ॥ अर्घः पूजाविधौ मूल्ये ॥ इत्यभिधानचिंतामणिः ॥ ७ ॥ द्वै छंदको अन्वय एक है तपोधन ! ऋषिनको संबोधन है सुप्रलाप कहे सुबचन ॥ सुप्रलापः सुबचनमित्यमरः ॥ पदपद्मको पय कहे चरणोदक रावरे पदको संबंध सुप्रलापादिकमों सर्वत्र है संनिधान कहे समीपसों अर्थ रावरे निकट प्राप्त भये सो हमरे धाम (घर) औ धी (बुद्धि) धन औ धर्मसों भरे अर्थ धाम धनसों भरे, बुद्धि धर्मसों भरी, अद्य कहे आज सद्य कहे शीघ्रही सबै जे बासर कर्म कहे रोज रोजके दानकर्म हैं निरवद्य कहे अनिंद्य भये औ हे ईश! यद्यपि तुम्हारी दृष्टिहीसों अवलोकनहींसों हमपर भूरि कहे बहुत मंगल कहे कल्याणकी दृष्टि भई अर्थ हमारो बड़ो कल्याण भयो परंतु कल्याणमें तो काहूकी तृप्ति होति नहीं तासों अधिक कल्याणके लिये तुमसों कछू पूछिबेको हमारे बाक जे बचन हैं तिनकी बिसृष्टि कहे उत्पत्ति होति है ॥ ८ ॥ ९ ॥

मू०– दोहा ॥ गंगासागरसोंबड़ो, साधुनकोसतसंग ॥ पावनकारिउपदेशअति, अद्भुतकरतअभंग ॥ १० ॥

टी०— साधुनको जो सतसंग है सो गंगासागरहूसों बड़ो है काहेते अति अद्भुत जो उपदेश शिक्षा है तासों पावन कहे पवित्र करिकै अभंग कहे नाशरहितके अर्थ मुक्त करत है अथवा उपदेशसों अति पावन करि अद्भुत अभंग कहे मुक्त करत है अर्थ जीवन्मुक्त करत है उपदेश करि अभंग करिबेकी शक्ति गंगासागरमों नहीं है तासों बड़ो कह्यो एतो रामचंद्रके कहतही विरक्त वचन समुझि अगस्त्य बीचहीमें बोलि उठे तासों जो पूछिबो रहै सो नहीं पूछन पाये सो चौबीसयें प्रकाशमें कह्यो है कि जो कछु जीव उधारनको मत जानत हौ तौ कहौ मनुहै कहिबेको हेतु यह कि हमको कछू ऐसो उपदेश करौ जासों संसार छूटै मुक्ति होइ ॥ १० ॥

मू०— अगस्त्य–नाराचछंद ॥ कियेबिशेषसोंअशेषकाजदेवरायके । सदात्रिलोकलोकनाथधर्मबिप्रगायके ॥ अनादिसिद्धिराजसिद्धिराजआजलीजई ॥ नृदेवतानिदेवतानिदीहसुक्ख दीजई ॥ ११ ॥

टी०— हे त्रिलोक लोकनाथ ! अर्थ तीनों लोकोंके जे लोक कहे जन हैं तिनके नाथ कहे स्वामी हौ अर्थ ईश्वर हौ यासों या जनायो कि तुम्हारो बंधन कौन है जासों छूटिबेकी इच्छा करत हौ रावणको मारि देवराय जे इन्द्र हैं औ धर्म औ विप्र औ गाय इनके अशेष कहे पूर्ण काज कन्यौ अब अपनी अनादि सिद्धि अर्थ तुम्हारी परंपराकी सिद्धि है औ राजसिद्धि कहे राजनकी सिद्धि जो राजति है ताहि लीजै नृदेवता (राजा)॥ ११॥

मू०— दोहा ॥ मारेअरियारेहितू, कौनहेतरघुनंद ॥ निरानंदसेदेखियत, यद्यपिपरमानंद ॥ १२ ॥ श्रीराम–तोमरछंद ॥ सुनिज्ञानमानसहंस । जपयोगजागप्रशंस ॥ जगमांझहेदुखजाल । सुखहैकहायहिकाल ॥ १३ ॥ तहँराजहैदुखमूल । सबपापकोअनुकूल ॥ अबताहिलैऋषिराय । कहिकौननर्कहिजाय ॥ ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ सोदरमंत्रिनकेजेचरित्र । इनकेहमपैसुनिमखमित्र ॥ इनहींलगेराजकेकाज । इनहींतेसबहोतअकाज॥१५॥

टी०-- एक तौ तुम परमानंद रूपही हौ ताहूपर अरि (रावणादि) को मारे औ हितू (इन्द्रादि) को पालत भये ऐसे आनंदबर्द्धक काजऊ करे तहूपर तुम्हैं निरानंदसे काहे देखियत है इत्यर्थः ज्ञानरूपी जो मानस (मानसर) है ताके हंस हौ औ जगमें योग औ जागकी है प्रशंसा (स्तुति) जिनकी दूनौ पद संबोधन हैं ॥ २२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

मू०– राजभारनलभैयनिदयो । छलबलछीनिसबैतिनलयो ॥ जबलीन्होंसबराजबिचारि । नलदमयंतीदियोनिकारि ॥ ॥ १६ ॥ राजासुरथराजकीगाथ । सौंपीसबमंत्रिनकेहाथ ॥ संततमृगयालीनबिचारि । मंत्रिनराजादियोनिकारि ॥ १७ ॥ राजश्रीअतिचंचलतात । ताहूकीसुनिलीजैबात ॥ यौबनअरु अबिबेकीरंग । बिनस्यौकोनराजश्रीसंग ॥ १८ ॥ शास्त्रसुजलहूँधोवततात । मलिनहोतअतिताकेगात ॥ यद्यपिहैअतिउऽज्वलदृष्टि । तदपिसृजतिरागनकीसृष्टि ॥ १९ ॥

टी०– नलकी कथा पुराणमों प्रसिद्ध है ॥ १६ ॥ मृगया (शिकार) सुरथहूकी कथा मार्कण्डेयपुराणमों प्रसिद्ध है ॥ १७ ॥ अति चंचल जो राजश्री है ताहूमें ऐसो दोष है ते सुनो कहियत है यौबन औ अबिबेकी रंग औ राजश्रीके संगमें को नहीं बिनस्यौ ए तीनों सम हैं अथवा यौबन औ अबिबेकी रंगयुक्त जो राजश्री है अर्थ सदा यौबन औ अबिवेकसों युक्त रहति है ताके संगको नहीं बिनस्यौ अथवा हितोपदेशमैं कह्यो है कि ॥ यौवनं धनसंपत्तिः प्रभुत्वमविवेकता । एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयं ॥ यामे चारि कह्यौ है ता मतसों यह अर्थको यौबन अबिबेकी रंग औ राज औ श्री कहे संपति इन चारिके संगमें को नहा बिनस्यौ ॥ १८ ॥ शास्त्रका उपदेश सुनिकै शास्त्रकी आज्ञा माफिक नहीं करत और तासों मलिन उदास होत हैं अथवा अनेक शास्त्र सुनावो ताहूपर पातकन करि ताके गात मलिन होत हैं शास्त्रहू सुनिकै अनेक पातक करत ही है इत्यर्थः औ यद्यपि याकी उज्वल (बिमल) दृष्टि है अर्थ उत्तम पदार्थनपर दृष्टि है तौ अति उत्तम जो पदार्थ (ईश्वरपद) है तामें प्रीति बारेसों नही करति राग जो

स्त्रक, चंदन, बनितादि बिषे अभिलाष है ताको सृजति कहे उत्पन्न करति है " अभिमतविषयाभिलाखो रागः " ॥ १९ ॥

मू०— महापुरुषसोंजाकीप्रीति। हरतिसोझंझामारुतरीति॥ बिषयमरीचिकानिकीज्योति। इंद्रीहरिणहारिणीहोति ॥२०॥ गुरुकेबचनअमलअनुकूल। सुनतहोतश्रवणनकोशूल ॥ मैन बलितनवबसनसुदेश। भिदतनहींजलज्योंउपदेश ॥ २१ ॥

टी०— जा पुरुषकी प्रीति महापुरुष जे भगवान हैं तिनसों है ताके पास आइ झंझामारुत कहे अति जोर बायुकी रीतिसों हरति कहे तोरति है अर्थ जैसे झंझामारुत वृक्ष लतानिको तोरति है तैसे यह प्रीतिको तोरति है आशय यह कि आपु विष्णुकी स्त्री है तासों प्रीतिरूपी स्त्रीको बिष्णुके पास जाति देखि सौतिधर्मसों तोरति है अर्थ राजनकी प्रीति ईश्वर पर नहीं होति रूप, रस, गंध, स्पर्श, शब्द, ये जे पांचौ विषयरूपी मरीचिका कहे मृगतृष्णा हैं तिनकी ज्योतिमें इंद्रीरूपी जे हरिण हैं तिनकी हारिणी कहे लैजानहारी होति है अर्थ मृगतृष्णा सम मिथ्या जो पंचधा बिषय है तामें राजनकी इंद्रिनको भ्रमावति है ॥ २० ॥ मैन कहे (मोम) ॥ २१ ॥

मू०— मित्रनहूकोमतोनलेति। प्रतिशब्दकज्योंउत्तरदेति ॥ पहिलेसुनैनशोरसुनंति। मातीकरनीज्योंनगनंति ॥ २२ ॥ दोहा ॥ धर्मधीरताबिनयता, सत्यशीलआचार। राजश्रीनगनै-कछु, वेदपुराणबिचार ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ सागरमेंबहुकाल-जोरही। सीतवक्रताशशितेलही ॥ सूरतुरँगचरणनितेतात। सीमीचंचलताकीबात ॥ २४ ॥ कालकूटतेमोहनरीति। मणि-गणतेअतिनिष्ठुरप्रीति ॥ मंदिरातेमादकतालई। मंदरउदरभ-ईभ्रममई ॥ २५ ॥

टी०— प्रति शब्दक कहे झांई शब्द अर्थ जैसे शब्दके साथही प्रति श-ब्दक होत है तैसे राजा मित्रके बाक्यमें शुभाशुभको बिचार नहीं करत

साथही उत्तर कहे जवाब देत हैं औ पहिले तौ हित बाक्यको सुनति नहीं जो शोर करि कहै सो सुनिबो करत है तौ माती करिनी सम गनति नहीं अर्थ जैसे माती करिनी महावतके हितके हित बचन नहीं गनति तैसे राज्यश्री मित्रादिके हित बचन नहीं गनति ॥ २२ ॥ २३ ॥ क्षीरसागरमें बहुत काल रही है तहां इनको संग रह्यो तिनसों ए कर्म सीखे हैं० शीतता कहे प्रसन्न ह्वै सेवकादिको धनादि दीबो वक्रता क्रुद्ध ह्वै बंधादि करिबो सुरतुरंग (उच्चैःश्रवा) चंचलताकी बात कहे क्षणमें और क्षणमें और कहिबो (करिबो) ॥ २४ ॥ जैसे कालकूट भक्षणसों मोहित (मूर्छित) भये प्राणीको कछु सुधि नहीं रहति है तैसे राज्यश्रीमें मोहित राजनको ईश्वरादिकी सुधि भूलि जाति है इत्यर्थः निष्ठुरताबश राजनको जीव बधादिमें कछू दया नहीं आवति इत्यर्थः राज्यश्रीके बश मत्त ह्वै राजा हित बस्तुको बिचार नहीं करत इत्यर्थः औ विष्णु करिकै भ्रमायो जो मंदर है ताके संसो राज्यश्रीके उदरमें भ्रम भई कहे भ्रमाधिक्य भई अर्थ मंदरको भ्रमत देखिकै भ्रम सिख्यौ राजनके उरमें सदा बंधुमंत्र्यादिकनहूंको प्रतिकूल ताको भ्रम रहत है इत्यर्थः ॥ २५ ॥

मू०— दोहा ॥ शेषदईबहुजिह्वता, बहुलोचनताचारु ॥ अप्सरानितैंसीखियो, अपरपुरुषसंचारु ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ दृढ़गुनबांधेहूबहुभांति । कोजानैकेहिभांतिबिलाति ॥ गजघोटकभटकोटिनअरैं । खड्गलतापंजरहूपरैं ॥ २७ ॥ अपनाइतिकीन्हेबहुभांति । कोजानैकितह्वैभाजिजाति ॥ धर्मकोसमंडित शुभदेश । तजतिभ्रमरिज्योंकमलनरेश ॥ २८ ॥

टी०— बहु जिह्वता कहे एक जिह्वासों अनेक जिह्वासम बात कहि बहुलोचनता कहे द्वै लोचनसों अनेक लोचनसम देखिबो अर्थ राजा अर्थ राजा अतिवत कहा होत हैं औ चार दृष्टिसों सर्बत्र देखत हैं अपर कहे अन्य पुरुष प्रीति संचार अर्थ एक पुरुष राजाको छांड़ि एक पास जाइबो ॥ २६ ॥ द्वै छन्दनको अन्वय एक है गुन पद श्लेष है शूरतादि औ डोरी गज औ घोटक (घोरे) औ भट कोटि नर छाके अर्थ अरैं कहे हठ करैं औ

तिनकी खड्ग-(तरवारि) रूपी जो लता है ताके पंजरहूमें परैं अर्थ तरवारि हाथमों लैकै अनेक गजादि चौकी दै रच्छा करैं ताहूपर और अनेकबिधि आपनाइति कीन्हेहूं अर्थ प्रीति कीन्हेहूं धर्म (राजधर्म) औ कोमलताकी सब जाना औ सिफा (कंद) तासों मंडित (युक्त) औ शुभदेश कहे सुंदर है राज्यभूमि जाकी औ सुष्ठु है देश (उत्पत्ति स्थान) जाको औ कमलरूपी जो नरेश राजा है ताको तजति है औ को जानै कहां है भागि जाति है सुंदरतादिहूके बश नहीं होति इति भावार्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥

मू०- यद्यपिहोइशुद्धमतिसत्तु । फिरैपिशाचीज्योंउनमत्तु ॥ गुनवंतनिआलिंगतिनहीं । अपवित्रनिज्योंछांड़तितहीं ॥ २९ ॥ शूरनिनाषतिज्योंअहिदेखि । कंटकज्योंबहुसाधुनलेखि ॥ सुधासोदरायद्यपिआप । सबहीतेअतिकटकप्रताप ॥ ३० ॥ यद्यपिपुरुषोत्तमकीनारि । तदपिसकलखलजनअनुहारि ॥ हितकारिनकीअतिद्वेषिनी । अहितलोगकोअन्वेषिनी ॥ ३१ ॥ मनमृगकोसुबधिककीगीति । बिषैबेलिकीबारिदरीति ॥ मदपिशाचिकाकीसीअली । मोहनींदकीशय्याभली ॥ ३२ ॥

टी०- सत्तु (प्राणी) अर्थ राजासों राज्यश्री युक्त ह्वै पिशाचाक्रांत पुरुषसम उनमत्त फिरत है गुणवंतन कहे बिद्यादि अनेक गुणको अपवित्र सम त्याग करति है इत्यर्थः ॥ पंडिते निर्द्धनत्वमित्युक्तं माधवानलनाटके ॥२९॥ नाषति कहे छोंड़ति है शूर औ साधुनको राज्यश्री नहीं प्राप्त होति अथवा शूर औ साधुनको संग्रह राजा नहीं करते इत्यर्थः सुधा जो अमृत है ताकी सोदरा (बहिन) ॥ ३० ॥ पुरुषोत्तम (विष्णु) द्वेषिणी कहे शत्रु है अन्वेषिणी कहे ढूंढ़नहारी है ॥ ३१ ॥ बधिकसम मनरूपी मृगको बांधि लेति है कहे काबू करि लेति है इत्यर्थः औ बारिद कहे मेघसम बिषयरूपी बेलिकों हरित करति है इत्यर्थः मदरूपी जो पिशाचिका (प्रेतिन) है ताकी अली कहे सखी है अर्थ सहायक है पठावनहारी इति मोह कहे अज्ञानरूपी जो नींद है ताकी सय्या है जैसे शय्यामें नींद बढ़ति है तैसे राज्यमें मोह बढ़त है इत्यर्थः ॥ ३२ ॥

मू०— आशीबिषदोषनकीदरी । गुणसतपुरुषनकारणछरी ॥ कलहंसनकीमेघावली । कपटनृत्यकारीकीथली ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ बामकामकरिकीकिधौं, कोमलकदलिसुवेष । धीरधर्मद्विजराजको, मनोराहुकिरेष ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ मुखरोगीज्यों मौनैरहै । बातबलायएकद्वैकहै ॥ बंधुबर्गपहिचानैनही । मानोंसन्निपातहैगही ॥ ३५ ॥

टी०— दरी-(कंदरा) में आशीबिष (सर्प) सम अनेक प्रजापीड़नादि दोष जामें बास करत हैं इत्यर्थः औ अनेक जे बिद्यादिगुण रूपी सत्पुरुष हैं तिनके कारण कहे अर्थ छरी कहे ताड़न दंड है जैसे राजद्वारमें ताड़न दंड देखि सत्पुरुष नहीं आवत तैसे राज्यश्री युक्त पुरुषके पास विद्यादि गुण नहीं आवत कुपुरुष लोभबश दंडपात हंसहि भूप द्वारादि स्थलमें जातही हैं तासों सत्पुरुष कह्यो राज्यसुखालस्यसों राजा गुणनको अभ्यास नहीं करत इति भावार्थः कल कहे अविघ्नतासों चित्यइति हंसनको मेघावलीसम राजनके कलको राज्यश्री दूरि करति है इत्यर्थः अनेक शत्रु भयादि युक्त राजनको चित सदा रहत है इति भावार्थः शत्रुसैन्यभेदादि अनेक कपटयुक्त राजा होत हैं इति भावार्थः ॥ ३३ ॥ बाम कहे कुटिल जो काम (कंदर्प) रूपी करि (हाथी) है ताको सुवेष कहे हरित कोमल कदली (केरा) है अर्थ गजको कदलीसम कामकी बलकर्ता है अथवा सुखद है राजा अति कामी होत हैं इति भावार्थः कदली भक्षणसों गजको बल औ सुख होत है यह प्रसिद्ध है औ धीर औ धर्मरूपी द्विजराज-(चंद्रमा) को राहुरेखसम पीड़ाकर्ता है इत्यर्थः राजा बंधु मंत्रादिमैं भेदभय मानि सदा अधीर रहते हैं औ आलस्यबश दानादि धर्म विधिपूर्वक नहीं करत इति भावार्थः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

मू०— महामंत्रहूहोतनबोध । डसीकालअहिकारिजनुक्रोध ॥ पानबिलासउदितआतुरी । परदारागमनैचातुरी ॥ ३६ ॥ मृगयायहैशूरताबढ़ी । बंदीमुखनिचापसोंपढ़ी ॥ जोकेहूंचितवै

यहदया । बातकहैतौबड़ीएमया ॥ ३७ ॥ दरशनदीबोईअति दान । हँसिबोलैतौबड़सनमान ॥ जोकेहूसोंअपनोकहै । सपनेकीसीपदवीलहै ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ जोईअतिहितकीकहै, सोईपरमअमित्र । सुखबक्ताईजानिये, संततमंत्रीमित्र ॥ ३९ ॥

टी०– मंत्रिन करि दीन्हे जे महा कहे बड़ेबड़े मंत्र हैं तिनहुसों जाको बोध ज्ञान नहीं होत सो मानौं काल अहि कहे कालसर्प करिकै डसी कहे काटी गई है अर्थ मानों क्रोध करि कालसर्प काट्यो है जा प्राणीको कालसर्प काटत है ताहूको झारिबेके जे महामंत्र हैं तिनसों बोध (ज्ञान) नहीं होत अर्थ मूर्छा नहीं जागति पान कहे मद्यपानको जो बिलास है ताहीमें उदित कहे प्रगट है आतुरी शीघ्रता जाकी ॥ ३६ ॥ मृगया यहै शूरता बड़ी इत्यादिमों या जनायो कि याही विधि राजा थोरो करत हैं ताको बहुत मानि लेत हैं ॥ ३७ ॥ पदवी (राज्य) ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

मू०– चौपाई ॥ कहौंकहांलगिताकेसाज । तुमसबजानहौ ऋषिराज ॥ जैसीशिवमूरतिमानिये । तैसीराजश्रीजानिये ॥ ॥ ४० ॥ सावधानह्वैसेवैजाहि ॥ सांचोदेतपरमपदताहि । जितनेनृपयाकेबशभये । पेलिस्वर्गमगनर्कहिगये ॥ ४१ ॥ इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांराज्यश्रीदूषणबर्णनंनामत्रयोविंशःप्रकाशः ॥ ॥ २३ ॥

टी०– ॥ ४० ॥ शिवमूरतिहूको सावधान ह्वै बिधिपूर्बक सेवन बनि परै तौ स्वर्गप्राप्ति होत है ना बनै तौ बित्त बिक्षेपादि है अंतमें नरकप्राप्ति होत है तैसे याहूको सावधान ह्वै जनकादि सम सेवन करै तौ स्वर्ग ताईं परंतु सावधान ह्वै सेवन नहीं बनि परत तासों केतने भूप बेनु आदिक स्वर्गमगसों पेलिकै नरकको गये हैं तासों हम राज्यश्री ग्रहण ना करि हैं इति भावार्थः ॥ ४१ ॥ इति श्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां त्रयोविंशः प्रकाशः ॥२३॥

मू०- दोहा ॥ चौबीसयेंप्रकाशमें, रामबिरक्तिबखानि ॥ बिश्वामित्रबशिष्ठसों, बोधकहीशुभआनि ॥ १ ॥ राम-अमृतगतिछंद ॥ सुमतिमहाऋषिसुनिये । जगमहँसुक्खनगुनिये ॥ मरणहिंजीवनतजहीं । मरिमरिजन्मनभजहीं ॥ २ ॥ उदरनिजीवपरतहै । बहुदुखसोंनिसरतहै ॥ अंतहुपीरअनतहीं । तनउपचारसहतहीं ॥ ३ ॥ दोधकछंद ॥ पोचभलीनकछूजिय जानै । लैसबबस्तुनआननआनैं ॥ सैसबतेकछुहोतबढ़ेई । खेलतहैंतेअपानचढ़ेई ॥ ४ ॥ हैंपितुमातनितेदुखभारे । श्रीगुरुतेअतिहोतदुखारे ॥ भूखनप्यासननींदनजोवैं । खेलनकोबहुभांतिनरोवैं ॥ ५ ॥

टी०- बशिष्ठसों बोध जो ज्ञान है ताके कहिबेको बिश्वामित्र कही कहे कह्यो है ॥ १ ॥ राजश्रीको दुख कहि अब यामें संसारको दुख देखावत हैं जीव जे हैं ते मरणको नहीं तजत मरिकै फिरि जन्मनको भजहीं कहे प्राप्त होत हैं ॥ २ ॥ यामें जनन, मरण, जीवनको दुख देखावत हैं प्रथम तौ जीव उदरमें परत हैं गर्भमें आवत हैं तहांसे बहुत दुखसों निसरत हैं अर्थ जन्ममें बड़ो दुख होत है औ अंत जो मरण है ताहूमें बड़ी पीर कहे कष्ट होत है औ अनतही कहे जनन मरणते अन्यत्र अर्थ जीवतमें तनके अनेक जे उपचार कहे ब्योहार हैं तिनको सहत जीवको पीर है सो आगे कहैं ॥ उपचार स्तु सेवायां व्यवहारोपचारयोरित्यभिधानचिंतामणिः ॥ ३ ॥ द्वै छंदनमों शिशुता अवस्थाके देहब्यवहारमें प्राप्ति जीवको दुख कहत हैं ते कहे तेई जीव शैशव कहे बाल्य अवस्थामें पोच कहे बुरो बिषादि औ भली द्राक्षादि कछू जियमें नहीं जानत जो बस्तु पावत हैं ताको लैकै आनन कहे सुखमैं आनै कहे डारि लेत हैं तहां बिषादि ग्रहणमें जीवको पीड़ा होति है इति भावार्थः फेरिते कहे तेई जीव कछू बड़े होत कहे बड़े होत अपान कहे अज्ञानमें चढ़ चढ़े गैलनमें खेलत फिरत हैं अज्ञानमें चढ़े कहि या जनायो कि जैसे बाहनमें चढ़िकै कोऊ धावै तौ थकत नहीं तैसे अ-

ज्ञानरूपी बाहनमें चढ़ि खेलमें धावत जीव थकत नहीं है ॥ ४ ॥ ता खेलिबेके लये माता पिता मने करत हैं तासों बड़ो दुख होत है औ गुरु खेलिबो छड़ाइ पढ़ाइबो चाहत है तासों अति दुखी होत हैं औ भूख औ प्यास औ नींदको नहीं जोवत कहे देखत अर्थ अपने पास आइ भूख प्यास नींदको नहीं गनत अथवा भूख प्यास नींदको नहीं जोवत कहे चाहत तैसे सब अवस्थाके ऐसे देहव्यवहारनमें जीवको ऐसी पीड़ा होति है इति भावार्थः ॥ शिशुत्वं शैशवं बाल्यमित्यमरः ॥ ५ ॥

मू०– जारतिचित्तचितादुचिताई । दीहतुचाअहिकोपचवाई ॥ कामसमुद्रझकोरनिझूल्यो । यौबनजोरमहाप्रभुभूल्यो॥६॥ धूमसोनीलनिचोलमेंसोहै । जाइछुईनविलोकतमोहै ॥ पावकपायशिखावनचारी । जारतिहैनरकोपरनारी ॥ ७ ॥

टी०– तीनि छंदनमें युवा अवस्थाके व्यवहारको दुख कहत हैं यौवनके जोरमें अर्थ युवा अवस्थामें चित्तरूपी तो चिता है तामें जीवको कहे दुचिताई जो संशय है सो जारति है जैसे चितामें मरे प्राणीको जारियत है तैसे चित्तरूपी चितामें जीवको दुचिताई जारति है इत्यर्थः औ अहि कहे सर्पसम जो कोप है सो दीह कहे बहुत अर्थनकी बिधि जीवके त्वचा चर्मकी चवाई कहे चबात है अर्थ काटत है अथवा त्वचासम अहिकोप चबात है अर्थ सर्पत्वचामें काटत है तब जीवको परम पीड़ा होति है औ कोप तौ जीवहीको काटत है ताको पीड़ा तौ अकथनीय है औ जब काम (कंदर्प) अथवा अभिलाषरूपी जो समुद्र है ताके तरंग के झकोरनमें झूलौ इत उत आयो गयो तब हेमहाप्रभु ! जीव जो है सो भूल्यो अर्थ अपनपौ को भुलान्यो महाप्रभु ऋषिनको संबोधन है चिता (दाह) सर्प दंश समुद्रतरंगके झकोरनमें सबको बिकलतासों आपनपौकी सुधि भूलि जात है ॥ ६ ॥ यौबन जोरमें और कहा होत हैं सो कहत हैं धूमसम जो नीलनिचोल कहे श्याम बस्त्र है तामें सोहति है इहां केवल धूमकी समताके लिये नीलनिचोल कह्यो अग्नि दाहभयसों, परनारी लोकभयसों छुइ नहीं जाति देखतही मनको दुवौ मोहत है परनारी मोहति कहे बश

करति है अग्नि मोहति कहे भयसों अथवा तेजसों मूर्छित करति है सो पापरूपी यौवन है तामें चारि कहे गामी अर्थ जैसे अग्नि बनमें बिहरति है तैसे पर नारी पापहीमें बिहरति है ऐसी परनारी रूपी जो पावकशिखा है सो नरको जारति है परस्त्रीको देखि जीव बिकल होत है इत्यर्थः ॥ ७ ॥

मू०—वंकहियेनप्रभासरसीसी। कर्दमकामकछूपरसीसी॥कामिनिकामकीडोरिग्रसीसी। मीनमनुष्यनकोबनसीसी ॥ ८ ॥

टी०— मनुष्यनके जे हिय हैं तिनकी जो प्रभा (शोभा) है सोई बंक कहे कुटिल अर्थ घाट रहित अथवा गहिर सरसी कहे तड़ागसी है अर्थ हृदय तड़ागसम है औ काम अभिलाष रूपी जोकर्दम (कीच) है तासों कछू कहे कछु अर्थ थोरीहू परसी कहे युक्त है यासों या जनायो कि अधिक कामयुक्तकी का कथा है ता सरसीमें कामिनि कहे स्त्रीरूपी जो काम (कंदर्प) शिकारीकी डोरी है सो ग्रसी है कहे लगी है ते स्त्री मीनरूपी जे मनुष्य हैं इहां मनुष्य पदते मनुष्यनके जीव जानौं तिनको कहे तिनके बश करिबेकी बनसी सी है जैसे तड़ागमें कीच बीच बसे मीननकी बंसी बश करति है तैसे हृदयरूपी तडागमें कामरूपी कीचमें बसे जे जीव हैं तिनकी बंसी डोरीसम हृदयमों ग्रसी जो कामिनी स्त्री है सो बश करती है इत्यर्थः अथवा बंक (कुटिल) जे हृदय कहे मन हैं तिनकरिकै प्रभा (शोभा) सरसी कहे बढ़ी है जाके अर्थ जैसे बंसी कुटिल लोहकंटकसों युक्त रहति है तैसे कुटिल हृदय करिकै युक्त स्त्री है औ काम कहे अभिलाष रूपी जो कर्दम कर्दम कहे पिशानका गंधादि युक्त कीच है सान्यौ पिसान तासों कछू परसी कहे युक्त है अर्थ जैसे कुटिल कंटक गंधादि युक्त साने पिसानसों युक्त होत है तैसे स्त्रीनके मन अभिलाषसों युक्त हैं औ कामिनी जो स्त्री है सोई काम (कंदर्प) शिकारीकी डोरी है सो ग्रसी है कहे लगी है सो मीनसम मनुष्यनको बंसीसम है अर्थ जैसे सागरमें बंसीके पिसानको गंध पाइ मीन बंसीके बश होत है तैसे संसारसागरमें स्त्रीनके मनके अभिलाषको गंध पाइ अर्थ स्त्रीनको अभिलाष समुझि मनुष्य बश होत हैं ॥८॥

मू०— बिजयछंद ॥ खैंचतलोभदशौदिशिकोमहिमोहमहा-

इतयाशिकडारे । ऊंचेतेगर्बगिरावतक्रोधसोजोबहिलूहरलाव-
तभारे । ऐसेमोंकोउकीखाजुज्योंकेशवमारतकामकेबाणनिनारे ।
मारतपाँचकरेपँचकूटहिँकासोंकहैंजगजीवबिचारे ॥ ९ ॥

टी०— यामें लोभादिक जो पोच हैं तिन करिकै प्राप्त जीवको दुःख कहेत हैं लोभ तौ लक्ष्मीके लिये दशौदिशिको खैंचत है औ इत कहे इहां स्थलमें स्त्री पुत्रादिकन प्रति जो मोह है सो पासिकै कहे फांसिकै डारे है कहे डारि राख्यो है तासों जाइ नहीं सकत औ गर्ब जो है सो ऊंचेमें चढ़ाइकै गिरावत है अर्थ गर्ब संग जीव उन्मत्त ह्वै रह्यो है अपमानादिसों नत ह्वै गिरे सम दुःख पावत है तब क्रोध उत्पन्न ह्वै जीवहिमें लूहर कहे लुकेठ लावत है अधजर्यौ ईंधन काठको लूहर कहत हैं अर्थ क्रोधसों जीव जरत है लोभ, मोह, गर्ब, क्रोधकी व्यथा कोढ़सम है कामबाण व्यथा खाजुसम है या प्रकार लोभादिक पांचौ पंचभूतको कूट (पर्वत) जो शरीर है तामें करे कहवारि पाये जीवको मारत हैं सो आपनी पीड़ा जीव बिचारे कासों कहैं जैसे पर्वतमें पाइकै ठग बटोही को मारत हैं तैसे शरीर में पाइकै लोभादिक जीवको मारत हैं इत्यर्थः ॥ ९ ॥

मू०— भूलतहैंकुलधर्मसबैतबहींजबहींबरुआनिग्रसैजू । केशववेदपुराणनकोनसुनैसमुझैनत्रसैनहँसैजू ॥ देवनितेनरदेवनितेनरतेबरबानरज्योंबिलसैजू । यंत्रनमंत्रनमूरिगनैजगयौबनकामपिशाचबसैजू ॥ १० ॥ ज्ञाननिकेतनत्राननिकोकहिफूलकेबाणनिबेधवकोतो । बाइलगाइबिबेकनकोबहुशोधककोकहि बाधकजोतो । औरकोकेशवलूटतोजन्मअनेकनकेतपसानकोयोतो । तौममलोकसबैजगजातोजोकामबड़ोबटपारनहोतो ११

टी०— यामें यौवनकृत दुःख कहत हैं वेद पुराणनको प्रथम तौ सुनत नहीं औ सुनत हैं तौ समुझत नहीं औ समुझत हैं तौ त्रसत कहे डरत नहीं और वेद वचनहीं को निंदाकरि हँसत हैं बानरसम बिलसत कहि या जनायो कि पशुसम बुद्धि ह्वै जाति है ॥ १० ॥ यामें काम व्यौहारकृत

पीड़ा कहत हैं साधक प्राणायामादि एतो कहे जहाज पचीसयें प्रकाशमें यकता लिसयें दोहामो रामचन्द्र कह्यौ है मोंहि न हतो जानाइबे सबहीं जान्यों आज यासों या जानौ रामचन्द्र ईश्वरत्वको छपाये रहे हैं औ यामें ममलोक सबै जग जातो या उक्तिसों ईश्वरत्व प्रगट होत है तहां कविको भ्रम जानब अथवा तो ममलोक कहे ममताविशिष्ट जे लोक मर्त्य लोकादि हैं तिनसों सबै जग कहे सब जगतके जीव आपने स्थानको ब्रह्मपदको इतिशेषः जातो प्राप्त होतो ॥ ११ ॥

मू०– मकरंदबिजयाछंद ॥ कंपैबरबानीडगैउरडीठितुचा-तिकुचैसकुचैमतिबेली । नवैनवग्रीवथकैगतिकेशवबालकतेसं-गहीसँगखेली । लियेसबआधिनव्याधिनसंगजराजबआवैज्व-राकीसहेली । भगैसबदेहदशाजियसाथरहैदुरिदौरिदुराशा अकेली ॥ १२ ॥

टी०– यामें वृद्धताको व्यवहार कहत हैं पुत्रादिके कटुवचनादिसों जनित जो आधि कहे मानसी व्यथा औ व्याधि शरीरव्यथा (ज्वरादि) तिनके संगमें लिये ज्वरा जो मृत्यु है ताकी सहेली सखी जो जरा (वृद्धता) है सो जबदेहमें आवति है तब ताके उरसों बाणी कांपै लागति है अर्थ मुखसों व्यक्त वचन नहीं कढ़त औ डीठि डगै कहे डगमगाति है औ त्वचा कहे चर्म अति कुचै कहे बहुत सिकुरि जाति है औ मति (बुद्धि) रूपी जो बेली (लता) है सो सकुचै कहे संकोचको प्राप्त होति है अर्थ बुद्धि हीन होति जाति है औ नव कहे नवीन प्रकारसों ग्रीवा नवै कहे नत होति है नवपद यासों कह्यौ कि और जो कोऊ काहूको नवत है अर्थ प्रणाम करत है सो नयोई नहीं रहत ग्रीवा जबसों नवति है तबसों नईही रहति है उठति ही नहीं अथवा भयसों अनित्यको छोंड़ि नत होति है औ जो जीवके संगही संगमें बालकहीसे खेली है सो गति गमन जीवकी सहाय छोंड़ि जराके भयसों थकि रहति है औ देहकी जो दशा कहे शुभदशा है सुंदरतादि सो सब भागति है जियके साथमें दुरिकै केवल दुराशा कहे दुष्ट आशा रहिजाति है वृद्धतामें इनकी सबको सुभावहीसों यह होति है तामें

जराके भयको तर्क है तासों असिद्ध विषय हेतूत्प्रेक्षा है यह वस्तु हमको इते दिनमें मिलि है ऐसी जो बुद्धि है सो दुराशा कहावति है ॥ १२ ॥

मू०-- बिलोकिशिरोरुहश्वेतसमेततनोरुहकेसबकोगुणगायो । उठेकिधौंआयुकेऔधिकेअंकुरशूलकीशुष्कसमूलनशायो । जरैंकिधौंकेशवव्याधिनकीकिधौंआधिकेआखरअंतनपायो । जराशरपंजरजीवजरेउकिजराजरकंबरसोंपहिरायो ॥ १३ ॥ मनोहरबिजयाछंद ॥ दिनहींदिनबाढतजाइहियेजरिजाइसमूलसोऔषधिखैहै । किधौंयाहिकेसाथअनाथज्योंकेशवआवतजातसदादुखसैहै । जगजाकीतूज्योतिजगैजड़जीवनपायेतूतापहँज्ञाननपैहै । मुनिबालदशागईज्वानीगईजरिजैहैजराऊदुराशानजैहै ॥ १४ ॥

टी०— यामें प्रसंगवश वृद्धताको बर्णन है तनोरुह कहे तनके रोम तिन सहित शिरोरुह (शिरके बारनको) श्वेत बिलोकिकै या प्रकारसों गुण गायो है कि आयुर्बलकी अवधि (मर्यादा) जो आई है ताके अंकुर उठे हैं औ कि शूलनामा आयुध बिशेष है शूलहू लगे शुष्क समूल कहे पूर्ण नाशको प्राप्त होत है वृद्धताहूमें तासों जानो औ कि अनेक जे व्याधी शरीरब्यथा हैं तिनकी हैं तिनकी अनेक जरैं हैं औ कि अनेक आधी जे मानसीव्यथा लिखी हैं तिनके आखर (अक्षर) हैं जिनको अंत नहीं पाइयत अर्थ बहुत हैं वृद्धतामें अनेक आधि, ब्याधि होती हैं इतिभावार्थः औ कि जरा जो बुढ़ाई है ताने शर (बाण) तिनके पंजरमें जीवको जर्यो कहे डार्यो है औ कि जराजर कहे जरबाफी कंबर सो जीवको पहिरायो है ॥ १३ ॥ यामें जीवप्रति काहूको उपदेश है सो उपदेश कहि रामचन्द्र दुराशाकृत पीड़ा देखावत हैं जाकी कहे जा ब्रह्मकी ॥ १४ ॥

मू०— दोहा ॥ जहांभामिनीभोगतहँ, बिनभामिनिकहँभोग ॥ भामिनिछूटेजगछुटै, जगछूटेसुखयोग ॥ १५ ॥ जोईजोईजोकरै, अहंकारकेसाथ ॥ स्नानदानतपहोमजप, निष्फ-

लजानौनाथ ॥ १६ ॥ तोटकछंद ॥ जियमांझअहंपदजोदमिये। जिनहींजिनहींगुणश्रीरमिये ॥ तिनहींतिनहींलखिलोभडसै। पटतंतुनिउंदुरज्योंतरसै ॥ १७ ॥

टी०– यामें स्त्री ब्यवहार कृत पीड़ा कहत हैं तहां भामिनी (स्त्री) है तहांई दुःखरूपी संसारको भोग है सो भामिनी जब छूटे जब संसार छूटै तब सुखको योग हैं अर्थ दुःखमयी संसारको बंधन दुराशादि सम स्त्रीहू है ॥ १५ ॥ यामें अहंकारको ब्यवहार कहत हैं अहंकारके साथ जो करिये सो निष्फल होत है ॥ १६ ॥ ताही अहंकारको जो काहू प्रकारसों दमिये (दूरिये) तो जिन जिन मिथ्याभावनादि गुणनसों श्री जो द्रव्य हैं तासों रमिये अर्थ द्रव्यको प्राप्त हूजियत है तिन गुणनको देखिकै लोभ जो है सो जीवको डसत है (काटत) है अर्थ काहूको अनुत्तमकर्मसों द्रव्य पावत देखि लोभ जीवको प्रेरत है कि यहै कर्म करौ जामें द्रब्यलाभ होइ अहंकारहीन प्राणी योग्यायोग्यको बिचार नहीं करतु जा प्रकार द्रव्य मिलै सोई ऊंच नीच कर्म करत है इतिभावार्थः लोभ कैसे डसत है जैसे पट (बस्त्र) के तंतु कहे सूत्रनको उंदुर कहे मूषक तरसै कहे काटत है आशय कि जैसे मूषक पटतंतुनको वृथा काटत है कछू ताको काम नहीं है तैसे लोभ वृथा जीवको सतावत है ॥ १७ ॥

मू०– बिजयछंद ॥ दानसयाननिकेकलपद्रुमटूटतज्योंऋणईशकेमांगे। सूखतसागरसेसुखकेशवज्योंदुखश्रीहरिकेअनुरागे। पुण्यबिलातपहारनसेपलज्योंअघराघवकीनिशिजागे ॥ ज्योंद्विजदोषतेसंततिनाशतित्योंगुणभाजतलोभकेआगे॥१८॥

टी०– सो लोभ कैसो है ताको ब्यवहार कहत हैं जैसे ईश (महादेव) हैं तिनके मांगेते ऋण टूटि जात है अर्थ जब महादेवसों मांगौ तब महादेव एती द्रव्य देते हैं जामें केतेऊ बड़ो ऋण होइ सो दूरि होत है तैसे ता लोभके आगे दान औ सयाननके जे कल्पद्रुम कल्पतरु हैं ते टूटि जात हैं अर्थ लोभसों दानको अभिलाष नशि जात है औ उचितानुचित करिबेमें जो सयान (चातुरी) है सो नहीं रहति औ जैसे श्रीहरि जे बिष्णु हैं ति-

नके अनुरागेसों भक्ति कियेसों सागर ऐसे संसारदुःख सूखत हैं तैसे ता लोभके आगे जो जीवके सागरसे सुख सूखि जात हैं अर्थ लोभबश इत उत प्राणी धायो धायो फिरत है धन, पुत्र, कलत्रादिको सुख नहीं करन पावत औ जैसे राघवकी निशि कहे राघव संबंधी व्रत दिन रामनौमी आदिकी निशिमें पलहू भरि जागेते अघ (पाप) बिलात हैं तैसे लोभके आगे पहारनसे बड़े बडे पुण्य बिलात हैं अर्थ लोभसों ऐसे ब्रह्मद्रव्यहरणादि पातक प्राणी करत हैं जासों केतेऊ बड़े पुण्य होइँ तौ नशि जात हैं यामें केशवको रामोक्तिमें अपनी उक्तिको भ्रम है औ जैसे ब्रह्मदोषते संतति जो बंश है सो नशि जात है तैसे लोभके आगे अनेकगुण भागत हैं अर्थ अनेकगुणको त्याग करि प्राणी लोभबश जन जनसों दीन होत हैं॥ गुणशतमप्यर्थिताहरति इति प्रमाणात् ॥ १८ ॥

मू०– दानदयाशुभशीलसखाबिझुकैगुणभिक्षुककोबिझुकावै । साधुसुधीसुरभीसबकेशवभाजिगईभ्रमभूरिभजावै । सज्जनसंगबछेरुडरैंबिडरैंवृषभादिप्रवेशनपावै । बारबड़ेअघबाघबँधेउरमंदिरबालगोविन्दनआवै ॥ १९ ॥

टी०– यामें पापको ब्यवहार कहत हैं उर रूपी जो मंदिर (घर) है ताके बार कहे द्वारमें बड़े पापरूपी अनेक बाघ बँधे हैं तासों उरमें जीवको परम सुखद बालगोविंद जे भगवान् हैं ते नहीं आवत युक्ति यह द्वारपै बाघ बंध्यो देखि बालक घरमें कैसे आइसकैं कैसे हैं अघबाघ कि दान औ दया औ शील ये जे जीवके साखा कहे हित हैं तिनको बिझकैं कहे डेरवाइकै आवन नहीं देत औ शूरतादि जे अनेक गुण रूपी भिक्षुक हैं तिनको बिझुकावैं क्रोधित करि देते हैं अर्थ ऐसे डेरवावत हैं जासों गुणहूं क्रुद्ध ह्वै फिरिजात हैं औ सुष्ठु जे धी बुद्धि हैं अर्थ पुण्यमार्गमें प्रवृत्त जे बुद्धी हैं तेई साधु सुरभी (गौवें) हैं ते सब भाजि गईं कहेते भूरि कहे बड़ो भ्रम देखाइकै भजाइ देते हैं औ सज्जननके सत्संग रूपी जे बछेरू हैं तेऊ जिनको डरत हैं डरिकै डर मंदिर मंदिरमें नहीं आवत औ वृषभपद (श्लेष) है बैल औ धर्म सो जैसे बाघको देखिकै बैल बिड़रै कहे भागि जात है

तैसे अघ बाघनको देखि धर्मादि भागत हैं पापके संयोगते जीवके हित-साधक जे दान दयादि हैं ते सब नशि जात हैं इतिभावार्थः ॥ १९ ॥

मू०– दोहा ॥ आंखिनआछतआंधरो, जीवकरैबहुभांति ॥ धीरनवीरजबिनकरै, तृष्णाकृष्णाराति ॥ २० ॥ तृष्णाकृष्णा षटपदी, हृदयकमलमोंबास ॥ मत्तदंतिगलगंडयुग, नर्कअनर्क बिलास ॥ २१ ॥

टी०– तीनि छंदनमें तृष्णाको व्यवहार कहत हैं तृष्णारूपी जो कृष्णा राति कहे कृष्णपक्षकी राति है सो आंखिन अक्षत कहे आषता है पर जीवको आँधरो करति है अर्थ तृष्णायुक्त प्राणीको आंखिनसों आपनो अपमानादि नहीं देखिपरत औ कृष्णा रातिहूमें अंधकारमें घटपटादि वस्तु आँखिनसों नहीं देखि परत औ धीरनको धीर्य्य विना करिदेति है अर्थ कहूं कछू पाइबो होइ तौ तृष्णायुक्त प्राणी कैसोऊ धीर होइ तौ धीर छोंड़ि धावत है औ रातिमें अंधकारमें चौरादि भयसों बड़े धीरऊ धीर्य बिन ह्वै जात हैं ॥ २० ॥ कृष्णा कहे श्याम जो तृष्णारूपी षटपदी (भ्रमरी) है ताको हृदयरूपी कमलमें बासहै ता तृष्णाको नर्क ओ अनर्क कहे स्वर्गको विलास दुवौ मत्तदंतीके गल कहे गलत अर्थ मदसों चुवत दुवौ गंडस्थल हैं अर्थ जैसे भ्रमरी कमलमों बसति है औ गजनके गंडस्थलन प्रति धायो करतिहै तैसे तृष्णा नरक भोग स्वर्ग भोग प्रति धायो करति है सो उपाउ जीवको नहीं करन देति जासों जीव मुक्त होइ ॥ २१ ॥

मू०– बिजयछंद ॥ कौनगनैयहिलोकतरीनबिलोकिबिलोकिजहाजनबोरै । लाजविशालल्तालपटीतनधीरजसत्यतमालनितोरै । वंचकताअपमानअयानअलाभभुजंगभयानककृष्णा । पाटुबड़ोकहूंघाटुनकेशवक्योंतरिजाइतरंगिनितृष्णा॥२२

टी०–फेरि कैसी है तृष्णा सो कहत हैं कि ऐसी तृष्णारूपी जो तरंगिणी नदी है सो कौनी तरहसे जीवसों तरि कहे उतरि जाइ कैसी है तृष्णा नदी कि यहि लोक कहे मृत्युलोककी जे तरी कहे नौका हैं तिन्हैं कौन गनै अ-

र्थ तिनको तो बोरिही देति है ॥ स्त्रियां नौस्तरणिस्तरिः इत्यमरः ॥ इहां तरी पदते मनुष्यदेह जानों अर्थ मनुष्य देहको प्राप्त ह्वै कै तो जीव तृष्णा-को पार पावतही नहीं है मनुष्य देहमें तृष्णा कैसेहू नहीं मिटति इत्यर्थः॥ बिलोकि बिलोकि कहे ढूंढ़ि ढूढ़ि जहाजको बोरति है यहां जहाज पदते देव-सरीर जानों अर्थ देवताहू तृष्णाको पार नहीं पावत अथवा लोकतरी पदते लोकव्यवहार युक्त मनुष्यदेह जानों औ जहाज पदते संसारको त्यागकिये जे योगीजन हैं तिनके शरीर जानों अर्थ योगीजन तृष्णाको पार नहीं पावते संसार बिशिष्ट प्राणिनकी कहा गिनती है औ लाजरूपी जो बिशाल लाता है सो लपटी है तनमें जिनके ऐसे धीर्य्य औ सत्यरूपी तमाल वृक्षहैं तिन्हैं अतिवेगसों तोरै कहे उखारि डारति है नदीहू कूलके वृक्ष उखारि डारति है इहां तमालपद उपलक्षण है तासों वृक्षमात्र जानों अर्थ तृष्णासों लाज औ सत्य प्राणीको दूर ह्वैजात है औ बंचकता कहे छल औ अपमान औ अयान (अज्ञानता) औ अलम्भ कहे याचितवस्तुकी अप्राप्तिरूपी जे भुजंग (सर्प) हैं तिन करिकै अति भयानक है नदीहूमें सर्प रहतहैं अर्थ बंचकतादि जे चारौं हैं तिनसों युक्त सदा तृष्णा रहतिहै औ कृष्णा कहे श्यामरूपा है औ जाको पाट बड़ो है अन्त नहीं पाइयत औ दुहूं कूलमें कहूं घाट नहीं है जहां बिश्रामहूं पावैं ॥ २२ ॥

मू०— पैरतपापपयोनिधिमेंमनमूढ़मनोजजहाजचढ़ोई । पेल तऊनतजैजड़जीवजऊबड़वानलक्रोधडढ़ोई । झूठतरंगिनिमेंउ-रझ्योसुइतेपरलोभप्रबाहबढ़ोई । बूड़तहैताहितेउबरैकहिकेशव काहेनपाठपढ़ोई ॥ २३ ॥

टी०— यामें जीवप्रति काहूकी शिक्षा है सो प्रसंग पाइ रामचन्द्र कहत हैं हे मन! मूढ़! जड़! जीव! तू मनोज-(कन्दर्प) रूपी जो जहाज है तामें-चढ़्यो पापरूपी पयोनिधि समुद्रमें पैरत है अर्थ कामवश परस्त्री गमनादि पाप करत फिरत है तहां अनेक अपमानादिते उत्पन्न जो क्रोधरूपी बड़वानल है तामें जऊ कहे यद्यपि डढ़ोई कहें जरिहू गयो है तऊ कहे ताहूपर मनोज

जहाजमें चढ़ि कामसमुद्रमें परिबो यह जो खेल है ताको तू नहीं तजतो ए-
तेहूपर लोभ रूप प्रवाह बढ़्यो है जामें ऐसी जो झूठरूपी तरंगिणी नदी
पापसमुद्रमें मिली है तामें उरझत है अड़िजात है अर्थ लोभवश अनेक झु-
ठाई करत फिरत सो या प्रकार है या समुद्रमें तुम बूड़त हौ सो जासों उबरै
कहे निकरै सो केशव यह जो पाठ है ताको आजुतक काहे न पढ़्यौ अर्थ
भगवान्‌को ना कहे न जप्यो अबहूं भगवान्‌को नाम जपिबो तोंको उचित
है इति भावार्थः ॥ केशव पदके कहिबेको आशय यह कि "के जले शेते इ-
ति केशवः" अर्थ वे समुद्रके जलहीमें सोयो करत हैं तासों समुद्रसों उबारि-
बो उनको सहज है और नामके जपहूसों या समुद्रसों ना कढ़ि है
इतिभावार्थः ॥ २३ ॥

**मू०— दोहा ॥ जोकेहूंसुखभावना, काहूकोजगहोति ॥ का-
लआखुपटतंतुज्यों, तबहींकाढ़तज्योति ॥ २४ ॥ ब्रह्मबिष्णु
शिवआदिदै, जेतनेदृश्यशरीर ॥ नाशहेतुधावतसबै, ज्योंवड़-
वानलनीर ॥ २५ ॥**

टी०— यामें समयके ब्यवहार कहत हैं जो केहू कहे कौनेहू प्रकारसों
सुखभावना कहे मोक्षकी बासना जगमें काहू प्राणीके होति है तौ काल क-
हे समयरूपी जो आखु (मूष) कहै सो ता भावनाकी ज्योति कहे डोरि अ-
थवा अंकुरको पट बस्त्रके तंतु (सूत्र) सम तबहीं कहे ताही समय काढ़ि
देत है अर्थ समौ मति फेरि देत है जासों सुखभावना दूरि ह्वै जाति है ॥२४॥
देह ब्यवहार कहि अब यामें मृत्युकृत पीड़ा कहत हैं ब्रह्मा औ बिष्णु औ
शिव आदिक जितने दृश्य शरीर हैं ते अनेक यज्ञादि कर्म करि उत्पत्ति पालन
संहार करनादि प्रभुत्व पाइ पुनि पुनि या संसारमें नाशहीके हेतु धावत
हैं कहे प्राप्त होत हैं अर्थ या संसारमें इनको सबको नाश होतहै मृत्युकृत
पीड़ाको ये सब प्राप्त होत हैं इतिभावार्थः कैसे धावत हैं जैसे वड़वानलमें
समुद्रको नीर (जल) नाशके हेतु धावतहै ॥ यथायोगवाशिष्ठे ॥ ब्रह्मा वि-
ष्णुश्च रुद्रश्च सर्वे ये भूतजातयः । मृत्युर्नश्यति भूपाल सलिलानीव वाड़वः ॥२५

मू०— सुन्दरीछन्द ॥ दोषमयीजोदवारिलगीअति । देखत-

हीत्यहितेजोजरीमति ॥ भोगकीआशनगूढ़उजागर । ज्योंरज सागरमेंमुनिनागर ॥ २६ ॥ बिजयाछन्द ॥ माछीकहैअपनो घरमाछरुमूसोकहैअपनोघरऐसो । कोनेघुसीकहैघूसिघिरोरा- बिलारिऔव्यालबिलेमहँवैसो । कीटकश्वानसोपाक्षिऔभिक्षु- कभूतकहैभ्रमिजासहजैसा । हौंहूंकहौंअपनोघरतैस्यहिताघर- सोंअपनोघरकैसो ॥ २७ ॥

टी०– हेमुनिनागर! या संसारमें दोषमयी कहे दूषण (अपवाद) इति तत् स्वरूप जो दवारि डाढ़ा है अथवा दोषमयी कहे दूषणाधिक्यरूपी जो दवारि है सो अति लगी है अति कहि या जनायो कि सब संसार भरेमें लगी है ऐसे स्थान या संसारमें कोऊ नहीं है कि जहां प्राणीको दोष न लगै अथवा जहां कोहूको दोष न लगावै अर्थ या संसारमें वृथा सब सबको दोष लगावत है अथवा दोष कहे परस्पर बिरोधमयी जो दवारि लगी है ताको देखतही तासों हमारी मति जरि गई है दवारिके छुयेसों जरियत है याके देखतही जरी कहे अति तेज जनायो ता मतिमें या संसारमें राज्यादि भोगकी आश कहे इच्छा न गूढ़ कहे अंतरमें है न उजागर कहे प्रसिद्ध है जैसे सागर–(समुद्र) में रज धूरि गूढ़ उजागर नहीं है जा स्थानमें जो जीव दवारिमें जरत है ता स्थानमें ताके भोगकी इच्छा नहीं होति यह रीतिही है॥२६॥ जैसे ये सब अपनो अपनो घर कहत हैं तैसे ता घरसों कहे ताही घरको होहूं अपनो कहौं सो घर अपनो कैसो कहे कौनबिधि है या संसारमें कछू काहूको नहीं है वृथा ममत्व है इति भावार्थः ॥ २७ ॥

मू०– सुन्दरीछन्द ॥ जैसहिहौंअबतैसहिहौंजग । आपद सम्पदकेनचलौंमग ॥ एकहिदहतियागबिनामुनि । हौनकछू अभिलाषकरौंमुनि ॥ २८ ॥ जोकछुजीवउधारणकोमत । जानतहौतोकहौतनुहैरत ॥ योंकहिमौनगह्यीजगनायक । केशवदासमनोबचकायक ॥ २९ ॥ चामरछन्द ॥ साधुसाधुकैसभा अशेषहर्षहर्षियो । दीहदेवलोकतेप्रसूनवृष्टिबर्षियो ॥ देखि

देखिराजलोकमोहियोमहाप्रभा । आइयोतहाँतुरन्तदेवकीसबैसभा ॥ ३० ॥

टी०— राज्यादि जे आपद बिपत्ति औ संपद संपत्तिके मग यह हैं तिनमें हौं न चलिहौं हे मुनि! एक देह त्याग बिना और कछू अभिलाष नहीं करतो अर्थ केवल देह त्याग करिबेहीकी इच्छा है ॥२८॥ रत कहे अनुरक्त ॥२९॥ देवकी सबै सभा आइयो कहे आवत भई सो राजलोक कहे राजभवनकी प्रभा देखि मोहियो कहे मोहित भई ॥ ३० ॥

मू०— बिश्वामित्र ॥ ब्यासपुत्रकेसमानशुद्धबुद्धिजानिये । ईशकोअशेषतत्त्वतत्त्वसोबखानिये ॥ इष्टहौबशिष्टशिष्टनित्यबस्तुशोधिये । देवदेवरामदेवकोप्रबोधबोधिये ॥ ३१ ॥

टी०— बिश्वामित्र वशिष्ठसों कहत हैं कि हम तुमको ब्यासपुत्र जे शुकाचार्य हैं तिनके समान शुद्ध बुद्धि कहे ज्ञानयुक्त है बुद्धि जिनकी ऐसे जानियत हैं अर्थ अतिज्ञानी हौ औ ईश जे ईश्वर हैं तिनको जो अशेष कहे संपूर्ण तत्त्व कहे स्वरूप है ताको तत्त्व कहे सिद्धांत सो अर्थ निश्चयात्मक बखानि एक हेतु कहत हौ ॥ तत्त्वस्वरूपेपरमात्मनीतिमेदिनी ॥ हे शिष्ट! कहे श्रेष्ठ! वशिष्ठ! तुम इष्ट कहे रघुबंशके गुरू हौ औ नित्य जो बस्तु है ताको शोधिये कहे ढूंढ़ो करत हौ सो सब बिधिसों तुमको उचित है तासों देवके देव जे राम देव हैं तिनको प्रबोध जो ज्ञान है तासों बोधिये कहे बोध करौ अर्थ जीवोद्धारको मत रामचंद्र पूछत हैं सो कहौ ॥ ३१ ॥

मू०— इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायां इन्द्रजिद्विरचितायां जगनिन्दावर्णनं नामचतुर्विंशतितमःप्रकाशः ॥ २४ ॥

टी०— इति श्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजाकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां चतुर्विंशतितमःप्रकाशः ॥ २४ ॥

मू०— दोहा ॥ कथापचीसप्रकाशमे, ऋषिबशिष्ठसुखपाइ ॥ जीवउधारणरीतिसब, रामहिंकह्योसुनाइ ॥ १ ॥ बशिष्ठ—पद्ध-

टिकाछन्द ॥ तुमआदिमध्यअवसानएक । अरुजीवजन्मसमुझौअनेक ॥ तुमहींजोरचीरचनाबिचारि । त्यहिकौनभांतिसमुझौमुरारि ॥ २ ॥ सबजातिबूझियतमोहिंराम । सुनियेजोकहेंजगब्रह्मनाम ॥ तिनकेअशेषप्रतिबिम्बजाल । त्यइजीवजानिजगमेंकृपाल ॥ ३ ॥ निशिपालिकाछन्द ॥ लोभमदमोहबशकामजबहींभयो । भूलिगयेरूपनिजबोधितिनसोंगयो ॥ राम ॥ बूझियतबातयहकौनबिधिउद्धरै ॥ बशिष्ठ ॥ वेदबिधिशोधिबुधयत्नबहुधाकरै ॥ ४ ॥ राम--दोहा ॥ जितलैजैहैबासना, तिततितह्वैहैलीन ॥ यत्नकहौकैसेकरै, जीवबापुरोदीन ॥ ५ ॥ बशिष्ठ--दोधकछन्द ॥ जीवनकीयुगभांतिदुराशा । होतिशुभाशुभरूपप्रकाशा ॥ यत्ननसोंशुभपन्थलगावै । तौअपनोतबहोपदपावै ॥ ६ ॥

टी०— १ जीवनके जे अनेक जन्म हैं तिनको समुझौ कहे जानत हौ अथवा अनेक जे जीव हैं तिनके जन्मको अर्थ जा प्रकारसों जीवनकी उत्पत्ति है ताको समुझौ कहे मोसों बूझत हौ ॥ २ ॥ सब बस्तु जानिहूकै जो हमसों बूझियत कहे पूंछत हौ तौ सुनौ हम कहियत हैं जगमें जो ब्रह्मनाम कह्यो है अर्थ जिनको ब्रह्मनाम है तिनके जे प्रतिबिंब जा प्रतिबिंब समूह हैं तेई जीव हैं यह मत प्रतिबिंब बादिनको बेदांतमें प्रसिद्ध है ॥ ३ ॥ अपनो जो रूप ब्रह्म है ताको भूलिगये तिनसों लोभादिसों ॥ ४ बासना (दुराशा)॥ ५ ॥ शुभ दुराशा जो ईश्वर पूजनादिकी आशा है ताके पंथमें जीवको अथवा मनको लगावै तो अपनो जो पद (स्थान) है ब्रह्मस्थान ताको पावै अर्थ शुभबासनाको ग्रहण करै ताके बादि ताहू बासनाको त्याग करि ब्रह्मपदको प्राप्त होय ॥ ६ ॥

मू०— ह्वौमनतेनिधिपुत्रउपायो । जीवउधारणमंत्रबतायो ॥ हैपरिपूरणज्योतितिहारी । जाइकहीनमुनीननिहारी ॥ ७ ॥ दोहा ॥ ताकीइच्छातेभये, नारायणमतिनिष्ठ ॥ तिनतेचतु-

शाननभये, तिनतेजगतप्रतिष्ठ ॥ ८ ॥ दोधकछंद ॥ जीवस-
बैअवलोकिदुखारे । आपनचित्तप्रयोगबिचारे ॥ मोहिंसुनाये
तुम्हैंतेसुनाऊं । जीवउधारणगीतगुनाऊं ॥ ९ ॥ दोहा- मुक्ति-
पुरीदरबारके, चारिचतुरप्रतिहार ॥ साधुनकोसतसंगसम,
अरुसंतोषविचार ॥ १० ॥ यहगजचक्राब्यूहकिय, कज्जलक-
लितअगाधु ॥ तामहँपैठिजोनीकसै, अकलंकितसोसाधु ॥११॥

टी०– ज्योति (ब्रह्मज्योति) ॥७॥ ८॥ तिन चतुरानन जगत्के जीवनको संसारमें दुखारे देखिके अपने चित्तमें तिन जीवनके उद्धारको प्रयोग कहे यत्न बिचाऱ्यौ सो सब हमको सुनायो है सो तुमको सुनाइयतहै ॥ ९ ॥ १० ॥ यामें साधुको लक्षण कहत हैं जैसे कज्जल कलित चक्रव्यूहमें शपथार्थ पैठिके अकलंकित कहे कज्जल चिन्ह रहित निकसे सो साधु कहे दोषरहित होत है तैसे कज्जल सम दोषयुक्त जो संसार है तामें पैठि अकलंकित कहे अदोष निकसै सो प्राणी साधु है ॥ ११ ॥

मू०– दोधकछंद ॥ देखतहूंएककालछियेहूं । बातकहैसुनै
भोगकियेहूं ॥ सोवतजागतनेकनक्षोभै । सोसमतासबहीमहँ
शोभै ॥ १२ ॥ जोअभिलाषनकाहूकोआवै । आयेगयेसुख
दुःखनपावै । लैपरमानँदसोंमनलावै । सोसबमांझसँतोषकहा-
वै ॥ १३ ॥ आयोकहांअबहौंकहिकोहौं । ज्योंअपनोपदपा-
ऊंसोठोहौं ॥ बंधुअबंधुहियेमहँजानैं । ताकहँलोगबिचारब-
खानैं ॥ १४ ॥

टी०–यामें समताको लक्षण कहत हैं संसारको जो स्रक् चंदन बनितादि बिषयभोग है ताको देखत हूं औ छुयेहूं औ ताहीकी बात कहै औ सुनै औ भोगहू करै परंतु सोवत औ जागते नेकहू तामें क्षोभै नहीं अर्थ लीन न होय औ सबहीमें कहे अग्नि जलादिमें समता शोभै सोई समता है॥१२॥ यामें संतोषको लक्षण कहत हैं जो काहू बस्तुको अभिलाष जीमें न आवै औ काहू बस्तुके आयेसों प्राप्त भयेसों सुख न पावै औ गयेसों दुख न पावै

औ मनको लैके परमानंद जो ब्रह्म है तामें लगावै सोई सबमांझ कहे चा-
रोंके मध्यमें संतोष कहावत है ॥ १३ ॥ यामें बिचारको लक्षण कहत हैं
मैं कौन हौं औ कहां आयो हौं अब जा उपायसों अपने पद- (स्थान)
को पाऊं सोउ ठोहौं कहे ढूंढ़ौं या प्रकारसों बिचार करै औ बंधु कहे हित
शम दमादि अबंधु कहे अहित काम क्रोधादिको हियेमें जानै सोई बिचार है॥१४

मू०- चारिमेंएकहुजोअपनावै । तौतुमपैप्रभुआवनपावै ॥ राम ॥ ज्योतिनिरीहनिरंजनमानी । तामहंक्योंऋषिइच्छबखानी ॥ १५ ॥ बशिष्ठ-दोहा ॥ सकलशक्तिअनुमानिये, अद्भुतज्योतिप्रकाश ॥ जातेजगकोहोतहै, उत्पतिथितिअरुनाश ॥ ॥ १६ ॥ श्रीराम-दोधकछंद ॥ जीवबँधेसबआपनिमाया । कीन्हेंकुकर्ममनोबचकाया ॥ जीवनचित्तप्रबोधनआनो । जीवनमुक्तकेभेदबखानो ॥ १७ ॥

टी०- जैसे चोपदारको अपनाइकै राजाके पास सब जात हैं तैसे इनचारिमें एकहूको अपनावै तौ तुमपै जान पावै फेरि राम ऋषिसों पूंछ्यौ कि ज्योतिको तौ निरीह कहे इच्छा रहित औ निरंजन कहे रागरहित मान्यौ औ कह्यो कि ॥ ताकी इच्छाते भये, नारायण मतिनिष्ठ ॥ तौ ज्योतिमें इच्छा क्यों कही सो कहौ ॥ १५ ॥ वशिष्ठ कह्यो कि अद्भुत जो ज्योतिको प्रकाश है तामें इच्छादि कहैं तौ नहीं परंतु इच्छादिकनकी सबकी शक्ति अनुमानियतहै जा शक्तिसों संसारकी उत्पत्ति स्थिति नाश होत है ॥ १६ ॥ जीव जे हैं ते अपनीमायामें बँधे मनसा बाचा कर्मणा कुकर्म (कुत्सितकर्म) कीन्हे हैं तिन जीवनको जो प्रबोधन कहे ज्ञान तुम कह्यो सो हम चित्तमें आन्यो अर्थ भ्यास जान्यो इति अब जीवन्मुक्तके भेद कहौ ॥ १७ ॥

मू०- बशिष्ठ ॥ बाहरहूंअतिशुद्धहियेहू । जाहिनलागतकर्मकियेहू ॥ बाहरमूढ़सोअंतसयानो । ताकहंजीवनमुक्तबखानो ॥ ॥ १८ ॥ दोहा ॥ आपुनसोअवलोकिये, सबहीयुक्तायुक्त ॥ अहंभावमिटिजाहिजो, कौनबद्धकोमुक्त ॥ १९ ॥ श्रीराम-दो-

धक ॥ सोसिगरेगुणहोतसोजानो । स्थावरजीवनमुक्तबखानो ॥ बशिष्ठ ॥ जानिसबैगुणदोषनछंडै । जीवनमुक्तनकेपद मंडै ॥ २० ॥ राम-दोहा ॥ साधुकहावतकरतहैं, जगमेंसबब्योहार ॥ तिनकोमीचुनछ्वैसकै, कहिप्रभुकौनविचार ॥ २१ ॥

टी०– यामें जीवन्मुक्तको लक्षण कहत हैं बाहेर कहे तनमें औ हियहूमें कहे मनहूमें शुद्ध होय औ पाप पुण्य कर्म करै सो लागै नहीं औ बाहेर मूढ़ अज्ञान रहै अर्थ बावरे सम रहै औ अंतमें सयानो रहै ताहीको जीवन्मुक्त कहियत है ॥ १८ ॥ युक्त कहे योग्य मनुष्यादि अयुक्त कहे अयोग्य शूकरादि तिनको आपुनसों कहे आपने सम अवलोकिये (देखिये) अर्थ अपने सम सबको जानिये औ अहंभाव मिटि जाय तौ कौन बद्ध है कौन मुक्त है अर्थ सबही मुक्त हैं ॥ १९ ॥ योग्यके गुण अयोग्यके दोष जानिकै त्याग करै ॥ २० ॥ रामचन्द्र कहत हैं कि ज्ञानसों जीवनकी मुक्ति कह्यो सो जान्यो अब यह कहौ कि जे प्राणी साधु कहावत हैं औ जगमें स्त्री पुत्रादिके सब ब्योहार करत हैं तिनका मीचु नहीं छुइ सकति अर्थ तिनकी मृत्यु नहीं होति है ताको बिचार हे प्रभु! हे वशिष्ठ! कहौ ॥ २१ ॥

मू०– वशिष्ठ-पद्धटिकाछंद ॥ जगजिनकोमनतवचरणलीन । तनतिनकोमृत्युनकरतिक्षीन ॥ तेहिक्षणहींक्षणदुखक्षीण होत । जियकरतअमितआनँदउदोत ॥ २२ ॥ जोचाहैजीवन अतिअनंत । सोसाधैप्राणायामयंत्र ॥ शुभरेचकपूरकनामजानि । अरुकुम्भकादिसुखदानिमानि ॥ २३ ॥ जोक्रमक्रमसाधै साधुधीर । सोतुमहिंमिलैयाहीशरीर ॥ राम ॥ जगतुमतेनहिँसर्बज्ञआन । अबकहोदेवपूजाबिधान ॥ २४ ॥

टी०–हेराम जिन प्राणीनको मन तुम्हारे चरणमें लीन है ते साधु जगमें सब ब्यवहारहू करत हैं ताहूपर तिनके तनको मृत्यु क्षीण नहीं करि सकति औ तिहि प्राणीके क्षणमें संसाररूपी दुःख क्षीण होत हैं औ मुक्तिरूपी जो अमित आनन्द है सो उदोत (प्रकाश) करत है ॥ २२ ॥ अंगुष्ठते दृ-

तीय अंगलीको नाम अनामिका है तासों नासाको बाम रंध्र अंगुष्ठसों रोंकि बामरंध्रसों बायुको छोड़िये सो पूरक प्राणायाम है; औ दक्षिण रंध्र अंगुष्ठसों औ बामरंध्र अंगुष्ठसों औ बामरंध्र अनामिकासों साथही रोंकि बायुको हृदयमें स्थापन करिये सो कुम्भक है; यथा वायुपुराणे। प्राणायामस्त्रिधा प्रोक्तो रेचकः पूरकस्तथा॥ कुम्भको रेचक स्तत्र नासारंध्राच्च दक्षिणात्॥ निरुध्य बामरंध्रञ्चानामिकया विसर्जनं॥ निरुध्य दक्षिणं रंध्रं वामरंध्राच्च पूरणम्॥ तथैवानामिकांगुल्या पूरणं तु तदुच्यते॥ रेचकात्पूरणात्पश्चाद्द्वेपुटेनाशयोस्तथा॥ सन्निरुध्य हृदि स्थाप्य बायुं तिष्ठेत्स कुम्भकः॥२३॥ २४॥

मू०— वशिष्ठ--तारकछंद॥ हमएकसमयनिकसेतपसाको। तबजाइभजेहिमवंतरसाको॥ बहुभांतिकऱ्योतपक्योंकहिआवै। शितकंठप्रसन्नभयेजगगावै॥ २५॥ दंडक॥ ऊजरेउदारउरबासुकीबिराजमान हारकेसमानआनउपमानटोहिये। शोभिजैजटानबीचगंगाजूकेजलबुंदकुंदकीसीकलीकेशवदासमनमोहिये। नखकीसीरेखाचंद्रचन्दनसीचारुरजअंजनश्रृंगारहूगरलरुचिरोहिये। सबसुखसिद्धिशिवासोहैशिवजूकेसाथजावकसोपावकलिलारलाग्योसोहिये॥ २६॥

टी०— रसा (पृथ्वी) जग गावै अर्थ जिनको जगत्के प्राणी गान करत हैं॥ २५॥ उजरे औ उदार कहे बड़े उरमें हार मालाके समान बासुकी नाम सर्प बिराजमान है और उपमाको नहीं टोहिये कहे ढूंढ़ियत अर्थ और उपमाके सदृश नहीं हैं तासों खोज नाहीं करियत रज कहे बिभूति अंजन जो श्रृंगार हैं ताकी रुचि गरल जो बिष है ता करिकै रोहिये कहे धारण करियत हैं अर्थ लगिगयो पार्वतीके नेत्रांजन सम गरल शोभित है- सब सुखकी सिद्धि शिवा जो पार्वतीजी हैं ते संगमें शोभती हैं औ जावक कहे महाउर सम लिलारमें लाग्यो पावक (अग्नि) शोभित है ऐसे सदा सुरत चिन्हयुक्त प्रसन्न ह्वै हमारे समीप आये इति शेषः॥ २६॥

मू०— महादेव-तारकछन्द॥ बरमाँगिकछूऋषिराजसयाने। बहुभांतिचलेतपपंथपयाने॥ वशिष्ठ॥ पुजवोपरमेश्वरमोमन-

इच्छा। सिखवोप्रभुदेवप्रपूजनशिक्षा ॥ २७ ॥ शिव-दोहा ॥ रामरमापतिदेवनहिँ, रंगनरूपनभेव ॥ देवकहतऋषिकौनको, सिखऊंजाकीसेव ॥ २८ ॥ वशिष्ठ-तोमरछंद ॥ हमकहाजानहिंअज्ञ। तुमसर्वदासर्बज्ञ ॥ अबदेवदेहुबताइ। पूजाकहौसमुझाइ ॥ २९ ॥ शिव- ॥ सतचित्प्रकाशप्रभेव। तेहिवेदमानतदेव ॥ तेहिपूजिऋषिरुचिमंडि। सबप्राकृतनकोछंडि ॥३०॥ पूजायहैउरआनु। निर्व्याजधरियेध्यानु ॥ योंपूजिघटिकाएक। मनुकियोयज्ञअनेक ॥ ३१ ॥

टी०- चले तपपंथमें अर्थ उचित तपपंथमें तुम बहुभांति पयाने कहे गमन कन्यो है अर्थ बड़ा तप कन्यौहे ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ सत कहे सत्यरूप चित् कहे चैतन्यरूप जो प्रकाश कहे ज्योति जो रामचद्रको प्रभेव कहे भेद है अर्थ रूपांतर है ताको देव वेद मानत हैं प्राकृत कहे लघु गणेशादि ॥ ३० ॥ निर्व्याज कहे निःकपट ध्यानको धरिये यहै ता देवकी पूजा है अर्थ ताकी पूजा केवल ध्यानही है और नहीं है ॥ ३१ ॥

मू०- जियजानयहईयोग। सबधर्मकर्मप्रयोग ॥ सबरूपपूजिप्रकाश। तबभयेहमसेदास ॥ यहबचनकरिपरमान। प्रभुभयेअंतर्द्धान ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ यहपूजाअद्भुतअगिनि, सुनिप्रभुत्रिभुवननाथ ॥ सबैशुभाशुभबासना, मेंजारीनिजहाथ ॥ ३३ ॥ झूलनाछंद ॥ यहिभांतिपूजापूजिजीवजोभक्तपरमकहाइ। भवभक्तिरसभागीरथीमहँदेहिडुबनिबहाइ ॥ पुनिमहाकर्त्तामहात्यागीमहाभोगीहोइ। अतिशुद्धभावरमैरमापतिपूजिहैसबकोइ ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ रागद्वेषबिनकैसहूं, धर्माधर्मजोहोइ ॥ हर्षशोकउपजैनमन, कर्त्तामहासोलोइ ॥ ३५ ॥

टी०- धर्मके जे दानादि कर्म हैं तिनको प्रयोग कहे यत्न सब प्राणी प्रकाश जो रूप है ज्योतिरूप ताको पूजिकै हमारे सम दास भये हैं परि-

माण कहे निश्चय ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ जो जीव या प्रकारसों पूजा पूजिकै परमभक्त कहायकै भव जो संसार है ताके दुःखनको भक्तिरसकी जो भागीरथी गंगा हैं तामें बहाइ देइ अर्थ दूरि करै फेरि महाकर्त्ता औ महात्यागी औ महाभोगी होइ औ शुद्धभावसों रमापति- (ईश्वर) में रमै कहे प्राप्त होइ औ ताको सब कोऊ पूजन करिहैं ॥ ३४ ॥ महाकर्त्तादिकनके तीनहूंके लक्षण क्रमसों कहत हैं जाके राग कहे प्रीति बिना जीव रक्षणादि कछू धर्म आकस्मात् ह्वै जाइ ताको हर्ष कहे सुख न होइ औ द्वेष कहे बिरोध बिना जीवहिंसादि अधर्म होइ ताको शोक दुःख ना होइ सो प्राणी महाकर्त्ता है ॥ ३५ ॥

मू०– ॥ दोहा ॥ भोजअभोजनरतबिरत, नीरससरससमान ॥ भोगहोइअभिलाषबिन, महाभोगतामान ॥ ३६ ॥ जोकछुआंखिनदेखिये, बाणीबर्ण्योजाहि ॥ महातियागीजानिये, झूठोजानोताहि ॥ ३७ ॥ तोमरछंद ॥ जियज्ञानबहु ब्यौहार । अरुयोगभोगबिचार ॥ यहिभांतिहोइजोराम । मिलिहैंसोतेरेधाम ॥ ३८ सवैया ॥ निशिबासरबस्तुबिचारकरैसुखसांचहियेकरुणाघनुहै । अघनिग्रहसंग्रहधर्मकथानपरिग्रहसाधुनकोगनुहै । कहिकेशवयोगजगैहियभीतरबाहरभोगनसोंतनुहै । मनुहाथसदाजिनकेतिनकोबनहीघरहैघरहीबनुहै ॥ ३९ ॥

टी०– भोज कहे भक्ष्य औ अभोज (अभक्ष्य) पदार्थमें रत (अनुरक्त) औ विरत (विरक्त) न होइ अर्थ भोज्य अभोज्यको समान भक्षण करै औ निरस कहे स्वादरहित सरस (स्वादयुक्त) बस्तु जाको समान होइँ औ भोग जाको अभिलाष बिना होइ सो महाभोक्ता है ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ जाके जियमें ज्ञानको बहुत प्रकारको ब्यौहार है औ योग औ भोगको बहु बिचार है ऐसो जब होइ तब तुम्हारो जो धाम (तेज) है ज्योतिरूप ताको मिलि है अथवा धाम कहे घर वैकुंठ ताको मिलिहै (प्राप्त) ह्वै है ॥ ३८॥

वस्तुविचार कहे ब्रह्मविचार अथवा सत् असद्वस्तुको विचार निग्रह (ताड़न) परिग्रह कहे परिजन (निकटवासी) इति ॥ परिग्रहः परिजने इति मेदिनी॥३९॥

मू०— ॥ दोहा ॥ लेइजोकहियेसाधुअन, लीन्हेकहियेबाम ॥ सबकोसाधनएकजग, रामतिहारोनाम ॥ ४० राम ॥ मोहि नहुतोजनाइबे, सबहीजान्योआजु ॥ अबजोकहौसोकरिबनै, कहेतुह्मारेकाज ॥ ४१ ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोर चिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायांइन्द्रजिद्विरचितायांजीवोद्धार बर्णनंनामपंचविंशःप्रकाशः ॥ २५ ॥

टी०— वाम कहे कुटिल साधन कहे उपाय अर्थ मुक्तिको उपाय केवल तुम्हारेको नाम जप है ॥ ४० ॥ जो आपनो ईश्वरत्व मोहिँ काहूको जनाइबोई नहीं रह्यो सो सबहीं जान्यौ तासों जो कहौ सो अब करिये अर्थ राज्य लीबेको कहत हौ सो लेहैं ॥ ४१ ॥ इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायां पंचविंशःप्रकाशः ॥ २५ ॥

मू०— दोहा ॥ कथाछबीसप्रकाशमें, कह्योवशिष्ठविवेक ॥ रामनामकोतत्त्वअरु, रघुबरकोअभिषेक ॥ १ ॥ मोटनकछन्द ॥ बोलेऋषिराजभरत्थतबै । कीजैअभिषेकप्रयोगसबै ॥ शत्रुघ्नकह्योचुपह्वैनरहो । श्रीरामकेनामकोतत्त्वगहो ॥ २ ॥

टी०— जब रामचन्द्र राज्य अंगीकार कर्‍यो तब ऋषिराज-(वशिष्ठ) सों भरत बोले प्रयोग (यत्न) शत्रुघ्न भरतसों कह्यो कि चुप क्यों नहीं ह्वै रहते अर्थ राज्याभिषेक तौ रामचन्द्र अंगीकार कर्‍यो है तौ ह्वैहैई जो ऋषिराज कह्यो है कि सबको साधन एकजग, राम तिहारो नाम ॥ ता रामनामकी तत्त्व ऋषिसों गहौ अर्थ सुनिकै धारण करौ ॥ २ ॥

मू०— राममोटनकछंद ॥ श्रद्धाबहुधाउरआनिभई । ब्रह्मासुतसोंबिनतीबिनई ॥ श्रीरामकोनामकहौरुचिकै । मतिमान महामनकोशुचिकै ॥ ३ ॥ बशिष्ठ—स्वागताछंद ॥ चित्तमांझ

जबआनिअरूझी । बाततातकहँमैंयहबूझी ॥ योगयागकरि जाहिनआवै । स्नानदानबिधिममनपावै ॥ हैअशक्तसबभांति बिचारो । कौनभांतिप्रभुताहिउधारो ॥ ४ ॥

टी०- शत्रुघ्नके उरमें बड़ी श्रद्धा भई ॥ ३ ॥ अरूझी अर्थ संदेह भई तात (ब्रह्मा) मर्म (सिद्धान्त) ॥ ४ ॥

मू०- ब्रह्मा-भुजंगप्रयातछंद ॥ जहींसच्चिदानन्दरूपेधरैंगे । सुत्रैलोक्यकोतापतीन्योंहरैंगे ॥ कहैंगोसबैनामश्रीरामताको । सदासिद्धहैशुद्धउच्चारजाको ॥ ५ ॥ कहैनामआधोसोआधोनशावै । कहैनामपूरोसोबैकुंठपावै ॥ सुधारैंदुहूंलोककोबर्णदोऊ । हियेछद्मछांड़ैकहैबर्णकोऊ ॥ ६ ॥ सुनावैसुनैसाधुसंगीकहावै । कहावैकहैपापपुंजैनशावै ॥ स्मरावैस्मरैबासनाजारिडारै । तजैछद्मकोदेवलोकैसिधारै ॥ ७ ॥ तामरसछंद ॥ जबसबवेदपुराणनशेहैं । जपतपतीरथहूमिटिजैहैं ॥ द्विजसुरभीनहिंकोउबिचारै । तबजगकेवलनामउधारै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मरणकालकाशीबिषे, महादेवनिजधाम ॥ जीवनकोउपदेशिहैं, रामचन्द्रकोनाम ॥ ९ ॥ मरणकालकोऊकहै, पापीहोइपुनीत ॥ सुखहीहरिपुरजाइहै, सबजगगावैगीत ॥ १० ॥

टी०- और मंत्र पुरश्चरणादिसों सिद्ध किये जात हैं औ याके शुद्ध उच्चार सदाहीं सिद्ध हैं ॥ ५ ॥ आधो नाम रा अथवा म अधोगति (नरक) इति; पूरे नामके जपसों बैकुंठ प्राप्तिहोतिहै मृत्युलोकमें कहा होत है ताल्यि फेरि कहत हैं कि राम ये जे दुवौ अंक (बर्ण) हैं ते मृत्युलोक, स्वर्गलोक दुवौ सुधारत हैं मृत्युलोकमें यश गौरवादिको लाभ होत है; बैकुंठमें देवसुख प्राप्त होत है इत्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

मू०- रामनामकेतत्त्वको, जानतवेदप्रभाव ॥ गंगाधरकैधरणिधर, बालमीकिमुनिराव ॥ ११ ॥ दोधकछंद ॥ सातहु सिंधुनकेजलरूरे । तीरथजालनिकेपयपूरे ॥ कंचनकेघटबानर

लीने । आइगयेहरिआनँदभीने ॥ १२ ॥ दोहा ॥ सकलरत्न-मयमृत्तिका, शुभऔषधीअशेष ॥ सातद्वीपकेपुष्पफल, पल्लव रससबिशेष ॥ १३ ॥ दोधकछंद ॥ आंगनहीरनकोमनमोहै॥ कुंकुमचन्दनचर्चितसोहै ॥ हैसरसीसमशोभप्रकाशी । लोचन मीनमनोजबिलाशी ॥ १४ ॥ दोहा ॥ गजमोतिनयुतशोभि-जैं, मरकतमणिकेथार ॥ उदकबुन्दसोंजनुलसत, पुरइनिपत्र-अपार ॥ १५ ॥ बिशेषकछंद ॥ भांतिनभांतिनभाजनराजत कौनगनै । ठौरहिठौररहेजनुफूलिसरोजघनै ॥ भूपनकेप्रतिबि-म्बबिलोकतरूपरसे । खेलतहैंजलमांझमनोजलदेवबसे॥१६॥ पद्धटिकाछंद ॥ मृगमदामिलिकुंकुमसुरभिनीर । घनसारसहित अम्बरउसीर । घसिकेशरिसोंबहुबिबिधिनीर । क्षितिछिरकेच-रथावरशरीर ॥ १७ ॥ बहुबर्णफूलफलदलउदार । तहँभरिरा-खेभाजनअपार ॥ तहँपुष्पवृक्षशोभैंअनेक । मणिवृक्षस्वर्ण-केवृक्षएक ॥ १८ ॥ त्यहिउपररच्याएकोबितान । दिविदेखत देवनकेबिमान । दुहुँलोकहोतपूजाबिधान । अरुनृत्यगीतवा-दित्रगान ॥ १९ ॥

टी०— धरणि धर (शेष) ॥ ११ ॥ हरि जे रामचन्द्र हैं तिनके अभिषे-कोत्सवके आनंदमें भीने इत्यर्थः ॥ १२ ॥ रस (घृतादि) ॥ १३ ॥ भांतिन भांति तीनि छंदमें एक वाक्यता है सरसी तड़ाग ता आंगनमें प्रतिबिंबित जे सबके लोचन हैं तेई मनोजके (कामके) मीन (मत्स्य) हैं अथवा मनो-जबिलासी कहे कामके खेलिबेके मीन हैं ॥१४॥ ताही तड़ागमें पात्र पुरइनि पत्रसमहैं ॥ १५ ॥ ताही तड़ागमें भाजन कहे पात्र सरोज सम फूलि रहे हैं प्रतिबिंब जलदेव सम हैं ॥ १६ ॥ सुरभि (सुगंधित अथवा सुंदर) सुरभिर्हेम्नि चंपके जातीफले मातृभेदे रम्ये चैत्रवसंतयोः । सुगंधौगविशल्ल-क्यामितिहेमचंद्रः ॥ अम्बर सुगन्ध वस्तुविशेष ॥ अंबरंनद्वयोर्व्योम्निसुग-न्ध्यंतरवस्त्रयोरितिमेदिनी ॥ सरिसों (बराबरिसों) अर्थ मृगमदादि सब स-

स घसि कै ॥ १७ ॥ दलपत्र (भाजनपात्र) ॥ १८ ॥ एकै अपूर्ब वादित्र (वाजने) ॥ १९ ॥

मू०— तरुऊमरिकोआसनअनूप । बहुरचितहेममयविश्वरूप ॥ तहँबैठेआपुनआइराम । सियसहितमनोरतिरुचिरकाम ॥ २० ॥ जनुघनदामिनिआनन्ददेत । तरुकल्पकल्पबल्लीसमेत ॥ हैकैधौंविद्यासहितज्ञान । कैतपसंयुतमनसिद्धिजान ॥ २१ ॥ कैबिक्रमयुतकीरतिप्रबीन । कैश्रीनारायणशोभलीन ॥ कैअतिशोभितस्वाहासनाथ । कैसुंदरताश्रृंगारसाथ ॥ २२ ॥ सुन्दरीछंद ॥ केशवशोभनछत्रबिराजत । जाकहँदेखिसुधाधरलाजत ॥ शोभितमोतिनकेमतिकेगन । लोकनकेजनुलागिरहेमन ॥ २३ ॥ दोहा ॥ शीतलताशुभतासबै, सुन्दरताकेसाथ ॥ अपनीरविकीअंशुलै, सेवतजनुनिशिनाथ ॥ २४ ॥

टी०— ऊमरि (गूलरि) हेममय कहे सुबर्णमयी विश्व कहे संसारके रूप अर्थ संसारके वस्तु स्वरूपन करिकै रचित है (चित्रित) है ॥ २० ॥ कै तपसंयुत सिद्धि कहे तपसिद्धि है यह मनमें जानु इत्यर्थः ॥ २१ ॥ श्री (लक्ष्मी) सनाथ कहे अग्नि सहित श्रृंगाररस अथवा भूषणको श्रृंगार कियेसों सुन्दरता बढ़ति है तासों जानों ॥ २२ ॥ २३ ॥ ताही छत्रमें तर्क है शीतलता औ शुभता कहे मांगल्य औ सुन्दरता जो सब कहे पूर्ण है तिनके संग अपनी औ रविकी अंशु (किरणि) लैकै मानों निशिनाथ (चन्द्रमा) रामचन्द्रको सेवत है चन्द्रकिरणि सम मुक्तनकी किरणि हैं रविकिरणि सम औ जटित जे माणिकादि मणिहैं तिनकी किरणिहैं औ शीतलतादि हैही हैं ॥ २४ ॥

मू०— सुन्दरीछन्द ॥ ताहिलियेरविपुत्रसदारत । चमराबिभीषणअंगदढारत ॥ कीरतिलैजगकीजनुवारत । चन्द्रकचंदनचंदसवाँरत ॥ २५ ॥ लक्ष्मणदर्पणकोदखरावत । पाननिलक्ष्मणबंधुखवावत ॥ भर्थलैलैनरदेवसदारत । देवअदेवनि

पायनपारत ॥ २६ ॥ दोहा ॥ जामवंतहनुमंतनल, नीलम-रातिबसाथ ॥ छरीछबीलीशोभिजै, दिग्पालनकेहाथ ॥२७॥ रूपबहिक्रमसुरभिसम, बचनरचनबहुभेव ॥ सभामध्यपहिंचानिये, नरनरदेवनदेव ॥ २८ ॥ आईजबअभिषेककी, घटिका केशवदास ॥ बाजेएकहिबारबहु, दुंदुभिदीहअकाश ॥ २९ ॥

टी०— रत कहे अनुरक्त है कीर्तिसम चमरहै फिरि चमर कैसे हैं कि चंद्रक जो कपूरहै औ चंदन औ चंद्रमा है सदा आर्त कहे पीड़ित जिनसों अर्थ जिनकी श्वेततासों अपनी श्वेतताही न समुझि चंद्रकादि दुःखी होतहैं ॥ २५ ॥ २६ ॥ माही (मरातिब) प्रसिद्ध है छरी (आशा) ॥ २७ ॥ सुरभि (सुगंधि) ॥ २८ ॥ २९ ॥

मू०— झूलनाछंद ॥ तबलोकनाथबिलोकिकैरघुनाथकोनिजहाथ । सबिशेषसोंअभिषेककीपुनिउच्चरीशुभगाथ ॥ ऋषिराजइष्टबशिष्टसोंमिलिगाधिनन्दनआइ । पुनिबालमीकिबियासआदिजितेहुतेमुनिराइ ॥ ३० ॥ रघुनाथशंभुस्वयंभुकोनिजभक्तिदीसुखपाइ । सुरलोककोसुरराजकोकियदीहनिर्भयराइ । बिधिसोंऋषीशनसोंबिनयकारिपूजिऔपरिपांइ । बहुधादईतपवृक्षकीसबसिद्धिसिद्धसुभाइ ॥ ३१ ॥

टी०— लोकनाथ जे ब्रह्मा हैं तिन अभिषेककी घटिका आई बिलोकिकै निज हाथसों रघुनाथको अभिषेक की कहे कऱ्यो पुनि फेरि शुभगाथ कहे वेदबिहित गाथको उच्चार कऱ्यो इत्यर्थः पुनि कहे ब्रह्माके अभिषेक किये बादि बशिष्ठादिक जेते मुनिराय ता ठौर हुते तिनहुंन अभिषेक करि शुभगाथ उच्चरी इत्यर्थः ॥ ३० ॥ स्वयंभू कहे ब्रह्मा ॥ ३१ ॥

मू०— दोहा ॥ दीन्हांमुकुटबिभीषणै, अपनोअपनेहाथ ॥ कंठमालसुग्रीवको, दीन्हीश्रीरघुनाथ ॥३२॥ चञ्चरीछन्द ॥ मालश्री रघुनाथकेउरशुभ्रसीतहिसोदई । आफियोहनुमन्तकोतिनदृष्टि-

कैकरुणामई ॥ औरदेवअदेवबानरयाचकादिकपाइयो । एकअ-ङ्गदछोड़िकैज्वइजासुकेमनभाइयो ॥ ३३ ॥ अंगद ॥ देवहौन-रदेवबानरनैकृतादिकधीरहौ । भरतलक्ष्मणआदिदैरघुबंशके सबबीरहौ ॥ आजुमोसनयुद्धमाडहुएकएकअनेककै । बापको तबहौंतिलोदकदीहदेहुबिवेककै ॥३४॥ राम--दोहा ॥ कोऊमेरे बंशमें, करिहैतोसोंयुद्ध ॥ तबतेरोमनहोइगो, अंगदमोसोंशु-द्ध ॥ ३५ ॥ बिधिसोंपाँयपखारिकै, रामजगतकेनाह ॥ दीन्हे-उगाँउंसनौढ़ियन, मथुरामण्डलमाह ॥ ३६ ॥ इतिश्रीमत्सकल-लोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिन्द्राजि-द्विरचितायांरामस्यराज्याभिषेकवर्णनंनामषट्विंशःप्रकाशः २६

टी०— ॥ ३२ ॥ आफियो कहे दियो तिन सीताजू ॥३३॥३४॥३५॥३६॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसाद-निर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायांषड्विंशःप्रकाशः ॥ २६ ॥

मू०— दोहा ॥ सत्ताइसेप्रकाशमें,रामचन्द्रसुखसार ॥ ब्रह्मा-दिकअस्तुतिबिविधि,निजमतिकेअनुसार ॥१॥ ब्रह्मा—झूलना-छन्द ॥ तुमहौअनन्तअनादिसर्बगसर्बदासर्बज्ञ । अबएकहौकि-अनेकहौमहिमानजानतअज्ञ ॥ भ्रमिबोकरैंजगलोकचौदहलो-भमोहसमुद्र । रचनारचीतुमताहिजानतहौनब्रह्मनरुद्र ॥२ ॥

टी० ॥१॥ सर्बग कहे सर्वत्र ब्याप्त लोभ मोहके समुद्र अर्थ लोभ मोहसों भरे जे चौदहलोक कहे चौदहौं लोकके प्राणी जा रचनामें भ्रमिबो करत हैं अर्थ संदेहको प्राप्त भयो करत हैं ता रचनाको नहीं जानत हौ न ब्रह्म (वेद) जानत हैं न रुद्र जानत हैं अथवा चौदहोलोकमें लोभ औ मोहके समुद्रमें हम भ्रम्यो करत हैं तासों तुह्मारी रचनाको नहीं जानत ॥ २ ॥

मू०— शिव—दण्डक ॥ अमलचरितुमबैरिनमलिनकरौसा-धुकहैंसाधुपरदारप्रियअतिहौ ॥एकथलथितपैबसतजगजनप्रि-

यकेशवदासद्विपदपैबहुपदगातिहौ । भूषणसकलयुतशीशधरेभू-
मिभारभूतलफिरतपैअभूतभुवपातिहौ । राखौगाइब्राह्मणनराज-
सिंहसाथचिरुरामचन्द्रराजकरौअद्भुतगातिहौ ॥ ३ ॥ इन्द्र ॥
बैरीगाइब्राह्मणकोग्रन्थनमेंसुनियतुकविकुलहीकेसुबरणहरकाज
है। गुरुशय्यागामीएकबालकैबिलोकियतुमातंगनहींकेमतवारे
कैसोसाजहै । अग्निगरीनप्रातिहोतहैअगम्यागौनदुर्गनहिकेश-
वदासदुर्गतिसीआजहै । देवताईदेखियतुगढ़निगढ़ोईजीवोचि-
रुचिरुरामचन्द्रजाकोऐसोराजहै ॥ ४ ॥

टी०– याहूमें बिरोधाभास है अमल (निर्मल) चरितनसों बैरिनको मलिन करत हौ इत्यर्थः पर कहे उत्कृष्ट दार अर्थ लक्ष्मीजू ॥ राघवत्वे भ-भवेत्सीता रुक्मिणी कृष्णजन्मनीति पुराणात् ॥ जा भूमिको शीशमें धरे हैं ताही पर फिरिबो बिरोध है गाय सदृश जे ब्राह्मण हैं तिनहूंको राखत हौ रक्षा करत अथवा गाय औ ब्राह्मणनको राखत हौ औ राजसिंह कहे रा-जरूपी जे सिंह हैं तिनसों साथ कहे मित्रता है तौ सिंहसों मित्रता औ गा-यकी रक्षा यह बिरोध है ॥ ३ ॥ यामें परिसंख्यालंकार है ग्रंथनमें लि-ख्योहै कि गाइ ब्राह्मणके बैरसों ऐसो पाप होत है सुंदर बर्ण (अक्षर) कवितामें धरिबेको देवताई कहे देवताकी प्रतिमाहीं ढांकी आदिकी गढ़नि-सों गढ़ी देखियत है और कोऊ प्राणी नहीं गढ़्यो जात अर्थ ताड़नाको नहीं प्राप्त होत ॥ ४ ॥

मू०– पितर । बैठेएकछत्रतरछाँहसबक्षितिपरसूरकुलकलश
सुराहुहितमातिहौ । त्यक्तबामलोचनकहतसबकेशवदासबिद्य-
मानलोचनद्वैदेखियतुअतिहौ । अकरकहावतधनुषधरेदेखियतु
परमकृपालुपैकृपाणकरपातिहौ । चिरुचिरुराजकरौराजारामचं-
द्रसबलोककहैनरदेवदेवदेवगातिहौ ॥ ५ ॥ अग्नि । चित्रहीमें
आजबर्णसंकरबिलोकियतुब्याहहीमेंनारिनकेगारिनसोंकाजहै।

ध्वजैकंपयोगीनिशिचक्रैहैबियोगीद्विजराजमित्रद्वेषीएकजलद-समाजहै । मेघैतोगगनपरगाजतनगरघेरिअपयशडरयशहीको लोभआजहै । दुःखहीकोखंडनहैमंडनसकलजगचिरुचिरुराजकरौजाकोऐसोराजहै ॥ ६ ॥

टी०- यामें विरोधाभास है विरोधपक्ष राहु (ग्रह) अविरोध सुराह कहे सुमार्ग त्यक्त कहे त्यागे वामलोचन औ वाम कहे कुटिल लोचन अर्थ काहूसों टेढ़े लोचन करि नहीं ताकत विद्यमान कहे प्रत्यक्ष अकर कहे दंडरहित अर्थ काहूको तुम दंड द्रव्य नहीं देते कृपाण जो करबाल[१] है सो है करमें हाथमें जिनके ॥ ५ ॥ यामें परिसंख्या है वर्ण जे अरुणादि हैं तिनको संकर मिलाइबो द्विजराज (चन्द्रमा) मित्र (सूर्य) जाको राज सकल जगको मंडन (भूषण) है ऐसे जे तुम हौ ते चिरु चिरु कहे बहुकाल पर्यंत राज करौ ॥ ६ ॥

मू०- वायु । राजारामचंद्रतुमराजहुसुयशजाकोभूतलके आसपाससागरकोपाससो । सागरमेंइभागबेषशेषनागजूको जपैसुखदानिबिष्णुकोनिवाससो । विष्णुजूमेंभूरिभावभावको प्रभावजैसोभवजूकेभालमेंबिभूतिकोबिलाससो । भूतिमाहचंद्रमासोचंद्रमेंसुधाकोअंशुअंशुनिमेंकेशवदासचंद्रिकाप्रकाशसो ॥ ॥ ७ ॥ देवगण । राजारामचंद्रतुमराजकरोसबकालदीरघदुसहदुखदीननकोदारिये । केशवदासमित्रदोषमंत्रदोषब्रह्मदोषदेवदोषराजदोषदेशतेनिकारिये। कलहकृतघ्नमाहिमंडलकेवरिबंडपाषँडअषंडखंडखंडकरिडारियेबंचककठोरठेलिकैजैबाटआटझूठपाठकंठपाठकारीकाठमारिये ॥ ८ ॥ ऋषिगण । भोगभारभागभारकेशवबिभूतिभारभूमिभारभूरिअभिषेकनकेजलसे । दानभारगानभारसकलसयानभारधनभारधर्मभारअक्षतअमलसे । जयभारयशभारराजभारराजतहैरामाशिरआशिषअशेषमंत्रबल-

१ तलवार.

से । देशदेशयत्रतत्रदेखिदेखितेहिदुखफाटतहैंदुष्टनकेशीशदाह्यो फलसे ॥९॥

टी०- पास कहे फांस अंशु (किरणि) ॥ ७ ॥ दारिये कहे नाश करत हौ वंचक (ठग) कठोर (निर्दय) झूंठरूपी जो पाठ है ताके जे कंठपाठकारी हैं अर्थ जे गूढ़ही कह्यो करत हैं विभूति (ऐश्वर्य) ॥ ८ ॥ ९ ॥

मू०- केशव-विजयाछंद ॥ जाइनहींकरतूतिकहीसबश्री, सविताकविताकरिहारो । याहीतेकेशवदासअशीशपढ़ैअपनोकरिनेकुनिहारो । कीरतिदेवनिकीडुलहीयशदूलहश्रीरघुनाथतिहारो । सातौरसातलसातहुलोकनसातहुसागरपारबिहारो ॥१०॥ किन्नर, यक्ष, गन्धर्ब- रामलीलाछंद ॥ अजरअमरअनन्तजय जयचरितश्रीरघुनाथ । करतसुरनरसिद्धअचरजश्रवणसुनिसुनि गाथ ॥ कायमनबचनेमजानतशिलासमपरनारि । शिलातेपुनि परमसुन्दरिकरतनेकनिहारि ॥ ११ ॥ चमरढारतमातुऊपरपाणिपीड़ाहोइ । विशदंडज्योंकोदंडहरकोटूककीन्होहोइ ॥ साधुहोइअसाधुराखतद्विजनहीकोमान । सकलमुनिगणमुकुटमणिकोमर्दियोअभिमान ॥ १२ ॥

टी०- सविता (सूर्य) ॥ १० ॥ शिलाते सुंदरी-(अहल्या)को कन्यो है ॥ ११ ॥ विशदंड कहे पौनारीको दंड मुनिगणमुकुट-(मुनिनारद) की कथा तुलसीकृतरामायणमों प्रसिद्ध है वानर सदृश मुख करिदियो है अथवा परशुराम छंद उपजाति है ॥ १२ ॥

मू०- सूरसुन्दरसरसरविरतिकरतरतिकहँलालि । एकपत्नीब्रतनिबाहतमदनकोमदघालि ॥ सुखदसुहृदसपूतसोदरहनत नृपजाकाज । पलकमेंसोइराजछांड्योमातुपितुकीलाज ॥१३॥ मंथरासोंमोदमानतबिपिनपठयोपालि । सूर्पनखाकीनाककाटी करनआईकेलि ॥ चंचुचापतअंगुरीशुकऐंचिलेतडेराइ । बन्धु-

सहितकबन्धकेउरमध्यपैठेधाइ ॥ १४ ॥ सर्बथासर्बज्ञसर्बगस-
र्बदारसएक । अज्ञज्योंसीताबिलोकीव्यग्रभ्रमतअनेक ॥ बा-
णचूकतलक्ष्यकोकोगनैकेतिकबार । तालसातोबेधियोशरएक
एकहिबार ॥ १५ ॥ सापराधअसाधुअतिसुग्रीवकीन्होंमित्र ।
अपराधबिनअतिसाधुबालिहिहन्योजानिअमित्र ॥ चलतज-
बचौगानकोलैचलतदलचतुरंग । देवशत्रुहिचलेजीतनऋक्षबा-
नरसंग ॥ १६ ॥ भूलिहूजातनिहारतगुरुसोंगिरिनसमान ।
निगरुदेखोभयेगिरिगिरिगणजलधिमेंज्योंपान ॥ यतनयतननित-
रणसरयूडोडिडोलतडीठि । गयेसागरपारदैपगुप्रगटपाहन-
पीठि ॥ १७ ॥

टी०– सब पर रति (प्रीति) रचिकै सब कीर्तिकी (प्रीति) की ला-
लि कहे लालसा इच्छा करत हौ औ आश्चर्य पक्षमें रति जो कामकी स्त्री
है ताको लालि कहे लालसा करत हौ अर्थ रतिकी लालसा करत हौ औ
मदनको मद घालत हौ यह आश्चर्य है ताही सोदरके लिये अर्थ भरतके
लिये राज्यही छाड़्यौ इतिशेषः ॥ १३ ॥ मंथरा (कूबरी) ॥ १४ ॥ व्य-
ग्र (विकल) अनेक स्थाननमों इतिशेषः भ्रमत कहे घूमत तौ सर्वग औ
सर्वज्ञकी अज्ञसम स्थल ढूंढ़िबो आश्चर्य है औ सर्वदा एक रस कहे आनंद-
रूप जो रहनि है ताको विकल ह्वैबो आश्चर्य है लक्ष्य (निशाना) वार
कहे चोट ॥ १५ ॥ १६ ॥ निगरु कहे हरुये पानपात्र ॥ १७ ॥

मू०– बाजिगजरथबाहिनीचढ़िचलतअमितसुभाय । लंक-
मेंबिनपानहींनिजगयेअपनेपाय । यज्ञकोफलगहतयत्ननियज्ञ-
पुरुषकहाय । बेरजूंठेदियोसेवरीभक्षियोसुखपाय ॥ १८ ॥
कुसुमकन्दुकलगतकाँपतमूंदिलोचनमूल । शत्रुसन्मुखसहेहँसि
हँसिशैलअसिशरशूल ॥ दूरिकरतनदयादर्शतदेरदंशतदंश ।
भईबारनकरतरावणबंशकोनिर्बंश ॥ १९ ॥ बाणबेझाहिआन-
कोलगिनामअपनोलेत । कालसोंरिपुआपुहातिजयपत्रऔर-

हिंदेत ॥ पुण्यकालनदेतविप्रनतौलितौलिकनंक । शत्रुसोदर-कोदईसबस्वर्णहींकीलंक ॥ २० ॥ होइमुक्तसोजाहिइनकोमरतआवैनाम । मुक्तएकनभयेबानरमरेकरिसंग्राम ॥ एकपलबिनपानखायेबारबारजम्हात । बर्षचौदहनींदभूखपिआसछोड़ीगात ॥ २१ ॥ क्षमैबरुअपराधअपनेकोटिकोटिकराल । अपराधएकनक्षम्योगोद्विजदीनकोसबकाल ॥ यदपिलक्ष्मणकरीसेवासबभाँतिसभेव । तदपिमानतसर्बथाकरिभरतहीकीसेव ॥ २२ ॥

टी०– ॥ १८ ॥ कुसुम जे फूल हैं तिनको कंदुक (गेंद) ॥ १९ ॥ बेझा (निशाना) ॥ २० ॥ मुक्त कहे मुक्ति और मरे ॥ २१ ॥ छंद उपजाति है ॥ २२ ॥

मू०– कहतइनकोसर्बसाँचेसकलरानाराय । तनकसेवादासकीकहैकोटिगुणितबनाय ॥ डरनयकअपलोकतेयेजीवचौदहलोक । ठौरजाकहँकहुँनताकहँदेतअपनोओक ॥ २३ ॥ छाँड़िऋषिद्विजदेवऋषिऋषिराजसबसुखपाइ । प्रगटसकलसनौढ़ियनकेप्रथमपूजेपाइ ॥ छोड़िपितरत्रिशंकुहैविपरीतयद्यपिदेह । अवधकेशवजातशूकरश्वानस्वर्गसदेह ॥ २४ ॥ एकपलउरमाँझआयेहरतसबसंसार । आयकैसंसारमेंइनहरेउभूतलभार ॥ शेषशम्भुस्वयम्भुभाषतनिगमनेतिनजास । ताहिलघुमतिबरणिकैसेसकतकेशवदास ॥ २५ ॥ याहिविधिचौदहभुवनकेगावमुनियशगाथ । प्रेमसहितपहिराइसबकोबिदाकियरघुनाथ ॥ २६ ॥ झूलनाछन्द ॥ अभिषेककीयहगाथश्रीरघुनाकीनरकोइ । पलएकगावतपाइहैबहुपुत्रसम्पतिसोइ ॥ जरिजाहिंगीसबबासनाभवविष्णुभक्तकहाइ । यमराजकेशिरपाउंदैसुरलोकलोकनिजाइ ॥ २७ ॥ इतिश्रीमत्सकललोचनचकोर-

चिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचंद्रिकायां इन्द्रजिद्विरचितायांब्रह्मादि-
स्तुतिवर्णननामसप्तविंशःप्रकाशः ॥ २७ ॥

टी०— अपलोक कहे अपगत लोक अर्थ छोटो लोक औ कलंक ॥ २३ ॥
ऋषि सामान्य तपस्वी द्विजऋषि कहे ब्राह्मणश्रेष्ठ देवऋषि, ब्रह्मऋषि राज-
वशिष्ठादि ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसाद
निर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायांसप्तविंशःप्रकाशः ॥ २७ ॥

मू०— दोहा ॥ अट्ठाइसेप्रकाशमें,वर्णनबहुविधिजानि ॥ श्री
रघुबरकेराजको, सुरनरकोसुखदानि ॥ १ ॥ भुजङ्गप्रयातछंद ॥
अनन्तासबैसर्बदाशस्ययुक्ता । समुद्रावधिःसप्तईतीविमुक्ता ॥
सदावृक्षफूलेफलेतत्रसोहैं । जिन्हेंअल्पधीकल्पसाखीविमोहैं ॥
॥ २ ॥ सबैनिम्नगाक्षीरकेपूरपूरी । भईकामगोसीसबैधेनुरू-
री ॥ सबैबाजिस्वर्बाजितेतेजपूरे । सबैदन्तिस्वर्दन्तितेदर्परू-
रे ॥ ३ ॥ सबैजीवहैं सर्बदानन्दपूरे । क्षमीसंयमीविक्रमी
साधुशूरे ॥ युवासर्बदासर्बविद्याबिलाशी । सदासर्बसम्पत्तिशो-
भाप्रकाशी ॥ ४ ॥ चिरंजीवसंयोगयोगीअरोगी । सदाएक-
पत्नीव्रतीभोगभोगी ॥ सबैशीलसौन्दर्य्यसौगन्धधारी । सबै
ब्रह्मज्ञानीगुणीधर्मचारी ॥ ५ ॥

टी०— जा रामचंद्रके राज्यमें समुद्रावधि कहे समुद्रपर्यंत अनंत जो पृथ्वी
है सो सप्त जे शुकादि ईती हैं तिनसों विमुक्ता (रहित) शस्य (धान्य)
सों युक्त है ॥ अतिवृष्टिरनावृष्टिर्मूषकाःशलभाःशुकाः । स्वचक्रं परचक्रञ्च स-
प्तैते ईतयः स्मृताः ॥ जिन वृक्षनको देखि अल्पबुद्धि जे कल्पसाखी (कल्प
वृक्ष) हैं ते बिमो हैं कहे मोहित होत हैं कि ऐसे हम न भये अथवा अ-
ल्पकी बुद्धिसों अर्थ हम इनसों लघु हैं या बुद्धिसों मोहत हैं ॥ २ ॥ नि-
म्नगा (नदी) क्षीर (जल) स्वर्बाजि (उच्चैःश्रवा) स्वर्दंति (ऐरावत) द-

पै (मद) ॥ ३ ॥ संयोगी कहे सदा स्त्रीसंयोगसों युक्त सौगंधपदते स्वाभाविक अंग सुगंधि जानौ ॥ ५ ॥

मू०—सबैन्हानदानादिकम्र्माधिकारी। सबैचित्तचातुर्य्यचिन्ताप्रहारी ॥ सबैपुत्रपौत्रादिकेसुक्खसाजैं। सबैभक्तमातापिताकेबिराजैं ॥ ६ ॥ सबैसुन्दरीसुन्दरीसाधुसोहैं। शचीसीसतीसीजिन्हैंदेखिमोहैं ॥ सबैप्रेमकीपुण्यकीसद्मिनीसी। सबैचित्रिणीपुत्रिणीपद्मिनीसी ॥ ७ भ्रमैसंभ्रमीयत्रशोकैसशोकी। अधर्म्मैंअधर्मीअलोकैअलोकी ॥ दुखैतौदुखीतापतापाधिकारी। दरिद्रैदरिद्रीबिकारैबिकारी ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ होमधूममलिनाईजहाँ। अतिचञ्चलचलदलहैतहाँ ॥ बालनाशहैचूड़ाकम्र्म। तीक्षणताआयुधकेधर्म्म ॥ ९ ॥ लेतजनेऊभिक्षादानु। कुटिलचालसरितानिबखानु ॥ ब्याकरणैद्विजवृत्तिनहरै। कोकिलकुलपुत्रनपरिहरै ॥ १० ॥ फागुहिनिलजलोगदेखिये। जुवादेवारीकोलेखिये ॥ नितउठिबेझाईमारिये। खेलतमेंकेहूंहारिये ॥ ११ ॥

टी०— चित्तकी चातुर्य करिकै औरको चिंताके प्रहारी कहे हर्त्ता हैं ॥ ६ ॥ सुंदरी (स्त्री) सुंदरी कहे सुंदरता युक्त साधु कहे पतिव्रता सद्मिनी कहे हवेली चित्रिणी कहे चित्रिणी जातिहै पुत्रिणी कहे पुत्रवती हैं औ पद्मिनी कहे पद्मिनी जाति है यासों या जनायो कि हस्तिनी, शंखिनी एकौ नहीं हैं ॥ ७ ॥ अलोक कहे अपलोक ॥ ८ ॥ चलदल (पिप्पलवृक्ष) बार (शिरोरुह) इति औ बालक चूड़ाकर्म (क्षौरकर्म) ॥ ९ ॥ द्विज जे ब्राह्मण हैं तेई ब्याकरण शास्त्रहीमों वृत्तिको हरत हैं हरिलेत हैं अर्थ पढ़त हैं और कोऊ काहूकी वृत्ति जीविकाको नहीं हरत ब्याकरणशास्त्रमों सूत्र वृत्ति प्रसिद्ध है ॥ १० ॥ बेझा (निशाना) खेलतहीमें काहू बिधिसों हारि होति है अन्यत्र हारि नहीं होति ॥ ११ ॥

मू०— दंडक ॥ भावैजहांबिभिचारीवैद्यैरमैपरनारी द्विजैग-

नदंडधारीचोरीपरपीरकी । मानिनीनहींकेमनमानियतमानभंगसिंधुहिउलंघिजातिकीरतिशरीरकी । मूलैतौअधोगतिनपावतहैकेशवदासमीचहीसोहैबियोगइच्छागंगानीरकी । बंध्याबासनानिजानुबिधवासुबाटिकाईऐसीरीतिराजनीतिराजैरघुबीरकी ॥ १२ ॥ दोहा ॥ कबिकुलहीकेश्रीफलन, उरअभिलाषसमाज ॥ तिथिहीकोक्षयहोतहै, रामचंद्रकेराज ॥ १३ ॥ दंडक ॥ लूटिबेकेनातेपापपट्टनैतौलूटियतुतोरिबेकोमोहतरुतोरिडारियतुहै । घालिबेकेनातेगर्वघालियतुदेवनकेजारिबेकेनातेअघओघजारियतुहै । बांधिबेकेनातेतालबांधियतुकेशवदासमारिबेकेनातेतौदरिद्रमारियतुहै । राजारामचंद्रजूकेनामजगजीतियतुहारिबेकेनातेआनजन्महारियतुहै ॥ १४ ॥

टी०— निर्वेदादिते इति सबिभिचारी भावरस ग्रंथनमें प्रसिद्ध है नारी (नाटिका (दंड) ब्रह्मलकुट औ (डांडु) अर्थ और कोऊ काहूसों डाड़ नहीं लेत मीचुसों बियोग कहि जनायो कि सब की मुक्ति होति है बासनाई बंध्या है अर्थ बासनाको जो शुभाशुभ फल स्वर्ग नरकादि भोग है सो काहू प्राणीको नहीं होत सब प्राणी मुक्त होत हैं ॥ १२ ॥ १३ ॥ पाप कहे कष्ट पट्टन (शहर) पाप नाम कष्टको बिहारीकी सतशैया मों है ॥ सीरे यत्ननि शिशिर निशि, सहि बिरहिनि तनताप ॥ बसिबेकी ग्रीषमदिननि, पर्यो परोसिनि पाप ॥ सम नामसों एक संसारहीको सब जीतत हैं अर्थ संसारबंधनसों छूटि जात हैं और कोऊ काहूको हरावत नहीं ॥ १४ ॥

मू०— चंद्रकलाछंद ॥ सबकेकल्पद्रुमकेबनहैंसबकेबरबारनगाजतहैं । सबकेघरशोभातिदेवसभासबकेजयदुंदुभिबाजतहैं । निधिसिद्धिबिशेषअशेषनिसोंसबलोगसबैसुखसाजतहैं । कहिकेशवश्रीरघुराजकेराजसबैसुरराजसेराजतहैं ॥ १५ ॥ दंडक ॥ जूझहिमेंकलहकलहप्रियनारदैकुरूपहैकुबेरैलोभसबकेचयनको । पापनकीहानिडरगुरुनकोबैरीकामआगिसबैभक्षी

दुखदायकअयनको । बिद्याहीमैंबाढुबहुनायकहैबारिनिधिजा
रजहैहनुमंतमीतउदयनको । आंखिनआछतअंधनारीकेरक्
कटिऐसोराजराजैरामराजीवनयनको ॥ १६ ॥

टी०— कल्पद्रुमके अर्थ कल्पद्रुम सरिस द्रुम (वृक्षन) के बन हैं देव
सभा सम सभा, महापद्मादि जे नवौ निधि हैं औ अणिमादि जे अष्ट सि
हैं तिन अशेषन पूर्बन सहित बिशेष पूर्बक सब लोग और जे सबै सुख
तिन्हैं साजत हैं अर्थ करत हैं ॥ १५ ॥ पार्बतीके शापसों कुबेर कुरूप भ
हैं सो कथा बाल्मीकीय रामायण उत्तरकांडमों प्रसिद्ध है चयन कहे आनं
अयन कहे घरको दुखदायक अर्थ दाहक औ सर्बभक्षी आगिही है बहुना
यक बहुत स्त्रीनको अर्थ नदिनको नायक स्वामी और सब एकपत्नीभोग
हैं इतिभावार्थः सबके उदयन (प्रकाशन) को मीत कहे हित है अर्थ सबके
शुभकांक्षी हैं नारिकेर कहे नारिकेरके फल औ कटिही कृश (दुर्बल) है ॥ १७

मू०— दोहा ॥ कुटिलकटाक्षकठोरकुच, एकैदुःखअदेय ।
द्विस्वभावअश्लेषमें, ब्राह्मणजातिअजेय ॥ १७ ॥ तोमरछंद ।
बहुशब्दबंचकजानि । अलिपरुयतोहरमानि ॥ नरछांहईअप
बित्र । शरखड्गनिर्दयमित्र ॥ १८ ॥ सोरठा ॥ गुणतजिऔगु
णजाल, गहतनित्यप्रतिचालनी ॥ पुंश्चलीतितेहिकाल, ए
कैकीरतिजानिये ॥ १९ ॥ दोहा ॥ धनदलोकसुरलोकमय
सप्तलोककेसाज ॥ सप्तद्वीपवतिमाहिबसी, रामचंद्रकेराज ॥ २०
दशसहस्रदशसैबरस, रसाबसीयहिसाज ॥ स्वर्गनर्ककेमगथ
के, रामचंद्रकेराज ॥ २१ ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचको
रचिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायांइन्द्रजिद्विरचितायांरामराज्य-
वर्णननामाष्टबिंशःप्रकाशः ॥ २८ ॥

टी०— द्विस्वभाव कहे द्वै प्रकारको स्वभाव श्लेष कबितामों है एकसम
और अर्थ कहत हैं एक समय और कहत हैं और सबको एकई स्वभाव
इति भावार्थः ॥ १७ ॥ बहु कहे बहुत बिधिसों शब्द जो है सोई बंच

कहे ठग है अर्थ बंचक यह जो शब्द है सोई है और कोऊ प्राणी ठग नहीं है अथवा बहुत जे परस्पर कोमल भाषित शब्द हैं तेई ठग हैं अर्थ ठग-सम मोहित करत हैं औ अलि जे भ्रमर हैं तेई पश्यतोहर कहे देखतहूं चोरी करत हैं अर्थ सबके देखत भ्रमर पुष्पनसों मधु चोरत हैं ॥ १८ ॥ गुणरूप पिसानको त्यागि अवगुण रूपी भूसीको ग्रहण करति है पुंश्चली(परकीया) ॥ १९ ॥ २० ॥ रसा (पृथ्वी) स्वर्ग नरकके मग थके कहे नहीं चलत अर्थ न कोऊ प्राणी स्वर्ग जाइ न नरक जाइ सब मुक्तिपुरीको जात हैं ॥ २१ ॥ इतिश्रीमज्जगज्जननिकनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायां अष्टविंशःप्रकाशः ॥ २८ ॥ ॥

मू०— उनतीसयेंप्रकाशमें, बरणिकह्योचौगान ॥ अवधिदीपशुककीबिनति, राजलोकगुणगान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ एककालअतिरूपनिधान । खेलनकोनिकरेचौगान ॥ हाथधनुषशरमन्मथरूप । संगपयादेसोदरभूप ॥ २ ॥ जाकोजबहींआयसुहोइ । जाइचढ़ैगजबाजिनसोइ ॥ पशुपतिसेरघुपतिदेखिये । अनुगतशेषमहालेखिये ॥ ३ ॥ बीथीसबअसवारिनभरी । हयहाथिनसोंसोहतिखरी ॥ तरुपुंजनसोंसरिताभली । मानोंमिलनसमुद्रहिचली ॥ ४ ॥

टी०— ॥ १ ॥ २ ॥ जा गजपर औ जा बाजिपर चढ़िकै चलिबेको रामचंद्रको आयसु जाको होत है सो तापर चढ़त है रामचंद्रके अनु कहे पाछे गत कहे प्राप्त शेष (लक्ष्मण) हैं औ महादेवके पश्चाद्भागमें गत प्राप्त शेष कहे शेषनाग हैं शेषको महादेव ग्रीवामें पहिरे हैं सो पृष्ठभागमें उरमत हैं इत्यर्थः कहूं अनुगण सैन पाठ है तौ अनुपश्चाद्गणसमूह सैनको पेखियत हैं औ महादेवके अनु पश्चाद्गणबीरभद्रादिकनकी महासेन पेषियत ॥ ३ ॥ बीथी (गली) ॥ ४ ॥

मू०— यहिविधिगयेरामचौगान । सावकाशसबभूमिसमान॥ शोभनएककोशपरिमान । रच्योरुचिरतापरचौगान ॥ ५ ॥ ए-

ककोदरघुनाथउदार । भरतदूसरेकोदबिचार ॥ सोहतहाथेलीन्हेछरी । कारीपीरीरातीहरी ॥ ६ ॥ देखनलग्यौसबैजगजाल । डारिदियोभुवगोलाहाल ॥ गोलाजाइजहाँजहँजबै । होततहींतितहींतितसबै ॥ ७ ॥ मनोरसिकलोचनरुचिरचे । रूपसंगबहुनाचनिनचे ॥ लोकलाजछांड़ेअँगअंग । डोलतजनुजनमनकेसंग ॥ ८ ॥ गोलाजाकेआगेजाइ । सोईताहिचलैअपनाइ ॥ जैसेतियगणकोपतिरयो । जेहिपायोताहीकोभयो ॥ ९ ॥ उततेइतइततेउतहोइ । नेकहुढीलनपावैसोइ ॥ कामक्रोधमदमढ़्योअपार । मानोंजीवभ्रमैसंसार ॥ १० ॥

टी०– सावकाश कहे फैलाव सहित और समान कहे नीच उच्चरहित ॥ ॥ ५ ॥ कोद कहे ओर ॥ ६ ॥ जाहीं कहे तबै ॥ ७ ॥ रुचि इच्छारूप सुंदरता ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

मू०– जहांतहांमारैसबकोइ । ज्योंनरपंचबिरोधीहोइ ॥ घरीघरीप्रतिठाकुरसबै । बदलतबासनबाहनतबै ॥ ११ ॥ दोहा ॥ जबजबजीतैंहालहरि, तबतबबजतनिशान ॥ हयगयभूषणभूरिपट, दीजतलोगनिदान ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ तबतेहि समयएकबेताल । पढ़्योगीतगुनिबुद्धिविशाल ॥ गोलनकीबिनतीसुखपाई । रामचंद्रसोंकीन्हीआई ॥ १३ ॥ दंडक ॥ पूरपूरबकीपूरापूरीपापरपुरीसेतनबापुरीवेद्दूरिहीतेपायनपरातिहैं । दक्षिणकोपाक्षिनीसीगच्छैअंतरिक्षमगपाक्षिमकोपक्षहीनपक्षी ज्योंउरातिहैं । उत्तरकीदेतीहैउतारिशरणागतनिबातनउतायली उतारउतरातिहैं । गोलनकीमूरतिनदीजियेजूअभैदानरामबेरकहांजाइबिनतीकरातिहैं ॥ १४ ॥

टी०– बासन (वस्त्र) ॥ ११ ॥ १२ ॥ बेताल (भाट) गोलनकी बिनती कहे गोलनकी तरफसों बिनती रामचन्द्रसों कन्यो ॥ १३ ॥ यामें

समय बिचारि स्तुतिपूर्बक गोलनकी बिनतिनके ब्याज खेल खेलियो मने करत हैं कहत हैं कि हे राम! पापर (पूरी भेद) प्रसिद्ध है औ पुरी कहे पूरीसम हैं तन जिते कहे ऐसी जे पूर्बदिशाकी पूरा कहे ग्रामपुरी कहे लघु ग्राम हैं ते बा-पुरी दूरिही ते भयसों तुम्हारे पायन परती हैं औ दक्षिणकी पूरनपूरी अंतरिक्ष आकाशके मग पक्षिनी सम गच्छती हैं पक्षहीन कहि या जनायो कि उड़ि जाइबो चाहती हैं पै पक्षहीन हैं तासों रहि जाती हैं औ उत्तरकी पूरा पूरी तुम्हारो बिरोधी जो शरणागत है ताको उतारि देती हैं अथवा उत्तरमें पर्बत पर बसती हैं सो पर्बतसों उतारि देती हैं कैसे उतारि देती हैं कि बातनहूं करिकै उतायली जो जल्दी है ताके उतारमें उतरती हैं अर्थ यह कहती हैं कि तुम इहांसों जल्दी जाउ नाहीं तौ रामचन्द्र जानि हैं तौ हमको बिदारि हैं यासों या जनायो कि उत्तरकी पुरी दुर्गम पर्बतनहूं पर हैं तहांऊ तुम्हारे बैरीको नहीं राखि सकते तासों गोलनकी मूरति बिनती करती हैं कि रामबैरसों हम कहां जाइं तासों हेराम! अभयदान दीजै खेलको समय ह्वै आयो तासों अब खेल बंदकरो इतिभावार्थः ॥ १४ ॥

मू०— चौपाई ॥ गोलनकीबिनतीसुनिईश। घरकोगमनकह्योजगदीश ॥ पुरपैठतअतिशोभाभई। बीथिनअसवारीभरिगई ॥ ॥ १५ ॥ मनोंसेतुमिलिसहितउछाह। सरितनकेफिरिचलेप्रबाह ॥ ताहीसमयद्योसनशिगयो। दीपऊदोतनगरमहँभयो ॥ ॥ १६ ॥ नखतनकीनगरीसीलसी। मानोंअवधिदेवारीबसी ॥ नगरअशोकवृक्षरुचिरयो। मधुप्रभुदेखिप्रफुल्लितभयो ॥ १७ ॥ अधअधफरऊपरआकाश। चलतदीपदेखियतप्रकाश। चौकीदै जनुअपनेभेव। बहुरेदेवलोककोदेव ॥ १८ ॥ बीथीबिमलसुगंधसमान। दुहुंदिशिदीसतदीपप्रमान ॥ महाराजकोसहितसनेह। निजनैननजनुदेखतगेह ॥ १९ ॥ बहुबिधिदेखतपुरकेभाइ। राजसभामहँबैठेजाइ ॥ पहरएकनिशिबीतीजहीं। बिनतीकोशुकआयेतहीं ॥ २० ॥

टी०— ॥ १५ ॥ प्रथम जात समय कह्यो है कि ॥ तरुपुंजनसों सरिता भली । मानहुँ मिलनसमुद्रहिचली ॥ सो अब आवतमें ताहीमें तर्क करत हैं कि मानों सेतुमें मिलिकै उछाह आनंद सहित सरितनके तेई प्रवाह फिरि चले हैं जैसे लंका जातमें रामचन्द्र सेतु बांध्यो है तामें लगिकै सरितनके प्रवाह फिरि चले हैं तैसे जानौ ॥ १६ ॥ रुचि कहे सुंदरतासों रयोयुक्त नगररूपी जो अशोकवृक्ष है सो मधु कहे बसंतसम जे रामचन्द्र हैं तिन्हैं देखि प्रफुल्लित भयो है ॥ १७ ॥ यामें आकाशदीपनको बर्णन है एकै आकाशके अध कहे अधोभागमें हैं औ एकै अधफर कहे मध्यभागमों हैं एकै ऊपर हैं या प्रकार ज्यों ज्यों क्रम क्रम डोरि खींची जाति है त्यों त्यों आकाशको चलत प्रकाश दीप देखियत है सो मानों ये सब दीप नहीं देवता हैं अवधपुरीकी चौकी देत हैं तिनके मध्य मानों आपने भेव कहे समय प्रमाण चौकी दैकै ये देव आपने लोक जात हैं ॥ १८ ॥ बिमल तृणादि रहित सुगंध (गंधयुक्त) समान (उच्च नीच रहित) दुहुँ दिशि कहे गैलके याहू ओर वाहू ओर सनेह (प्रेम) औ तैल ॥ १९ ॥ भाइ कहे चेष्टा ॥ २० ॥

मू०— शुक–हरिप्रियाछन्द ॥ पौढ़ियेकृपानिधानदेवदेवरामचंद्रचंद्रिकासमेतिचंद्रचित्तरैनिमोहै।मनहुँसुमनसुमतिसंगरचेरुचिरसुकृतरंगआनंदमेंअंगअंग सकलसुखनिसोहै ॥ ललितलतनके बिलासभ्रमरवृंदह्वैउदास अमलकमलकोशआसपासबासकीन्हें। तजितजिमायादुरंतभक्तरावरेअनंततवपदकरनैनबैनमानहुँमन दीन्हें ॥२१॥ घरघरसंगीतगीतबाजेबाजेंअजीतकामभूपआगमजनुहोतहैंबधाये । राजभौनआसपासदीपवृक्षकेविलासजगति ज्योतियौवनजनुज्योतिवंतआये ॥ मोतिनमयभीतिनईचंद्रचंद्रिकानिमईपंकअंकअंकितभवभूरिभेदसोकरी । मानहुँशशिपंडितकरिजोन्हज्योतिमंडितश्रीखंडशैलकीअखंडशुभ्रसुंदरीदरी ॥ ॥ २२ ॥ एकद्वीपद्युतिविभातिदीपतिमणिदीपपांतिमानहुँसुव-

भूपतेजमंत्रिनमयराजै । आरेमणिखचितखरेबसनबहुबासभ-रेराखतगृहगृहअनेकमनहुँमैनसाजै ॥ अमलसुमिलजलनिधान मोतिनकेशुभ्रवितानतापरपलिकाजरायजाड़ितजीवहरषै।कोम-लतापररसालतनसुखकीसेजलालमनहुँसोमसूरजपरसुधाविंदुव-रषै ॥ २३ ॥ फूलनकेविविधिहारघोरिलनिउरमतउदारबिचबि-चमणिश्यामहारउपमाशुकभाषी । जीत्यौसबजगतजानितुम-सोंहारिहारिमानिमनहुँमदनधनुषानितेगुनउतारिराषी ॥ जलथ-लफलफूलभूरिअंबरघटबासघूरिस्वच्छयच्छकर्दमाहियदेवानिअ-भिलाषे । कुंकुममेदौयवादिमृगमदकर्पूरआदिबीरावनितनिब-नाइभाजनभरिराषे ॥ २४ ॥ पन्नगीनगीकुमारिआसुरीसुरीनि-हारिविविधिवीनकिन्नरीनकिन्नरीबजावैं । मानोंनिःकामभक्ति-शक्तिआयआपनीन देहनधरिप्रेमनभरिभजनभेदगावैं ॥ सोद-रसामंतसूरसेनापतिदासदूतदेशदेशकेनरेशमंत्रिमित्रलेखिये। ब-हुरसुरअसुरसिद्धपंडितमुनिकविप्रसिद्धकेशवबहुरायराजराजलो-कदेखिये ॥ २५ ॥

टी०— पांच छंदको अन्वय एक है रैनिमें चंद्रिका समेत चंद्रचित्तको मोहत है प्रसन्न करत है अर्थ रात्रिके संगसों चंद्रिका समेत ह्वै चंद्र चित्त मोहत है सो मानों सुष्ठु जो मति है ताके संगसों सुष्ठु जो मन है ताके अंग आनंदमय कहे स्वच्छ सुकृत सुकर्मके रंगसों रचे हैं सुकृतको रंग श्वेत कविप्रियामें श्वेतगणनामें कह्यो है ॥ शेष सुकृतशुचि सत्वगुण, संतनके मन हास ॥ सो मन सकल कहे पुत्र धनादिके सुखन सहित सोहत हैं सुकृती-को सब सुख प्राप्त होत हैं यह प्रसिद्ध है सुमतिसम रात्रि है सुमनसम च-न्द्रमा है सुकृतसम चांदनी है ललित लतनके विलाससों उदास ह्वै कै अर्थ त्याग करिकै मायासम लता है भक्तसम भ्रमर हैं कर औ नयन औ बैनसम कमल हैं बैन पदते इहां मुख जानो छंद उपजाति है आसपास जे दीपवृक्ष कहे झाऊ हैं तिनके विलाससों राजभवनकी ज्योति जगति है जानों

यौवनके आये शरीरकी ज्योति जगति है इतिशेषः ॥ ताही राजभवनकी चंद्र चंद्रिकानिमयी कहे चंद्रिकनसों युक्त जो मोतिनमय भीति है ताहि भव जो संसार है ताके जे भूरि भेद हैं अर्थ अनेक विधि चित्र हैं तिन सहित पंक जो चंदन पंक है तासों सेवकन चित्रित करी है अर्थ भीतिनमें चित्र विचित्र चंदन पंक लग्यौ है सो श्रीखंड जो चंदन है ताको शैल मलयाचल अथवा चंदनहीको निर्मित जो शैल है ताकी शुभ्र कहे श्वेत औ सुंदरी रुचिर दरी (कंदरा) को पंडित कहे चतुर जो शशि है सो जोन्ह ज्योतिसों मंडित करी है चंदन लेपसों युक्त है तासों राजभवनको श्रीखंडशैल सम कह्यो है दरी सम गृहको उदर है ता भूपभवनमें ये दीपकी द्युति विभाति कहे शोभित है औ मणिदीप कहे भीतिनमें जटित मणिनमें प्रतिबिंबित जे दीप हैं तिनहूंकी पांति दीपति है सो मानों भुवमें अर्थ भुवमंडलमें मंत्रिनमय कहे मंत्रिनके तेजमय अर्थ मंत्रिनके प्रतापसों युक्त राजाको तेज राजत है भूपतेजसम एकदीप है मंत्रिनके तेजसम प्रतिबिंब दीप हैं मंत्रिनको तेज राजतेजके प्रतिबिंब सम होतही है अथवा मानों राजाको तेज है मंत्रिनमें ब्याप्त राजत है मंत्रिन सम मणि हैं भूपतेज सम दीप हैं औ आरे कहे ताख मणिन करिकै खरे कहे नीकी विधि चित्रित हैं तिनमें बहुत बास कहे सुगंधनसों भरे अनेक बासन कहे पात्र गृह गृहमें कहे स्थान स्थानमें स्त्रीजन राखती हैं ते मानों मैन जो काम है ताकी साजै हैं अर्थ कामके लाइबेके सुगंध हैं औ अमल कहे निर्मल सुमिल कहे गोल औ जल कहे पानीयके निधान जे मोती हैं तिनके शुभ वितान कहे चंदोवा हैं तनसुख तन जो लाल (अरुण) सोम सम मोतिनको वितान है सुधाबिंदु सम मोती हैं सूरज सम अरुण सेज है घोरिला धनुषके गोसा सदृश होत हैं औ धनुषसों गुण उतार्‌यो जात है तब एक गोसामों लग्यौ रहत है ॥ रोदामौर्वीज्यासिंजिनीगुणः इत्यमरः ॥ औ जल औ थलके भूरि कहे अनेक विधिके फल औ फूल औ अंबर (वस्त्र) औ पटवास कहे सुगंध चूर्ण ताकी धूरि ॥ पिष्टातः पटवासकः इत्यमरः ॥ औ जाको हियमें देवता अभिलाष करत हैं सो ऐसो स्वच्छ यक्षकर्दम ॥ कर्पूरागरुकस्तूरीकंकोलैर्यक्षकर्दमः ॥ औ कुंकुम (केशरि) औ मेद जवादि कहे उबटन औ मृगमद (कस्तूरी) औ कर्पूर आदि औ

बीरा बनाइ बनाइकै भिन्न भिन्न भाजन (पात्रन) में बनिता जे दासीजन हैं तिन भरि राखे हैं किन्नरीन कहे सारंगीनकी आपनी आपनी शक्तिसों कहे अणिमादि सिद्धिके बलसों देहनको धरिकै बहुरे कहे आज्ञा पाइ रावरी सभासों अपने धामनको जात हैं तासों अब आपहू चलिकै राजलोकको देखिये औ तहां पौढ़िये इत्यन्वयः ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥

मू०– दोहा ॥ कहिकेशवशुककेवचन, सुनिसुनिपरमविचित्र ॥ राजलोकदेखनचले, रामचन्द्रजगमित्र ॥ २६ ॥ नराचछंद ॥ सुदेशराजलोकआसपासकोटुदेखियो । रचीविचारिचारिपौरिपूरबादिलेखियो ॥ सुवेशएकसिंहपौरिएकदंतिराजहै । सुएकवाजिराजएकनंदिवेषसाजहै ॥ २७ ॥ दोहा ॥ पांचचौकमध्यहरच्यौ, सातलोकतरहारि ॥ षटऊपरतिनकेतहां, चित्रेचित्रबिचारि ॥ २८ ॥ चामरछन्द ॥ भोजएकचौकमध्यदूसरेरचीसभा । तीसरेबिचारमंत्रऔरनृत्यकीप्रभा ॥ मध्यचौकमेंतहांविदेहकन्यकाबसै । सर्बभावरामचन्द्रलीनसर्बथालसै ॥ २९ ॥

टी०– राजलोक कहे राजभवन ॥ २६ ॥ रामचंद्रजू राजलोकके आसपास सुदेश कहे आछो कोट देखत भये अर्थ आसपास कोट है ताके मध्यमें राजलोक है ता कोटके पूर्वादिदिशामों क्रमसों चारों ओर चारि पौंरि कहे द्वार हैं पूर्वदिशामों सिंहपौंरि है दक्षिण दिशामों दंतिपौंरि है पश्चिम दिशामों वाजिपौंरि है उत्तर दिशामों नंदिपौंरि है इहां सिंहादि पौंरिसों सिंहादि स्वरूप युक्त पौंरि जानौ ॥ २७ ॥ ताकोटके मध्यह कहे मध्यमें सात लोकके तरहारि कहे सतमहलाके तरे पांच चौक अंगनाई रची है अर्थ अँगनाई विशिष्ट पृथक् पांच भवन बने हैं ते सतमंजिला हैं तिनके कहे तिन भवननके षट ऊपर कहे छठये लोकके जे ऊपर कहे छति है तहां बिचारिकै कहे जहां जैसो चाहिये तैसा तहां समुझिकै चित्र चित्रे हैं और अर्थ पांच चौक मध्यमें रच्यो है ते कैसे हैं सातों लोकके अतल १ बित-

ल २ सुतल ३ तलातल ४ महातल ५ रसातल ६ पाताल ७ हैं तरहारि कहे अधन्यून जिनते अर्थ सातौ लोकमें ऐसे धाम नहीं हैं औ षट्के छे लोक जे भू १ अंतरिक्ष २ स्वर्ग ३ ब्रह्मलोक ४ पितृलोक ५ सूर्यलोक ६ तिनहूंके ऊपर है अर्थ श्रेष्ठ है यासों या जनायो सातवों लोक जो बैकुंठ है ताके सदृश है तहां बिचारिकै अर्थ यथोचित स्थानमें चित्र चित्रेहैं अथवा सात लोक जे तरहारि कहे तरेके हैं अतलादि औ षट् जे भूलोकादि हैं तिनहूं के उपर जो लोक है बैकुंठ सो बिचारिकै तिनके कहे ता बैकुंठके धामनके चित्र सम चित्रे हैं अर्थ बैकुंठधामनके प्रतिमा बने हैं अथवा बिचारिकै तिनके बैकुंठ धामनके चित्र चित्रे हैं अर्थ जे चित्र बैकुंठधामनमें हैं तेई इनमें चित्रे हैं ॥ २८ ॥ यामें पांचहू चौकनको प्रयोजन कहत हैं और चौथे चौकमें नृत्यकी प्रभा रची इत्यर्थः ॥ २९ ॥

मू०– दोधकछन्द ॥ मन्दिरकञ्चनकोयकसोहै । श्वेततहां छतुरीमनमोहै ॥ सोहतशीरषमेरुहमानों । सुन्दरदेवदिवानबखानों ॥ ३० ॥ मन्दिरलालनकोयकसोहै । श्यामतहांछतुरी मनमोहै ॥ ताहियहैउपमासबसाजै । सूरजअंकमनोंशनिराजै ॥ ॥ ३१ ॥ मन्दिरनीलनकोयकसोहै । श्वेततहांछतुरीमनमोहै ॥ मानहुंहंसनकीअवलीसी । प्राविटकालउड़ाइचलीसी ॥ ३२ ॥ मन्दिरश्वेतलसैअतिभारी । सोहतिहैछतुरीअतिकारी ॥ मानहुंईश्वरकेशिरसोहै । मूरतिराघवकीमनमोहै ॥ ३३ ॥ तोटकछन्द ॥ सबधामनमेंयकधामबन्यो । अतिसुन्दरश्वेतस्वरूपसन्यो ॥ शनिसूरबृहस्पतिमण्डलमें । परिपूरणचन्द्रमनोंबलमें ॥ ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ बहुधामन्दिरदेखेभले । देखनशुभ्रशालिकाचले ॥ सीतभीतज्योंनेकनत्रसे । पलुकबसनशालामहँलसे ॥ ३५ ॥ जलशालाचातकज्योंगये । अलिज्योंगन्धशालिकाठये ॥ निपटरङ्कज्योंशोभितभये । मेवाकीशालामेंगये ॥ ३६ ॥

टी०– तिन पांचहू मंदिरनको रूप क्रमसों पांच छंदनमों कहत हैं मे-

रुह कहे मेरुके शीर्ष कहे अग्रभागमें देव दिवान कहे देवसभा है ॥ ३० ॥ ३१ ॥ मेघन करि आच्छादित श्याम प्राविट् काल कहे वर्षाकाल सम नीलमणिनको मंदिर है हंसावली सम श्वेत छतुरी है ॥ ३२ ॥ ईश्वर (महादेव) ॥ ३३ ॥ शनैश्चरादिके मंडलमें परदृष्ट्यादि दोषसों संयुक्त ह्वै कै चंद्रमा हीन बलहू ह्वै जात है तासों बलमय कहे बलाधिक्यसों युक्त कह्यो इहां शनि सूर बृहस्पति मंडलमें कहे शनि सूर बृहस्पति आदिके मंडलमें जानौ श्याममंदिर शनैश्चर है अरुणमंदिर सूर्य है सुवर्ण मंदिर बृहस्पति है श्वेतमंदिर शुक्र है ॥ ३४ ॥ शीत जो जाड़ो है तासों भीत जो प्राणी हैं सो जैसे अनेक बस्त्रनमें प्रसन्नचित्त होत हैं या प्रकार बस्त्रनके देखिबेमें न त्रसे कहे नऊंचे अर्थ प्रसन्न चित्त ह्वै सब वसनशालाके वस्त्र देख्यो इत्यर्थः याही विधि जलशालादिमें चातकादि सम जाइबेमें केवल चित चोपकी समता जानौ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

मू०– चतुरचोरसेशोभितभये । धरणीधरधनशालागये ॥ माननीनकैसेमनमेव । गयेमानशालामेंदेव ॥ ३७ ॥ मंत्रिनस्योंबैठेसुखपाइ । पलकमंत्रशालामेंजाइ ॥ शुभशृंगारशालाकोदेखि । उलटेललितबयनसेलेखि ॥ ३८ ॥ तोटकछन्द ॥ जबराउरमेंरघुनाथगये । बहुधाअवलोकतशोभभये ॥ सबचन्दनकोशुभशुद्धकरी । मणिलालशिरानिसुधारिधरी ॥ ३९ ॥ बरँगाअतिलालसुचन्दनके । उपजेबनसुन्दरनन्दनके ॥ गजदन्तनकोशुभसींकनई । तिनबीचनबीचनस्वर्णमई ॥ ४० ॥ तिनकेशुभछप्परछाजतहैं । कलशामणिलालबिराजतहैं ॥ अतिअद्भुतथम्भनकीदुगई । गजदन्तसुचन्दनचित्रमई ॥ तिनमाँझलसैंबहुभायनके । शुभकंचनफूलजरायनके ॥ ४१ ॥

टी०– मानिनीनके सदृश इत्यर्थः ॥ ३७ ॥ जा शालामें स्त्री जन शृङ्गार करत हैं अथवा भूषणादिशृङ्गार वस्तु जा शालामें धरे हैं ताको देखतही प्रेमातुर ह्वै रावरमें जाइबेकी इच्छा करि नयन सम कहे नयनपूतरीसम

उलटे कहे फिरे नयन पूतरि अति शीघ्र फिरति है तैसे अतिशीघ्र फिरे जानौ ॥ ३८ ॥ रावर (स्त्री भवन) शिरा (टोपी) ॥ ३९ ॥ ४० ॥ तिनके कहे गज दंत सुवर्णादिके अथवा तृणके दुगई ह्विकनाई अथवा द्वै खंभ एकमें मिलाइ लागत हैं सो दुगई कहावत हैं ॥ ४१ ॥

मू०— रूपमालाछन्द ॥ वर्णवर्णजहाँतहाँबहुधातनेसोबितान । झालरैंमुकतानकीअरुझूमकाबिनमान ॥ चौकठैमणिनीलकीफटिकानकेसुकपाट । देखिदेखिसोहोतहैंसबदेवताजनुभाट ॥ ४२ ॥ श्वेतपीतमणीनकीपरदारचीरुचिलीन । देखिकैतहँदेखियेजनुलोललोचनमीन ॥ शुभ्रहीरनकोसुआँगन हैहिंडोरालाल । सुन्दरीजहँझूलहींप्रतिबिम्बकेजहँजाल ॥४३॥ स्वागताछन्द ॥ धामधामप्रतिआसनसोहैं । देखिदेखिरघुनाथबिमोहैं ॥ बरणिशोभकबिकौनकहैजू । यत्रतत्रमनभूलिरहैजू ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ जाकेरूपनरेखगुण, जानतवेदनगाथ ॥ रंगमहलरघुनाथगे, राजश्रीकेसाथ ॥ ४५ ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोर चिंतामणिश्रीरामचंद्रचन्द्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांलोकवर्णनंनामैकोनत्रिंशःप्रकाशः ॥ २९ ॥

टी०— झूमका (झब्बा) बिनमान कहे बहुत ॥ ४२ ॥ तिनको देखिकै सबके लोचन मीनसम लोल होतहैं यह देखियत है ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ जाके रूपादि एकौ नहीं है ते राजश्रीके साथ ह्वै रंगमहल गये तो रूपादियुक्त प्राणिनको तौ लैजायोई चाहै इतिभावार्थः ॥ ४५ ॥ इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायांएकोनत्रिंशःप्रकाशः ॥ २९ ॥

मू०— दोहा ॥ यातीसयेंप्रकाशमें, बरण्योबहुबिधिजानि ॥ रङ्गमहलसंगीतअरु, रामशयनसुखदानि ॥ १ ॥ पुनिसारिकाजगाइबो, भोजनबहुतप्रकार ॥ अरुबसन्तरघुबंशमणि, वर्ण-

नचन्दउदार ॥ २ ॥ चतुष्पदीछन्द ॥ द्युतिरंगमहलकीसहस बदनकीवर्णैंमतिनबिचारी । अधऊरधरातीरंगसँघातीरुचिबहुधासुखकारी ॥ चित्रीबहुचित्रनिपरमबिचित्रनिरघुकुलचरितसुहाये । सबदेवअदेवनिअरुनरदेवनिनिरखिनिरखिशिरनाये ॥ ३ ॥ आईबनिबालागुणगणमालाबुधिबलरूपनबाढ़ी । शुभजातिचित्रनीचित्रगेहतेनिकसिभईजनुठाढ़ी ॥ मानोंगुणसंगनियोंप्रतिअङ्गनिरूपकरूपबिराजै । बीणानिबजावैंअद्भुतगावैंगिरारागिनीलाजै ॥ ४ ॥

टी०– ॥ १ ॥ २ संघाती कहे सघन है रुचि (शोभा) ॥ ३ ॥ मानों गानादि जे गुण हैं तिनके संगनि-(समूहनि) सों युक्त जे प्रति अंग हैं तिनसों युक्त रूप जो सुंदरताके रूपक कहे विचित्र बिराजत हैं ॥ ४ ॥

मू०– पद्धटिकाछन्द ॥ स्वरनादग्रामनृत्यंतिसताल । मुखबर्णबिबिधिआलापकाल ॥ बहुकलाजातिमूर्छनामानि । बढ़भागगमकगुणचलतजानि ॥ ५ ॥

टि०– षड्जादि जे सप्त स्वर हैं तिनको जो कल औतार तीनि प्रकारको नाद है औ तीनि प्रकारके जे ग्राम हैं औ देशी आदि जे अनेक बिधि ताल हैं तिन सहित नृत्यति कहे नाचतीहैं ॥ स्वरादीनांसर्वेषांलक्षणमुक्तं संगीतदर्पणे ॥ तत्रलक्षणं ॥ श्रुत्यनंतरभाविस्वंयस्यानुरणनात्मकः । स्निग्धश्चरंजकश्चासौस्वरइत्यभिधीयते ॥ १ ॥ अथवा ॥ स्वयंयोराजतेनादःसस्वरःपरिकीर्तितः ॥ २ ॥ श्रुतिभ्यः स्युः स्वराःषड्जर्षभगांधारमध्यमाः । पंचमोधैवतश्चाथनिषादइति सप्तते ॥ ३ ॥ अथत्रिधानादः ॥ ध्वनौतुमधुरास्फुटो कलोमंद्रस्तुगंभीरेतारोत्युच्चैस्त्रयस्त्रिषु इत्यमरः ॥ अथग्रामलक्षणं ॥ ग्रामःस्वरसमूहःस्यान्मूर्छनादेःसमाश्रयः । तौद्वौधरातलेतत्रस्यात्षड्जग्रामआदिमः । द्वितीयोमध्यमग्रामस्तयोर्लक्षणमुच्यते । षड्जग्रामःपंचमेचचतुर्थेश्रुतिसंस्थिते । स्वीयांत्यश्रुतिसंस्थोसिन्मध्यमग्रामइष्यते । यद्वाधस्त्रिश्रुतिःषड्जेमध्यमेचचतुःश्रुतिः । ऋमयोःश्रुतिमेकेकांगांधारश्चेत्समाश्रयेत् । यःश्रुतिंधोनिषादस्तुधश्श्रुतिंसश्रुतिंस्तः । गांधार

ग्रामममाचष्टेतद्वातंनारदोमुनिः । प्रवर्त्ततेस्वर्गलोकग्रामोसौनमहीतले ॥ अथता-
ललक्षणंबिनोदाचार्य्येणोक्तं ॥ हस्तद्वयस्यसंयोगेवियोगेवापिवर्त्तते । व्याप्तिमा-
न्योदशप्राणैः सकालस्तालसंज्ञकः ॥ तथाचसारोद्धारे ॥ कालस्तालइति-
प्रोक्तःसोऽवच्छिन्नोद्रुतादिभिः । गीतादिमानकर्त्तास्यात्सद्वेधाकथितोबुधैः ॥
तथाचसंगीतार्णवः ॥ कालःक्रियाचमानंचसंभवंतियथासह ॥ तथातालस्यसं-
भूतिरितिज्ञेयंविचक्षणैः ॥ मार्गदेशीगतत्वेनतालोसौद्विविधोमतः । शुद्धशालं-
गसंकीर्णास्तालभेदाःक्रमान्मताः । तालःकालक्रियामानमित्यमरः ॥ १ ॥
औ आलापके कालमों कहे समयमों सुख विविधि बर्ग कहे अनेक रूप हो-
त हैं ॥ आलापलक्षणं ॥ रागालपमालप्तिःप्रकटीकरणंमतं ॥ २ ॥ औ बहु
कहे बहुत प्रकारकी जे कला हैं औ पांच जे जाति हैं औ एकईस जे मूर्छ-
ना हैं औ बड़ कहे बड़े अर्थनको जो चारिप्रकारको भाग है औ पंचदश
प्रकारकी जो गमक हैं इनके सरकेते गुण हैं तिनसहित नृत्यमों चलति क-
हे चलती है यह जानि कहे जानौ ॥ अथकलाःचूडामणिः ॥ दक्षिणोवार्त्तिक-
श्चित्रोध्रुवचित्रतरस्तथा ॥ अथचित्रततश्चेतिषण्मार्गाःशास्त्रसंमताः । ध्रुवादि-
ककलाष्टौचमार्गेदक्षिणसंज्ञके । ध्रुवकासर्पिणीचैवपताकापतितातथा । चतस्रो
वार्तिकेज्ञेयाश्चित्रेथपुनरुच्यते । ध्रुवकापतिताचेतियोजनीयाविशेषतः । ध्रुवेकले-
काविज्ञेयाशार्ङ्गदेवेनकीर्तिता । अथचित्रतरेमार्गेकलाचद्रुतसंमिता । मार्गेचित्र-
तमेज्ञेयाकलाकरजसंगिता । अथजातयः ॥ चतुरस्रस्तथातिस्रःखंडोमिश्रस्तथै-
वच । संकीर्णापंचविज्ञेयाजातयःक्रमशोबुधैः । चतुर्वर्णैस्त्रिभिर्वर्णैःपंचवर्णैस्तथै-
वचसप्तवर्णैश्चनवभिर्जातयःक्रमशोदिताः ॥ अथमूर्छनालक्षणं ॥ क्रमात्स्वराणां
सप्तानांमारोहश्चावरोहणं ॥ मूर्छनेत्युच्यतेग्रामत्रयेताःसप्तसप्तच । अथभागलक्षणं
धाजुप्रबंधोवयवःसचोद्ग्राहादिभेदतः । चतुर्धाकथितोभागस्त्वदानुद्राहसंज्ञ-
काः । आदाउद्ग्राह्यतेगीतंयेनोद्ग्राहस्ततोभवेत् । मेलापकोद्वितीयस्तुग्राह
कध्रुवमेलनात् ॥ ध्रुवत्वाध्रुवसंज्ञस्तुतृतीयोभागउच्यते । आभोगस्त्वंतिमोभागो
गीतपूर्णत्वसूचकः ॥ अथगमकलक्षणं ॥ स्वरस्यकंपोगमकःश्रोतृचित्तसुखावहः ।
भेदाःपंचदशैवास्यकथितास्तिरियादयः ॥ ५ ॥

मू०— बहुवर्णबिविधिआलापकालि । मुखचालिचारुअरु

शब्दचालि ॥ बहुउडुपतिर्यगपातिपतिअड़ाल । अरुलागधाउरायरंगाल ॥ ६ ॥ उलथाटेंकीआलमसार्दिण्ड । पदपलटिहुरुमयीनिशंकचिण्ड ॥ असुतिनकीभ्रमनिदेखिमतिधीर । भ्रमिसीखतहैंबहुधासमीर ॥ ७ ॥ मोटनकछन्द ॥ नाचैंरसवेषअशेषतबै । बरषैंसुरसैंबहुभांतिसबै ॥ नवहूंरसमिश्रितभावरचैं । कौनोंनहिंहस्तकभेदबचैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ पाइँपखाउजतालसों, प्रतिधुनिसुनियतुगीत ॥ आनहुँचित्रविचित्रमति, पढ़तसकलसंगीत ॥ ९ ॥ अमलकमलकरअंगुली, सकलगुणनिकीमूरि ॥ लागतमठमृदंगमुख, शब्दरहतभरिपूरि ॥ १० ॥

टी०— प्रथम गानको विषय निरूपण करि अब द्वै छंदमो नृत्यको विषय निरूपण करत हैं द्वै छंदको अन्वय एक है आलापकालि कहे आलापकाली अर्थ आलापकालके योग्य बहु बर्ण कहे अनेकरंगकी अर्थ अनेकतरहकी औ विविधि कहे अनेक जे चारु कहे सुंदर मुखवालि नृत्य हैं औ शब्दवालि औ बहुत प्रकारके जे उडुप हैं औ तिर्यगपति कहे पक्षिशार्दूल नृत्य औ पति औ अड़ाल औड़लथा औटेंकी औ अलम नृत्य सार्दिंड कहे दिंडनृत्यसहित औ पदपलटी औ हुरुमई औ निशंक औ चिंडजे जे नृत्य हैं औ कहूं उडुपति रियपति बट अड़ाल पाठ है तौ तिरिय औ बट येऊ नृत्यके भेद जानो तिनमें तिन स्त्रिनकी असु कहे शीघ्र भ्रमनि कहे घूमनि देखिकै मतिधीर कहे धीरमतिसों अर्थ मतिमों धीर्य्य धरिकै एकाग्रचित्त ह्वैकै इति भ्रमि कहे वघरुराके ब्याज घूमि कै समीर जे बायु हैं ते सीखत हैं अथवा तिनकी भ्रमनि देखिकै अपनी शीघ्रताके गरूर करिकै मति है धीर जिनकी ऐसे जे समीर हैं ते भ्रमि कहे संदेहको प्राप्त ह्वैकै अर्थ अपनासों अधिक जानि आतुर ह्वैकै शीघ्रता सीखत हैं ॥ नृत्यानांलक्षणमुक्तंसंगीतदर्पणे ॥ अथमुखचालिः ॥ नृत्यादौप्रथमंनृत्यंमुखचालिरितिस्मृता॥१॥ अथ शब्दचालिः ॥ प्राग्वत्कृत्वास्थानहस्तौमध्यसंचेननर्तकः । यत्रस्थित्वैकपादेनशब्दर्णानुगामिनीं । गतिंनयेद्वितीयेनदक्षिणात् ध्वनिशोभनाम् । तद्द-

रपादांतरेणाथक्रमेणैतद्द्वयोर्यदा। पर्यायेणगतिं कुर्याद्वार्तिकादिषुपंचसु । मार्गेष्व सौशब्दचालिः पंडितैश्चनिरूपिता ॥२ अथोडुपानि ॥ नेरिःकरणनेरिश्चमित्रंचित्रंतथाभवेत् ॥ नत्रंचजारमानंचमुरुरिड्मुरुंततथा ॥ हुल्लंचलावणीज्ञेया कर्त्तरीतुल्लकंतथा । प्रसरंचद्वादशस्युरुडुपानियथाक्रमात् ॥ ३ ॥ अथपक्षिशार्दूलनृत्यलक्षणं ॥ यदिमंडिमधिष्ठायप्रसृतौभ्रमतःकरौ । तदानंतरशार्दूलाःपक्षिशार्दूलमूचिरे ॥ ४ ॥ अथपतिनृत्य लक्षणम् ॥ कूटाक्षराभ्यांकान्यांचिन्निमितात्यंतकोमलाः ॥ एकरूपाक्षरःचंचत्पुटतालानुगापदा । वाद्यतेयोवाद्यखंडोविरामैर्भूरिभिर्मुहुः । योनिर्मितोवाद्यपाठैर्वाद्यभेदापतिःस्मृता ॥ ५ ॥ अथाडालक्षणं ॥ सुलुंवध्वातदोत्प्लुत्यचरणैःपक्षिपक्षवत् । भ्रमित्वानियतेभूमौतदडालमितीरितं ॥ ६ ॥ अथलागनृत्यलक्षणे ॥ लागशब्देनकर्णाटभाषयाउत्प्लुतीरिति ॥ ७ ॥ अथधाउनृत्यलक्षणं ॥ आकाशचार्योद्वित्रोश्चेत्ततश्चतिरियंभवेत् । अंतेमुरुतदोदिष्टंधाउनृत्यंनटोत्तमैः ॥ ८ ॥ अथरापरंगालनृत्यलक्षणं ॥ शूलंवध्वैकपादेनसहैवानुपतेद्यदि । द्वितीयोऽपितदारापरंगालंतद्विदोविदुः ॥ ९ ॥ अथउलथानृत्यलक्षणं । उत्प्लुत्याद्यैर्यदानृत्येत्करणैस्तालसंमितैः । तदोत्प्लुत्याद्यकरणनृत्यंनृत्यविदोविदुः ॥ अथवा उलथानृत्यकोलक्षण नामर्थही है ॥ १० ॥ अथटेंकीनृत्यलक्षणं ॥ पादौसमौयदान्यस्मिन् पार्श्वेचापरपार्श्वतः। उत्प्लुत्योत्पादयेच्चित्रंतदाटेंकीतिकथ्यते ॥११॥ अथासल नृत्यलक्षणं ॥ भूमावेकंसमास्थायद्वितीयं पूर्ववद्यदा ॥ पातयेच्चरणंचारुतंवीशंचतुराविदुः ॥ याहीको नामान्तरअमलहै ॥ १२ ॥ अथदिंडनृत्यलक्षणं ॥ उत्प्लुत्यचरणद्वंद्वंवस्त्रनिष्पीडनोपमं । परिभ्राम्यावनीयातियदितांदिंडमुच्यते ॥१३॥ अथपदपलटीनृत्यलक्षणं । पुरःप्रसार्य्यचरणंलंघयेदपरांघ्रिणा । सुलूपूर्वंतदान्वर्थाप्रोक्तलंघितजंघिका ॥ याहीकीअन्वर्थपदपलटीहै ॥ १४ ॥ अथहुरुमयीनृत्यलक्षणं ॥ अलातांपरिवृत्त्यांगंपादपृष्ठंगतंयदा । अलातांघ्रौपृष्ठगते शीघ्रमन्यांघ्रिलंघयेत् । लंघयेत्दक्षिणोऽन्येनप्रोक्ताहुरुमयीनटैः ॥ १५ ॥ अथनिःशंकनृत्यलक्षणं ॥ सुलूपूर्वंयदोत्प्लुत्य मिलितौचरणौसमौ । दूरंभूमौनिपतितः सनिशंकःप्रकीर्तितः ॥ १६ ॥ अथ चिंडनृत्यलक्षणं ॥ विडचिंडुःकालचरीइतिचिंडुर्द्विधाभवेत् । यदपिल्लमुरुयत्रनिवद्धोविडचिंडुकः ॥ तत्तज्जात्यनुकारेण कालचारीतिकीर्तितः । तालतानसुलूतुंग घर्घरीध्वनिपेशलं ॥ वादतेतुडके

चिंड गीतेनयतिपूर्वकं ॥ तत्तज्जातियुतंनृत्यं नानागतिविचित्रितं ॥ चारुपाटा-नुचंचत् किंकिणीध्वनिपेशलं । कालासैरपिलास्यांगै रंकजैरंतरांतरा ॥ धृतहस्तत्रिशूलादि यत्रनृत्यं समाचरेत् । तदाधीरैःसमाख्यातं चिंडनृत्यंमनोहरं ॥ १७ ॥ ६ ॥ ७ ॥ रसवेष कहे रस स्वरूप अर्थ शृंगारादि जे नवरस हैं तिनमें जा रसको प्रबंध गावती ता रसके रूप आप ह्वै जाती हैं औ बहुत प्रकारसों रस स्वाद-को वर्षती हैं भाव कहे चेष्टा हस्तक (हस्तक्रिया) रंगमहलमें स्त्रिनके पाँवकी औ पखावजकी ताल सहित प्रति धुनि जो झांई शब्द है ताहूके गीत सुनियत है सो मानों विचित्र मति जे स्त्री पुरुषनके चित्र हैं ते ताही विधि पाँवकी औ पखावजकी ताल दैकै ताही विधि गीतको गाइ सब संगीतको पढ़त हैं ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

मू०— घनाक्षरी ॥ अपघनघायनबिलोकियतुघायलनिघनो सुखकेशवदासप्रगटप्रमानहै । मोहैमनभूलैतननयनरुदनहोत सूखैशोचपोचदुखमारनबिधानहै । आगमअगमतंत्रशोधिसब यंत्रमंत्रनिगमनिवारिबेकोकेवलअपानहै । बालनिकोतनत्राण अमितप्रमाणसबरीझिरामदेवकामदेवकेसोबानहै ॥ ११ ॥

टी०— रीझि रामदेव कहत हैं इतिशेषः कहा कहत हैं कि कामदेवके बा-णको त्राण है बख्तर बालकनको तन है अर्थ जबलों जीव बालकनके त-नरूपी त्राणमें रह्यो तबलों कामबाण नहीं लागत औ गान जो है ताको त्राण बालकनहूंको तनही हैं अर्थ बालकनहूंको व्याप्त होत है इतनोई भेद है और अमित कहे अनंत सब बातप्रमाण कहे तुल्य है तासों गान कामदेव-को ऐसो बाण है कैसो है कामदेवको बाण औ गान जाके वायु अपघन जो शरीर है तामें नहीं बिलोकियत औ घायलनके घनो सुख होत है औ मन मोहकी मूर्च्छाको प्राप्त होत है औ तनकी सुधि भूलि जाति है औ नयननमें रोदन होत है औ पोच कहे नागा जो राज्यादि वस्तुको शोच है-सो सूखि जात है औ मारणही है बिधान जाको ऐसो दुःख होत है अथ-वा दुःखको मारण कहे नाश कर्त्ता है बिधान जाको औ अगम कहे अनंत आगम जे धर्मशास्त्र हैं औ अगम जे तंत्रशास्त्र हैं तिनके जे शोधि कहे ढूं-

ढ़िकै अथवा शुद्ध करिकै यंत्र औ मंत्र हैं औ निगम जे वेद हैं ताके जे यंत्र मंत्र हैं ते सब ताके निवारण करिबेको केवल अयान (अज्ञान) हैं केवल पदको अर्थ यह किया कि निवारणकी बिधि वे जानत नहीं ॥ ११ ॥

मू०- दोहा ॥ कोटिभांतिसंगीतसुनि, केशवश्रीरघुनाथ ॥ सीताजूकेघरगये, गहेप्रीतिकोहाथ ॥ १२ ॥ सुन्दरीछन्द ॥ सुन्दरिमन्दिरमेंमनमोहति । स्वर्णसिंहासनऊपरसोहति ॥ पङ्कजकेकरहाटकमानहुँ । हैंकमलाबिमलायहजानहुँ ॥ १३ ॥ फूलनकोसोबितानतन्योबर । कञ्चनकोपालिकायकतातर ॥ ज्योतिजरायजरेउअतिशोभनु ॥ सूरजमण्डलतेनिकस्योजनु १४

टी०- जैसे सखीको हाथ गहि स्त्रीके पास जात है तैसे प्रीतिरूपी सब जो सखी है ताको हाथ गहे रामचंद्र सीताके घर गये ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥

मू०- कुसुमबिचित्राछन्द ॥ दर्शतहीनयननिरुचिबनै । वसनबिछायेसबसुखसनै ॥ अतिरुचिसोहैंकबुहुँनसुन्यो । मानोंतनुलैशशिकरचुन्यो ॥ १५ ॥ चम्पकदलद्युतिकेगेडुये । मनहुँरूपकेरूपकउये ॥ कुसुमगुलाबनकीगलसुई । बरणीजायननयननकछुई ॥ १६ ॥ दोहा ॥ रामचन्द्ररमणीयतर, तापर पौढ़ेजाइ ॥ पदपङ्कजपखराइकै, कहिकेशवसुखपाइ ॥ १७ ॥ तोमरछन्द ॥ जिनकेनरूपनरेष । तेपौढ़ियोंनरवेष ॥ निशिनाशियोत्यहिबार । बहुबन्दिबोलतद्वार ॥ १८ ॥

टी०- शुचि कहे श्वेत मानों शशिको (चन्द्रमाको) तनु कहे त्वचा लै चुन्यो कहे बनायो है अथवा मानों शशि जो चंद्रमा है तेहि तनु कहे सूक्ष्म जे कहे किरणि हैं तिनको लैकै ता बसनको बनायो है ॥ १५ ॥ गेडुआ (तकिया) चंपकदल द्युतिके गेडुआ धरिबेको हेतु यह कि सीताजू पद्ममुखी हैं तासों मुखको पद्म जानि सोवतमें गेडुआनको देखि चंपकदलके भयसों भ्रमर मुखमें दंश ना करैं चंपकदलके निकट भ्रमर नहीं जात

यह प्रसिद्ध है रूपक कहे प्रतिमा कुसुम कहे फूल जे गुल्लाबनके हैं तिनकी गलसुई (गेडुआ भेद) है ते बचनकरि बरणी नहीं जातीं औ नयनन करि छुई नहीं जातीं अर्थ अति सुंदरी है ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥

मू०— दोहा ॥ राजलोकजाग्योसबै, बन्दीजनकेशोर ॥ गयेजगावनरामपै, सारिकादिउठिभोर ॥ १९ ॥ सारिका-हरिप्रियाछन्द ॥ जागियेत्रिलोकदेवदेवरामदेवभोरभयोभूमिदेवभक्तदर्शपावै । ब्रह्मामनमंत्रबर्णविष्णुहृदयचातकघनरुद्रहृदयकमलमित्रजगतगीतगावै ॥ गगनउदितरविअनन्तशुक्रादिकज्योतिवन्तक्षणक्षणछविक्षीणहोतलीनपीनतारे । मानहुँपरदेशदेशब्रह्मदोषकेप्रवेशठौरठौरतेबिलातजातभूपभारे ॥ २० ॥

टी०— राजलोक कहे राजलोकके सबजन जागे ॥१९॥ पांचछंदको अन्वय एक हैं भूमिदेव अर्थ हेभूपति! ब्रह्माको मनरूपी जो मंत्र है ताके तुम बर्ण कहे अंक हौ जैसे अंकनमें मंत्र बस्यो रहत है तैसे ब्रह्माको मन तुममें सदा बसो रहत है औ विष्णुको जो हृदय रूपी चातक यहहै ताके घन कहे सजलमेघ हौ जैसे घन चातककी तृषा बुझावत है तैसे तुम विष्णुके हृदयकी तृषा बुझावत हौ औ रुद्रको हृदय रूपी जो कमल है ताके मित्र (सूर्य) हौ जैसे कमलको सूर्य प्रफुल्लित करत हैं तैसे तुम रुद्रहृदयको प्रफुल्लित करत हौ या प्रकारसों तुह्मारो गीत जगत गान करत है गगनमें रवि उदित भये तासों अनंत कहे अनेक जे शुक्रादिक ज्योतिवंतनके पीन कहे बड़े तारे नक्षत्र हैं ते क्षणक्षणमें छबि क्षीण व्है गगनमें लीन होत जात हैं अर्थ बिलात जात हैं मानों ब्रह्मदोषके प्रवेशसों जे भूप भय मानि परदेश गये हैं तेऊ औ जे आपने देशमें हैं तेऊ बिलात जात हैं तैसे जे नक्षत्र स्थानमों हैं ध्रुवादि औ स्थानसों चलित हैं ते सब बिलात जात हैं इत्यर्थः ॥ २० ॥

मू०— अमलकमलतजिअमोलमधुपलोलटोलटोलबैठतउड़िकरिकपोलदानमानकारी । मानहुँमुनिज्ञानबद्धछोड़िछोड़िगृहस-

मृद्धसेवतगिरिगणप्रसिद्धसिद्धिसिद्धिधारी । तरणिकिरणि-
उदितभईदीपज्योतिमलिनगईसदयहृदयबोधउदयज्योंकुबुद्धि-
नाशै । चक्रबाकनिकटगईचकईमनमुदितभईजैसेनिजज्योति-
पाइजीवज्योतिभाशै ॥ २१ ॥ अरुणतरणिकेविलाशएकदोइ-
उड़अकाशकलिकैसेसन्तईशादिशनअंतराखै । दीखतआनन्द-
कन्दनिशिविनद्युतिहीनचंदज्योंप्रवीनयुवतिहीनपुरुषदीनभा-
खै ॥ निशिचरचपकेविलासहासहोतहैंनिराशशूरकेप्रकाशत्रा-
सनाशततमभारे । फूलतशुभसकलगातअशुभशैलसेबिलात-
आवतज्योंसुखदरामनाममुखतिहारे ॥ २२ ॥ सारोशुकशुभम-
रालकेकीकोकिलरसालबोलतकलपारावतभूरिभेदगुनिये । म-
नहुँमदनपंडितऋषिशिष्यगुणनमंडितकरिअपनीगुदरैनदेनपठ-
येप्रभुसुनिये ॥ सोदरसुतमंत्रिमित्रदिशिदिशिकेनृपविचित्रपंडि-
तमुनिकविप्रसिद्धसिद्धद्वारठाढ़े । रामचन्द्रचन्द्रओरमानहुँचित-
वतचकोरकुबलयजलजलधिजोरचोपचित्तबाढ़े ॥ २३ ॥ नच-
तरचतरुचिरएकयाचकगुणगणअनेकचारणमागधअगाधबिर-
दबन्दिटेरे । मानहुँमंडूकमोरचातकचपकरतशोरतड़ितबसनसं-
युतघनश्यामहेततेरे ॥ केशवमुनिबचनचारुजागेदशरथकुमारू-
रूपप्याइज्याइलीनजनजलथलओकके। बोलिहँसिबिलोकिबी-
रदानमानहरीपीरपूरेअभिलाषलाखभाँतिलोकलोकके ॥ २४ ॥

टी०– टोल टोल कहे झुंड झुंड कैसे हैं करिदान जो मद है ताके क-
र्त्ता औ श्लेषसों दाता औ मान कहे आदर कर्त्ता भ्रमर जात हैं तिन्हैं शि-
रपर बैठावत हैं दाता ह्वै आदर करै ताके समीप सब प्रसन्न ह्वै जात हैं
इतिभावार्थः ॥ समृद्ध कहे संपतियुक्त कैसेहैं मुनिगण सिद्ध कहे आपने व-
श्य जो सिद्धि कहे तपसिद्धि अथवा अष्टसिद्धि हैं तिन्हैं धरे हैं अथवा गि-
रिगणनहींको विशेषण है सिद्धि जो सिद्धि (तपसिद्धि) है तिनको धरे हैं

अर्थ जिन पर्वतनसों जातही बिन तप कियेही तपसिद्धि प्राप्त होति है म-
लिन गई कहे मलिनताको प्राप्त भई बोध कहे ज्ञान समतरणि जे सूर्य हैं
तिनकी किरणें हैं कुबुद्धि सम दीपज्योति है हृदय सम भूमंडल जानों नि-
ज ज्योति अर्थ ब्रह्मज्योति उडु (नक्षत्र) आनंदकंद चंद्रको बिशेषण है
सूर्यके प्रकाशके त्राससों निशिचर कहे चोर परस्त्रीगामी कुलटादि के जे
विलास औ हास हैं ते निराश कहे नाश होत हैं औ भारे जे तम अंधकार
हैं ते नाशत हैं औ शुभ कहे तपस्वी आदि प्राणी पूजादि कर्म तिनके स-
कल गात फूलत कहे प्रफुल्लित होत हैं हे राम जैसेतिहारे नामको मुखमें
लेत शुभजे मंगलादि हैं तिनके गात प्रफुल्लित होतहैं औ शैल कहे पर्वत
सम अशुभ अमंगल बिलातहैं मदनरूपी जो पंडित ऋषि कहे पंडित श्रेष्ठहैं
गुदैरनि परीक्षा रामचन्द्ररूपी जे चंद्र तुम हौ तिनकी ओर दर्शन के चोप
चित्तन में जोर कहेअति वाढे हैं जिनके ऐसे चकोर औ कुबलय कोई औ
जलधि के जलहैं मानों या प्रकारसों दरादिद्वार पर ठाढ़े चितवत हैं एकैअ-
र्थ नृत्यकारी नचतहैं औ और जे अनेक याचकहैं ते अपने गुणगण रचतहैं
छंद उपजाति हैं ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥

मू०— दोहा ॥ जागतश्रीरघुनाथके, बाजेएकहिँबार ॥ निगर नगारेनगरके, केशवआठहुद्वार ॥ २५ ॥ मरहट्टाछन्द ॥ दिन दुष्टनिकन्दनश्रीरघुनन्दनआँगनआयेजानि । आईनवनारीसु- भगशृंगारीकञ्चनझारीपानि ॥ दाँत्योंनिकरतहैंमननगहतहैं औरिबोरिघनसार । सजिसजिविधिमूकानिप्रतिगंडूषनिडारत गहतअपार ॥ २६ ॥ दोहा ॥ सन्ध्याकरिरविपाँयपरि, बाह- रआयेराम ॥ गणकचिकित्सकआशिषा, बन्धुनकियेप्रणाम ॥ ॥ २७ ॥ मरहट्टाछन्द ॥ सुनिशत्रुमित्रकीनृपचरित्रकीरय्यति- रावतबात । सुनियाचकजनकेपशुपक्षिनकेगुणगणअतिअव- दात ॥ शुभतनमज्जनकरिस्नानदानकरिपूजेपूरणदेव । मिलि- मित्रसहोदरबन्धुशुभोदरकीन्हेभोजनभेव ॥ २८ ॥

टी०— निगर कहे मौन विधिको सजिकै प्रतिगंडूषनि कहे प्रतिकुल्लनको डारत हैं औ गहतहैं असार अनेक अथवा प्रतिगंडूषनि कहे कुल्लाकुल्ला प्रति अर्थ हरि कुल्ला मूकनि कहे कुल्लाके त्यागनकी विधिको सजिकै डारत हैं त्यागत हैं फेरि और गहत हैं ॥ २५ ॥ २६ ॥ गणक (ज्योतिषी) चिकित्सक (वैद्य) ॥ २७ ॥ मज्जन कहे उबटनादि सहोदर (भरतादि) बंधु जातिजन (बिरादरी) इति शुभोदर कहे नीकी विधि उदरपूर्ति करिकै अथवा शुभोदर बड़े भोजन कर्त्ता ॥ २८ ॥

मू०— दण्डक ॥ निपटनवीनरोगहीनबहुक्षीरलीनबक्षपीनतनतापनहरतुहैं । ताँबेमढ़ीपीठिलागेरूपकेखुरनडीठिडीठिस्वर्णशृंगमनआनँदभरतुहैं ॥ काँसेकीदोहनीश्यामपाटकीललितनोइघटनसोंपूजिपूजिपाँयनिपरतुहैं । शोभनसनौढ़ियनरामचन्द्रदिनप्रति गोशतसहस्रदैकैभोजनकरतुहैं ॥ २९ ॥ तोटकछन्द ॥ तहँभोजनश्रीरघुनाथकरैं । षटरीतिमिठाइनचित्तहरैं ॥ पुनिखीरसोंचौविधिभातबन्यो । तकितीनिप्रकारनिशोभसन्यो ॥ ३० ॥ षटभाँतिपहीतिबनाइसची । पुनिपाँचसो०यंजनरीतिरची । विधिपांचसोरोटिनमाँगतहैं । विधिपाचँबराअनुरागतहैं ॥ ३१ ॥

टी०— ॥ २९ ॥ चौविधिको अन्वय दूनौंओर है अर्थ चारि विधिकी खीर बनी है औ चारि बिधिको भात बन्यो है ॥ ३० ॥ सची कहे संचित करयो अर्थ एकत्र करयो ॥ ३१ ॥

मू०— विधिपाँचअथानबनाइकियो । पुनिद्वैविधिक्षीरसोमाँगिलियो ॥ पुनिझारिसोद्वैविधिस्वादघने । विधिदोइपछावरिसातपने ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ पाँचभाँतिज्योनारसब, षटरसरुचिरप्रकास ॥ भोजनकरिरघुनाथजू, बोलेकेशवदास ॥३३॥ हरिलीलाछन्द ॥ बैठेबिशुद्धगृहअग्रजअग्रजाइ । देखीबसन्त-

ऋतुसुन्दरमोददाइ ॥ बौरेरसालकुलकोमलकेलिकाल । मानों-अनंगध्वजराजतश्रीबिशाल ॥ ३४ ॥

टी०— अथान (अचार) झारि आम्रके चूर्ण में जीरछकादिडारि जलमें घोरि बनतिहै पश्चिममों प्रसिद्ध है पछचावरि पकवानको भेदहै या सब प्रकार भोजनके मिलाइ छप्पन होत हैं ॥ ३२ ॥ शर्करादि (मधुर) ॥ १ ॥ अम्रादि (अम्ल) २ करैला आदि (तिक्त) ३ मरिचादि (कटु ४ लवणादि (लवण) ५ हर्रादि (कषाय) ६ ये जे षट छ रस हैं तिनकी है रुचिर प्रकाश जामें ऐसी जो चोष्य (आम्रादि) १ पेय (दुग्धादि) २ भोज्य (भक्तादि) ३ लेह्य (अवलेहादि) ४ चर्व्य (पिस्ता बदामादि) ५ पांच भांतिकी जेवनार हैं ताको भोजन करिकै रामचन्द्र बोले भोजनसमयमों बोल्यो न चाहिये यह धर्म शास्त्रोक्त है ॥ ३३ ॥ रामचन्द्रजू भोजन करिकै गृह अग्रज कहे गृहमें अग्रज श्रेष्ठ जो गृह (घर) है ताके अग्र भागमों बसंत बहार देखिबेको जाइकै बैठत भये कोमल कहे सुगंधयुक्त रसाल (आम्र) वृक्ष बौरे हैं सो मानों यह केलिको काल कहे समय है या प्रसिद्ध करिबेके लिये मानों अनंग जो काम है ताके बिशाल ध्वजा राजत हैं जा कछू बस्तु प्रसिद्ध करिबो होत है तात्पर्य सबध्वजा बाँधत हैं प्रसिद्ध है ॥ ३४ ॥

मू०— फूलीलवंगलवलीलतिकाविलोल । भूलेजहाँभ्रमराविभ्रममत्तडोल ॥ बोलैंसुहंसशुककोकिलकेकिराज । मानोंबसन्तभटबोलतयुद्धकाज ॥ ३५ ॥ सोहैपरागचहुँभागउडैसुगन्ध । जातेबिदेशविरहीजनहोतअन्ध ॥ पालासमालबिनपत्रबिराजमान । मानोंबसन्तदियकामहिंअग्निबान ॥ ३६ ॥ सवैया ॥ फूलेपलासविलासथलीबहुकेशवदासप्रकाशनथोरे । शेषअशेषमुखानलकीजनुज्वालविशालचलीदिविओरे ॥ किंशुकश्रीशुकतुंडनकीरुचिराचरसातलमेंचितचोरे । चोंचनचापिचहूंदिशिडोलतचारुचकोरअँगारनभोरे ॥ ३७ ॥ मौक्तिकदा-

मछन्द ॥ जरैंविरहीजनजोवतगात । उघरेउरशीतलसेजल-जात ॥ किधौंमनमीननकोरघुनाथ । पसारिदियोजनुमन्मथ-हाथ ॥ ३८ ॥

टी०– लवली हरफारयोरी पुष्प रस पानसों मत्त जे भ्रमर हैं ते विभ्रममें भूले डोल कहे डोलत हैं ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ बिलास स्थलिनमें बहुत पलाश फूले हैं रसातल भूतल दिबि आकाश किंशुक कहे पलाश अर्थ पलाशपुष्प ॥ ३७ ॥ सीताजू की उक्ति राजचन्द्र प्रति है उघरे हैं उर कहे हृदय अर्थ सिफाकंद जिनके ऐसे जे शीतलसे कहे शीतल जलजात कमल हैं तिनको देखत बिरहीजननके गात जरत हैं सो हे रघुनाथ । मनमीननके गहिबेके अर्थ मानों मन्मथ (काम) हाथ पसारि दियो है अर्थ जाको मन कमलनमें जात है ताको गहि राखत है मन्मथ हाथ सम कहि कमलनकी अति सुन्दरता जनायो छंद उपजाति है ॥ ३८ ॥

मू०– जितेनरनागरलोगबिचारि । सबैबरनैंरघुनाथनिहारि ॥ किधौंपरमानँदकोयहमूल । विलोकतहींसोहरैसबशूल ॥ ३९ ॥ किधौंबनजीवनकोमधुमास । रचेजगलोचनभौंराबिलास ॥ किधौंमधुकोसुखदेतअनंग । धरेउमनमीननिकारणअंग ॥ ४० ॥ किधौंरतिकीरतिबेलिनिकुंज । बसैगुणपक्षिनकोजहँपुंज ॥ किधौंसरसीरुहऊपरहंस । किधौंउदयाचलऊपरहंस ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ प्राचीदिशिताहीसमय, प्रगटभयोनिशिनाथ ॥ बर्णतताहिविलोकिकै, सीतासीतानाथ ॥ ४२ ॥

टी०– नागर लोग कहे नगर श्रेष्ठ जो नर हैं ते रामचन्द्रको बैठे देखि परस्पर वर्णत हैं मूलके भक्षणसों शूल दुरि होत हैं औ रामरूपी जो आनन्दमूल हैं ताके देखतही शूल दूरि होत हैं ॥ ३९ ॥ कि बनरूपी जे जीव प्राणी हैं तिनको मधुमास (चैत्रमास) है जैसे चैत्र बनको फुलावनको फुलावत है तैसे रामचन्द्र जगतके प्राणिनको प्रफुल्लित करत हैं औ मधुमासमें भ्रमर अनुरागत हैं इहां जगके लोचन भ्रमरके बिलाससों रचे कहे

अनुरागे हैं औ कि रामचन्द्र नहीं हैं अनंग (काम) हैं बनमें विराजमान जो मधु (बसन्त) ताको दरश दैकै सुख देत है कैसो है अनंग सबके मनरूपी जे मीन (मत्स्य) हैं तिनके कारण कहे गहिबेके अर्थ अंगनको धारण कर्‌यो है देखतहीं रामचन्द्र सबके मनको गहि राखत हैं तासों जानों ॥ ४० ॥ रति प्रीति औ कीर्त्ति यशरूपी जो बेलि है तिनको निकुंज है कुंजमें पक्षी बसत हैं रामचन्द्रमें गुणरूपी जे पक्षी हैं तिनके पुञ्ज (समूह) बसत हैं ॥ निकुञ्जकुञ्जौवाक्लीबेलतादिपिहितोदरे इत्यमरः ॥ सरसीरुह औ उदयाचल सम गृह है हंस (पक्षी) औ हंस (सूर्य्य) सम रामचन्द्र हैं ॥ ४१ ॥ प्राची (पूरुब) ॥ ४२ ॥

मू०— हरिणीछन्द ॥ फूलनकीशुभगेंदनई । सूंघिसचीजनु डारिदई ॥ दर्पणसोंशशिश्रीरतिको । आसनकाममहीपतिको ॥ ४३ ॥ मोतिनकोश्रुतिभूषणभनो । भूलिगईरविकीतियमनो ॥ अंगदकोपितुसोंसुनिये । सोहततारहिसंगलिये ॥ भूपमनोभवछत्रधरेउ । लोकवियोगिनकोबिडरेउ ॥ ४४ ॥ देवनदीजलरामकह्यो । मानहुँफूलिसरोजरह्यो ॥ फेनकिधौंनभसिन्धुलसै । देवनदीजलहंसबसै ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ चारुचन्द्रिकासिन्धुमें, शीतलस्वच्छसतेज ॥ मनोशेषमयशोभिजै, हरिणाधिष्ठितसेज ॥ ४६ ॥

टी०— शशि जो चन्द्र है सो श्रीरति जो कामकी स्त्री है ताको दर्पणसों है ॥ ४३ ॥ तारा (नक्षत्र) औ बालिकी स्त्री मनोभव (काम) बियोगी स्त्री पति परस्पर बियोगी औ बिरोधीछंद उपजाति है ॥ ४४ ॥ या प्रकार सीताको वर्णन सुनिकै रामचन्द्र कह्यो नभसिन्धु (आकाश गंगा) ॥ ४५ ॥ हरिणाधिष्ठित है तासों चारु चन्द्रिका रूपी जो सिन्धु कहे क्षीरसिन्धु है तामें शीतल औ स्वच्छ (मलरहित) सतेज कहे कान्तियुक्त मानों शेषमय कहे शेषस्वरूप सेज है शेषमयसेज हरि (विष्णु) करसन्ते अधिष्ठित युक्त है हरि वा तृतीयांत पदहै चन्द्रमा हरिण करिकै अधिष्ठित है मृग अंकमें प्रसिद्ध है ॥ ४६ ॥

मू०– दण्डक ॥ केशवदासहैउदासकमलाकरसोंकरशोषक प्रदोषतापतमोगुणतारिये । अमृतअशेषकेविशेषभावबर्षतको- कनदमोदचण्डखण्डनबिचारिये ॥ परमपुरुषपदविमुखपरुष- रुखसुमुखसुखदविदुषनउरधारिये । हरिहैरीहियेमेंनहरिणहरि- णनैनीन्चद्रमानचन्द्रमुखीनारदनिहारिये ॥ ४७ ॥

टी०– सीतासों रामचन्द्र कहत हैं कि हे हरिणनयनी ! यह चन्द्रमा नहीं है नारद हैं औ याके हियमें यह हरिण नहीं है हरि (विष्णु) हैं सो अश्लेषसों कहत हैं कैसा है चन्द्रमा कमलनको जो आकार समूह है तासों उदास हैं कर (किरण) जाके चन्द्रकिरण स्पर्शसों कमल संकुचित होत है औ प्रदोष जो रजनीमुख है औ ताप जो उष्ण है औ तमोगुण जो अन्धकार है तिनको शोषक (दूरि करणहार) है यह तारिये कहे जानि- यत है पूर्णिमाको चन्द्र जब उदित भयो तब रात्रिको प्रवेश होत है रज- नीमुख काल ब्यतीत होत है तासों शोषक कह्यो ॥ प्रदोषोरजनीमुखमि- त्यमरः ॥ औ अशेष कहे पूर्ण जो अमृत है ताके जे भाव कहे विभूति हैं वृद्धि इति ताको विशेषसो बर्षत है अमृतकी बड़ी बर्षा करत हैं इत्यर्थः औ कोक जे चक्रवाक हैं तिनको जो नद (शब्द) है ताको जो मोद है अर्थ परस्पर स्त्री पुरुष संभाषणानन्द है ताको चण्ड कहे उग्र अर्थ नीकी विधि खंडन कहे खंडन कर्त्ता है अर्थ चक्रवाकनको बियोगी करि परस्पर स्त्रीपु- रुष संभाषणानन्दको दूरि करत है अथवा प्रथम कमलाकर पद कह्यो है तहां श्वेतादि कमल जानों इहां कोकनद कहे अरुण कमलको जो मोद है ताको चण्डखण्डन है ॥ रक्तोत्पलं कोकनद इत्यमरः ॥ औ परम पुरुष जो पति है ताके पदसों जे स्त्री विमुख हैं अर्थ मान किये हैं तिन्हें परुषरुख कहे कठोर रुख है अर्थ ताप कर्त्ता है औ जे लोगन पतिसों सुमुख हैं ति- नको सुखद है औ विदुष जे प्रवीण लोग हैं तिन करिकै उरमें धारियत है प्रबीणके सदा चन्द्रोदयकी इच्छा रहति है चौरादिक चंद्रोदय नहीं चाहत इति भावार्थः नारद कैसेहैं कि कमला जो लक्ष्मी है अर्थ द्रव्य ताके आक- र (समूह) सों उदास है कर (हाथ) जाको अर्थ बहुतहू द्रव्य कोऊ देइ

ताको ग्रहण नहीं करत अल्पकी का कथाहै इतिभावार्थः औ प्रकर्ष जे दोष हैं गोबधादि औ ताप जे दैहिक, दैविक, भौतिक त्रैताप हैं औ तमोगुणके शोषक दूरि कर्त्ता हैं तमोगुणके शोषक कहि या जानयो कि सदा सत्त्वगुणयुक्त रहत हैं औ अमृत कहे नाहीं है मृत्यु जिनकी अशेष कहें पूर्ण ऐसे जे बिष्णु हैं तिनके जे भाव कहे अनेक लीला हैं तिनको विशेषसों बर्षतहैं अर्थ भगवानकी अनेकलीला विशेषसों गान करत हैं अथवा भाव कहे अभिप्राय ताको बर्षतहैं कहत हैं अर्थ भूत, भविष्य, वर्त्तमान तीनों कालमें जो ईश्वरको अभिप्रायके कृत्य हैं ताहि जानत हैं सो सबसों कहत हैं त्रिकालज्ञ हैं इत्यर्थः ॥ भावोभिप्रायवस्तुनोस्वभावजन्मसतात्माक्रियालीलाविभूतिषु इत्यभिधानचिन्तामणिः ॥ औ कोक जो शास्त्र विशेष है ताको जो नद (शब्द) है बचन इति ताको जो मोद (आनंद) है ताके खंडन कहे खंडन कर्त्ता हैं अर्थ कोकशास्त्रमों अनेक काम वार्त्ता हैं तिनको निंदत हैं औ परम पुरुष जे भगवान हैं तिनके पदसों जे प्राणी बिमुख हैं अर्थ विष्णुकी भक्ति नहीं करत तिन्हैं परुषरुष (कठोररुख) हैं औ जे सुमुख हैं अर्थ विष्णुभक्त हैं तिन्हैं सुखद हैं औ बिदुष जे पण्डित हैं तिन करिकै जिनको उरमें धारियतहै अथवा बिशेषसों दुख नहीं जिन करिकै उरमें धारियत अर्थ सदा आनंदयुक्त रहैं ॥ ४७ ॥

मू०– दोहा ॥ आईजानिबसंतऋतु, बनहिँबिलोकतराम ॥ धरणिधसेसीतासहित, रतिसमेतजनुकाम ॥ ४८ ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांबसंतदर्शननामत्रिंशत्प्रकाशः ॥ ३० ॥

टी०– बनको देखत बसंत ऋतु आई जानिकै बनविहार करिबो मनमें निश्चय करि सीता सहित गृहअग्रसों धरणिको धसे कहे उतरे ॥ ४८ ॥ इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायां त्रिंशत्प्रकाशः ॥ ३० ॥

मू०– दोहा ॥ एकतीसयेंप्रकाशमें, रघुबरबागपयान ॥ शुकसुखासियदासीनको, वर्णनबिबिधिविधान ॥ १ ॥ ब्रह्मरूप-

कछंद ॥ भोरहोतहीगयोसोराजलोकमध्यबाग । बाजिआनियोसोएकइंगितज्ञसानुराग ॥ शुभ्रशुद्धचारिहूनअंशुरेणुकेउदार । सीखिसीखिलेतहैंतेचित्तचंचलाप्रकार ॥ २ ॥ तोमरछंद ॥ चढ़िबाजिऊपरराम । बनकोचलेतजिधाम ॥ चढ़िचित्तऊपरकाम । जनुमित्रकोसुनिनाम ॥ ३ ॥ मगमेंबिलम्बनकीन । बनराजमज्यप्रवीन ॥ सबभूपरूपदुराइ । युवतीबिलोकीजाइ ॥४॥

टी०—॥ १ ॥ बनबिहारके अर्थ भोर होतही राजलोक कहे रनिवास प्रथम बागके मध्य गयो फेरि इंगितज्ञ कहे सवारकी चेष्टाको जाननहार अर्थ जैसे सवारको मन देखै ताही बिधि ताड़न बिनहीं गमन कर्त्ता, सानुराग कहे अपने अनुराग प्रेम सहित अर्थ जाके ऊपर अपनो बड़ो प्रेम है ऐसो बाजि रामचन्द्र आनियो कहे मंगायो अथवा बन जाइबेके अनुराग सहित जे रामचंद्र हैं तिन इंगितज्ञ बाजि आनियो अथवा इंगितको जाननहार जो कोऊ अनुचर है सो रामचंद्रको बाजिपर चढ़िके बाग जाइबेको इंगित जानिकै सानुराग कहे प्रेम सहित बाजि आनियो (लायो) कैसो है बाजि जाके शुभ्र कहे सुंदर आशुद्ध कहे निर्दोष चारिहू चरणमें इति शेषः रेणु जो धूरि है ताके अंशु कहे कण चलतमें लगि गये हैं ते मानों उदार कहे चतुरचित्त हैं चरणनमें लगिकै चंचला प्रकार कहे चंचलताको प्रकार सीखि लेत हैं जिनके चरणनमें चित्तहूसों अधिक चंचलता है इति भावार्थः ॥ २ ॥ बनमें आयो मित्र जो बसंत है ताको नाम सुनिकै मानों चित्तपर चढ़िकै धाम छोड़ि काम बनको चल्यो है इत्यर्थः चित्तसम चंचल बाजि है कामसम सुंदर राम हैं ॥ ३ ॥ भूपरूप छत्र चामरादिको दुराइ छपे छपे युवतिनको विलोक्यो जाइ ॥ ४ ॥

मू०— स्वागताछंद ॥ रामसंगशुकएकप्रवीनो । सीयदासिगुणवर्णनकीनो ॥ केशपाशशुभश्यामसनेही । दासहोतप्रभुजीवविदेही ॥ ५ ॥ भाँतिभाँतिकबरीशुभदेषी । रूपभूपतरवारिविशेषी ॥ पीयप्रेमप्रणराखनहारी । दीहदुष्टछलखंडनका-

री ॥ ६ ॥ किधौंशृँगारसरितसुखकारि । बंचकतानिबहावनि-
हारि ॥ कंचनपत्रपाँतिसोपान । मनौंशृँगारलोकके जान ॥ ७ ॥

टी०— स्नेही स्नेह तैलयुक्त प्रभु रामचन्द्रको संबोधन है विदेही कहे ज्ञानी जे जनकादि सम देह धरे हैं अथवा जिनको देखि जीव उदास होत है औ विदेही होत है अर्थ देहकी सुधि भूलि जाति है ॥ ५ ॥ कवरी (बेणी) कवरी केशविन्याशशांकयोरितिहेमचंद्रः ॥ अनेक दासी हैं तासों भांति भांति पद कह्यो काहू दासीकी बेणी और बिधि है काहूकी और बिधि है कैसी है कवरी रूप कहे सौंदर्य्य रूपी जो भूप राजा है ताकी विशेष निश्चय तरवारिहै कैसी है तरवारि पीय जो स्वामी रूप है ताके प्रेमकी राखनहारी है अर्थ अति प्रेमसों सौंदर्य्य जिनको एकहु क्षण त्याग नहीं करत औ सबके मनको बश्य करिबो यह जो रूप भूपको प्रण है ताहूकी राखनहारी है सबके मनको बश्य करति है औ द्रोह (दुष्ट) सम जो छल है ताकी खंडनकारी है अर्थ जैसे तरवारि दुष्ट जे बिरोधी हैं तिन्हें खंडन करि प्रजानको राजाके बश्य करि प्रण राखति है तैसे छलको खंडन करि सबके मनको रूपके बश्य करि प्रण राखती है ॥ ६ ॥ और नदी वृक्षादि बहावति है तैसे यह चंचलता छलताकी बहावनहारी है कंचनपत्र जे बेणीपान हैं तिनकी पांति है सो मानों शृंगारलोकके जान कहे जाइबेको सोपान कहे सीढ़ी है शृंगाररसके लोकसम केशपासयुक्त शीश हैं ॥ ७ ॥

मू०— शीशफूलअरुबेंदालसै । भागसोहागमनौंशिरबसै ॥ पाटिनचमकचित्तचौंधिनी । मानोंदमकतिघनदामिनी ॥ ८ ॥ सेंदुरमाँगभरीअतिभली । तिनपरमोतिनकीअवली ॥ गंग गिरातनसोंतनजोरि । निकसीजनुयमुनाजलफोरि ॥ ९ ॥ शीशफूलशुभजन्योजराय । माँगफूलशोभैशुभभाय ॥ बेणीफूलनकीबरमाल । भालभलेबेंदायुतलाल ॥ तमनगरीपरतेजनिधान । बैठेमनोंबारहोभान ॥ १० ॥ भृकुटिकुटिलबहुभायनभरी । भालज्ञालद्युतिदीसतिखरी ॥ मृगमदतिलकरेखयुगब-

नी । तिनकीशोभाशोभतिघनी । जनुयमुनाखेलति शुभगाथ । परसनपितहिपसार्‍योहाथ ॥ ११ ॥

टी०- बेंदा भालमें रहत है सो भाग कहे भाग्यसम है शीशफूल सोहाग सम हैं इहां स्थानमें बसिबेकी उत्प्रेक्षा है तासों क्रम हीन दूषण नहीं है ॥ ८ ॥ ९ ॥ तमनगरीसम शीशके बार हैं बारहो भानु सम शीशफूलादि हैं इहां संख्या करि उत्प्रेक्षा है ॥ १० ॥ यमुना सम भ्रुकुटी हैं हाथ सम कस्तूरीके तिलककी द्वै ऊर्द्धरेखा हैं पिता जे सूर्य हैं तिनके सम भाल लाल है भ्रुकुटिनको बहु भायन भरी कह्यो है तासों यमुनाको खेलत कह्यो ॥ ११ ॥

मू०- पंकजबाटिकाछंद ॥ लोचनमनहुँमनोभवयन्त्रनि । भ्रूजुगउपरमनोहरमंत्रनि ॥ सुन्दरसुखदसोअंजनअंजित । बाणमदनविषसोंजनुरंजित ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ सुखदनासिका जगमोहियो । मुक्ताफलनियुक्तसोहियो ॥ आनँदलतिकामनहुँसफूल । सूधितजतशशिसकलकुशूल ॥ १३ ॥ पद्धटिकाछन्द ॥ जनुभालतिलकरविब्रतहिलीन । नृपरूपअकाशहिदीपदीन ॥ ताटंकजटितमणिश्रुतिबसंत । रविएकचक्ररथसेलसंत ॥ अतिझुलमुलीनसहझलकलीन । फहरातपताकाजनुनवीन ॥ १४ ॥

टी०- ॥ १२ ॥ मुक्ताफलनयुक्त अर्थ मुक्ताफलसहित नासिका भूषणयुक्त फल सहित आनंद लतिका कोकै मानों शशि जो चंद्र हैं सो सब शूल जो दुःख है ताको दूरि करत हैं आनंदलतिका सम नाशिका भूषण हैं फूलसम मोती हैं शशि सम मुख है ॥ १३ ॥ भालमें तिलक कहे टीका मणिजटित ऊर्ध्व पुंड़ होत है सो जानों रूप कहे सौंदर्यरूपी जो नृपराज है सो रविके व्रतमें लीन ह्वैके रविके अर्थ आकाशको दीप दीन्ह्यो है जे प्रथम शीशफूलादि कह्यो है तेई रवि हैं केशयुक्त शीश आकाश है औ मणिजटित ताटंक कहे ढार श्रुतिमें (श्रवण में) लसत हैं ते मानों रविके एक

चक्र कहे एक पहियाके रथसे हैं रविको रथ एकही पहियाको है औ झुलमुली जे पात नामा कर्णभूषण हैं तिनकी झुलक (शोभा) सह कहे साथ अर्थ तार्टकनके साथ लीन है युक्त है मानों ताही एक चक्ररथके पताका हैं अथवा रूप नृप जो है सो रविको दीप दीन्हों है औ या प्रकारके पताकासों युक्त एक चक्र रथहू दीन्हों समर्पण कर्यौ है इत्यर्थः ॥ १४ ॥

मू०— अतितरुणअरुणद्विजद्युतिलसंति । निजदाड़िमबीजनकोहसंति ॥ संध्याहिउपासतभूमिदेव । जनुबाकदेवकी करतसेव ॥ शुभतिनकेसुखसुखकेबिलास । भयोउपबनमलयानिलनिबास ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ मृदुमुसुकानिलतामनहरै । बोलतबोलफूलसेझरैं ॥ तिनकीबाणीसुनुमनहारि । बाणीबीणाधेरउउतारि ॥ १६ ॥ लटकैंअलिकअलकचीकनी । सूक्षमअमलचिलकसोंसनी ॥ नकमोतीदीपकद्युतिजानि । पाटीरजनीहीउनमानि ॥ १७ ॥

टी०— तरुण कहे नवीन द्विजदंत मानों भूमिदेव ब्राह्मण हैं ते मुखमें बास किये बाकदेव जो सरस्वती है ताकी सेवा करत हैं ते ब्राह्मण संध्या समयमों संध्याकी उपासना करत हैं इहां दांतनकी औ ब्राह्मणनकी द्विज शब्दसों साम्य है संध्यासम दांतनकी अरुणद्युति है दांतन पक्ष बाकदेव (जिह्वा) जानौ ॥ १५ ॥ ताही मुसकानि लताके फूलेसे जानौ ॥ १६ ॥ द्वैछंदको अन्वय एक है अलिक (लिलार) दशा (बाती) मानों रबि सींक पसारिकै ज्योति बढ़ावत है रबिपदको संबंध याहूमों है कबि जे शुक्र हैं तिनके हित कहे चढ़ाइ लेबेके अर्थ इत्यर्थः शुक्रसम नाकमोती हैं रबिसम शीशफूल हैं ॥ १७ ॥

मू०— ज्योतिबढ़ावतदशाउतारि । मानहुंश्यामलसींकपसारि ॥ जनुकविहितरविरथतेछोरि । श्यामपाटकीबांधीडोरि ॥ ॥ १८ ॥ रूपअनूपरुचिररसभीनि । पातुरनैननकीयुतरीनि ॥ नेहनचावतहितरतिनाथ । मरकतलकुटलियेजनुहाथ ॥ १९ ॥

दोहा ॥ गगनचन्द्रतेअतिबड़ो, तियमुखचन्द्रबिचारु ॥ दईबिरंचिबिचारिरचित, कलाचौगुनीचारु ॥ २० ॥

टी०– ॥ १८ ॥ ताही अलकमें दूसरी (उत्प्रेक्षा) करति हैं पुतरिनको जो अनूप रूप है ता प्रति जो रुचिर रस कहे प्रेम है तामें भीनि कहे भीजिकै अर्थ वश्य ह्वैकै पातुर कहे वेश्या अर्थ कामकी वेश्यारूपी जे नयनकी पुतरी हैं तिनको रतिनाथ जो काम है ताके हितसों आनों मर्कत कहे श्यामलकुट हाथमों लैकै स्नेह नचावत है शिक्षक लकुटके तालमें बेश्याको नृत्य सिखावत हैं यह प्रसिद्ध है अथवा कहूं भीनी पाठ है तो अनूप रूप कहे अति सुंदर औ रुचिर जो रस प्रेम है तामें भीनी कहे युक्त पातुररूपी जे नयनकी पुतरी हैं तिनको रतिनाथके हितसों नेह नचावत है इत्यर्थः ॥ १९ ॥ चद्रमामें सोरह कला हैं मुखमें चौंसठि हैं चौंसठि कला प्रसिद्ध हैं ॥ २० ॥

मू०– दंडक ॥ दीन्होंईशदंडबलदलबलद्विजबलतपबलप्रबलसमेतिकुलबलकी । केशवपरमहंसबलबहुकोशबलकहाकहौंबढ़ीपैबड़ाईदुर्गजलकी । बिधिबलचंद्रबलश्रीकोबलश्रीशबलकरतहैंमित्रबलरक्षापलपलकी । मित्रबलहीनजानिअबलामुखनिबलनीकेहीछड़ाइलईकमलाकमलकी ॥ २१ ॥ दोहा ॥ रमनीमुखमंडलनिरखि, राकारमणलजाइ ॥ जलदजलधिसिवसूरमें, राखतबदनदुराइ ॥ २२ ॥

टी०– ईश जे ईश्वर हैं तिन दण्ड जो नाल है ताको बल दीन है औ श्लेषसों परिघादि दण्ड आयुध जानों दलपत्र औ चमूद्विज चक्रवाकादि पक्षी अथवा दंत इहां दंत पदते वीज जानों औ ब्राह्मण जलशायित्वादि तप जानों, कुल कहे ज्ञाति समूह परमहंस (पक्षी) औ तपस्वी विशेष कोष कहे सिफाकन्द औ खजाना औ दुर्ग (कोट) रूपी जो लता है ताके बलकी कहां बड़ाई कहौं इत्यर्थः बिधि-(ब्रह्मा) को आसन है ता संबंधसों बिधिबल जानौं जलज (चंद्र) हू है (कमल) हू है तासों

ता संबंधसों चंद्रबल जानौं लक्ष्मीको कमलमें सदा बास रहत है ता सं-
बंधसों श्रीको बल जानौं श्रीश (विष्णु) सदा करमें लिये रहत हैं तासों
श्रीशबल जानौं औ मित्र जे सूर्य हैं तिनहूंको बल पल पलमें रक्षा करत
है यद्यपि येते सब बल हैं परंतु मित्र जे तुम हौ तिनके बलसों कमलनको
हीन जानिकै ये जे अबला सीय दासी हैं तिनके मुखन बलसों कमलकी
जो कमला कांति रूपा (लक्ष्मी) है ताहि छड़ाइ लीन्हों है अबला पद
कहि रामबलकी अति उत्कृष्टता जनायो ॥ २१ ॥ पूर्ण चंद्र युक्त जो पू-
र्णिमाकी रात्रि है सो राका कहावती है ॥ पूर्णेराकानिशाकरे इत्यमरः ॥
याहूमें असिद्ध विषय हेतूत्प्रेक्षा है ॥ २२ ॥

मू०— विशेषकछंद ॥ भूषणग्रीवनकेबहुभांतिनसोहतहैं । लालसितासितपीतप्रभामनमोहतहैं ॥ सुंदररागनकेबहुबालकआनिबसे । सीषनकोबहुरागिनिकेशबदासलसे ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ हरिपुरसीसुरपुरदूषिता । मुक्ताभरणप्रभाभूषिता ॥ कोमलशब्दनिवंतसुवृत्त । अलंकारमयमोहनमित्त ॥ काव्यपद्धतिशोभागहे । तिनकेबाहुपाशकविकहे ॥ २४ ॥

टी०— राग भैरवादि ॥ २३ ॥ आपनी छबि करिकै सुरपुरकी अर्थ सु-
रपुरकी स्त्रिनकी दूषिता कहे निंदा करनहारी हैं औ मुक्ता जे मोती हैं ति-
नके जे आभरण (भूषण) हैं तिनकी प्रभासों भूषित हैं तासों हरिपुर
(विष्णुलोक) सों हैं हरिपुर कैसो है कि आपनी छबिसों देवलोकको नि-
दत है अर्थ देवलोकसों अधिक है औ मुक्त कहे मुक्तिको प्राप्त जे जीव हैं
तेई हैं आभरण भूषण तिनकी प्रभासों भूषित है अर्थ अनेक मुक्त जीवनसों
युक्त है फेरि कैसी हैं कि कोमल शब्दनिवंत हैं अर्थ मधुर बचन बोलती हैं
औ सुष्ठु हैं सुवृत्त कहे चिरित्र जिनको औ माल्यादि अलंकार युक्त हैं औ
मित्त जो स्वामी हैं ताको मोहन कहे मोहकर्त्ता हैं औ तिनके बाहुनको
पाश कहे फांस सम कविजन कहत हैं यासों काव्यकी जो पद्धति रीति है
ताकी शोभाको गहे हैं काव्य पद्धति कैसी है कोमल कहे कोमलाक्षर युक्त
जे शब्द हैं तिनसों युक्त है सुष्ठु वृत्त पद जाके औ उपमादि अलंकारसों

युक्त है औ मित्र जे काव्यपाठी हैं तिनको मोहन है औ तिनके बाहुनको कवि पाशसम कहत हैं अर्थ बाहुपाश सम होत नहीं है परंतु कविनको नियम है कि काव्य रीतिमों स्त्री पुरुषके बाहु पाशसम कहत हैं ॥ वृत्तः छंदश्चारित्रवृत्तिषु इति मेदिनी ॥ २४ ॥

मू०— नवरंगबहुअशोककेपत्र । तिनमेंराखतराजकलत्र ॥ देखहुदेवदीनकेनाथ । हरतकुसुमकेहारतहाथ ॥ २५ ॥ सुंदरअँगुरिनमुँदरीबनी । मणिमयसुवरणशोभासनी ॥ राजलोककेमनरुचिरये । मानोंकामिनिकरकरिलये ॥ २६ ॥ अतिसुंदरउरमेंउरजात । शोभासरमेंजनुजलजात ॥ अखिललोकजलमयकरिधरे । बशीकर्णचूरणचयभरे ॥ कामकुंवरअभिषेकनिमित्र । कलशरचेजनुयौवनमित्र ॥ २७ ॥ दोहा ॥ रामराजश्रृंगारकी, ललितलतासीराज ॥ ताहिफलेकुचरूपफल, लैजगज्योतिसमाज ॥ २८ ॥

टी०— द्वै छंदको अन्वय एक है हेदेव! हे दीनके नाथ! यह देखो जे हाथ कुसुम-(फूलन) के हरतमें तोरतमें हारत कहे थकत हैं अर्थ जिनसों फूलऊ नहीं तूरि जात ऐसे कोमल जे हाथ हैं तेई नवरंग बहुत अशोकके पत्र हैं तिनमें कहे तिन हाथनमें राजकलत्र जे सीता हैं तिनको राखती हैं तासों मानों सुंदर जे अंगुरी हैं तिनमें सुबरण शोभासों सनी मणिमय मुंदरी बनी हैं तेई रुचि कहे सुंदरतासों रये (युक्त) राजलोक कहे अंतःपुरके अर्थ सीतादिकनके मन हैं तिनको मानों करमें (हाथमें) करि लीन्हों है अति सेवा करि सीतादिकनके मन मानों आपने हाथमें करि लीन्हों है इत्यर्थः ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥

मू०— चौपाई ॥ सूक्ष्मरोमावलीसुवेष । उपमादीन्हीशुकसविशेष ॥ उरमेंमनहुँमदनकीरेष । ताकीदीपतिदिपतिअशेष ॥ ॥ २९ ॥ दोहा ॥ कटिकेतत्त्वनजानिये, सुनिप्रभुत्रिभुवनराव ॥ जैसेसुनियतुजगतके, सतअरुअसतसुभाव ॥ ३० ॥ नाराच-

छंद ॥ नितंबबिंबफूलसेकटिप्रदेशक्षीनहै । विभूतिलूटिलीसबै-सोलोकलाजलीनहै ॥ अमोलऊजरेउदारजंघजुग्मजानिये । म-नोजकेप्रमोदसोंविनोदयंत्रमानिये ॥ ३१ ॥

टी०— रेख कहे लीक अर्थ हृदयमों मदन बस्यौ है ताकी छबि बाहेर काढ़िके देखि परति है कामको रूप श्याम है ॥ २९ ॥ तत्वस्वरूप ॥ त-त्वं स्वरूपे परमात्मनीतिमेदिनी ॥ सत सुभाव पुण्यादि ॥ ३० ॥ नितंब-बिंब कहे नितंबमंडल नितंब स्वरूपइति ॥ बिंबं तु प्रतिबिंबे स्यान्मडले पुं-नपुंसकमितिमेदिनी ॥ फुलसे कहे प्रफुल्लित हैं अर्थ आनंद सहित हैं औ कटिप्रदेश अति क्षीण है सो मानों नितंबन कटिकी विभूति संपति लूटि लीन्ही है तासों आनंदसहित हैं औ कटि लोकके जालसों लीन कहे छपी है ऊजरे (मलरहित) प्रमोदसों कहे प्रसन्नता सहित अर्थ अति प्रशस्त म-नोज जो काम है ताके मानों विनोदयंत्र कहे विनोदके अर्थ यंत्र हैं और यंत्रके बंधनसों आनंद होत है इनके देखतही आनंद होत है ॥ ३१ ॥

मू०— छवानकीछुईनजातिशुभ्रसाधुमाधुरी । विलोकिभूलि भूलिजातिचित्तचालिआतुरी ॥ विशुद्धपादपद्मचारुअंगुलीन-खावली । अलक्तयुक्तमित्रकीसोचित्रबैठकीभली ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ कठिनभूमिअतिकोबरे, जावकयुतशुभपाइ ॥ जनु-मानिकतनत्राणकी, पहिरीतरीबनाइ ॥ ३३ ॥ चौपाई ॥ बर-णबरणअँगियाउरधरे । मदनमनोहरकेमनहरे ॥ अंचलअतिचं-चलरुचिरचैं । लोचनचलजिनकेसँगनचैं ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ नखशिखभूषितभूषणनि, पठिसुवरणमयमंत्र ॥ यौबनश्रीचल-जानिजनु, बांधेरक्षायंत्र ॥ ३५ ॥ चित्रपदाछंद ॥ मोहनश-क्तिनऐसी । मकरध्वजध्वजजैसी ॥ मंत्रबशीकरसाजैं । मोह-नमूरिबिराजैं ॥ ३६ ॥

टी०— छवा कहे एंडी तिनकी शुभ्र कहे मलरहित साधु कहे श्रेष्ठ मा-

धुरी कहे सुंदरता नयननकरि छुई नहीं जाति अर्थ अतीन्द्रिय है अति सुंदरता है इति भावार्थः जिनको बिलोकिके चित्तकी जो आतुरी शीघ्र चालि कहे चालु है सो भूलिजातहै अर्थ चित्त अचल ह्वै जातहै पाद औ अंगुली औ नखावली चित्र विचित्र अलक्त कहे महावरसों युक्त है ते मानों मित्रको कहे मित्र जो स्वामी है ताके मनकी बैठकी हैं इत्यर्थः अथवा मित्र कहे सूर्यकी सूर्य सम नख हैं ॥ ३२ ॥ जानों मानिककी तनत्राणके अर्थ पहिरे हैं इत्यर्थः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ भूषण सुबर्ण मय कहे कंचन मयीहैं औ मंत्रपक्ष सुष्ठु बर्णमय (अक्षर) मय जानों ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

मू०– रूपमालाछन्द ॥ भालमेंभवराखियोशशिकीकलाशुभएक । तोषताउपजावहींमृदुहासचन्दअनेक । मारएकविलोकिकैहरजारिकैकियोछार । नयनकोरचितैकरैपतिचित्तमारअपार ॥ ३७ ॥ चौपाई ॥ कंटकअटकतफटिकटिजात । उड़िउड़िबसनजातबशबात ॥ तऊनतिनकेतनलखिपरे । मणिगणअंगअंगप्रतिधरे ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ उपमागणउपजाइहरि, बगरायेसंसार ॥ तिनकोपरसदरोपमा, रचिराखीकरतार ॥ ॥ ३९ ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांसीतासखीजनबर्णनंनामैकत्रिंशःप्रकाशः ॥ ३१ ॥

टी०– तोषता कहे संतोषके लिये इत्यर्थः नतिबादीसों अधिक को करिये तब संतोष होत है यह प्रसिद्ध है औ महादेव एक मार जाऱ्यौ तालिये नयन कोरसों चितै कै पतिनके चित्तमें अपार मार कहे काम उत्पन्न करती हैं अथवा महादेव कामको एकई मार कऱ्यौ कि जारिहि डाऱ्यौ औ ये काम सरिस जे पति हैं तिनके चित्तमों अपार कहे अनेक विधिको मार (ताड़न) करती हैं ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ हे हरि! कर्ता और उपमा गण उपजाइ कै संसारमें बगरायो (फैलायो) है औ तिन दासिनको परस्पर उपमा कहे एक दासीकी उपमा एकको एककी एकको रचि राख्यौ है और उपमा इनके सादृश्य नहीं है इत्यर्थः ॥ ३९ ॥ इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजान-

कीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां एकत्रिंशत्प्रकाशः ॥ ३१ ॥

मू०-- दोहा ॥ बत्तीसयेंप्रकाशमें, उपबनवर्णनजानि ॥ अरु बहुविधिजलकेलिको, करहुरामसुखदानि ॥ १ ॥ सुन्दरीछंद ॥ अचानकदृष्टिपरेरघुनायक । जानकिकेजियकेसुखदायक ॥ ऐसेचलेसबकेचललोचन । पंकजबातमनोमनरोचन ॥ २ ॥ रामसोंरामप्रियाकह्योयोंहँसि । बागदेखावहुलोकनकोशि ॥ रामबिलोकतबागअनन्तहि । ज्योंअवलोकतकामदसन्तहि ॥ ३ ॥ बोलतमोरतहाँसुखसंयुत । ज्योंबिरदावलिभाटनकेसुत ॥ कोमलकोकिलकेकुलबोलत । ज्ञानकपाटकुचीजनुखोलत ॥ ४ ॥ फूलतजेबहुवृक्षनकोगनु । छोड़तआनँदआँसुनकोजनु ॥ दाडिमकीकलिकामनमोहति । हेमकुपीजनुबन्दनसोहति ॥ ५ ॥ दोहा ॥ मधुबनफूल्योदेखिशुक, बर्णतहैंनिरशंक ॥ सोहतहाटकघटितऋतु, युवतिनकेताटंक ॥ ६ ॥ दोधकछन्द ॥ बेलकेफूललसेंअतिफूले । भौंरभवैंतिनकेरसभूले ॥ योंकरबीरकरीबनराजे । मन्मथबाणनकीगतिसाजे ॥ ७ ॥ केतकपुंजप्रफुल्लितसोहें । भौंरउड़ैंतिनमेंअतिमोहें ॥ श्रीरघुनाथहिंआवतभागे । जेअपलोकहुतेअनुरागे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ श्यामशोणद्युतिफूलकी, फूलेबहुतपलास ॥ जरैकामकेलामनो, मधुऋतुबातविलास ॥ ९ ॥

टी०— ॥ १ ॥ रामचंद्र भूप दुराइके ये छपे जो युवतिनको देखत रहे सो उपवनकी छवि निरखत अचानक सीतादिकनकी दृष्टिमों परे सो रामचंद्रकी ओर सबके चंचल लोचन ऐसे चलत भये जैसे बात कहे बायुसों मनसेचन कहे मनको सुखद पंकज (कमल) चलै ॥ २ ॥ ३ ॥ कुंजीसों मानों ज्ञानके कपाट खोलत हैं ज्ञानिनके कामोडव करि ज्ञानको दूरि क-

रत हैं इत्यर्थः ॥ ४ ॥ बंदन (रोरी) ॥ ५ ॥ मधु जो बसंत है तामें बन जो बाग है ताके मध्य दाड़िमको फूले देखिके शुक निश्शंक वर्णत हैं दाड़िम पदको संबंध इहांऊ है मानों हाटक जो सुवर्ण है तासों घटित कहे रचित षट् ऋतुरूपी जे युबती स्त्री हैं तिनके ताटंक ढार हैं भाषामें ऋतु शब्द स्त्रीलिंग है यथा रसराज काव्ये ॥ आई ऋतु सुरभि सोहाई प्रीति वाके चित्त ऐसे में चलै तौ लाल रावरी बड़ाई है ॥ अथवा ऋतु करिकै घटित बनाये ॥ ६ ॥ बेल कहे बेला करवीर (कनैर) ॥ ७ ॥ केतक कहे केंवराते भ्रमर श्रीरामचंद्रको निकट आवत देखिके भागत भये जे भ्रमर प्राणीमें अपलोक पापके सम केतक पुंजमें अनुरागे हैं जैसे ध्यानमें अथवा साक्षात् रामागमनसों प्राणीके अपलोक दूरिहोत हैं ते केतकके निकट आवत भ्रमर भागत भये इत्यर्थः ॥ ८ ॥ शोण (अरुण) मधु कहे बसंत ऋतुरूपी जो बायु है ताके बिलाससों मानों महादेव करिकै जार्यौ जो काम है ताके केला फेरि जरैं कहे सुपचत हैं ॥ ९ ॥

मू०— तोटकछन्द ॥ बहुचम्पककीकलिकाहुलसी । तिनमें अलिश्यामलज्योतिलसी ॥ उपमाशुकसारिकचित्तधरी । जनुहेमकुपीरससोंधभरी ॥ १० ॥ चौपाई ॥ अलिउड़िधरतमंजरीजाल । देखिलाजसाजतिसबबाल ॥ अलिअलिनीकेदेखतभाई । चुम्बतचतुरमालतीजाई ॥ ११ ॥ अद्भुतगतिसुन्दरीविलोकि । बिहँसतिहैंघूंघुटपटरोकि ॥ गिरतसदाफलश्रीफलओज । जनुधरधरतदेखिवक्षोज ॥ १२ ॥ तारकछन्द ॥ उदरेटरदाड़िमदीहबिचारे । सुदतीनकेशोभनदन्तनिहारे ॥ अतिमंजुलवंजुलकुंजबिराजैं । बहुगुंजनिकेतनपुंजनिसाजैं ॥ नरअन्धभयेदरशेतरुमौरे । तिनकेजनुलोचनहैंयकठौरे ॥ १३ ॥

टी०— हुलसी कहे फूली शृंगाररस सदृश भ्रमर हैं औ सोंध (सुगंध) हैही है चंपक पै भंवर बैठिबेको बर्णन कबि नियम विरुद्ध है परंतु केशव बड़े कवि हैं कछू विचारहीके कह्यो है है तासों दोषनहीं है अथवा गंधही-

न होति है कली तासों कह्यो है ॥ १० ॥ ११ ॥ सदाफल जे श्रीफल विल्व हैं ते गिरत हैं सो मानो तिन स्त्रिनके बक्षोजको ओज कहे प्रताप कांतिको देखिकै भयसों मानों उन्नत आसनको त्याग करि धर (पृथ्वी) को धरत हैं अर्थ नत होत हैं ॥ १२ ॥ दाड़िम फलनके उर पाकि कै उदरे कहे फाटि गये हैं सो मानों सुदती कहे सुन्दर हैं दंत जिनके ऐसी जे सीताकी दासी हैं तिनके सुंदर दंतही निहारिकै स्पर्द्धासों फाटि गये हैं वंजुल (अशोक) गुंजनके तन कहे भ्रमर मौरे कहे बौरे अर्थ अशोक वृक्षनके दरशे नर अंध कहे कामांध भये तिन नरनके मानों लोचनहीं एक ठौरे हैं बौरे अशोक वृक्षनको जिन देख्यो तिनके लोचन तहांई लागि रहे ताहीसों ते अधम भयेहैं इत्यर्थः ॥ १३ ॥

मू०— थलशीतलतमस्वभावनिसाजैं । शशिसूरजकेजनुलोकबिराजैं ॥ जलयंत्रबिराजतभांतिभलीहै । धरतेजलधारअकाशचलीहै ॥ यमुनाजलसूक्ष्मवेषसँवारेउ । जनुचाहतहेरविलोकबिहारेउ ॥ १४ ॥ चंचरीछंद ॥ भांतिभांतिकहोंकहांलगिबाटिकाबहुधाभली । ब्रह्मघोषघनेतहांजनुहैगिरावनकीथली ॥ नीलकंठनचैंबनेजनुजानियेगिरिजाबनी । शोभिजैंबहुधासुगन्धमनोंमलैबनकीधनी ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ करुणामयबहुकामनिफली । जनुकमलाकीबासस्थली ॥ शोभरम्भाशोभासनी । मनोशचीकीआनँदबनी ॥ १६ ॥

टी०— उष्णसमय बैठिबेके जे स्थल हैं ते शीतल सुभावको साजत हैं शीतसमय बैठि कहे तप्त सुभाव साजत हैं शशिको लोक शीतल है सूर्यको तप्त है जलयंत्र (फुहारे) ॥ १४ ॥ बाटिकामें ब्रह्मघोष कहे वेदशब्द (पाठशाला) बनीं हैं तिनमें शिष्य पढ़त हैं अथवा तपस्वी टिके हैं ते वेदपाठ करत हैं अथवा अन्यत्र ऋषिनके आश्रमनमों सिखि कैशुकादि पक्षी वेद इहां आइ पढ़त हैं औ गिरा-(सरस्वती) के उपबनमें ब्रह्माको शब्द नीलकंठ वाटिकामें मोर गिरिजाबनीमें महादेवधनी कहे रानी ॥१५॥

बाटिका करुणा जे वृक्षविशेष हैं तिनसों युक्त हैं औ बहुत जे काम कहे अभिलषित फल हैं तिनसों फली है कमलाकी बासस्थली कैसी है करुणामय जे भगवान हैं तेहैं जहां औ बहुत जे काम्य पदार्थ तिनसों फली युक्तहै अर्थ जहां सब अभिलषित पदार्थ मिलत हैं ॥ कामःस्मरेच्छाकाम्येषु इतिहेमचंद्रः ॥ बाटिका पक्ष रंभा (केरा) आनंद बनी यच्छ अप्सरा ॥१६॥

मू०— कमलछंद ॥ तरुचन्दनउज्ज्वलतातनधरे। लपटीनवनागलतामनहरे ॥ नृपदेखिदिगम्बरबन्दनकरे । चितचंद्रकलाधररूपनिभरे ॥ १७ ॥ अतिउज्ज्वलतासबकालहुबसे। शुककेकिपिकादिककंठहुलसे ॥ रजनीदिनआनँदकंदनिरहे । मुखचंदनकीजनुचंदनिअहे ॥ १८ ॥

टी०— जा बाटिकामों चंदनवृक्ष चिर कहे बहुतकालसों चंद्रकलाधर जे महादेव हैं तिनके रूपनको धरे हैं कैसे हैं चंदनवृक्ष औ महादेव उज्ज्वलता जो श्वेतता है ताको तनमें धारण करे हैं चंदन वृक्षहू श्वेतहै महादेवके अंगऊ श्वेत हैं नागलता कहे नागबेलि औ नाग सर्परूपी लता औ दिगंबर नग्न दुवौ हैं महादेवको ईश्वरतासों औ वृक्षनको अति अद्भुतता सों नृप सब वंदना करत हैं ॥ १७ ॥ फेरि बाटिका कैसी है कि जानो सीताकी दासिनके मुख चंदनकी चांदनी है कैसी है बाटिका औ चांदनी सब कालहूं कहे सब समयमों उज्ज्वलता कहे स्वच्छता औ शुक्लता बसति है कैसीहै बाटिका शुकादि पक्षिनके कंठ कहे शब्द सहित लसति है अर्थ अनेक शुकादि पक्षी जामें बोलतहैं औ चांदनी शुकादिकनके शब्द सरिस जे अनेक विधि परस्पर बोलती हैं तिन सहित है औ रातौ दिन दुवौ आनंदकी कंदनि कहे जर है अर्थ रातौ दिन सुखद है वा चंदकी चांदनी रातिहीको सुखद होति है मुखचंदकी चांदनी रातौ दिन सुख देति है इतिभावार्थः शुक केकि पिकादिकके मुख बसै कहूं यह पाठ है तहांऊ मुख कहे शब्द जानो अर्थ वही है ॥ मुखनिःशरणेवक्रेप्रारंभो पापयोरपि । संध्यंतरेनाटकादिः शब्देपिचनपुंसकमितिमेदिनी ॥ १८ ॥

मू०— तोटकछंद ॥ सबजीवनकोबहुसुक्खजहां । विरहीजनहींकहँदुःखतहां ॥ जहँआगमपौनहिंकोसुनिये । नितहानिअसौंधहिकोगुनिये ॥ १९ ॥ दोहा ॥ तपहीकोताउनजहां, तृषचातककेचित्त ॥ पातफूलफलदलनिको, भ्रमभ्रमरनिकेमित्त ॥ २० ॥ तारकछंद ॥ तिनमेंयकक्त्तिमपर्बतराजै । मृगपक्षिनकीसबशोभहिसाजै ॥ बहुभांतिसुगंधमलयगिरिमानों । कलधौतस्वरूपसुमेरुबखानों ॥ २१ ॥ अतिशीतलशंकरकोगिरिजैसो । शुभश्वेतलसैउदयाचलऐसो ॥ द्युतिसागरमेंमैनाकुमनोहै । अजलोकमनोंअजलोकबनोहै ॥ २२ ॥ तोटकछंद ॥ सरितातिनतेशुभतीनिचली । सिगरीसरितानकीशोभदली ॥ यकचंदनकेजलउज्ज्वलहै । जगजन्हुसुताशुभशीलगहै ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ सुरगजकीभारगछबिछायो । जनुदिबितेभूतलपरआयो ॥ जनुधरणीमेंलसतिबिशाल । त्रुटितजुहीकीघनवनमाल ॥ २४ ॥ दोहा ॥ तज्योनभावैएकपल, केशवसुखदसमीप ॥ जासोंसोहततिलकसो, दीन्हेंजंबूदीप ॥ ॥ २५ ॥ दोधकछंद ॥ एणनकेमदकेजनुदूजी । हैयमुनाद्युतिकैजनुपूजी ॥ धारमनोंरसराजबिशाला । पंकजजालमईजनुमाला ॥ २६ ॥ दोहा ॥ दुखखंडनतरवारिसी, किधौंशृंखलाचारु ॥ क्रीडागिरिमातंगकी, यहैकहैसंसारु ॥ २७ ॥ क्रीड़ागिरितेअलिनकी, अवलीचलीप्रकाश ॥ किधौंप्रतापानलनकी, पदवीकेशवदास ॥ २८ ॥ दोधकछंद ॥ औरनदीजलकुंकुमसोहै । शुद्धगिरामनमानहुंमोहै ॥ कंचनकेउपबीतहिंसाजै । ब्राह्मणसोंयहखंडबिराजै ॥ २९ ॥

टी०— सब जीवनको असौंध (दुर्गंध) ॥ १९ ॥ पात कहे पतन ॥

॥ २० ॥ कृत्तिम कहे बनायो कलधौत स्वरूप कहे सुबर्णमय है अर्थ सुवर्णहीको बन्यौ है ॥ २१ ॥ मैनाक सागरमें है यह द्युति शोभारूपी सागरमें है अज जे दशरथके पिता हैं तिनके लोकमें मानों अज जे ब्रह्मा हैं तिनको लोक ब्रह्मलोक बन्यौ है ॥ २२ ॥ शील कहे स्वभाव ताप दूरि करणादि ॥ २३ ॥ सुरगज ऐरावतकी राह आकाशमों रात्रिके उवति है प्रसिद्ध है जुही कहे जाही जूही पुष्प बिशेष हैं ॥ २४ ॥ तिलकसों अर्थ राज्याभिषेक तिलकसों ॥ २५ ॥ एणनको मद (कस्तूरी) पूजी कहे पूरित अर्थ मानों यामें यमुनाकी शोभा आइ बसी है रसराज शृंगाररस पंकज इहां श्याम कमल जानो ॥ २६ ॥ क्रीड़ा गिरि रूपी जो मातंग है ताकी शृंखला छुद्रघंटिका है अथवा आंदू है ॥ २७ ॥ किधौं रघुबंशिनके इति शेषः प्रतापाग्निकी पदवी राह है अग्निकी राह श्याम होती है ॥ २८ ॥ २९ ॥

मू०— स्वागताछन्द ॥ लौंगफूलमयसेवटिलेखी । एलबीजबहुबालकदेखी ॥ केरिफूलदलनावनमाहीं । श्रीसुगन्धतहँहैबहुधाहीं ॥ ३० ॥ दोहा ॥ खेवतमत्तमलाहअलि, कोबरणैवहज्योति ॥ तीन्योसरितामिलितजहँ, तहाँत्रिवेणीहोति ॥ ३१ ॥ सीताश्रीरघुनाथजू, देखीश्रमितशरीर ॥ द्रुमअवलोकनछोडिकै, गयेजलाशयतीर ॥ ३२ ॥ चौपाई ॥ आईकमलबाससुखदेन । मुखबासनआगेहैलेन ॥ देख्योजाइजलाशयचारु । शीतलसुखदसुगन्धअपारु ॥ ३३ ॥ मरहट्टाछन्द ॥ बनश्रीकोदर्पनचन्द्रातपजनुकिधौंशरदआवास । मुनिजनगणमनसोंविरहीजनसोंबिशवलयानिविलास ॥ प्रतिबिम्बितथिरचरजीवमनोहरमनुहरिउदरअनन्त । बन्धुनयुतसोहैत्रिभुवनमोहैमानोंबालियशवन्त ॥ ३४ ॥

टी०— नदिनमें सेवटि परि जाति है कहूं सेवटा करि प्रसिद्ध है एला (इलायची) केरि कहे केराके फूलके जे दल (पत्र) हैं तेई नाव हैं ति-

नमें सुगंध जो है सोई श्री कहे बाणिज्य द्रव्य है ॥ ३० ॥ ३१ ॥ जलाशय (तड़ाग) ॥ ३२ ॥ जब कोऊ बड़ो आपने इहां आवत है ताको आगे चलिके लेबो उचित है ॥ ३३ ॥ बनकी जो श्री (लक्ष्मी) है ताको दर्पण है कि चन्द्रातप कहे चांदनी है कि शरद ऋतुको आबास घर है मुनिजनके मनसम विमल है इत्यर्थः ॥ तड़ागविशे जो कमलकी जर है ताके वलय समूह युक्तहै औ विरही शीतलताके लिये अनेक कमल जर धारण करे हैं हरिके उदरहूमें चौदहो लोक बसत हैं तड़ाग पाषणादिसों बांध्यौ है वलिको बामन बांध्यौ है ॥ ३४ ॥

मू०— चौपाई ॥ विषमैयहसबसुखकोधाम । शम्बररूपबढ़ावैकाम ॥ कमलनमध्यभ्रभरसुखदेत । सन्तहृदयजनुहरिहिसमेत ॥ ३५ ॥ बीचबीचसोहैंजलजात । तिनतेअलिकुलउड़िउड़िजात ॥ सन्तहियनसोमानहुंभाजि । चञ्चलचलीअशुभकीराजि ॥ ३६ ॥ दण्डक ॥ एकदमयन्तीऐसीहरैहँसिहंसबंशएकहंसिनीसीबिशहारहियेरोहिये । भूषणगिरतएकैलेतीबूड़िबूड़िबीचमीनगतिलीनहीउपमानटोहिये । एकपतिकण्ठलागिलागिबूड़िबूड़िजातिजलदेवतासीहगदेवताविमोहिये । केशवदासआसपासभँवरभँवतजलकेलिमेंजलजमुखीजलजसीसोहिये ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ क्रीड़ासरवरमेंनृपति, कीनीबहुविधिकेलि ॥ निकसेतरुणिसमेतजनु, सूरजकिरणसकेलि ॥ ३८ ॥ हाकलिकाछन्द ॥ नीरनितेनिकसींतियसबै । सोहतिहैंबिनभूषणतबै ॥ चन्दनचित्रकपोलननहीं । पङ्कजकेशरशोभततहीं ॥ ३९ ॥

टी०— द्वै चरणमें विरोधाभास है विषजल शंबररूप कहे शंवर जो मत्स्यभेद है तन्मय है अर्थ अति शंबर मत्स्य युक्त है । शंबरोदैत्यहरिण मत्स्यशैलजिनांतरे इतिमेदिनी ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ हरैं कहे गहि लेती हैं दमयंतीहू राजा नलको पठायो जो हंस है ताको गहि लियो है हंसहू पौना-

रीको काढ़ि गेरमें डारि लेत है ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ तही अर्थ कपोलनमें लगे कमलनके केशर (किंजल्क) सोहत हैं ॥ ३९ ॥

मू०- मोतिनकीबिथुरीशुभछटैं । हैंउरझीउरजातनलटैं ॥ हासशृँगारलतामनुबनी । भेंटतिकल्पलताहितघनी ॥ ४० ॥ केशनिओरनिसीकररमैं । ऋक्षनकोतमयीजनुबमैं ॥ सज्जलअम्बरछोड़तबने । छूटतहैंजलकेकणघने ॥ भोगभलेतिनसोंमिलिकरे । बिछुरतजानितेरोवतखरे ॥ ४१ ॥ भूषणजेजलमध्यहिंरहे । तेबनपालबधूटिनलहे ॥ भूषणवस्त्रजबैसाजिलये । चारिहुद्वारनदुन्दुभिभये ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ गूंगेकुब्जेबावरे, बहिरबामनवृद्ध ॥ यानलयेजनआइगे, खोरखंजप्रसिद्ध ॥ ४३ ॥ चौपाई ॥ सुखदसुखासनबहुपालकी । फीरकबाहिनिसुखचालकी ॥ एकनजोतेहयसीहिये । वृषभकुरङ्गअङ्गमोहिये ॥ तिनचढ़िराजलोकसबचल्यो । नगरनिकटशोभाफलफल्यो ॥४४॥

टी०- हासरस लता सम मोतिनकी लरें हैं शृंगार रस लता सम लटैं हैं कल्पलता सम स्त्री हैं ॥ ४० ॥ केशनके ओरन कहे अंतमें सीकर जे अंबुकण हैं ते रमे कहे शोभित हैं ऋक्ष (नक्षत्र) ॥ ४१ ॥ वाटिकाके चारिहू द्वारनमें कूचके नगारे भये इत्यर्थः ॥ ४२ ॥ स्त्रीजनके निकट ऐसेही जन चाहिये जिनपै स्त्रीजन प्रीति न करैं ॥ ४३ ॥ सुखासन कहे कोमल बिछावने युक्त फिरक बाहिनी (सेजगाड़ी) एकन फिरक वाहिनीनमें जोते हय शोभित हैं एकनमें वृषभ शोभित हैं ते आपने अंगन करि कुरंग अंगनको मोहत हैं अर्थ अति चंचल हैं ॥ ४४ ॥

मू०- मणिमयकनकजालिकाघनी ॥ मोतिनकीझालरिअतिबनी ॥ घण्टाबाजतचहुंदिशिभले । रामचन्द्रत्यहिगजचढ़िचले ॥ चपलाचमकतचारुअगूढ़ । मनहुंमेघमघवाआरूढ़ ॥ ४५ ॥ आसपासनरदेवअपार । पाँइपियादेराजकुमार ॥ ब-

न्दीजनयशपढ़तअपार । यहिविधिगयेराजदरबार ॥ ४६ ॥
विजयाछन्द ॥ भूषितदेहविभूतिदिगम्बरनाहिंनअम्बरअंगन-
वीने । दूरिकैसुन्दरसुन्दरिकेशवदौरिदरीनमेआसनकीने ॥ दे-
खियेमण्डितदण्डनसोंभुजदण्डदुवौअसिदण्डविहीने । राजनश्री
रघुनाथकेबैरकुमण्डलछोड़िकमण्डललीने ॥ ४७ ॥ दोहा ॥
कमलकुलनमेंजातज्यों, भँवरभयोरसचित्र ॥ राजलोकमेंत्यों-
गये, रामचन्द्रजगमित्र ॥ ४८ ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोच-
नचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायां
वनविहारवर्णनंनामद्वात्रिंशःप्रकाशः ॥ ३२ ॥

टी०– हौदामें मणिमयी कनकजालिका (झांझरी) घनी हैं इत्यर्थः ॥
अथवा झालरिकी जारी मणिमयी कनककी घनी बनी हैं अगूढ़ (प्रसिद्ध)
॥ ४५ ॥ ४६ ॥ असिदंड (तरवारि) कुमंडल (पृथ्वीमंडल) ॥ ४७ ॥
॥ ४८ ॥ इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकी-
प्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायां द्वात्रिंशत्प्रकाशः ॥ ३२ ॥

मू०– दोहा ॥ त्रयतीसयेंप्रकाशमें, ब्रह्माविनयबखानि ॥
शम्बुकवधसियत्यागअरु, कुशलवजन्मसोजानि ॥ १ ॥

टी०– शंबुक नामा (शूद्र) ॥ १ ॥

मू०– त्रिभंगीछंद ॥ दुर्जनदलघायकश्रीरघुनायकसुखदाय-
कत्रिभुवनशाशन । सोहैंसिंहासनप्रभाप्रकाशनकर्मबिनाशनदुख
नाशन ॥ सुग्रीवबिभीषनसुजनबंधुजनसहिततपोधनभूपतिग-
न । आयेसँगमुनिजनसकलदेवगनमृगतपकाननचतुरानन ॥२॥
तोटकछंद ॥ उठिआरदसोंअकुलाइलयो । अतिपूजनकैबहुधा-
बिनयो ॥ सुखदायकआसनशोभरये । सबकोसोयथाबिधिआ-
निदये ॥ ३ ॥ दोहा ॥ सबनपरस्परबूझियो, कुशलप्रश्नसुख-
पाइ ॥ चतुराननबोलेबचन, श्लाघाबिनयबनाय ॥ ४ ॥ ब्र-

ह्मा–मनोरमाछंद ॥ मुनियेचितदैजगकेप्रतिपालक ॥ । सबकेगुरुहौहरियद्यपिबालक ॥ सबकोसबभाइसदासुखदायक । गुणगावतवेदमनोबचकायक ॥ ५ ॥

टी०– त्रिभुवनके शासन कहे शिक्षक पाप पुण्य कर्मको नाशकै आपने धाम पठावत हैं इत्यर्थः ॥ तपरूपी जो कानन बन है ताके मृग कहे अरण्य पशु जैसे अरण्यको मृग अवगाहन करत है तैसे अनेक तपस्याके अवगाहन कर्त्ता इत्यर्थः ॥ २ ॥ आनि कहे मंगाइके ॥ ३ ॥ श्लाघा (स्तुति) ॥ ४ ॥ ५ ॥

मू०– तुमलोकरचेबहुधारुचिकैतब । मुनियेप्रभुऊजरहैंसिगरेअब ॥ जगकोऊनभूलिहूजाइनिरयमग । मिटिगेसबपापनपुण्यनकेनग ॥ ६ ॥ दोहा ॥ बरुणपुरीधनपतिपुरी, सुरपतिपुरसुखदानि ॥ सप्तलोकबैकुंठसब, बस्यौअवधमेंआनि ॥ ७ ॥ तोमरछंद ॥ हंसियोंकह्योरघुनाथ। समुझिसबैबिधिगाथ॥ ममइच्छएकसुजानि । कबहूंनहोइसुआनि ॥ ८ ॥ तवपुत्रजेसनकादि । ममभक्तजानहुआदि ॥ सुतमानसिकतिनकेति । भुवदेवभुवप्रगटेति ॥ ९ ॥ हमदियोतिनशुभठांउं । कछुऔरदीबेगांउं ॥ अबदेहिहमकोहिठौर । तुमकहौसुरशिरमौर ॥१०॥ ब्रह्मामरहट्टाछंद ॥ सबवैमुनिरूरेतपबलपूरेबिदितसनाढयसुजाति । बहुधाबहुवारानिप्रतिअवतारानिदेआयेबहुभांति ॥ मुनिप्रभुआखंडलमथुरामंडलमैंदीजैशुभग्राम । बाढ़ैबहुकीरतिलवणासुरहतिअतिअजेयसंग्राम ॥ ११ ॥ दोहा ॥ जिनकेपूजेतुमभये, अंतरयामीआप ॥ तिनकीबातहमेंकहा, पूछतत्रिभुवनदीप ॥ १२ ॥ द्विजआयोताहीसमै, मृतकपुत्रकेसाथ ॥ करतबिलापकलापहा, रामचंद्ररघुनाथ ॥ १३ ॥ मल्लिकाछंद ॥ बालकैमृतैसोदेखि । धर्मराजसोंबिशेखि ॥ बातयोंकहीनिहा-

रि । कर्मकौनकोबिचारि ॥ १४ ॥ धर्मराज मनोरमाछंद ॥ निजमूदनकीतपसाशिशुघालक । बहुधाभुवदेवनकेसबबालक । करिबेगिबिदासिगरसुरनायक । चढ़िपुष्पकआशुचलेरघुनायक ॥ १५ ॥

टी०— नग (पर्वत) ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ आखंडल (इन्द्र) ॥ ११ ॥ श्रीपति कहे लक्ष्मीपति ॥ १२ ॥ कलाप कहे समूह ॥ १३ ॥ धर्मराज (न्यायदर्शी) अथवा यमराज ॥ १४ ॥ १५ ॥

मू०— दोधकछंद ॥ रामचलेसुनिशूदकीगीता । पंकजयोनिगयेजहंसीता ॥ देखिलगीपगरामकीरानी । पूजिकैबूझतिकोमलबानी ॥ १६ ॥ सीता ॥ कौनहुंपूरबपुण्यहमारे । आजुफलेजोइहाँपगुधारे ॥ ब्रह्मा ॥ देवनकोसबकारजकीन्हों । रावणमारिबडोयशलीन्हों ॥ १७ ॥ मैबिनतीबहुभांतिनकीनी । लोकनकीकरुणारसभीनी ॥ ऊतरुमोहिंदियोसुनिसीता । जाकिनजानिपरैजियगीता ॥ १८ ॥ मांगतहौंबरमोकहंदीजै । चित्तमेंऔरबिचारनकीजै ॥ आजुतेचालचलौतुमऐसे । रामचलैंबैकुंठहिजैसे ॥ १९ ॥ सीयजहींकछुनैननवाये । ब्रह्मतहींनिजलोकसिधाये ॥ रामतहींशिरशूद्रकोखंड्यो । ब्राह्मणकोसुतजीवनमंड्यो ॥ २० ॥ सुन्दरीछंद ॥ एकसमयरघुनाथमहामति । सीतहिंदेखिसगर्भबढीरति ॥ सुन्दरिमांगुजोजीमहंभावत । मोमनतोनिरखेंसुखपावत ॥ २१ ॥ सीता ॥ जोतुमहोतप्रसन्नमहामति । मेरेबढैतुमहींसोंसदारति ॥ अंतरकीसबबातनिरंतर । जानतहौसबकीसबतेपर ॥ २२ ॥ दोहा ॥ राम ॥ निर्गुणतेसगुनाभयो, सुनुसुंदरितवहेत ॥ औरकछूमांगौसुमुखि, रुचैजोतुह्मरेचेत ॥ २३ ॥

टी०—॥१६॥ द्वै छंद को अन्वय एक है उत्तरु कहे जवाब दियो अर्थ वैकुंठ

चलिबेको न कह्यौ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ नयन नवायेते ब्रह्माको कह्यौ अंगीकार कर्‌यो जानो ॥ २० ॥ यह कह्यौ इतिशेषः ॥ २१ ॥ हमारे तुमहींसों सदा रति (प्रीति) बढ़े यह बर हमको दीजै इत्यर्थः ॥२२॥२३॥

मू०– सीताजू-सुन्दरीछंद ॥ जोसबतेहितमोकहंकीजत । इशदयाकरिकैबरुदीजत ॥ हैंजितनेऋषिदेवनदीतट । हौंतिनकोपहिरायफिरौंपट ॥ २४ ॥ राम–दोहा ॥ प्रथमदोहदेक्यों करौं, निष्फलसुनियहबात ॥ पटपहिरावनऋषिनको, जैयोसुन्दरिप्रात ॥ २५ ॥ सुन्दरीछंद ॥ भोजनकैतबश्रीरघुनंदन । पौढ़िरहेबहुदुष्टनिकंदन ॥ बाजेबजेअधरातभईजब । दूतनआइप्रणामकरीतब ॥ २६ ॥ चंचलाछंद ॥ दूतभूतभावनाकहीकहीनजायबैन । कोटिधाबिचारियोपरैकछूबिचारमैंन ॥ शूरकेउदोतहोतबंधुआइयोसुजान । रामचंद्रदेखियोप्रभातचंद्रकेसमान ॥ २७ संयुताछंद ॥ बहुभांतिबंदनताकरी । हँसिबोलियोनदयाधरी ॥ हमतेकछूद्विजदोषहै । जेहितेकियोप्रभुरोषहै ॥ २८ ॥ दोहा ॥ मनसाबाचाकर्मणा, हमसेवकसुनुतात । कौनदोषनहिंबोलियतु, ज्योंकहिआयेबात ॥ २९ ॥

टी०– देवनदी (गंगा) ॥ २४ ॥ दोहद कहे गर्भ ॥ २५ ॥ २६ ॥ यामें केशव कहत है कि दूतकी कही जो भूत कहे ब्यतीत भावना कहे क्रिया है रजक बचनादि कथा सो कहिबेको हम कोटि प्रकारसों बिचार्‌यौ कछू बिचारमें नहीं परत तासों बैनसों हमसों नहीं कही जाति इत्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥

मू०– राम– संयुताछंद ॥ कहियेकहानकहीपरै । कहियेतौज्योंबहुतैउरै ॥ तबदूतबातसबैकही । बहुभांतिदेहदशादही ॥ ३० ॥ भरत– दोहा ॥ सदाशुद्धअतिजानकी,

ज्योंखलजाल ॥ जैसेश्रुतिहिसुभावही, पाखण्डीसबकाल ॥ ३१ ॥ भवअपवादनितेतज्यो, ज्योंचाहतसीताहि ॥ ज्योंजगकेसंयोगते, योगीजनसमताहि ॥ ३२ ॥ झूलनाछंद ॥ मनमानिकैअतिशुद्धसीतहिंआनियोनिजधाम । अवलोकिपावकअङ्क ज्योंरविअंकपङ्कजदाम ॥ क्यहिभांतिताहिनिकारिहौअपवाद बादिबखानि । शिवब्रह्मधर्मसमेतश्रीपितुसाखिबोल्यहुआनि ॥ ३३ ॥ यमनादिकेअपवादक्योंद्विजछोड़िहैकपिलाहि । विरहीनकोदुखदेतक्योंहरडारिचन्द्रकलाहि ॥ यहहैअसत्यजोहोइगोअपवादसत्यसुनाथ । प्रभुछोड़िशुद्धसुधानपीवहुआपनेविषहाथ ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ प्रियपावनिप्रियबादिनी, पतिब्रता अतिशुद्ध ॥ जगकोगुरुअरुगुर्विणी, छांड़तवेदबिरुद्ध ॥३५॥ वेमातावेसेपिता तुमसोंभैयापाइ ॥ भरतभयेअपवादको, भाजनभूतलआइ ॥ ३६ ॥

टी०– ॥ ३० ॥ पाखंडी (नास्तिक) ॥ ३१ ॥ अपवाद (निंदा) समताको लक्षण पचीसयें प्रकाशमें कह्यो है ॥ ३२ ॥ दाम (जेवरी) बादि (वृथा) ॥ ३३ ॥ यह जो ब्रह्मादिकनकी साक्षी है सोई जो असत्य है तो हेनाथ! रजक कृत यह अपवाद कैसे सत्य ह्वै है इत्यर्थः सुधा सम ब्रह्मादिकनकी साक्षी है विषसम रजकको अपवाद है ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

मू०– राम–हरिलीलाछन्द ॥ सांचीकहीभरतबातसबैसुजान । सीतासदापरमशुद्धकृपानिधान ॥ मेरीकछूअबहिंइच्छयहैसोहेरि । मोकोहतौबहुरिबातकहौजोफेरि ॥ ३७ ॥ लक्ष्मण–दोधकछन्द ॥ दूषतजैनसदाशुभगंगा । छोड़हुगेबहुतुंग तरंगा ॥ मायहिनिन्दतहैंसबयोगी । क्योंतजिहैंभवभूपतिभोगी ॥ ३८ ॥ ग्यारसिनिन्दतहैमठधारी ॥ भावतिहैहरिभक्तनि भारी ॥ निन्दतहैंतवनामनिबामी । काकहियेतुमअन्तर्यामी

॥ ३९ ॥ दोहा ॥ तुलसीकोमानतप्रिया,गौतमतियअतिअज्ञ। सीताकोछोड़नकहौ,कैसेकैसबज्ञ ॥ ४० ॥ शत्रुघ्न—रूपमाला-छन्द ॥ स्वप्नहूनहिंछोड़ियेतियगुर्बिणीपलदोइ । छोड़ियोत-बशुद्धसीताहिंगर्भमोचनहोइ ॥ पुत्रहोइकिपुत्रिकायहबातजा-निनजाइ । लोकलोकनमेंअलोकनलीजियेरघुराइ ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ रामचन्द्रजगचन्द्रतुम,फलदलफूलसमेत ॥ सीतायाबनपद्मिनी,न्यायनहींदुखदेत ॥ ४२ ॥

टी०— फेरि कहे पलटिके ॥ ३७ ॥ जैन (नास्तिक) ॥ ३८ ॥ ग्यारसि (एकादशी) बामी (बाम मार्गी) ॥ ३९ ॥ ४० ॥ अलोक (निंदा) ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

मू०— घरघरप्रतिसबजगसुखीरामतुह्मारेराज ॥ अपनेहिघर करतकतशोकअशोकसमाज ॥ ४३ ॥ राम—तोटकछन्द ॥ तुम बालकहौबहुधासबमें । प्रतिउत्तरदेहुनफेरिहमें ॥ जोकहेंहमबात सोजाइकरौ । मनमध्यनऔरबिचारधरौ ॥ ४४ ॥ दोहा— औरहो इतौजानिजै, प्रभुसोंकहाबसाइ ॥ यहबिचारिकैशत्रुहा, भरत उठेअकुलाइ ॥ ४५ ॥ राम— दोधकछन्द ॥ सीतहिलैअबस-त्वरजैये । राखिमहाबनमेंपुनिऐये ॥ लक्ष्मणजोफिरिउत्तरदे-हौ । शासनभंगकोपातकपैहौ ॥ ४६ ॥ लक्ष्मणलैबनसीतहिं धाये । स्थावरजंगमहूंदुखपाये ॥ गंगहिंदेखिकह्योयहसीता । श्रीरघुनायककीजनुगीता ॥ ४७ ॥

टी०— अशोक जो आनंद है ताके समाज कहे समूहमें ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ जानिजै अर्थ दोष अदोषको निर्णय समुझिये ॥ ४५ ॥ शासन (आज्ञा) राजाको आज्ञाभंग बधके सम होतहै यथा । माधवानल नाटके ॥ आज्ञाभं-गोनरेंद्राणांविप्राणांमानखंडनं । पृथक्शय्यावरस्त्रीणामशस्त्रवधउच्यते ॥४६॥ सीताको लैकै लक्ष्मण बनहूंको गये तहांपर्यंत कहूं कौशल्या वशिष्ठादि-

के वचन नहीं हैं सो ऋष्यशृंग ऋषिके यज्ञ रह्यौ तहा कौशल्यादि माता औ अरुंधती सहित बशिष्ठ सब निमंत्रनमें गये रहैं यह कथा उत्तर रामचरित्र नाटकमो लिख्यौ है सो जानौ ॥ ४७ ॥

मू०— पारभयेजबहींजनदोऊ । भीमबनीजनजन्तुनकोऊ ॥ निर्ज्जलनिर्ज्जनकाननदेख्यो । भूतपिशाचनकोघरलेख्यो ॥ ॥ ४८ ॥ सीताजू—नगस्वरूपिणीछन्द ॥ सुनौंनज्ञानकारिका । शुकीपढ़ैंनसारिका ॥ नहोमधूमदेखिये । सुगन्धबन्धुलेखिये ॥ ४९ ॥ सुनोंनवेदकीगिरा । नबुद्धिहोतिहैथिरा ॥ ऋषीनकीकुटीकहाँ । पतिब्रताबसैंजहाँ ॥ ५० ॥ मिलैनकोउवेकहूं । नआवतेनजातहूं ॥ चलेहमैंकहाँलिये । डयरातिहैंमहाहिये ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ सुनिसुनिलक्ष्मणभीतअति,सीताजूकेबैन ॥ उत्तरमुखआयोनहीं, जलभरिआयेनैन ॥ ५२ ॥ नाराचछन्द ॥ विलोकिलक्ष्मणैभईबिदेहजाबिदेहसी । गिरीअचेतह्वैमनोघनैबनैतड़ीतसी ॥ करउजुछाँहएककहाथएकबातबाससों । सिच्योंशरीरबीरनयननीरहींप्रकाशसों ॥ ५३ ॥

टी०-- जन कहे मनुष्य जंतु कहे जीव अर्थ मनुष्य जीव केवल बनजीवही देखि परतहैं इतिभावार्थः ॥ ४८ ॥ सुगंधको बंधु कहे हित अर्थ सुगंधयुक्त होम धूम नहीं देखियत अथवा सुगंध बंधु कहे दुर्गंध कहूं सुगधबंध पाठ है तहां अर्थ सुगंधकी बंध कहे बंधन है यामें ऐसो होमधूम नहीं देखियत ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ मानों घनैबनै कहे घन वनको देखि तड़ित जो बीजुरी है सोई त्रसी कहे डरी है सो डरिकै अचेत ह्वै गिरिपरी है इत्यर्थः कहूं घने घने तड़ी त्रसी पाठ है अर्थ मानों घने जे घन मेघ हैं ॥ ५३ ॥

मू०— रूपमालाछंद ॥ रामकीजपासिद्धिसीसियकोचलेबन छांड़ि । छांहएकफनीकरीफनदीहमालनिमांड़ि ॥ वालमीकि बिलोकियोवनदेवताजनुजानि । कल्पवृक्षलताकिधौंदिवि ते

गिरीधुवआनि ॥ ५४ ॥ सींचिमंत्रसजीवजीवनजीउठीतेहि-काल । पूंछियोमुनिकौनकीहुहिताबहूअरुबाल ॥ सीताजू ॥ हौंसुतामिथिलेशकीदशरत्थपुत्रकलत्र । कौनदोषतजीनजान-तिकौनआपुनअत्र ॥५५॥ मुनि ॥ पुत्रिकेसुनि मोहिंजानहिबा-ल्मीकिद्विजाति । सर्वथामिथिलेशकोगुरुसर्वदाशुभभांति ॥ होहिंगेसुतद्वैसुधीपगुधारियेममओक । रामचन्द्रक्षितीशकेसुत जानिहैंतिहुंलोक ॥ ५६ ॥ सर्वथागुणिशुद्धसीतहिंलैगयेमुनि-राइ । आपनीतपसानकीशुभसिद्धिसीसुखपाइ ॥ पुत्रद्वैभयेए-कश्रीकुशदूसरोलवजानि । जातकर्महिआदिदैकियवेदभेदव-खानि ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ वेदपढ़ायोप्रथमहीं, धनुर्वेदसबिशे-ष । अस्त्रशस्त्रदीन्हेघने, दीन्हेमंत्रअशेष ॥ ५८ ॥ इतिश्रीमत्स-कललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्र-जिद्विरचितायांजानकीत्यागवर्णनंनामत्रयस्त्रिंशत्प्रकाशः ॥३३॥

टी०– तिनमें त्रसी कहे डेरानी तड़ी अचेत ह्वै गिरी है मेघ सम बन है बिजुरी सम सीता हैं ॥ ५४ ॥ सजीव मंत्र सों जीवन जल सींच्यो तब सीताजी उठीं अत्र कहे या स्थानमेंआपनो कौन दोष है जासों मोकोतजी यह हौं नही जानति इत्यर्थः ॥ ५५ ॥ ओक कहे घर ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकी प्रसादनिर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायांत्रयस्त्रिंशत्प्रकाशः ॥ ३३ ॥

मू०– दोहा ॥ आयोश्वानफिरयादिको, चौंतीसयेंप्रकाश ॥ अरुसनाढ्यद्विजआगमन, लवणासुरकोनाश ॥ १॥ दोधक-छंद ॥ एकसमयहरिधर्मसभामें । बैठेहुतेनरदेवप्रभामें ॥ संग सबैऋषिराजविराजें । सोदरमंत्रिनमित्रनसाजें ॥ २ ॥ कूकर एकफिरयादिहिआयो । दुंदुभिधर्मदुवारबजायो ॥ बाजतहीं उठिलक्ष्मणधाये । श्वानहिंकारणबूझनआये ॥ ३ ॥ कूकुरु ॥

काहुकेक्रोधविरोधनदेखो । रामकोराजतपोमयलेखो ॥ तामहँ मैंदुखदीरघपायों । रामहिंहौंसोनिवेदनआयो ॥ ४ ॥ लक्ष्मण ॥ धर्मसभामहँरामहिंजानो । श्वानचलोनिजपीरबखानो ॥ श्वान। हौंअबराजसभानहिँआऊं । आऊंतोकेशवशोभनपाऊं ॥ ॥ ५ ॥ दोहा ॥ देवअदेवनृदेवघर, पावनथलसुखदाइ । बिनबोलेआनंदमति, कुत्सितजीवनजाइ ॥ ६ ॥

टी०– धर्मसभा (न्यायसभा) ॥ २ ॥ ३ ॥ निवेदन (कहन) ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

मू०– दोधकछंद ॥ राजसभामहँश्वानबोलायो । रामहिंदेखतहीशिरनायो ॥ रामकह्योजोकछूदुखतेरे । श्वाननिशंककहौ पुरमेरे ॥ ७ ॥ श्वान–तारकछंद ॥ तुमहौसर्वज्ञसदासुखदाई । अरुहौसबकोसमरूपसदाई ॥ जगसोवतहैजगतीपतिजागे । अपनेअपनेसबमारगलागे ॥ ८ ॥ नरदेवनपायँपरैपरजाको । निशिबासरहोइनरक्षकताको ॥ गुणदोषनकोजबहोइनदर्शी । तबहींनृपहोइनिरयपदपर्शी ॥ ९ ॥ दोहा ॥ निजस्वारथहीसिद्धिद्विज, मोंकोकन्योप्रहार ॥ बिनअपराधअगाधमति, ताकोकहाबिचार ॥ १० ॥ तारकछंद ॥ तबताकहँलेनतहींजन धाये । तबहींनगरीमहँतेगहिल्याये ॥ राम ॥ यहकूकरक्योंबिनदोषहिमारयो । अपनेजियत्रासकछूनबिचाऱ्यो ॥ ११ ॥ ब्राह्मण–दोहा ॥ यहसोवतहैपंथमें, हौंभोजनकोजात ॥ मैंअकुलाइअगाधमति, याकोकीन्हौंघात ॥ १२ ॥ राम-स्वागताछंद ॥ ब्रह्मब्रह्मऋषिराजबखानो । धर्मकर्मबहुधातुमजानो ॥ कौनदंडद्विजकोद्विजदीजै । चित्तचेतिकहियेसोइकीजै ॥ १३ ॥

टी०– पुर कहे (अयोध्या) ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ हे ब्रह्म ! ऋषिराज ! जो वेद वदैहै ताके मतसों बखानौ (कहौ) ॥ १३ ॥

मू०- कश्यप ॥ हैअदण्डयभुवदेवसदाई । यत्रतत्रसुनिये रघुराई ॥ ईशशीषअबयाकहँदीजै । चूकहीनअरिकोउनकीजै ॥ ॥ १४ ॥ राम-तोमरछंद ॥ सुनिश्वानकहितूदंड । हमदेहियाहिअखंड ॥ कहिबाततूडरडारि । जियमध्यआपुबिचारि ॥ ॥ १५ ॥ श्वान-दोहा ॥ मेरोभायोकरहुजो, रामचन्द्रहितमंडि । कीजैद्विजयहिमठपती, औरदंडसबछंडि ॥ १६ ॥ निशिपालिकाछंद ॥ पीतपहिराइपटबांधिशिरसोंपटी । बोरिअनुरागअरुजोरिबहुधागटी ॥ पूजिपरिपायँमठताहितबहींदियो । मत्तगजराजचढ़िविप्रमठकोगयो ॥ १७ ॥ दोहा ॥ भयोरंकतेराजद्विज, श्वानकीनकरतार । भोगनलाग्योंभोगवै, दुंदुभिबाजतद्वार ॥ १८ ॥ सुंदरीछंद ॥ बूझतलोगसभामहँश्वानहिं । जानतनाहिंनयापरिमानहि ॥ बिप्रहितैंजोदइपदवीवह । हैयहनिग्रहकैधौंअनुग्रह ॥ १९ ॥ श्वान-दोधकछंद ॥ एककनौजहुतो मठधारी । देवचतुर्भुजकोअधिकारी ॥ मन्दिरकोउबड़ोजबआवै । अंगभलीरचनानिबनावै ॥ २० ॥ जादिनकेशवकोउन आवै । तादिनपालिकतेनउठावै ॥ भेटनिलैबहुधाधनकीनो । नित्यकैरबहुभोगनवीनो ॥ २१ ॥ एकदिनायकपाहुनआयो । भोजनतौबहुभांतिबनायो ॥ ताहिपरोसनकोपितुमेरो । बोलिलियोहितहौंसबकेरो ॥ २२ ॥ ताहितहाँबहुभांतिपरोस्यो । केहूंकहूंनखमाहँरह्योस्यो ॥ ताहिपरोसिजहींघरआयो । रोवतहौंहँसिकण्ठलगायो ॥ २३ ॥ चामरछन्द ॥ मोहिंमातुतप्तदूधभातभोजकोदियो । बातसोंसिराइतातक्षीरअंगुलीछियो ॥ क्योंद्रयोभष्योगयोअनेकनर्कबासभो । हौंभ्रम्योंअनेकयोनिअवधआनिश्वानभो ॥ २४ ॥ दोहा ॥ वाकोथोरोदोषमें, दीन्होदण्डअगाध ॥ रामचराचरईशतुम, क्षमियोयहअपराध ॥

॥ २५ ॥ लोककरेउअपवित्रवहि, लोकनरककोबास ॥ छुवैजो कोऊमठपतिहि, ताकोपुण्यबिनाश ॥ २६ ॥

टी०— बिनदोष काहूको घात न करै ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ गजरथश्वादि की गढ़ी कहे समूह जोरि यत्नकरिकै दियो औ मठ दियो कृपा दुहूं ओर लगति है अथवा मठधारिनकी गद्दीमें जोरि कहे मिलाइकै कालंजर दुर्ग जो प्रसिद्ध है ताको मठपति कियोयहवाल्मीकीयरामायणमेंलिख्यो है यथा ॥ कालंजरे महाराज कौलपत्यं प्रदीयतां । एतच्छ्रुत्वा तु रामेण कौलपत्ये ऽभिषेचितः ॥ १७ ॥ १८ ॥ या जो मठपति है ताके प्रमाणको नहीं जानत ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥

मू०— रामायणे यथा ॥ ब्रह्मस्वं देवद्रव्यञ्च स्त्रीणां बालधनं च यत् ॥ दत्तं हरति यो मोहात्सपचेन्नरके ध्रुवम् ॥ २७ ॥ स्कन्दपुराणे यथा ॥ हरस्य चान्यदेवस्य केशवस्य विशेषतः ॥ मठपत्यञ्च यः कुर्य्यात्सर्वधर्म्मवहिष्कृतः ॥ २८ ॥ पद्मपुराणे यथा ॥ पत्रं पुष्पं फलन्तोयं द्रव्य मन्नं मठस्य च । यो स्नाति सपचेत घोरान्नरकानेकबिंशतिः ॥ २९ ॥ देवीपुराणे यथा ॥ अभोज्यं मठिनामन्नं भुक्त्वा चान्द्रायणं चरेत् । स्पृष्ट्वा मठपतिं विप्रं सबासा जलमाविशेत् ॥ ३० ॥ दोहा ॥ औरौएक कथाकहौं, बिकलभूपकीराम ॥ वहौअयोध्याबसतहै, बंशकारकेधाम ॥ ३१ ॥ बसन्ततिलकछन्द ॥ राजाहुतोप्रबलदुष्टअनेकहारी । बाराणशीबिमलक्षेत्रनिवासकारी ॥ सोसत्यकेतुयहनामप्रसिद्धशूरो । विद्याबिनोदरतधर्म्मविधानपूरो ॥ ३२ ॥

टी०— ब्रह्मस्व (ब्राम्हणको द्रव्य) औ देवताको द्रव्य और स्त्रीको द्रव्य और बालकको द्रव्य और आपनी दीन्ही जो द्रव्य है इनको मोहबश ह्वैकै जो हरत है सो प्राणी ध्रुव कहे निश्चय करि नरके कहे नरकमें पचेत कहे पाकत है अर्थ जरत है दुख पावत है इति कहिबेको हेतु यह कि देवद्रव्यहारी (मठपति) है सो नरकको प्राप्त होत है ॥ २७ ॥ जो प्राणी

काहू देवको मठपति होइ सो धर्मरहित ह्वै जात है इत्यर्थः ॥ २८ ॥ स्राति कहे भोग करत है घोर भयानक जे एक विंशति नरक हैं तिनमें पाकत है ॥ २९ ॥ मठिनको अन्न अभोज्य है खाइबे योग्य नहीं है जो खाइये तो चांद्रायणव्रतको करिये औ मठपति ब्राह्मणको स्पृष्ट्वा कहे छुइकै सवासा कहे वस्त्रसहित जलं कहे जलमें आविशेत कहे प्रवेश करिये वस्त्र सहित स्नान करि डारिये इत्यर्थः ॥ ३० ॥ जो पाछे कह्योहै कि ॥ गुणदोषनको-जबहोइनदर्शी । तबहोंनृप होइनिरयपदपर्शी ॥ सो बात पुष्ट करिबेके लिये सत्यकेतुकी कथा कहत हैं जो वंशकार कहे डोमके घरमें बिकल कष्टयुक्त बसत है ता भूपकी कथा कहत हौं ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

मू०— धर्माधिकारपरएकद्विजातिकीन्हों । संकल्पद्रव्यबहुधात्यहिँचोरिलीन्हों ॥ बन्दीबिनोदगणिकादिविलासकर्त्ता । पावैदशांशद्विजदानअशेषहर्त्ता ॥ ३३ ॥ राजाविदेशबहुसाजिचमूगयेहो । जूझेउतहाँसमरयोधनसोंभयोहो ॥ आयेकरालकिलदूतकलेशकारी । लीन्हेगयेनृपतिकोजहँदण्डधारी ॥३४॥ धर्म्मराज--भुजङ्गप्रयातछन्द ॥ कहाभोगवैगोमहाराजदूमें । किपापैकिपुण्यैकरेउभूरिभूमें ॥ राजा ॥ सुनौदेवमोकोकछूसुद्धिनाहीं । कहौआपहीपापजोमोहिंमाहीं ॥ ३५ ॥ धर्मराज ॥ कियोतैंद्विजातीजोधर्माधिकारी । सुतोनित्यसङ्कल्पवित्तापहारी ॥ दियोदुष्टरण्डानिमुण्डानिलैलै । महापापमाथेतिहारेसोदैदै ॥ ३६ ॥

टी०— बन्दीजननकी जो विनोद कहे स्तुति है तामें औ गणिकादिकनको अनेक बिलासको कर्त्ता रह्यो औ जो दान द्रव्य राजाके इहांसों कढ़त रह्यो है तामें दशांश ब्राह्मण पावैं औ अशेष सम्पूर्णको हर्त्ता आप रह्यो ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

मू०— हुतोतैंसबैदेशहीकोनियन्ता । भलेकीबुरेकीकरीतैंनचिन्ता ॥ महासूक्ष्महैधर्म्मकीबातदेखो । जेतोदानदीन्होंतेतो

पापलेखो ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ कालसर्पसंसर्गसों, सबैराज-
केकर्म्म ॥ ताहूतेअतिकठिनहै, नृपतिदानकेधर्म्म ॥ ३८ ॥
भुजंगप्रयातछन्द ॥ भयोकोटिधानकेसंपर्कताको । हुतेदोषसं-
सर्गकेशुद्धजाको ॥ सबैपापभैक्षीणभोमुक्तलेखो । रह्योअवध-
मैंआनिकैकोलवेखो ॥ ३९ ॥ तारकछन्द ॥ तवबोलिउठोदर-
बारविलासी । द्विजद्वाररलसैयमुनातटबासी ॥ अतिआदरसों
तेसभामहँबोल्यो । बहुपूजनकैमगकोश्रमखोल्यो ॥ ४० ॥ रा-
म--रूपमालाछन्द ॥ शुद्धदेशयेरावरेसोभयेसबैयहिबार । ईश
आगमसंगमादिकहीअनेकप्रकार ॥ धामपावनह्वैगयेपदपद्म-
कोपयपाय । जन्मशुद्धभयेछुयेकुलदृष्टिहीमुनिराय ॥ ४१ ॥

टी०— ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ जाको जा शुद्ध राजाको केवल संसर्गहीके दो-
ष रहे तासों नरकको संपर्क कहे संयोग भयो यासों राजाको भले बुरेकी
चिन्ता करिबो उचित है इति भावार्थः जब नरक भागसों सबै पाप क्षीण
भये तब नरकते मुक्त भयो छूट्यो तब अवधमें कोल कहे चाण्डाल भेद
अथवा शूकरवेषी रूपधारी रह्यो है ॥ ३९ ॥ दरबार जो बहिर्द्वार है ता-
को बिलासी द्वारपाल खोल्यो दूरि कर्‍यो ॥ ४० ॥ रामचंद्र ब्राह्मणनसों
कहत हैं कि हे ईश ! रावरे आगम आइबेसों औ संगम बैठिबो पौढ़िबो
आदिसों तिन्हैं आदि जे और स्नान भोजनादि हैं तिनसों ये हमारे देश अ-
नेक प्रकारसों शुद्ध भये औ तुम्हारे पदपद्मके छुयेसों जन्म शुद्ध भये औ
तुम्हरी दृष्टिसों कुल शुद्ध भयो अथवा आगमसों देश शुद्ध भये औ संगम
जो स्पर्शहैं त्यहि आदि दै सो जन्मादि अनेक प्रकारसों शुद्ध भये ते आ-
गे कहत हैं ॥ ४१ ॥

मू०— पादपद्मप्रणामहीभयेशुद्धसीरखहाथ । शुद्धलोचनरूप
देखतहीभयेमुनिनाथ ॥ नासिकारसनाविशुद्धभयेसुगंधसुनाम ।
कर्नकीजतशुद्धशब्दसुनाइपीयुषधाम ॥ ४२ ॥ दोधकछंद ॥
आयेकहाँसोइआयसुदीजै । आजुमनोरथपूरणकीजै ॥ ब्राह्म-

ण ॥ जीवतिसोसबराज्यतिहारी । निर्भयह्वैभुवलोकबिहारी ॥ ४३ ॥ ऋषि–मरहट्टाछंद ॥ तुमहौसबलायकश्रीरघुनायक उपमादीजैकाहि । मुनिमानसरंताजगतनियंताआदिनअन्तनजाहि ॥ मारौलवणासुरजैसेमधुमुरमारेश्रीरघुनाथ । जगजयरसभीनेश्रीशिवदीन्हेशूलहिलीन्हेहाथ ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ जाकेमेलतशूलयह, सुनियेत्रिभुवनराय ॥ ताहिभस्मकरिसर्बथा, वाहीकेकरजाय ॥ ४५ ॥ दोधकछंद ॥ देवसबैरणहारिगयेजू । औरजितेनरदेवभयेजू ॥ श्रीभृगुनन्दनयुद्धनमांड्यो । श्रीशिवकोगनिसेवकछांड्यो ॥ ४६ ॥

टी०– ॥ ४२ तुमरो जो सब राज्य है अर्थ राजबासी हैं सो जीवति जीवनसों निर्भय ह्वै कै भुवलोकमें बिहारो कहे बिहार करत हैं अर्थ तुम्हारो राजवासीको कहूं भय नहीं है तामें हमको जीवितकी भय प्राप्त है इति भावार्थः ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

मू०– दोहा ॥ पादारघहमकोदियो, मथुरामंडलआप ॥ वासोंबसननपावहीं, बिनाबसेअतिपाप ॥ ४७ ॥ राम ॥ रक्षाहिंगेशत्रुघ्नसुत, ऋषितुमकोसबकाल ॥ बासुदेवह्वैरक्षिहौं, हँसिकहदीनदयाल ॥ ४८ ॥ भुजंगप्रयातछन्द ॥ चलौबेगिशत्रुघ्नताकोसँहारो । वहैदेशतौभावताहैहमारो । सदाशुद्धवृन्दाबनीभूभलीहै । तहांनित्यमेरीबिहारस्थलीहै ॥ ४९ ॥ यहैजानिभूमींद्विजन्मानदीन्हीं । बसैयत्रवृन्दाप्रियाप्रेमभीनी ॥ सनाढ्यानकीभक्तिजोजीयजागै । महादेवकोशूलताकेनलागै ॥ ॥ ५० ॥ बिदाह्वैचलेरामपैशत्रुहंता । चलेसाथहाथीरथीयुद्धरंता ॥ चतुर्द्धाचमूचारिह्वआरगाजैं । बजैदुन्दुभीदीहदिग्देवलाजैं ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ केशवबासरबारहें, रघुपतिकेशवबीर ॥ लवणासुरकेयमनिज्यों, मेलेयमुनातीर ॥ ५२ ॥ मनोर-

माछंद ॥ लवणासुरआइगयोयमुनातट । अवलोकिहँस्योरघुनन्दनकेभट ॥ धनुबाणलियेनिकसेरघुनन्दनु । मदकेगजको सुतकेहरिकोजनु ॥ ५३ ॥ लवणासुर–भुजंगप्रयातछंद ॥ सुन्योतैंनहींजोइहांभूलिआयो । बड़ोभागमेरोबड़ोभक्षपायो ॥ शत्रुघ्न ॥ महाराजश्रीरामहैंक्रुद्धतोसों । तजैदेशकोकैसजोयुद्धमोसों ॥ ५४ ॥

टी०– पाप (कष्ट) अथवा पातक ॥ ४७ ॥ बासुदेव (कृष्ण) ॥ ४८ ॥ वृन्दा (तुलसी) ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ लवणासुरके यमनि कहे यमराजनके सम ॥ ५२ ॥ मदके गजको कहे मदयुक्त गजको ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

मू०– लवणासुर ॥ वहैरामराजादशग्रीवहंता । सोतोबन्धु मेरोसुरस्त्रीनरंता ॥ हतौंतोहिंवाकोकरौंचित्तभायो । महादेवकीसोंबड़ोभक्षपायो ॥ ५५ ॥ भयेक्रुद्धदोऊदुवोयुद्धरंता । दुवोअस्त्रशस्त्रप्रयोगीनिहंता ॥ बलीबिक्रमीधीरशोभाप्रकाशी । नश्योहर्षदोऊसबर्षैबिनाशी ॥ ५६ ॥ शत्रुघ्न ॥ दोहा ॥ लवणासुरशिवशूलबिन, औरनलागैमोहिं । शूललियेबिनभूलिहूं, हौनमारिहौंतोहिं ॥ ५७ ॥

टी०– रंता (भोगी) सरस्वती उक्तार्थः सुरस्त्रीनरंता कहि या जनायो जो रावण इन्द्रहूको जीति देवांगननको लै आयो ताहूको रामचन्द्र मार्‍यो तो अति बली हैं तिनके तुम बंधुही हौ तो कहे तौही कहे निश्चय करि हमको हतौ मारौ वाको रामचन्द्रको चित्तभायो करो महादेवकी सौंह है जो तू रामचन्द्रको बंधुही है तो बड़ो भक्ष्य कहे मेरे जे भक्ष या ठौरके बासी हैं तिनको पालनहार तू आयो है ॥ ५५ ॥ प्रयोगी कहे चलावनहार सबर्षै कहे बाण वर्षा सहित जे दोऊ बिनाशी कहे परस्पर हंता हैं तिनको हर्ष नशि गयो है अर्थ बिकल हैं ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

मू०– मोटनकछंद ॥ लीन्हौंलवणासुरशूलजहीं । मारेउरघुनन्दनबाणतहीं ॥ काट्योशिरशूलसमेतगयो । शूलीकरसुःख

त्रैलोकभयो ॥ ५८ ॥ बाजेदिविदुन्दुभिदीहतबै । आयेसुरइंद्रसमेतसबै ॥ देव ॥ कीन्होंबहुबिक्रमयारणमें । मांगौबरदारुचैमनमें ॥ ५९ ॥ शत्रुघ्न ॥ प्रमानिकाछंद ॥ सनाढ्यवृत्तिजोहरै । सदासमूलसोजरै । अकालमृत्युसोंमरै । अनेकनर्कसोंपरै ॥ ६० ॥ सनाढ्यजातिसर्वदा । यथापुनीतनर्मदा । भजैंसजैंजेसंपदा । बिरुद्धतेअसंपदा ॥ ६१ ॥ दोहा ॥ मथुरामंडलमधुपुरी, केशवस्वबशबसाइ ॥ देखेतबशत्रुघ्नजू, रामचंद्रकेपांइ ॥ ६२ ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांलवणासुरबधबर्णनंनामचतुस्त्रिंशत्प्रकाशः ॥ ३४ ॥ ॥ ॥

टी०– ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ कहिबेको हेतु यह कि ऐसे जे सनाढ्य हैं तिनकी भक्ति हमको बर दीजे ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां चतुस्त्रिंशत्प्रकाशः ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥ पैंतीसयेंप्रकाशमें, अश्वमेधकियराम ॥ मोहनलवशत्रुघ्नकोह्वैहैसंगरधाम ॥ १ ॥ बिश्वामित्रबशिष्ठसों, एकसमयरघुनाथ ॥ आरम्भोकेशवकरन,अश्वमेधकीगाथ ॥ २ ॥ राम चामरछंद ॥ मैथिलीसमेततौअनेकदानमैंदियो ॥ राजसूयआदिदैअनेकजन्ममेंकियो ॥ सीयत्यागपापतेहियेसोहौंमहाडरौं । औरएकअश्वमेधजानकीबिनाकरौं ॥ ३ ॥

टी०– संगरधाम कहे समरभूमिमें ॥ १ ॥ २ ॥ सीताके त्याग पापके मोचनार्थ बिना जानकी एक अश्वमेध करतहौं इत्यर्थः ॥ ३ ॥

कश्यप–दोहा ॥ धर्मकर्मकछुकीजई, सफलतरुनिकेसाथ ॥ ताबिनजोकछुकीजई, निष्फलसोईनाथ ॥ ४ ॥ तोटकछंद ॥ करियेयुतभूषणरूपरयी । मिथिलेशसुताएकस्वर्णमयी ॥ ऋ-

षिराजसबैंऋषिबोलिलिये । शुचिसोंसबयज्ञबिधानकिये ॥५॥ हयशालनतेहयछोरिलियो ॥ शशिवर्णसोकेशवशोभरयो ॥ श्रुतिश्यामलएकबिराजतुहै ॥ अलिस्योसरसीरुहलाजतुहै ॥६॥ रूपमालाछंद ॥ पूजिरोचनस्वच्छअक्षतपट्टबाँधियभाल ॥ भूबिभूषणशत्रुदूषणछोड़ियोतेहिकाल ॥ संगलैचतुरंगहैनहिशत्रुहंतासाथ । भाँतिभाँतिनमानदैपठयेसोश्रीरघुनाथ ॥ ७ ॥ जातहैजितबाजिकेशवजातहैंतितलोग । बोलिबिप्रनदानदीजतयत्रतत्रसभोग ॥ बेणुबीणमृदंगबाजतदुंदुभीबहुभेव । भाँतिभाँतिनहोतमंगलदेवसेनरदेव ॥ ८ ॥ कमलछंद ॥ राघवकीचतुरंगचमूचयकोगनैकेशवराजसमाजनि ॥ शूरतुरंगनकेउरझेंपगतुंगपताकनकीपटसाजनि । टूटिपरैंतिनतेमुक्ताधरणी उपमाबरणीकबिराजनि । बिंदुकिधौंमुखफेननकेकिधौंराजश्री श्रवैंमंगललाजनि ॥ ९ ॥

टी०— ॥ शुचिसों (पवित्रता) सों ॥ ५ ॥ श्वेत कमल जानों ॥ ६ ॥ शत्रुदूषण (रामचन्द्र) ॥ ७ ॥ सभोग कहे अनेक भोग्य बस्तु सहित ॥ ८ ॥ समाज समूह श्रवै कहे बर्षति हैं राजनके प्रयाणमों पुरस्त्री लाज कहे लावा मंगलार्थ बर्षतीहैं यह प्रसिद्ध है ॥ ९ ॥

मू०— राघवकीचतुरंगचमूचपधूरिउठीजलहूथलछाई । मानौप्रतापहुताशनधूमसोकेशवदासअकाशनमाई ॥ मेटिकैपंचप्रभूतकिधौंबिधुरेणुमयीनवरीतिचलाई । दुःखनिवेदनकोभवभारकोभूमिकिधौंसुरलोकसिधाई ॥ १० ॥ दंडक ॥ नादपूरि धूरिपूरितूरिबनचूरिगिरिशोषिशोषिजलभूरिभूरिथलगाथकी । केशवदासआसपासठौरठौरराखिजनतिनकीसंपतिसबआपनेहीहाथकी ॥ उन्नतनवाइनतउन्नतबनाइभूपशत्रुनकीजीविकातिमित्रनकेहाथकी ॥ मुद्रितसमुद्रसातमुद्रानिजमुद्रितकेआ-

इदिशिदिशिजीतिसेनारघुनाथकी ॥ ११ ॥

टी०– पंचप्रभूत पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश ॥ १० ॥ नाद-(कोलाहल) नदी तड़ागादिकनकी भूरि जल शोषिकै औ भूरिजलहीकी थलमें गाथ प्रसिद्धता कऱ्यो अर्थ चमूके चरणसों चपि मेघादिकनको जल शोषि गयो औ थल दबात भये तासों पातालसों जल कढ़ि आयो औ ठौरठौर कहे देशदेशमें जन कहे आमिल राखिकै तिन देशनकी संपति आपने हाथ कहे काबूमें कीन्हों अर्थ तिन देशनमें अमल कियो औ तिन देशनके उन्नत कहे बड़े भूप रहैं न तिन्हैं नवाइ दियो जासों समय पाय बिरुद्ध करिबे लायक न रहैं औ नत कहे छोटे जे भूप रहैं तिन्हैं उन्नत बनायो जासों तावेदार बने रहैं औ शत्रु राजनकी जीविका राज्य अतिमित्र राजा हैं तिन्हैं सौंपि दियो औ सातों समुद्रनसों मुद्रित (चिन्हित) जो पृथ्वी है अर्थ सप्त समुद्र पर्य्यंत पृथ्वीमें आपनी मुद्रा जो मोहर है ताको मुद्रितके कहे छापिकै अर्थ राज सिक्का चलाइकै ॥ ११ ॥

मू०– दोहा ॥ दिशिबिदिशनिअवगाहिकै, सुखहीकेशवदास ॥ वाल्मीकिकेआश्रम, गयोतुरंगप्रकाश ॥ १२ ॥ दोधकछंद ॥ दूरिहितेमुनिबालकधाये । पूजितवाजिबिलोकनआये ॥ भालकोपट्टजहींलवबाँच्यो । बाँधितुरंगमजयरससाँच्यो ॥१३॥ ॥ श्लोक ॥ एकवीरा च कौशल्या तस्याः पुत्रो रघूद्वहः ॥ तेन रामेण मुक्तोसौ बाजी गृह्णात्विमंबली ॥ १४ ॥ दोधकछंद ॥ घोरचमूचहुँओरतेगाजी । कौनेहिरयहबाँधियबाजी ॥ बोलिउठेलवमैंयहबाँध्यो । योंकहिकैधनुशायकसाँध्यो ॥ मारिभगाइदियेसिगरेयों ॥ मन्मथकेशरज्ञानघनेज्यों ॥ १५ ॥

टी०– अवगाहि (मंझाइ) कै ॥ १२ ॥ १३ ॥ "एकोबीरःपतिर्यस्याः साएक बीरा" अर्थ भूमंडलमें जेते प्रसिद्ध बीर हैं तिनके मध्यमें एकबीर मुख्यबीर अर्थ सबसों अधिकबीर है पतिजाको औ फेरि कैसी हैं कौशल्या कोशलाधिपकी कन्या हैं तिनके पुत्र रघूद्वह कहे रघुबंशके राज्यादि भारके

धारणकर्त्ता रामचन्द्र हैं इतिशेषः इन तीनों पदनसों एकबीरात्मजत्व सुकुलजात्मज राज्याभिषिक्तत्व जनायो तेन रामेण कहे तिनराम करिकै असौ कहे यह बाजी मुक्तः कहे छोड़ो गयो है जो बली होय सो इमं कहे याको गृह्णातु कहे गृहण करै कै अथवा बाँधै ॥ १४ ॥ १५ ॥

मू०– धीरछंद ॥ योधाभगेबीरशत्रुघ्नआये । कोदंडलीन्हे महारोषछाये ॥ ठाढ़ोतहाँएकबालैबिलोक्यो ॥ रोंक्योतहींजोरनाराचमोक्यो ॥ १६ ॥ शत्रुघ्न–सुन्दरीछंद ॥ बालकछांड़िदेछांड़ितुरंगम । तोसोंकहाकरौंसंगरसंगम ॥ ऊपरबीरहियेकरुणारस । बीरहिविप्रहतेनकहूंयश ॥ १७ ॥ लव–तारकछंद ॥ कछुबातबड़ीनकहौमुखथोरे । लवसोंनजुरौलवणासुरभोरे ॥ द्विजदोषनहींबलताकोसँहार्‍यो । मरिहीजोरहोसोकहातुममार्‍यो ॥ १८ ॥ चामरछंद ॥ रामबन्धुबाणतीनिछोड़ियोत्रिशूलसे ॥ भालमेंबिशालताहिलागियोतेफूलसे ॥ लव ॥ घातकीनराजतातगाततेंकिपूजियो । कौनशत्रुतेंहत्योजोनामशत्रुहालियो ॥ १९ ॥

टी०– मोको कहे छोड़िहीसे चुके रहैं ता नाराचको रोंक्यो ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥

मू०– निशिपालिकाछंद ॥ रोषकरिबाणबहुभाँतिलवछंड़ियो । एकध्वजसूतयुगतीनिरथखंडियो ॥ शस्त्रदशरत्थसुतअस्त्रकरजोधरै । ताहिसियपुत्रतिलतूलसमखंडरै ॥ २० ॥ तारकछंद ॥ रिपुहाकरबाणवहेकरलीन्हो । लवणासुरकोरघुनंदनदीन्हो ॥ लवकेउरमेंउरझ्योवहपत्री । मुरझाइगिर्‍योधरणीमहँक्षत्री ॥ २१ ॥ मोटनकछंद ॥ मोहेलवभूमिपरेजबहीं । जयदुंदुभिबाजिउठेतबहीं ॥ भुवतेरथऊपरआनिधरे । शत्रुघ्नसोयोंकरुणानिभरे ॥ २२ ॥ घोड़ातबहींतिनछोरिलयो । शत्रुघ्नहिँ-

आनँदचित्तभयो ॥ लैकेलवकोतेचलेजबहीं ॥ सीतापहँबाल-गयेतबहीं ॥ २३ ॥ बालक-झूलनाछंद ॥ सुनुमैथिलीनृपएककोलवबांधियोबरबाजि ॥ चतुरंगसैनभगाइकैतबजीतियोवहआजि ॥ उरलागिगोशरएककोभुवमेंगिऱ्योमुरझाइ ॥ वहबाजिलैलवलैचल्योनृपदुंदुभीनबजाइ ॥ २४ ॥ दोहा ॥ सीतागीतापुत्रकी, सुनिसुनिभईअचेत ॥ मनोंचित्रकीपुत्रिका मनक्रमबचनसमेत ॥ २५॥ सीता-झूलनाछंद॥ रिपुहाथश्रीरघुनाथकेसुतक्योंपरैंकरतार ॥ पतिदेवतासबकालजोलवजो मिलैयहिबार ॥ ऋषिहैंनहींकुशहैंनहींलवलेइकौनछड़ाइ । बनमांझटेरसुनीजहींकुशआइयोअकुलाइ ॥ २६ ॥

टी०- एक बाणसों ध्वजा खंड्यो औ द्वै बाणसों सूत (सारथी) खंड्यो औ तीन बाणसों रथ खंड्यो तिल औ तूल (रुई) सम खंडरे कहे खंडन करतहै॥ २० ॥ पत्री (बाण) २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६॥

मू०- कुशादोहा ॥ रिपुहिमारिसंहारिदल, यमतेलेउंछड़ाइ ॥ लवहिमिलेहौंदेखिहौं, मातातेरेपांइ ॥ २७ ॥ सवैया ॥ गहियोंसिंधुसरोवरसोंजेहिबालिबलीबरसोबरपेऱ्यो । ढाहिदियेशिरावणकेगिरिसेगुरुजातनजातनहेऱ्यो । शूलसमूलउखारिलियोलवणासुरपीछेतेआइसोटेऱ्यो । राघवकोदलमत्तकरीसुरअंकुशदैकुशकैसबफेऱ्यो ॥ २८ ॥ दोहा ॥ कुशकीटेरसुनीजहीं, फूलिफिरेशत्रुघ्न ॥ दीपबिलोकिपतंगज्यों, यदपिभयोबहुबिघ्न ॥ २९ ॥ मनोरमाछंद ॥ रघुनंदनकोअवलोकतहींकुश । उरमांझहयोशरशुद्धनिरंकुश ॥ तेगिरेरथऊपरलागतहींशर । गिरिऊपरज्योंगजराजकलेवर ॥ ३० ॥ सुंदरीछंद ॥ जूझिगिरेजबहींअरिहारन । भाजिगयेतबहींभटकेगन ॥ काढ़िलियोजबहींलवकोशर । कंठलग्योतबहींउठिसोदर ॥ ३१ ॥ दोहा ॥

मिलेजोकुशलवकुशलसों, बाजिबांधितरुमूल ॥ रणमहिठाढ़े शोभिजें, पशुपतिगणपतितूल ॥ ३२ ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचंद्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांशत्रुघ्नसम्मोहोनामपंचत्रिंशत्प्रकाशः ॥ ३५ ॥

टी०— यमते लेउं छड़ाइ कहि या जानायो कि जो मर्‌यो ह्वैहै तो यमपुरते फेरि ल्याइ हौं ॥ २७ ॥ मत्त करिसम कह्यो सो मत्तकरीको कुत राघव दलमे स्थापित करत हैं गहियो (मंझाइयो) बालिबलीको जो बरबलहै ताहि वर कहे बट वृक्षसों पेर्‌यो कहे मर्दैउ औ शूलरूपी जो मूल जर रह्यो त्यहि सहित लवणासुरको वृक्षसों इतिशेषः उखारि लीन्हों जैसे वृक्ष मूलके आधारसों सबल रहत है तैसे शूलसों लवणासुर सबल रह्यो तासों मूलसम कह्यो ॥ २८ ॥ पतंग (पांखी) ॥ २९ ॥ निरंकुश (निर्भय) कलेवर (देह) है ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां पंचत्रिंशत्प्रकाशः

मू०— छत्तीसयेंप्रकाशमें, लक्ष्मणमोहनजानि ॥ आयसुलहिश्रीरामको, आगमभरतबखानि ॥ १ ॥ रूपमालाछंद ॥ यज्ञमंडलमेंहुतेरघुनाथजूतेहिकाल ॥ चर्मअंगकुरंगकोशुभस्वर्णकीसँगवाल ॥ आसपासऋषीशशोभितशूरसोदरसाथ । आइभग्गुललोगबरणैयुद्धकीसबगाथ ॥ २ ॥ भग्गुल—स्वागताछंद ॥ बालमीकिथलबाजिगयोजू ॥ बिप्रबालकनघेरिलयोजू ॥ एकबाँचिपट्टुघोटकबांध्यो । दौरिदीहधनुशायकसांध्यो ॥ ३ ॥ भांतिभांतिसबसैनसंहारयो । आपुहाथजनुईशसंवारयो ॥ अस्त्रशस्त्रतवबंधुजोधारयो । खंडखंडकरिताकहंडारयो ॥ ४ ॥ रोषवेषवहवाणलयोजू । इन्द्रजीतलगिआपुदयोजू ॥ कालरूपउरमांहहयोजू । बीरमूर्छितबभूमिभयोजू ॥ ५ ॥ तोमरछंद ॥ चहवीरलैअरुबाजि । जबहींचल्योदलसाजि ॥ तबऔरबा-

लकआनि । मगरोकियोंतजिकानि ॥ ६ ॥ तेहिमारियोतुवबं-
ध । तबक्कैगयोसबअंध ॥ वहबाजिलैअरुबीर ॥ रणमेंरह्यो-
रुपिधीर ॥ ७ ॥

टी० ॥ १- ॥ २ ॥ घोटक (घोड़ो) ३ ॥ ४ ॥ पैंतीसयें प्रकाशमें कह्यो
है कि ॥ रिपुहा कर बाण वहै करि लीन्हों ॥ लवणासुरको रघुनंदन दी-
न्हों । औ इहां कह्योहैकि । इंद्रजीतलगि आप दयोजू ॥ तहां या जानौ
कि वहै बाण इन्द्रजीतके मारिबेको लक्ष्मणको दियो रहै औ वहै लवणासु-
रके मारिबेको शत्रुघ्नहूको दियो रहै अथवा इन्द्रजीत लवणासुरहीको नाम
जानौ इन्द्रको बाणासुरहु जीत्योहै सो चौंतीसयें प्रकाशमे कह्योहै कि ॥ देवसबै-
रणहारिगयेजू ॥ भूमि भयो कहे भूमिमे पर्‍यो कानि (मर्यादा) ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥

मू०- बुधिबलविक्रमरूपगुण, शीलतुह्मारेराम ॥ काकप-
क्षधरिबालद्वै, जीतेसबसंग्राम ॥ ८ ॥ राम-चतुष्पदीछंद ॥
गुणगणप्रतिपालकरिपुकुलघालकबालकतेरनरंता । दशरथनृ-
पकोसुतमेरोसोदरलवणासुरकोहँता ॥ कोऊद्वैमुनिसुतकाकप-
क्षयुतसुनियतहैंजिनमारे ॥ यहिजगतजालकेकरमकालकेकुटिल
भयानकभारे ॥ ९ ॥

टी०- काकपक्ष (जुल्फ) ॥ ८ ॥ बालक ते बाल अवस्थाहीसों रनरंता
कहे रणमे रमत रह्यो है यह जो जगत् जाल कहे संसार समूह है अथवा
जगतरूपी जाल (फांस) हे औ काल कहे समयहै तिनके जे कुटिल क-
हे टेढ़े कर्म हैं ते भारे कहे अति भयानक हैं या जगत्में समयके फेरसों ऐ-
सी अनुचित बात ह्वै जाति है जाको देखिकै बड़ो भय होतहै इत्यर्थः ॥ ९ ॥

मू०-मरहट्टाछंद ॥ लक्ष्मणशुभलक्षणबुद्धिबिचक्षणलेहुवा-
जिकोशोधु । मुनिशिशुजनिमारहुबंधुउधारहुक्रोधनकरहुप्रबो-
धु ॥ बहुसहितदक्षिणादैप्रदक्षिणाचल्योपरमरणधीर । देख्यो-
मुनिबालकसोदरउपज्योकरुणाअद्भुतबीर ॥ १० ॥ कुश-दो-
धकछंद ॥ लक्ष्मणकोदलदीरघदेख्यो । कालहुतेअतिभीमबि-

शरन्यो ॥ दोमेंकहौसोकहालवकीजै । आयुधलैहौकिघोटक-दीजै ॥ ११ ॥

टी०– प्रबोध (क्षमा) मुनि बालकनको लघुवेष देखि करुणारस भयो औ सोदर शत्रुघ्नको मूर्च्छित देखि आश्चर्य भयो कि एतो बडो वीर ताको बालकन मूर्च्छित कर्यौ शत्रुघ्नको मूर्च्छित कर्यौ है तासों इनको मारो चाहिये यासों वीररस भयो ॥ १० ॥ ११ ॥

मू०–लवबूझतहौतौयहैप्रभुकीजै । मोअसुदैबरुअश्वनदीजै ॥ लक्ष्मणकोदलसिंधुनिहारो । ताकहंबाणअगस्त्यतिहारो ॥ १२ ॥ कौनयहैघटिहैअरिघेरे । नाहिंनहाथशरासनमेरे ॥ नेकुजहींदुचितोचितकीन्हों । शूरबडोइषुधीधनुदीन्हों ॥ १३ ॥ लैधनुबाणबलीतबधायो । पल्लवज्योंदलमारिउडायो ॥ योंदोउसोदरसैनसँहारैं । ज्योंबनपावकपौनबिहारैं ॥ १४ ॥ भागतहैंभटयोंलवआगे । रामकेनामतेज्योंअघभागे ॥ यूथपयूथयोंमारि भगायो । बातबडेजनुमेघउडायो ॥ १५ ॥ सवैया ॥ अतिरोषरसेकुशकेशवश्रीरघुनायकसोंरणरीतिरचैं । त्यहिबारनबारभईबहुबारनखड्गहनैनगणैबिरचैं । तहँकुम्भफटैंगजमोतीकटैंतेचलेबहुश्रोणितरोचिरचैं । परिपूरणपूरपनारेनतेजनुपीककपूरनकीकिरचैं ॥ १६ ॥

टी०– बूझत कहे पूंछत असु (प्राण) ॥ १२ ॥ कौन कहे कहा अरिके घेरेमें याही बात घाटि है कि हमारे हाथमें शरासन धनुष नहीं है या प्रकार कहत लव नेक चित्तको दुचित्तो कर्यौ अर्थ युद्धहुको बिचार बिचारत रहे औ सूर्यकी स्तुतिहूमे चित्तको लायो तब सूर कहे सूर्य बड़ो इषुधी (तरकस) औ धनुष दीन्हों यथा जैमिनिपुराणे (जैमिनिरुवाच) स्तोत्रेणानेन संतुष्टो रविर्दिव्यं शरासनम् ॥ ददौ लवाय शौरं च जयतिश्रेयमुत्तमं ॥ १ ॥ सुवर्णपट्टैरुचिरैर्निबद्धं सगुणं दृढं ॥ धनुः प्राप्य महाबाहुर्लवः कुशमथाब्रवीव् ॥ २ ॥ उपदिष्टं हि यत्स्तोत्रं मुनिना करुणात्मना ॥ शौरं तज्जपितं

भ्रातस्तस्माल्लाब्धं मया धनुः ॥ १३ ॥ १४ ॥ रसे कहे युक्त तेहिबार कहे समयमों बार कहे बेर ना भई अर्थ थोरीही बेरमें बहुत वारण जे हाथी हैं तिनको खड्ग तरवारिसों हनत हैं औ काहूको गनत नहीं है औ चिरचै कहे विख्यात हैं पीकके पूर कहे धार सम रुचिर है कपूर किरच सम मोती हैं ॥ १५ ॥ १६ ॥

मू०– नाराचछंद ॥ भगेचपेचमूचमूपछोड़िछोड़िलक्ष्मणै ॥ भगेरथीमहारथीगयंदवृन्दकोगणै ॥ कुशैलवैनिरंकुशैबिलोकि बंधुरामको । उठ्योरिसाइकैबलीबंध्योसोलाजदामको ॥ १७॥ कुश–मौक्तिकदामछंद ॥ नहौमकराक्षनहौइंद्रजीत । बिलोकि तुम्हैरणहोहुनभीत ॥ सदातुमलक्ष्मणउत्तमगाथ ॥ करौजनि आपनिमातुअनाथ ॥ १८ ॥ लक्ष्मण ॥ कहौकुशजोकहिआवतिबात । बिलोकतहौउपबीतहिगात ॥ इतेपरबालवहिक्रम जानि । हियेकरुणाउपजैअतिआनि ॥ १८ ॥ बिलोचनलोचतहैंलखितोहिं । तजौहठआनिभजौकिनमोहिं ॥ क्षम्योंअपराधअजौंघरजाहु । हियेउपजाउनमातहिदाहु ॥ २० ॥ दोधकछंद ॥ हौंअतिहौकबहूंनहिंतोहीं । तूबरुबाणनबेधहिमोहीं । बालकबिप्रकहाहनियेजू । लोकअलोकनमेंगनियेजू ॥ २१ ॥

टी०– एकादशसहस्राणि योधयेद्यस्तुधन्विनां ॥ शस्त्रशास्त्रप्रबीणश्च स महारथ उच्यते ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ हमारे लोचन तुम्हारे देखिबेको लोचन कहे चाहत हैं भजौ (मिलौ) २० ॥ २१ ॥

मू०– हरिणीछंद ॥ लक्ष्मणहाथहथ्यारधरौ । यज्ञवृथाप्रभुकोनकरौ । हौंहयकोकबहूंनतजौं । पट्टलिख्योसोइबांचिलजौं ॥ २२ ॥ स्वागताछंद ॥ बाणएकतबलक्ष्मणछंड्यो । चर्मबर्मबहुधातिनखंड्यो ॥ ताहिहीनकुशचित्तहिमोहै । धूमाभिन्नजनुपावकसोहै ॥ २३॥ रोषवेषकुशबाणचलायो । पौनचक्रजि-

मिचित्तभ्रमायो ॥ मोहमोहिरथऊपरसोये । ताहिदेखिजड़जंग-
मरोये ॥ २४ ॥ नाराचछंद ॥ बिरामरामजानिकैभरत्थसोक-
थाकहैं । बिचारिचित्तमांझबीरबीर वेकहाँरहैं ॥ सरोषदेखिल-
क्ष्मणैत्रिलोक्यतौबिलुप्तह्वै । अदेवदेवतात्रसैंकहातेबालदीनह्वै ।
॥ २५ ॥ राम—रूपमाला छंद ॥ जाहुसत्वरदूतलक्ष्मणहैंजहांय-
हिबार । जाइकैयह बातबर्णहुराक्षियोमुनिवार ॥ हैंसमर्थसना-
थवैअसमर्थऔर अनाथ । देखिबेकहँल्याइयोमुनिबालउत्तमगा-
थ ॥ २६ ॥ सुंदरीछंद ॥ भग्गुलआइगयेतबहींबहु । बारपु-
कारतआरतरक्षहु ॥ वेबहुभांतिनसैनसँहारत । लक्ष्मणतौति-
नको नहिंमारत ॥ २७ ॥ बालकजानितजैंकरुणाकरि । वेअ-
तिढीठभयेदलसंहरि ॥ केहुंनभाजतगाजतहैंरण । बीरअनाथ
भये बिनलक्ष्मण ॥ २८ ॥ जानहुजैउनकोमुनिबालक । वेको-
उ हैं जगतीप्रतिपालक । हैंकोउरावणकेकिसहायक । कैलव-
णासुरकेहितलायक ॥ २९ ॥

टी०— या छंद को सारवतीहू कहत हैं ॥ २२ ॥ तिनको कुशको धूम
सम चर्मवर्म खंडित ह्वैगयो क्रोध औ प्रतापसों अग्नि सम कुशकेअंग शो
भितहैं ॥ २३ ॥ पवन चक्र (बौंड़र) ॥ २४ ॥ विराम बेर त्रैलोक्यके अ-
देव दैत्य औ देवता बिलुप्तह्वै कहे लुकिके त्रसैं कहे डेरातहैं अर्थ लुकिहु रहत
हैं ताहूपर भय नहीं मिटत यासों अतिभय जानो ॥ २५ ॥ २६ ॥ बार क-
हे बारबार ॥ २७ ॥ २८ ॥ जै कहे जनि जगती प्रतिपालक (ईश्वर) अ-
थवा राजा सहायक कहे बली ॥ २९ ॥

मू०— भरत—बालकरावणकेनसहायक । नालवणासुरकेहित
लायक ॥ हौंनिजपातकवृक्षनकेफल । मोहतहैंरघुबंशिनकेब-
ल ॥ ३० ॥ जीतहिकोरणमांझरिपुघ्नहि । कोकरैलक्ष्मणकेब-
लविघ्नहि ॥ लक्ष्मणसीयतजीजबतेबन । लोकअलोकनपूरिर-

हेतन ॥ ३१ ॥ छोड़ोइचाहततेतबतेतन । पाइनिमित्तकरेउमनपावन ॥ शत्रुघ्नतज्योतनसोदरलाजनि । पूतभयेतजिपापसमाजनि ॥ ३२ ॥ दोधकछंद ॥ पातककौनतजीतुमसीता । पावनहोतसुनेजगगीता ॥ दोषबिहीनहिदोषलगावै । सोप्रभुयेफलकाहेनपावै ॥ ३३ ॥ हमहूंत्यहितीरथजाइमरैंगे । सतसंगतिदोषअशेषहरैंगे ॥ बानरराक्षसऋक्षतिहारे । गर्बचढ़ेरघुबंशहिभारे ॥ तालगिकैयहबातबिचारी। होप्रभुसंततगर्बप्रहारी ॥ ॥ ३४ ॥ चंचरीछंद ॥ क्रोधकैअतिभरतअंगदसंगसंगरकोचले । जामवन्तचलेबिभीषणऔरबीरभलेभले ॥ कोगनैचतुरंगसेनहिरोदसीनृपताभरी । जाइकैअवलोकियोरणमेंगिरेगिरिसेकरी ॥ ३५ ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रिकाया मिंद्राजिद्विरचितायांभरतसमागमोनामषट्त्रिंशत्प्रकाशः ॥ ३६ ॥

टी०– मोहत कहे मूर्छित करत हैं अर्थ हीनो करत हैं ॥ ३० ॥ लोकमें घातक करिकै अलोकन (दोषन) सों पूरि रहे हैं ॥ ३१ ॥ जबते अलोक प्राप्त भयो तबते ता अलोकके मिटिबेके यतनको छोड़ोई चाहत रहे सो युद्धरूपी निमित्त कारण पाइके तनको छोड़ि मनको पावन कऱ्यो शत्रुघ्नके बंधु लक्ष्मण सीताको बनमे छोड़ि आये याबिधि लोकापबाद लाजनसों शत्रुघ्न तनको छोड्यौ पूत (पवित्र) छंद उपजाति है ॥ ३२ ॥ पातक कौन एतो भरतसों रामचंद्रको प्रश्ण है ॥ ३३ ॥ तेहि तीरथ अर्थ युद्धतीरथमें छंद उपजाति गाथा है ॥ ३४ ॥ संगर (युद्ध) रोदसी कहे भू आकाश-नृपता कहे नृपसमूहनसों भरी ॥ द्यावाभूमीचरोदसी इत्यमरः ॥ ३५ ॥ इतिश्रीमज्जजगज्जननि जनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय अनजानकीप्रसाद निर्मितायांरामभक्तिप्रकाशिकायांषट्त्रिंशत्प्रकाशः ॥ ३६ ॥

मू०– दोहा ॥ सैंतीसयेंप्रकाशमें, लवकटुबैनबखान ॥ मोहनबहुरिभरत्तको, लागेमोहनबान ॥ १ ॥ रूपमालाछंद ॥

जामवंतबिलोकिकैरणभीमभूहनुमंत । श्रोणकीसरिताबही सुअनंतरूपदुरंत ॥ यत्रतत्रध्वजापताकादीहदेहनिभूप । टूटि टूटिपरेमनोंबहुबातवृक्षअनूप ॥ २ ॥ पुंजकुंजरशुभ्रस्यंदनशोभिजैसुठिशूर । ठेलिठेलिचलेगिरीशनिपेलिश्रोणितपूर ॥ ग्राह तुंगतुरंगकच्छपचारुचर्मविशाल । चक्रसेरथचक्रपैरतगृद्धवृद्ध मराल ॥ ३ ॥ केकरेकरबाहुमीनगयंदशुंडभुजंग । चीरचौरसुदेशकेशशिबालजानिसुरंग ॥ बालकाबहुभांतिहैंमणिमालजालप्रकाश । पैरिपारभयेतहैमुनिबालकेशवदास ॥ ४ ॥

टी०— ॥ १ ॥ जामवंत औ हनुमंत दुरंत कहे दुःख करिकै पाइयत है अंत (पार) जिनको अर्थ अति बड़ी औ अनंत कहे अनेक श्रोण (रुधिर) की सरिता बही हैं जामें ऐसी जो रणकी भीम भयानक भू है ताको बिलोक्यो बड़े पताका ध्वजा कहावत हैं छोटे पताका कहावत हैं ॥ २ ॥ सुठि शूर अर्थ अतिशूर जे सन्मुख घाव सहि मरे हैं ठेली कहे टारि पेलि कहे दबाइकै जैसे शिलनको टारि नदीनको पूर प्रबाह चलत है तैसे इहां पर्वतसम जे गज रथहैं तिनको टारिकै श्रोणितके पूर चले यासों अति गंभीरता औ बेगता जो नदीहूके तीर गृध्र रहत हैं इहांऊं हैं औ श्वेत ह्वै रहे हैं अंगलोम जिनके ऐसे जे वृद्ध प्राणी हैं तेई हंस हैं ॥ ३ ॥ केकरे (गेंगटा) भुजंग (सर्प) ॥ ४ ॥

दोहा ॥ नामबरणलघुबेषलघु, कहतरीझिहनुमन्त ॥ इतो बड़ोबिक्रमकियो, जीतेयुद्धअनंत ॥ ५ ॥ भरत—तारकछंद ॥ हनुमंतदुरंतनदीअबनाषो । रघुनाथसहोदरजीअभिलाषो ॥ तबजोतुमसिंधुहिनांघिगयेजू । अबनांघहुकाहेन भीतभयेजू ॥६॥ हनुमान्—दोहा ॥ सीतापदसंमुखहुते, गयो सिंधुकेपार ॥ बिमुखभयेक्योंजाहुंतरि, सुनोंभरतयहिबार ॥ ७ ॥ तारकछंद ॥ धनुबाणलियेमुनिबालकआये । जनुमन्मथकेयुगरूपसुहाये ॥

करिबेकहँशूरनकेमदहीने। रघुनायकमानहुद्वैबपुकीने ॥ ८॥ भरत ॥ मुनिबालकहौतुमयज्ञकरावो । सुकिधौं बरबाजिहिबांधन धावो॥ अपराधक्षमोसबआशिषदीजै । बरबाजितजौजियरोष नकीजै ॥ ९ ॥ दोहा ॥ बांध्योपट्टजोशीशयह, क्षत्रिनकाजप्रकाश ॥ रोषकरेउबिनकाजतुम, हमबिप्रनकेदास ॥ १० ॥

टी०— वर्ण कहे नामके अक्षर ॥ ५॥ रघुनाथ सहोदर जे शत्रुघ्न औ लक्ष्मण हैं तिनको जीमें अभिलाषौ अर्थ या नदी नांघि लक्ष्मण, शत्रुघ्नको देखो जाइ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ मुनिनके बालकनको यज्ञ कराइबो उचित है अश्व बांधि यज्ञ रोकिबो उचित नहीं है इति भावार्थः ॥ ९ ॥ १० ॥

मू०— कुश—दोधकछंद ॥ बालकवृद्धकहौतुमकाको । देहनिकोकिधौंजीवप्रभाको ॥ हैजड़देहकहैसबकोई॥ जीवसोबालकवृद्धनहोई ॥११॥ जीवजरैनमरैनहिंछीजै। ताकहंशोककहाकरिकीजै ॥ जीवहिबिप्रनक्षत्रियजानौ । केवलब्रह्महियेमहँआनौ ॥ ॥ १२॥ जोतुमदेहुहमैंकछुशिक्षा । तौहमदेहिंतुम्हैंहयभिक्षा ॥ चित्तविचारपरैसोइकीजै । दोषकछूनहमैंअबदीजै ॥१३॥ स्वागताछंद ॥ बिप्रबालकनकीसुनिबानी । क्रुद्धसूरसुतभोअभिमानी ॥ १४ ॥ सुग्रीव ॥ बिप्रपुत्रतुमशीशसंभारो । राखिलेहि अवताहिपुकारो ॥ १५ ॥ लव—गौरीछंद ॥ सुग्रीवकहातुमसोंरणमांड़ौ । तोंकोअतिकायरजानिकेछांड़ौ ॥ बालितुम्हैंबहु नाचनचायो । कहारनमंडनमोसनआयो ॥ १६ ॥

टी०— भरत मुनि बालक पद कह्यौ है तासों कुश यह कहत हैं ॥११॥ ॥ १२ ॥ शिक्षा दै हमारो बोध करौ इत्यर्थः ॥ १३ ॥ १४ ॥ छंद उपजाति है ॥ १५ ॥ फल कहे गांसी ता बाणके लागे बात सम अर्थ औ बँउड़रसम बहुत भ्रमत भये औ मुरझात भये ॥ १६ ॥

मू०— तारकछंद ॥ फलहीनसोताकहंबाणचलायो । अ-

तिबातअर्घ्योबहुधामुरझायो ॥ तबदौरिकैबाणबिभीषणलीन्हों । लवताहिबिलोकतहींहँसिदीन्हों ॥ १७ ॥ सुंदरीछंद ॥ जूआटबिभीषणतूरणदूषण । एकतुहींकुलकोकिलभूषण ॥ जूझजुरेजेभलेभयजीके । शत्रुहिआइमिलेतुमनीके ॥ १८ ॥ दोधकछंद ॥ देवबधूजबहींहरिल्यायो । क्योंतबहींतजि ताहिनआयो ॥ योंअपनेजियकेडरआयो । छुद्रसबैकुलछिद्रबतायो ॥ १९ ॥ दोहा ॥ जेठोभैयाअन्नदा, राजापितासमान ॥ ताकीपत्नीतूकरी, पत्नीमातुसमान ॥ २० ॥ कोजानैकैबारतू, कहीनक्कैहैमाइ ॥ सोईतैंपत्नीकरी, सुनुपापिनकेराइ ॥ २१ ॥ तोटकछंद ॥ सिगरेजगमांझहँसावतहैं । रघुबंशिनपाप नशावतहैं ॥ धिकतोकहंतूअजहूंजोजियै। खलजाइहलाहलक्योंनापियै॥ २२ ॥

टी०- जूझ जुरे पर भले जीके भयसों शत्रुको आइ मिले ॥ १७ ॥ देवबधू (सीता) ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ २२ ॥

मू०-कछुहैअबतोकहँलाजहियै। कहिकौनबिचारहथ्यार लियै अबजाइकरीषकीआगिजरौ। गरुबांधिकैसागर बूड़िमरौ॥ २३ ॥ दोहा ॥ कहाकहौंभरतको, जानतहैसबकोय ॥ तोसोंपापीसंगहै,क्योंनपराजयहोय ॥ २४ ॥ बहुतयुद्धभोभरतसों, देव अदेवसमान ॥ मोहिमहारथपरगिरे, मारमोहनबान ॥ २५ ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणि श्रीरामचन्द्रचंद्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायां भरतमोहनोनामसप्तत्रिंशत्प्रकाशः ॥ ३७ ॥

टी०- करीष (सूख्योगोबर) बिनुआं कंडा करि प्रसिद्ध है ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ २५ ॥ इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसाद निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायांसप्तत्रिंशत्प्रकाशः ॥ ३७ ॥

मू०- दोहा ॥ अठतीसयेंप्रकाशमें, अंगदयुद्धबखान ॥ ब्या-

जसैनरघुनाथको, कुशलवआश्रमजान ॥ १ ॥ भरतहिभयोबिलंबकछु, आयेश्रीरघुनाथ ॥ देख्योवहसंग्रामथल, जूझिपरेसबसाथ ॥ २ ॥ तोटकछंद ॥ रघुनाथहिआवतआइगये । रणमेंमुनिबालकरूपरये ॥ गुणरूपसुशीलनसोंरणमें । प्रतिबिंब मनोंनिजदर्पणमें ॥ ३ ॥ मधुतिलकछंद ॥ सीतासमानमुखचंद्रबिलोकिराम । बूझ्योकहांबसतहौतुमकौनग्राम ॥ माता पिताकवनकौन्यहिकर्मकीन । बिद्याबिनोदशिषकौन्यहिअस्त्र दीन ॥ ४ ॥

टी०— ॥ १ ॥ २ ॥ गुण औ रूप औ शील स्वभाव सहित रणमें अर्थ रण करनेमें मानों दर्पणमें आपने प्रतिबिंबही आइ गये हैं जैसे दर्पणके निकट जातही दर्पणमें आपनेही स्वभावादिसों युक्त आपने प्रतिबिंब आइजात हैं ता बिधि रणभूमिरूपी दर्पणके निकट रामचन्द्रके आवतही रामचन्द्रहीके स्वभावादिसों युक्त प्रतिबिंब सम लवकुश आये इत्यर्थः ॥ ३ ॥ भाग्यवान् पुत्रको मुख माताको ऐसो होत है ॥ धन्योमातृमुखःसुतः ॥ इति प्रमाणात् कहो कहे कौन स्थानमें कर्म (जातकर्मादि) ॥ ४ ॥

मू०— कुश—रूपमालाछंद ॥ राजराजतुम्हेंकहामनबंशसों अबकाम । बूझिलीन्हेहुईशलोगनजीतिकैसंग्राम ॥ राम ॥ हौं नयुद्धकरौंकहेबिनबिप्रबेषबिलोकि । बेगिबीरकथाकहौतुम आपनीरिससरोकि ॥ ५ ॥ कुश ॥ कन्यकामिथिलेशकीहमपुत्र जायेदोइ । बालमीकिअशेषकर्मकरेकृपारसभोइ ॥ अस्त्रशस्त्रसबैदयेअरुवेदभेदपढ़ाइ । बापकोनाहिंनामजानतआजुलौंरघुराइ ॥ ६ ॥ दोधकछंद ॥ जानाकिकेमुखअक्षरआने । रामतहींअपने सुतजाने ॥ बिक्रमसाहसशीलबिचारे । युद्धकथाकहिआयुधडारे ॥ ७ ॥ राम ॥ अंगदजीतिइन्हेंगहिल्यावो । कैअपनेबलमारिभगावो ॥ बेगिबुझावहुचित्तचिताको । आजुतिलो-

दकदेहुपिताको ॥ ८ ॥ अंगदतौअँगअंगनिफूले । पौनकेपुत्र कह्योअतिभूले ॥ जाइजुरेलवसोंतरुलैकै । बातकहीशतखंडनकैकै ॥ ९ ॥

टी०— ॥ ५ ॥ ६ ॥ जानकीको नाम लीन्हों तासों औ अपने सदृश विक्रम साहस शीलहूसों बिचाऱ्यो कि हमारेही पुत्र हैं ॥ ७ ॥ हम तुमसों कहि राख्यो है कि कोऊ हमारे बंशमें तुमसों युद्ध करिहै सो ये हमारेही पुत्र हैं तासों इनको जीतिकै ता समयसों क्रोधाग्निसों जरत चित्तरूपी जो चिता है ताको बुझावौ औ रघुबंशिनसों युद्ध करि पिताको तिलोदक देन कह्यो है सो देउ अथवा हमारेही पुत्र ह्वैकै हमारे अश्व बांधि वृथा युद्ध कऱ्यो ता क्रोधसों जरत चित्तरूपी जो चिताहै ताको बुझावो औ पिताको तिलोदक देहु ॥ ८ ॥ ९ ॥

मू०— लव ॥ अंगदजोतुमपै बलहोतो । तौवहसूरजकोसुतको-तो ॥ देखतहीजननीजोतिहारी । वासँगसोवतिज्योंबरनारी ॥ ॥ १० ॥ जादिनतेयुवराजकहाये । बिक्रमबुद्धिविवेकबहाये ॥ जीवतपैकिमरेपहँजैहै । कौनपिताहितिलोदकदैहै ॥ ११ ॥ अंगदहाथगहेतरुजोई । जाततहींतिलसोंकटिसोई ॥ पर्बतपुंजजितेउनमेले । फूलकेतूललैबाणनझेले ॥ १२ ॥ बाणनबेधि रहीसबदेही । बानरतेजोभयेअबसेही ॥ भूतलतेशरमारिउड़ायो । खेलिकेकंदुककोफलपायो ॥ १३ ॥ सोहतहैअधऊरधऐसे । होतबटानटकोनभजैसे ॥ जानकहूंनइतैउतपावै ॥ गोबलचित्तदशोदिशिधावै ॥ १४ ॥ बोलघऱ्योसोभयोसुरभंगी । ह्वैगयोअंगत्रिशंकुकोसंगी ॥ हारघुनायकहौंजनतेरो । रक्षहुगर्वगयोसबमेरो ॥ १५ ॥ दीनसुनीजनकीजबबानी । जीकरुणालवबाणनआनी ॥ छांड़िदियोगिरिभूमिपऱ्योई । बिह्वलकै अतिमानोमऱ्योई ॥ १६ ॥

टी०— वरनारी अर्थ विवाहिता स्त्री ॥ १० ॥ जो रामचन्द्र कह्यो कि

इनको जीतकै आजु पिताको तिलोदक देहु सो सुनिकै लव कहत हैं कि हम-को जीतिकै जो तिलोदक तुम देहौ सो जीवत पिता जे सुग्रीव हैं तिनको प्राप्त ह्वैहै कि मेरे पिता जे बालिहैं तिनको प्राप्त ह्वैहै ॥ ११ ॥ खेले (दूरी) किये ॥ १२ ॥ सेही शल्लकीनामा बनजंतु बिशेष ॥ १३ ॥ १४ ॥ त्रिशं-कुको संगी अर्थ त्रिशंकुसम शीश नीचे चरण उपर भये ॥ १५ ॥ १६ ॥

मू०– विजयछंद ॥ भैरवसेभटभूरिभिरेबलखेतखड़ेकरता-रकरेकै । भारेभिरेरणभूधरभूपनटारेटरेइभकोटिअरेकै । रोषसों खड़्गहनेकुशकेशवभूमिगिरेनटरेहुगरेकै । रामबिलोकिकहैरसअ-द्भुतखायेमरेनगनागमरेकै ॥ १७ ॥ दोधकछंद ॥ बानरऋक्ष जितेनिशिचारी । सेनसबैइकबाणसँहारी ॥ बाणबिंधेसब-हीजबजोये । स्यंदनमेंरघुनंदनसोये ॥ १८ ॥ गीतिकाछं-द ॥ रणजोइकैसबशीशभूषणसंग्रहेजेभलेभले । हनुमंतकोअरु जामवंतहिँबाजिसोंग्रसिलैचले ॥ रणजीतिकैलवसाथलैकरि मातुकेकुशपांपरे । शिरसूंघिकंठलगायआननचूमिगोदहुवौधरे ॥ ॥ १६ ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणि श्री-रामचंद्रचंद्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायां कुशलवजयबर्णनंनामा-ष्टत्रिंशत्प्रकाशः ॥ ३८ ॥

टी०– भैरव ऐसे जे भूरिभट हैं ते बलसों भिरे हैं सो इन भटनको क-हे कैधौं याही परे कहे अति बिकट खेत कहे युद्धके लिये कर्त्तार बिधातैं करे कहे बनायो है अर्थ त्रिकालज्ञ बिधाता यह अति बिकट युद्ध भावी जानिकै ताके लिये ऐसे प्रबल बीर आपने हाथसों बनायो है या युद्धमें एई बीर भिरे हैं और बीर न भिरि सक्के इतिभावार्थः अथवा बलसों खड़े जे खेत हैं तिनके कर कहे कर्त्ता अर्थ जिन रावणादिसों रण कीन्हों है ऐसे जे भैरव ऐसे भूरि भट हैं ते करे कहे अति कठोर मारु मारु इत्यादि तार कहे उच्चस्वर कै कहे करिकै रणमें भिरे हैं कोऊ कादरस्वर नहीं बोलत इति-भावार्थः औ भूधर (पर्वत) सम अचल जे भारे भूप हैं अथवा भूधर कहे

भूमिके धरनहार अर्थ जेती भूमि धरैं तेती कैसेहू न छोड़ैं ऐसे जे भारे भूप हैं ते कोटिन इभ जे हाथीहैं तिनको अरे कहे हठे करिकै अर्थ पगनमें जंजीरादि डारि जामें टरैं नहीं ऐसे करिकै युद्धमें भिरे हैं ते भट औ भूप मरेकै कटेहू अर्थ शिर कटिगयो है ताहू पर भूमिमे न गिरे अर्थ जिनको कबंधहू लरत रह्यो औ तिन हाथिनको परे देखिकै अद्भुत रसयुक्त है रामचन्द्र कहत हैं कि नग जे पर्वत हैं तिनके खांये कहै खावी मारे हैं कि नाग कहे हाथी मरे हैं अर्थ ऐसे मरे हाथिनके कतारे परे हैं मानौ पर्वतनके खावाँ मारे हैं अथवा नाग नग जे गजमुक्ता हैं तिनके खाये सम मारि गये हैं अर्थ यह जहां गजमुक्तनके खावाँ मारि गये हैं तहां हाथिनकी कौन कहे ॥ १७ ॥ तेतीसयें प्रकाशमें कह्यो है कि रामकी जयसिद्धिसों सियको चले वन छांड़ि सो जय सिद्धिरूप जे सीता हैं तिनको तौ बनमें छोंड़्यो जय सिद्धि कैसे प्राप्त होय सो त्रिकालज्ञ जे रामचन्द्र हैं ते यह बिचारिकै सोइ रहे ॥ १८ ॥ १९ ॥ इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकी जानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायांराम भक्तिप्रकाशिकायांअष्टत्रिंशत्प्रकाशः ॥ ३८

मू-० दोहा ॥ नवतीसयेंप्रकाशसिय, रामसँयोगनिहारि ॥ यज्ञपूरिसबसुतनको, दीन्होराजबिचारि ॥ १ ॥ रूपमालाछंद ॥ चीन्हिदेवरकोबिभूषणदेखिकैहनुमंत । पुत्रहौंबिधवाकरीतुमकर्मकीनदुरंत ॥ बापकोरणमारियोअरुपितृभ्रातृसँहारि । आनियोहनुमंतबाँधिनआनियोमोहिँगारि ॥ २ ॥ दोहा ॥ मातासबकाकीकरी, बिधवाएकाहिबार ॥ मोसेऔरनपापिनी, जायेबंशकुठार ॥ ३ ॥ दोधकछंद ॥ पापकहाँहतिबापहिजैहौ । लोकचतुर्दशठौरनपैहौ ॥ राजकुमारकहैनहिंकोऊ । जारजजाइकहावहुदोऊ ॥ ४ ॥ कुश ॥ मोकहँदोषकहासुनिमाता । बाँधिलियोजोसुन्योउनिभ्राता ॥ हौंतुमहींतेहिबारपठायो । रामपिताकबमोहिंसुनायो ॥ ५ ॥ दोहा ॥ मोहिंबिलोकिबिलोकिकै, रथपरपौढ़ेराम ॥ जीवतछोंड़्योयुद्धमें, माताकरिबिश्राम ॥ ६ ॥

टी०— ॥ १ ॥ दुरंत (अनुत्तम) गारि (कलंक) ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ विश्राम (क्षमा) ॥ ६ ॥

मू०— सुंदरीछंद ॥ आइगयेतबहींमुनिनायक । श्रीरघुनंदनकेगुणगायक ॥ बातबिचारिकहीसिगरीकुश । दुःखकियोमनमेंकलिअंकुश ॥ ७ ॥ रूपवतीछंद ॥ कीजैनबिडंबनसंततसीते । भावीनमिटैसुकहूं जगगीते ॥ तूतोपतिदेवनकीगुरुबेटी । तेरीजगमृत्युकहावतिचेटी ॥ ८ ॥ तोटकछंद ॥ सिगरेरणमंडलमांझगये । अवलोकतहींअतिभीतभये ॥ दुहुबालनकोअतिअद्भुतबिक्रम । अवलोकिभयोमुनिकेमनसंभ्रम ॥ ६ ॥

टी०— कैसे हैं मुनिनायक कलि जो कलियुग है ताके अंकुशहैं ॥ ७ ॥ विडंबन (दुःख) हे बेटी ! तू पतिदेव कहे पतिव्रतनकी गुरू है चेटी (दासी) तेरी आज्ञासों मृत्यु मरे बीरनको जियाइहै इतिभावार्थः ॥ ८ ॥ छंद उपजाति है ॥ ९ ॥

मू०— दंडक ॥ श्रोणितसलिलनरबानरसलिलचरगिरिबालिसुतबिषबिभीषणडारेहैं । चमरपताकाबड़ीबड़वाअनलसमरोगरिपुजामवंतकेशवबिचारेहैं । बाजिसुरबाजिसुरगजसेअनेकगजभरतसबंधुइंदुअम्मृतनिहारेहैं । सोहतसहितशेषरामचंद्रकुशलवजीतिकैसमरसिंधुसाँचेहूसुधारेहैं ॥ १० ॥ सीता—दोहा ॥ मनसाबाचाकर्मणा,जोमेरेमनराम । तौसबसेनाजीउठै,होहिघरीनाबिराम ॥ ११ ॥ दोधकछंद ॥ जीयउठीसबसेनसभागी । केशवसोवततेजनुजागी ॥ स्योसुतसीतहिलैसुखकारी । राघवकेमुनिपाँयनपारी ॥ १२ ॥ मनोरमाछन्द ॥ शुभसुंदरिसोदरपुत्रमिलेजहँ । बर्षांबर्षैसुरफूलनकीतहँ ॥ बहुधादिबिदुंदुभिकेगणबाजत । दिगपालगयंदनकेगणलाजत ॥ १३ ॥

टी०— कविजन समरको सिंधुसम कहतई हैं औ कुश लव समर जीतिकै अंगन सहित साँचो सिंधु सँवार्‍यौ इत्यर्थः सो कहत हैं सलिलचर

(ग्राहादि) गिरि (मैनाक) रुधिररंगसों अरुण चमर जानौ रोगरिपु (धन्वंतरि) अड़तीसयें प्रकाशमें कह्यो है कि हनुमंतको अरु जामवंतहि बाजिसों ग्रसि लै चले ॥ तासों इहां दूसरे जामवंत जानौ अथवा प्रथम ग्रसि लै गये हैं फेरि छोड़ि दिये हैं तेऊ तहां हैं भरत चंद्रमा हैं शत्रुघ्न अमृत हैं ॥ १० ॥ बिराम (बेर) ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

मू०— अंगद—स्वागताछंद ॥ रामदेवतुमगर्बप्रहारी । नित्यतुच्छअतिबुद्धिहमारी ॥ युद्धदेवअमतैंकहिआयो । दासजानिप्रभुमारगलायो ॥ १४ ॥ रूपमालाछंद ॥ सुंदरीसुतलैसहोदरबाजिलैसुखपाइ । साथलैमुनिबालमीकहिदीहदुःखनशाइ ॥ रामधामचलेभलेयशलोकलोकबढ़ाइ । भाँतिभाँतिसुदेशकेशवदुंदुभीनबजाइ ॥ १५ ॥ भरतलक्ष्मणशत्रुहापुरभीरटारतजात । चौंरढारतहैंहुवौदिशिपुत्रउत्तमगात ॥ छत्रहैकरइन्द्रकेशुभशोभिजैबहुभेव । मत्तदंतिचढ़ेपढ़ैंजयशब्ददेवनृदेव ॥१६॥ दोधकछंद ॥ यज्ञथलीरघुनंदनआये ॥धामनिधामनिहोतबधाये ॥ श्रीमिथिलेशसुताबड़भागी । स्योसुतसासुनकेपगलागी ॥ १७ ॥

टी०— पचीसयें प्रकाशमें अंगद कह्यौ है कि ॥ देवहौ नरदेव बानर नैऋतादिक विरहौ ॥ ता बातको ते कहत हैं कि हे देव ! तब जो हमसों युद्ध करिबेको कहि आयो रहै अर्थ हम युद्ध करिबेको कह्यौ रहै सो अमसों कह्यौ रहै सो दास जानिकै हमारो गर्ब दूरि करिकै हमको मारग (राह) लगायो रामचन्द्रहूको वचन रह्यौ कि कोऊ मेरे बंशमें तोसों युद्ध करिहै तब तेरो मन मोसों शुद्ध ह्वैहै सो इहां अंगदको मन शुद्ध भयो जानौ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥

मू०— दोहा ॥ चारिपुत्रद्वैपुत्रसुत, कौशल्यातबदेखि ॥ पायोपरमानंदमन, दिगपालनसमलेखि ॥ १८ ॥ रूपमालाछंद ॥ यज्ञपूरणकैरमापतिदानदेतअशेष । हीरनीरजचीरमानिकबार्षिवर्षावेष ॥अंगरागतड़ागबागफलेभलेबहुभाँति । भवनभूषणभूमिभाजनभूरिबासरराति ॥ १९ ॥ दोहा ॥ एकअयुतगजबाजि-

द्वै, तीनिसुरभिशुभवर्ण ॥ एकएकबिप्रहिदई, केशवसहितसुवर्ण ॥ २० ॥ देवअदेवनृदेवअरु, जेतनेजीवत्रिलोक ॥ मनभायोपायोसबन, कीन्हेसबनअशोक ॥ २१ ॥ अपनेअरुसोदरनके, पुत्रविलोकिसमान ॥ न्यारेन्यारेदेशदै, नृपतिकरेभगवान ॥ २२ ॥ कुशलवअपनेभरतके, नंदनपुष्करतक्ष ॥ लक्ष्मणकेअंगदभये, चित्रकेतुरणदक्ष ॥ २३ ॥ भुजंगप्रयातछन्द ॥ भलेपुत्रशत्रुघ्नद्वैदीपजाये । सदासाधुशूरेबड़ेभागपाये ॥ सदामित्रपोषीहनैंशत्रुछाती । सुबाहैबड़ादूसरोशत्रुघाती ॥ २४ ॥ दोहा ॥ कुशकोदईकुशावती, नगरीकोशलदेश ॥ लवकोदई अवंतिका, उत्तरउत्तमवेश ॥ २५ ॥ पश्चिमपुष्करकोदई, पुष्कर वतिहैनाम ॥ तक्षशिलातक्षहिदई ॥लईजीतिसंग्राम ॥२६॥ अंगदकहँअंगदनगर, दीन्होपश्चिमओर ॥ चंद्रकेतुचंद्रावती, लीन्होउत्तरजोर ॥ २७ ॥

टी०– ॥ १८ ॥ नीरज (मोती) बासर राति कहे रातोदिन देत कहे देत भये ॥ १९ ॥ अयुत (दशहजार) सुवर्ण दशमासेकी स्वर्णमुद्रा सुवर्ण (दशमासिक) ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥२७॥

मू०–मथुरादईसुबाहुको, पूरणपावनगाथ ॥ शत्रुघातकोनृपकर्‌यौ, दशाहिकोरघुनाथ ॥ २८ ॥ तोटकछंद ॥ यहिभांतिसोंरक्षितभूमिभई । सबपुत्रभतीजनबांटिदई ॥ सबपुत्रमहाप्रभुबोलिलिये । बहुभांतिनकेउपदेशदिये ॥ २९ ॥ चामरछन्द ॥ बोलियेनझूंठईढ़िमूढ़पैनकीजई । दीजियेजोबातहाथभूलिहूनलीजई ॥ नेहुतोरियेनदेहुदुःखमंत्रिमित्रको । यत्रतत्रजाहुपै पत्याहुजैअमित्रको ॥ ३० ॥ नाराचछंद ॥ जुवानखेलियेकहूंजुवानवेदरक्षिये । अमित्रभूमिमाहजैअभक्षभक्षभाक्षिये ॥ करौन मंत्रमूढ़सोंनगूढ़मंत्रखोलिये । सुपुत्रहोहुजेहठीमठीनसोंनबोलि-

ये ॥ ३१ ॥ वृथानपीड़ियेप्रजाहिपुत्रमानपारिये । असाधुसा-
धुबूझिकैयथापराधमारिये ॥ कुदेवदेवनारिकोनबालवित्तलीजि-
ये । विरोधबिप्रवंशसोंसोस्वप्नहूनकीजिये ॥ ३२ ॥

टी०- देशहिको अर्थ अयोध्याके समीप देशको ॥ २८ ॥ २९ ॥ इति मित्रता जो वस्तु बात करिकै अथवा हाथ करिकै दीजिये ताको फेरि ना लीजै ॥ ३० ॥ वेदको जुवान कहे वचन भूमि कहे स्थान ॥ ३१ ॥ पुत्रमान कहे पुत्रसम असाधु (सदोष) साधु (निर्दोष) कुदेव (ब्राह्मण) ॥ ३२ ॥

मू-० भुजंगप्रयातछंद ॥ परद्रव्यकोतौविषप्रायलेखौ । प-
रस्त्रीनसोंज्योंगुरुस्त्रीनदेखौ ॥ तजौकामक्रोधौमहामोहलोभौ ।
तजौगर्बकोसर्बदाचित्तक्षोभौ ॥ ३३ ॥ यशैसंग्रहौनिग्रहौयु-
द्धयोधा ॥ करौसाधुसंसर्गजोबुद्धिबोधा ॥ हितूहोइसोदेइजो
धर्मशिक्षा । अधर्मीनकोदेहुजैवाकभिक्षा ॥ ३४ ॥ कृतघ्नीकु-
बादीपरस्त्रीबिहारी।करौबिप्रलोभीनधर्माधिकारी॥ सदाद्रव्यसं-
कल्पकोरक्षिलीजै । द्विजातीनकोआपुहीदानदीजै ॥ ३५ ॥
सवैया ॥ तेरहमंडलमंडितभूतलभूपतिजोक्रमहीक्रमसाधै ।
कैसेहुताकहँशत्रुनमित्रसुकेशवदासउदासनबाधै ॥ शत्रुसमीप-
परेतेहिमित्रसेतासुपरेजोउदासकैजोवै । विग्रहसंधिनदाननिसिं-
धुलौंलैचहुँओरनितौसुखसोवै ॥ ३६ ॥

टी०- काम क्रोध मोह लोभ औ गर्ब कहे मद औ क्षोभ कहे मात्सर्य ये जे छ हैं तिनको त्याग करियो ॥ ३३ ॥ योधा शत्रु अथवा जो लरिबेको उन्मुख होइ भीतादिको ना मारियो इतिभावार्थः ॥ बुद्धि बोधा बुद्धियुक्त जो धर्मशिक्षा देइ सोई तुम्हारो हितू होइ अर्थ ताहीको हितू करियो अधर्मिनसों बोलियो ना इत्यर्थः ॥ ३४ ॥ ये जे पांच हैं तिनको धर्माधिकारी ना करियो संकल्पको द्रव्य जे दिये ग्रामादि हैं तिनकी रक्षा करियो आपुही अर्थ आपनेही हाथसों ॥ ३५ ॥ आपने देशके समीपको जो राजा है ताको शत्रुताके आगेको मित्रताके आगेको उदासीन जोवै देखैं जनौ

इति ॥ याही भांति चारिहू ओर तीनि तीनि राजमंडल सब द्वादश राज-
मंडल जानौं औ मध्यमे आपनों राजमंडल जोरि सब तेरह मंडल प्रसिद्ध हैं
तिनसों युक्त जो भूतलहैं ताको याप्रकार क्रमही क्रम साधै तौ ताको शत्रु
मित्र उदासीनता बांधै कैसे साधै सो कहत हैं कि शत्रुको बिग्रह कहे दण्ड
उपायसों औ मित्रको साधि कहे साम उपायसों उदासीनको दान उपाय-
सों युक्त करै इति शेषः तो सिन्धु पर्य्यन्त चारौं ओर लैकै सुखसों सोवै ॥
विषयानन्तरोराजा शत्रुमित्रमतःपरं ॥ उदासीनःपरतरः इत्यमरः ॥ ३६ ॥

मू०— दोहा ॥ राजश्रीबशकैसेहूं, होहुनउरअवदात ॥ जैसे तैसेआपुबश, ताकहँकीजैतात ॥ ३७ ॥ यहिबिधिशिषदैपुत्रस- ब, बिदाकरेदैराज ॥ राजतश्रीरघुनाथसँग, शोभनबंधुसमाज ॥ ३८ ॥ रूपमालाछंद ॥ रामचंद्रचरित्रकोजोसुनैसदासुखपा- इ । ताहिपुत्रकलत्रसम्पतिदेतश्रीरघुराइ । यज्ञदानअनेकती- रथन्हानकोफलहोइ । नारिकानरविप्रक्षत्रियवैश्यशूद्रजोकोइ ॥ ॥ ३९ ॥ रूपक्रांताछंद ॥ अशेषपुण्यपापकेकलापआपने बहाइ । बिदेहराजज्योंसदेहभक्तरामकेकहाइ॥लहैसुभुक्तिलोक लोकअंतमुक्तिहोहिताहि । कहैसुनैपढ़ैगुनैजोरामचन्द्रचन्द्रिका हि ॥ ४० ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्री- रामचन्द्रचन्द्रिकाया मिद्रजिद्विरचितायांकुशलवसमागामोनामै कोनचत्वारिंशत्प्रकाशः ॥ ३६ ॥

टी०— ॥ ३७ ॥ शोभन (सुंदर) ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ कलाप (समूह)
पुण्यपापके नाशसों मुक्ति होतिहै ॥ अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्मशुभाशुभंइति
प्रमाणात् । अथवा याके धारणसों प्राप्त जो यज्ञादिको अशेष (सम्पूर्ण)
पुण्य है तासों पापके कलाप बहाइकै ॥ ४० ॥ कवित्त ॥ कैधौं शुभसागर
बिराजमान जामें पैठि पाइयत परमपदारथकी राशिका । कण्ठमेंकरतशोभघर-
तसभाकेमध्यकैधौंसोहै मालउरबिमलउजासिका । सेवतहीजाकोलहैसुमन
प्रवीणताईजानकीप्रसादकैधौंभारतीहुलासिका । ज्ञानकीप्रकाशिकासुकुति-

प्रदकाशिकाहै सेइयेसुजनरामभगतिप्रकाशिका ॥ १ ॥ दोहा ॥ रामभक्ति उर आनिकै, रामभक्तजनहेतु ॥ रामचन्द्रिकासिंधुमें, रच्योतिलकको सेतु ॥२॥ जोसुपंथतजि सेतुको, चलहिऔरमगजोर ॥ रामचन्द्रिकासिंधुको, लहहि कौनविधिओर ॥ ३ ॥ इतिश्रीमज्जगज्जननिजनकजानकी जानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसाद निर्म्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायांएकोनचत्वारिंशत्प्रकाशः ॥ ३६ ॥

टी०– कवित्त ॥ तूर्‌यो शम्भुधनु भृगुनाथकोगरबचूर्‌यो ऊर्‌यो निजराज पूर्‌योपितुकोपरनहै । बनबरबासकीन्हेनिशिचर नाशकीन्हेरविसुतआशकीन्हे आवतशरणहै । कपिकरलंकजार्‌योपार्‌योसेतुसिंधुमहँमार्‌योदशशीशबंधुधार्‌योनृपधनहै । रव्यालसमकीन्हेजिनअद्भुतकामबन्दियतअभिराम नृपरामकेचरनहै ॥ १ ॥

इतिश्रीरामचन्द्रिकासटीकासमाप्त ॥

णसे श्रोताओंका मन भावनानुसार मग्न होजाताहै कागज विलायती बढियां लगायाहै माहात्म्यषष्ठाध्यायी भाषाटीका सहित इस्के साथहीहै प्रथमावृत्तीमें मूल्य १५ रुपयाथा इस आवृत्तीमें केवल १२ बाराही रुपया रक्खाहै ज्यादा प्रशंसा बाहुमूल्यमात्र है (दोहा) एकघडी आधीघडी, ताहूकी पुनिआध ॥ नेमसहित जो नित पढे, कटै कोटि अपराध ॥ १ ॥

शुकसागर.

यद्यपि भाषा भागवत कईएक सुकवियोंने बनाई है परन्तु मूलसे मिलानेमें यथार्थ मिलती नहीं है इसलिये हमने ब्रजभाषावार्त्तिकमें संस्कृत श्रीमद्भागवतका श्लोकानुवाद कराके छपायाथा उस्के विकनेपर द्वितीयावृत्ती प्रथमावृत्तीकी अपेक्षा मोटेअक्षरमें शुद्धतापूर्वक उत्तम कागजमें अच्छी तरह सुधारकै छपायाहै विलायती कपडेकी उत्तम जिल्दबंधी हुई है महाशय पाठकगण इसको एकवार मंगाकर देखिये इसमें अत्यंत विशेषता तो यह कि जिस श्लोकके अर्थको चाहिये मूलसे मिलालीजिये प्रतीकके लिये अध्यायके आदि अंतका श्लोक लिखकर संपूर्ण श्लोकोंका अंकभी दिया है मोटा अक्षर और उत्तम कागज होनेसे पुस्तक बहुत बडा होगया है तिसपरभी दोहा छंद कवित्त भजन सोरठा आदि सुललित छंदोंमें ५०० दृष्टांत मनोरंजनार्थ दिये हैं और सबके सुभीतेके लिये मूल्य केवल ७ रु० रक्खा है रेशमी जिल्दबढिया कागज ९ रु० वढियाकागज विलायती कपडेकी जिल्द ८ रु०

श्रीमद्देवीभागवत ।

उत्तम कागज टाइपका छापा नवीन बहुत सस्ता केवल ७ रुपयेमें देतेहैं.

श्रीमद्भागवत श्रीधरीटीका व चूर्णिका ।

टीका माहेश्वरी टीकानुसार टिप्पणी सहित खुलापत्र

यह पुस्तक सप्ताह करनेके लिये तो अति उपयोगीहै परंतु और विचारने तथा नित्यप्रति कथा कहनेके लिये भी अतिउत्तमहै मूल्य ८ रु०

मार्कण्डेयपुराण । (खुलापत्र)

नवीन छपाहुआ टाईप उत्तम कागज और श्याहीका क्लिष्टशब्दोंकी टिप्पणीभी है इसके अंतर्गत जो दुर्गासप्तशती है उसपर शांतनवी टीका जो अतिउत्तमहै लगाई गईहै. मूल्य ५ रुपया मात्र.

ब्रह्मवैवर्त्तपुराण संपूर्ण ।

ब्रह्मखण्ड, प्रकृतिखण्ड, गणेशखण्ड और श्रीकृष्णजन्मखण्ड संपूर्ण चारोंखंडोंका मूल्य ८ रुपया आदिके तीनखंडोंका मूल्य ५ रुपया केवल श्रीकृष्णजन्मखंडका मूल्य ३ रु० है.

१ श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृतरामायणसटीक। पं०ज्वालाप्रसादकृतटीका

लीजिये रामायण सटीकभी लीजिये असल पुस्तक श्रीगुसाईंजीकी लिपिके अनुसार व सम्पूर्ण क्षेपकोंसहित जिसमें शंका समाधान अद्यपर्य्यंत विस्तार पूर्वक लिखे हैं इसके टीकाकी रचना ऐसी उत्तम और अपूर्व मनभावन सुख उपजावन राम यश पावन है कि पढते २ कदापि तृप्ति नहीं होती तुलसीदासजीका जीवन चरित रामवनवासतिथिपत्रम् माहात्म्यभी सम्मिलित है कीमत ८ रु० डाकमहसूल २ रु०

२ रामायण बडा ।

सहित श्लोकार्थ गूढार्थ छन्दार्थ स्तुत्यर्थ शंका समाधान और तुलसीदासजीका जीवन चरित्र, रामवनवास तिथिपत्र, रामाश्वमेध व अष्टम लवकुशकाण्ड, माहात्म्य और बरवारामायणके जिसमें पंचीकरणका बडा नकशा और ३८००कठिन २ शब्दोंके अर्थ लिखेहैं अक्षर अत्यंत मोटा ग्लेज की० ५ रु० रफ ४ रुपया

३ रामायण मझोला ।

ऊपरके सब अलंकारों सहित इसका सांचा छोटा है अक्षर सामान्यहै कीमत २॥ रुपया रफ १॥